Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैवसर्वस्वसार

𑒬𑒻𑒫𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑓂𑒫𑒮𑒰𑒩

महामहोपाध्याय विद्यापति ठाकुर

सम्पादक - डॉ. इन्द्रकान्त झा

अकादमी, पटना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्यापतिकृत

शैवसर्वस्वसार

(मैथिली अनुवाद सहित)

सम्पादक

डा० इन्द्रकान्त झा

व्याख्याता, मैथिली विभाग

पटना कॉलेज

मैथिली अकादमी

पटना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मैथिली अकादमी प्रकाशन—४३

प्रकाशक
मैथिली अकादमी
श्रीकृष्णपुरी पटना—८०००01

© मैथिली अकादमी

प्रथम संस्करण १९७९
प्रति ११००

मूल्य : साधारण २०.०० रु०
सजिल्द २३.०० रु०

मुद्रक
कालिका प्रेस
आर्यकुमार रोड
पटना—८००००४

Digitization by Hindu-Herit

प्रकाशकीय

कविकोकिल विद्यापति ठाकुर मैथिलीक प्राण थिकाह। हिनक सकल रचनाक प्रकाशन ओ प्रचार-प्रसार करब मैथिली जगतक पुनीत कर्तव्य थिक। मैथिली अकादमी उचिते अपन प्रकाशनक आरम्भ हुनक अप्रकाशित कृति 'विभागसार'सँ कयलक हुनक एक अन्य पुस्तक 'शैवसर्वस्वसार' आइ अपनेलोकनिक हाथमे अछि। हुनक गीतक एक बृहत् संग्रह 'विद्यापति-गीतावली' नामे शीघ्रे प्रकाशमे आबिरहल अछि। हर्षक विषय जे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्व विद्यालय सेहो विद्यापतिक सकल संस्कृत ग्रन्थक प्रकाशन हिन्दी अनुवाद सहित 'विद्यापति-संस्कृत-ग्रन्थावली' नामसँ क' रहल अछि जकर पहिल खंड प्रकाशित भ' चुकल अछि। एहि हेतु उक्त विश्वविद्यालयक कुलपति डाँ० जयमन्त मिश्र धन्यवादार्ह थिकाह।

शैवसर्वस्वसार मैथिल परम्परानुसारी शिवपूजापद्धति थिक। हमरालोकनि विद्यापतिकेँ वैष्णव नहि, शैव मानैत अयलहुँ अछि। ई ग्रन्थ तकर पुष्टि करैत अछि। एखनहु मिथिलामे शिवभक्तक संख्या प्राय: सर्वाधिक अछि। हुनकालोकनिक हेतु ई पुस्तक विशेष उपयोगी होयत। इतिहास-रसिककेँ एहिमे विद्यापति-कालीन शैव सम्प्रदायक स्वरूप ओ विविध मान्यता तकरो झलक भेटतनि।

एकर सम्पादक डाँ० इन्द्रकान्त झा विद्यापतिक लिखनावलीक उत्कृष्ट सम्पादन क' मैथिली जगत्‌मे ख्याति प्राप्त क' चुकल छथि। आशा जे प्रस्तुत प्रकाशनसँ ओहि ख्यातिमे वृद्धि होयतनि।

पटना

२९-३-१९७९

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

श्रीकान्त ठाकुर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषय-सूचि

१	मंगलाचरण ओ प्रस्तावना	....	३
२	शिवमाहात्म्य, भक्त ओ भक्तिक लक्षण	....	८
३	शिव पूजनक अधिकारी	...	१६
४	स्मरण, कीर्त्तन, यात्रा, स्पर्शन ओ आलय सम्मार्जन	....	२१
५	अभ्यंग, उद्वर्तन ओ स्नपनक फल	....	३८
६	नृत्यादिक फल	....	६८
७	पूजाक फल	....	७०
८	पुण्यकालमे पूजाक फल	....	१००
९	पूज्य लिंग, मूर्त्ति आदिक पूजनफल	....	११८
१०	आवाहन	....	१४८
११	अर्घ	....	१५०
१२	अनुलेपन	....	१५६
१३	पुष्प ओ माल्य	....	१६६
१४	धूप-दीप	....	२२०
१५	नैवेद्य	....	२३६
१६	शिवके विविध वस्तुक दान	....	२८०
१७	नीराजन	....	३३४
१८	जप, प्रदक्षिण, प्रणाम ओ ध्यान	....	३३६
१९	रुद्राक्षधारण	....	३४४
२०	शिवालय-निर्माण	——	३५४
२१	भस्मस्नान	....	३६४
२२	तपस्वी (पंडा) क अर्चना	....	३६६
२३	शिवभक्तक हेतु वर्जनीय	....	३७०
२४	निषिद्ध ओ विहित फूल-पात	...	३७४
२५	शिवव्रत ओ तकर फल	....	३८५
२६	जयासन-मन्त्र	....	४०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूमिका

विद्यापतिकालीन मैथिल समाज धर्मक क्षेत्रमे पूर्ण उदार छल। धार्मिक संकीर्णता एवं तज्जन्य असहिष्णुता मैथिल समाजमे दृष्टिगोचर नहि होइत छल। विद्यापतिक रचनावलीसँ ज्ञात होइत अछि जे विद्यापति पंचदेवोपासक छलाह। तखन एक बात जरूर देखल जाइत अछि जे हिनका शिवक प्रति विशेष अनुराग आ श्रद्धा छलनि। कहल जाइत अछि जे साक्षात् शिव हिनक भक्तिभावनासँ प्रसन्न भ' दासता स्वीकार कयने छलथिन।

विद्यापति पदावलीमे शिवक सम्बन्धमे जतेक वर्णन कयने छथि तकर अतिरिक्त दू गोट स्वतन्त्र ग्रन्थक रचना सेहो कयलनि। एहिमे प्रमुख ग्रन्थक नाम शैवसर्वस्वसार अछि। एहि ग्रन्थमे शिवक पूजनादिक संग-संग शिवपूजाक फलादिक विस्तृत विवेचन कयल गेल अछि।

एहिमे विद्यापति शिवभक्तक स्वरूप पर सेहो अपन मत प्रकट कयने छथि। हिनका मतें सतत शिवक ध्यानमे मग्न भक्त उत्तम भक्त थिकाह। शिवक उपासनाक अधिकारी चारू वर्ण छथि। ओ स्वयं कहैत छथि जे हमरा (शिव) मे भक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र क' सकैत छथि। जे केओ देवादिदेव जगत्पति महादेवक लिंगक पूजा करैत छथि तनिका उत्तम लोक प्राप्त होइत छनि। हिनक पूजाक विधान अहोरात्र विहित अछि।

एहि सम्बन्धमे हम वैदिककालसँ विद्यापतिकालीन साहित्य मे वर्णित शिवक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कय रहल छी।

ऋग्वेदमे रुद्र मध्यम श्रेणीक देवता मानल गेल छथि। हुनकर स्तुति मे मात्र तीनटा सूक्त कहल गेल छनि (ऋग्वेद १-११४; २-२३; ७-४६)। एकर अतिरिक्त किछु अन्य सूक्तमे अन्य देवता सभक संग सेहो रुद्रक चर्चा भेल छनि। हिनक नामक शाब्दिक अर्थक अनुसार किछु विद्वान् रुद्रकें झंझावातक प्रतीक मानैत छथि। जर्मन विद्वान् वेवर सेहो रुद्रक नाम पर जोर दैत अनुमान कयलनि अछि जे रुद्र झंझावातक 'रव'क प्रतीक थिक[1]। ठीक ओहिना डॉक्टर मैकडोनलक कहब छनि जे रुद्र विशुद्ध झंझावातक नहि, अपितु विनाशकारी विद्युतक रूपमे झंझावातक विध्वंसक प्रतीक थिक[2]। भंडारकर[3] आ' अंग्रेज विद्वान् म्यूररह[4] सेहो एहि मतक सम्पादन कयने छथि।

---

१ इंडीश श्टूडीन, २, १९-२२।
२ वैदिक माइथोलोजी, पृ० ७८।
३ वैष्णविज्म, शैविज्म एण्ड माइनर रिलिजस सिस्टम्स, पृ० १०२।
४ कीथ, रिलिजन एण्ड फिलोसॉफी ऑफ दी ऋग्वेद, पृ० १४७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एच्० एच्० विल्सनक विचारमे रुद्र निश्चित रूपसँ अग्नि अथवा इन्द्रक एक विशेष रूप छलाह। एल० बी० श्राडरक अनुसार रुद्र ओहि परमात्मा सभमे प्रमुख छलाह जे वायुक संग मिलि अन्हड़ उत्पन्न करैत छलाह। ग्रासमान हिनका एक कल्पित रुद् (चमकब) धातुसँ निष्पन्न भेल कहैत छथि, जखन कि पिशल हिनका रुद् (लोहित होयब) एहि कल्पित धातुसँ व्युत्पन्न भेल मानैत छथि आ' एकर अर्थ चमक वा लोहित करैत छथि।[५]

ऋग्वेदमे रुद्रक शारीरिक विशेषता निम्न रूपक कहल गेल छनि —

रुद्रकेँ एक हाथ छनि। हुनक भुजा दृढ़ एवं अवयवसँ युक्त छनि। हुनक ठोर सुन्दर छनि आ' रंग कैल छनि। हुनक केश औँठिया छनि आ' रूप अनेक छनि। ओ द्युतिमान् सूर्य एवं स्वर्णक सदृश चमकैत छथि। ओ स्वर्णिम आभूषणसँ प्रसाधन कयने छथि आ' अनेक प्रकारक निष्क पहिरने छथि। ओ रथारूढ़ रहैत छथि।

वाजसनेयिसंहिता (१६-८) हिनका रूपमे किछु आरो जोड़ि दैत छनि। यथा, ओ सहस्राक्ष छथि। हुनका पेट, मुह, जिह्वा आ दाँत छनि। हुनक पेट कारी आ पीठ लाल छनि। ओ नील शिखण्ड छथि। ओ ताम्र आ' लोहित रंगक छथि आ' पर्वत पर रहैत छथि।

रुद्रक अनेक उपाधिक चर्चा वेदमे कयल गेल अछि। रुद्रक एक रूपसँ 'गोघ्न' 'नृघ्न' आ' 'क्षयद्वीर' उपाधिक सार्थकता सिद्ध होइत अछि। रुद्रक दोसर रूप 'कर्पर्दिन्' सेहो अछि। एकर अर्थ जटाजूटधारी होइत अछि। रुद्रक एक उपाधि 'दिवोवराह' अर्थात् 'आकाशवराह' सेहो अछि।

ऋग्वेदीय सूक्त सभसँ ज्ञात होइत अछि जे रुद्रकेँ अग्निसँ अधिक सम्बन्ध छनि। कारण, अग्निकेँ अनेक ठाम रुद्र कहल गेल छनि। रुद्रकेँ एक ठाम मेधापतिक उपाधि देल गेल छनि।[६] एहिसँ रुद्र आ' अग्निमे तादात्म्य बुझना जाइत अछि।

अथर्ववेद मे 'तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये' मन्त्र सेहो एहि दिश संकेत करैत अछि। शतपथब्राह्मण (३-१-३)क प्रमाण सर्वथा स्पष्ट अछि। शुक्लयजुर्वेद (३९-८)मे अग्नि, अशनि, पशुपति, भव, शर्व, ईशान, महादेव एवं उग्र ई सभ एके देवताक पृथक्-पृथक् नाम कहल गेल अछि।

---

५ डॉ० सूर्यकान्त, वैदिक देवशास्त्र, पृ० १८९।
६ ऋग्वेद, २-१-६, ३-३-५।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वस्तुतः रुद्र अग्निक प्रतीक छथि। अग्निक दृश्य आ' भौतिक आधार पर रुद्रक कल्पना ठाढ़ कयल गेल अछि। अग्निक शिखा ऊपर उठैत अछि। अतएव रुद्रक उर्ध्वलिंगक कल्पना कयल गेल अछि। अग्नि वेदीपर जरैत अछि। एहि हेतु शिव जलधरीक मध्यमे राखल जाइत छथि। अग्निमे घृतक आहुति देल जाइछ। अतएव शिवक ऊपर सेहो जलसँ अभिषेक कयल जाइत अछि। शिव-भक्तक हेतु भस्मधारण करबाक प्रथा सेहो एहि सिद्धान्तक समर्थन करैत अछि।

ऋग्वेदमे रुद्रकेँ 'भीमं राजानम्' अर्थात् आतंककारी राजा आ 'उपहन्तु' अर्थात् विध्वंसक कहल गेल अछि, किएक तँ खेत-पथारमे चरैत पशुसभपर वज्रपात होयबाक अधिक आशंका रहैत छैक। अतएव, पशुसभकेँ रुद्रक संरक्षणमे राखि हुनका प्रसन्न कयल जाइत छनि।[७] एहि प्रसंग मे सर्व प्रथम 'पशुपति' कहल गेल छनि।[८]

वेद, उपनिषद् आ पुराण सभमे प्राणिमात्रक नाम पशु अछि। एहि हेतु जगदीश पशुपति छथि —

येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत द्विपदाम्।[९]

अर्थात् द्विपद आ' चतुष्पद पशु सभक ईश पति पशु छथि।

ब्रह्माद्याः स्थावरान्ताश्च पशवः परिकीर्तिताः।
तेषां पतित्वाद्विश्वेशो भवः पशुपतिः स्मृतः॥

अर्थात् ब्रह्मासँ लय नहि चलयबला वस्तु धरि (सभ) पशु अछि। ओकर पति होयबाक कारण विश्वेश भव पशुपति कहल जाइछ। तमः प्रधान जीव सभकेँ सेहो पशु कहल गेल अछि—

पश्वादयस्ते विख्यातास्तमःप्राया ह्यवेदिनः।
उत्पथग्राहिणश्चैव तेऽज्ञाने ज्ञानमानिणः॥[१०]

अर्थात् जकरामे तमक आधिक्यसँ वेदना नहि अछि, मात्र चेतन-मात्र रहि घोर अज्ञानमे पड़ल रहैत अछि, आ' कुमार्गपर चलैत रहैत अछि, सैह पशु नामसँ प्रसिद्ध होइछ। शिव ओकरो त्राता छथि। अतएव, पशुपति छथि।

अथर्ववेदमे रुद्रक वर्णन देखलासँ ई स्पष्ट भ' जाइछ जे रुद्र वैदिक देवमंडलक इन्द्र, अग्नि आदि देवता सदृश श्रेष्ठ कोटिक देवता नहि भ' एहन देवता छलाह

---

७ ऋग्वेद-१८-१०-४०; ११-२-१०; १०-२-२४।
८ शैवमत, पृ० ९।
९ नटराजसहस्रनामभाष्य (मद्रास, १९५१) मे नामसंख्या ५४३।
१० भारतीय प्रतीकविद्या, डा० जनार्दन मिश्र, पृ० ८१ पर उद्धत।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जनिकापर जनसाधारणक आस्था छलैक। ऋग्वेदमे ई बात एतेक स्पष्ट नहि अछि।

वैदिक साहित्यक अवलोकनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे रुद्र एक प्रमुख देवताक रूपमे आसीन भेलाह आ' हुनक उपासनाक प्रचार-प्रसार सेहो क्रमशः भेल। ओकर बाद आरण्यक आ' उपनिषद्मे रुद्रक कोनो विशेष चर्चा नहि अछि।

क्रमशः हुनका सामान्य रूपसँ ईश, महेश्वर, शिव आ ईशान कहल गेलनि।[११] एकर अतिरिक्त श्वेताश्वतर उपनिषद्क किछु स्थलमे शिवक प्रकृति—शक्तिक कल्पना शिवक आध्यात्मपुरुषक संग विकसित भेल छनि।

भक्तिवादक प्रचार उपनिषदकालमे भ' गेल छल मुदा ओकर पूर्ण प्रचार बादमे भेल। प्राचीन उपनिषद् सभमे एकमात्र श्वेताश्वतर उपनिषद् एहन अछि, जाहिसँ रुद्रक उपासनाक किछु ज्ञान होइत अछि।

तत्पश्चात् श्रौतसूत्रमे सेहो ब्राह्मणग्रन्थ-शदृश रुद्रक पूजाक स्वरूप देखना जाइछ। एहूमे हुनका रुद्र, भव, शर्व आदि अनके नाम तथा महादेव, पशुपति, भूपति आदि अनेक उपाधिक उल्लेख भेल अछि।[१२] मनुष्य आ' पशुक रक्षाक हेतु रुद्रक उपासनाक विधान कयल गेल अछि।

रुद्रक उपासनाक पद्धति धर्मसूत्रमे सेहो भेटैत अछि। मुदा एहि सूत्रक उपासनाक विधि श्रौत-सूत्र सभक सदृशे अछि। एहूमे रुद्रक अनेक नामक चर्चा अछि। साधारण रूपसँ वृक्ष, चतुष्पथ (चौबट्टी), पुण्यतीर्थ आ' श्मशान आदिमे लोकक अनिष्टक निवारणार्थ हुनक आराधनाक विधान अछि।[१३]

सूत्र-कालमे जन-साधारणक धार्मिक आचार-विचार सभक विषयमे सभसँ अधिक जानकारी गृह्यसूत्रसँ प्राप्त होइत अछि। रुद्रक उपासनाक विषयमे गृह्यसूत्रमे बहुतो मूल्यवान् सामग्री भेटैत अछि। एहिसँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे एक दिस रुद्र दार्शनिकक परब्रह्मक पद प्राप्त कयने छलाह तँ दोसर दिस हुनक उपासनाक सरल विश्वासक संग सेहो घनिष्ठ सम्बन्ध छल। एहि तरहेँ रुद्रक प्राचीन रूपक उपासना होइत रहल।

गृह्यसूत्रमे सेहो रुद्रक प्राचीन वैदिक उपाधि सभक उल्लेख भेल अछि।[१४] यद्यपि हुनक नव नाम 'शिव' आ' 'शंकर' अत्यधिक प्रचलित भ' रहल छल।[१५]

११ श्वेताश्वर उपनिषद्, ३-११; ४-१०; ४-११; ५-१४।
१२ शांखायनश्रौतसूत्र, ३-२०-१४; ४-२०-१।
१३ मानव गृह्यसूत्र, २-१३; ९-१४।
१४ आश्वलायन गृह्यसूत्र, ४-१०। १५ ऐजन, २, १, २।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कखनहुँ-कखनहुँ हुनका 'पृषत्' सेहो कहल गेल छनि, जकर संकेत हुनक प्राचीन हिंसक रूपक दिश छनि।[१६]

ओहि युगमे लोकके विश्वास भ' गेल छलैक जे रुद्रक स्तवनसँ क्षेत्र आ' समृद्धि प्राप्त होइत छैक। एहि उद्देश्यसँ 'शूलगव' यज्ञ कयल जाइत छल।[१७] ई यज्ञ वसन्त अथवा हेमन्त ऋतुक शुक्लपक्षमे कयल जाइत छल।[१८] बौधायन गृह्यसूत्र (१, २, ७, २३)मे एहि 'शूलगवयज्ञ'क वर्णनमें एक स्थलपर रुद्रके विश्वव्यापी 'परं ब्रह्म' मानल गेल छनि। पुन: दोसर ठाम हुनका 'आदिपुरुष' आ' 'विश्व-द्रष्टा' कहल गेल छनि।

गृह्यसूत्रमे रुद्रक उपासनाक प्रमुख रूप मूर्त्ति-पूजा भेटैत अछि। एहीमे सर्वप्रथम रुद्र आदि देवगणक मूर्त्तिक प्रतिष्ठा आ' पूजनक उल्लेख अछि। बौधायन गृह्यसूत्रमे रुद्रे टाक नहि, बल्कि विष्णुक मूर्त्तिक प्रतिष्ठापनक सेहो विधान अछि। एहि सूत्रमे सर्वप्रथम 'देवागार' क उल्लेख सेहो कयल गेल अछि। एहिसँ बुझना जाइछ जे ओहि युगमे मन्दिरमे देवताक प्रतिष्ठापन प्रचलित भ' गेल छल। एकर अतिरिक्त एहि सूत्रमे सर्वप्रथम शिवलिंगक सेहो चर्चा कयल गेल अछि, किन्तु एहि शिवलिंगक कोनो आकार नहि होइत छल। एहिसँ पता चलैत अछि जे बौधायन गृह्यसूत्र-काल धरि रुद्रक उपासना लिंगक रूपमे होबय लागल छल। लिंगके भगवान शिवक प्रतीक मानल जाइत छल आ' ओकर उपासना फल, फूल आदि द्वारा ठीक ओहिना कयल जाइत छल, जहिना हुनक मानवाकार मूर्त्तिक पूजा कयल जाइत छल।

गृह्यसूत्रमे रुद्रक मानवाकार आ' लिंगाकार मूर्त्तिक एक संग उल्लेख अपन एक ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि। कारण, भारतवर्षमे मूर्त्तिपूजा आ देवालय-निर्माणक प्रचलन सिन्धुघाटीक सभ्यताक प्रभाव पड़लासँ भेल छल। एहि लिंग-पूजाक सम्बन्धमे विस्तृत वर्णन आगाँ कयल जायत।

बौद्ध साहित्य तथा पाणिनि आ' कौटिल्यक ग्रन्थमे सेहो शिवविषयक चर्चा अछि। बौद्ध ग्रन्थ 'दीघनिकाय' मे शिवक नामोल्लेख अछि। शिवक चर्चा त्रिपिटक आ जातक ग्रन्थमे सेहो अछि। पाणिनिक अष्टाध्यायी (१-४९; ३-५३;

१६ ऐजन, २, १, २; मानव गृह्यसूत्र २, ३, ५; बौधायन धर्मसूत्र, ७, १० मे सेहो रुद्रके 'विशान्तक' कहल गेल छनि।

१७ मानव गृह्यसूत्र, २,५; बौधायन गृह्यसूत्र, १, २, ७, १-३; आश्वलायन गृह्यसूत्र; ४, १०।

१८ एहि यज्ञक सम्बन्धमे देखू शैवमत, पृ० ४७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४-१००) मे रुद्र आ' हुनक उपाधि 'भव', 'शर्व' आदिक उल्लेख अछि। एहि ग्रन्थक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे पाणिनिकालीन भारतमे विष्णु आ' शिवक उपासना होइत छल। कौटिल्यक अर्थशास्त्रसँ पता चलैत अछि जे दुर्गक भीतरमे शिव आ' अन्य देवता सभक मन्दिर रहैत छल।

एकर बाद रामायण आ' महाभारतमे शैव धर्मक प्रचुर सामग्री उपलब्ध होइत अछि। सूत्रग्रन्थादिसँ विशेष रूपमे शिवक स्वरूप रामायणमे दृष्टिगत होइत अछि। महादेव, महेश्वर, शंकर, त्र्यम्बक नामक उल्लेख पहिनेसँ अधिक रामायणमे देखल जाइत अछि। ओहि समयमे रुद्रक सौम्य रूप 'शिव'क प्रचलन भ' गेल छल आ' शिवकेँ कल्याणकारी देवताक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे ओ वर देवयबला, आशुतोष आ' दयानिधि छथि।

रामायणमे शिवकेँ सर्वश्रेष्ठ देवता कहल गेल छनि। ओ देवता सभमे सर्वोच्च आ' सर्वोत्तम तथा देवता सभक देव अर्थात् महादेव कहल गेल छथि। एकर अतिरिक्त कहल गेल अछि जे प्रत्येक महान् संकटमे देवतागण सहायताक हेतु हुनके समीप जाइत छलाह। एकबेरि विष्णु सेहो अन्य देवगणक संग हुनका लग गेल छलाह।[१९] अमरलोकक लोक सेहो हुनक पूजा करैत छलाह। रामायणमे एक ठाम शिवकेँ जगतक सृष्टि आ' अन्त करयबला, सभ लोकक आधार आ' परम गुरु सेहो कहल गेल छनि।

रामायणमे शिवसँ सम्बद्ध अनेक कथा अछि, जाहिमे शिवोपासनाक प्रमुख रूप सभक वर्णन कयल गेल अछि। एहिसँ बुझना जाइछ जे ओहि समयमे शिवक दू गोट उपाधि—'हर' आ' 'वृषध्वज' प्रशस्त भ' गेल छल।

शिवक योगाभ्यासक संग जे सम्बन्ध उपनिषद्मे दृष्टिगोचर होइछ, से रामायणकालमे अत्यधिक स्पष्ट भ' जाइत अछि। शिवक उपासना आ' हुनका प्रसन्न करबाक एक मार्ग तपश्चर्या अछि। भगीरथ सेहो हुनका एहि विधिसँ तुष्ट कयने छलाह। स्वयं देवतालोकनिकेँ सेहो वरदान पयबाक हेतु तप करय पड़ैत छनि।

एहि युगमे भगवद्दर्शन आ' मोक्ष-प्राप्तिक लेल तपस्याकेँ अत्यन्त उपयुक्त बूझल जाइत छल। एतबे नहि, योगाभ्यासपर सेहो बल देल गेल छल। एक स्थलपर हिमालयमे योगाभ्यास करैत भगवान् शिवक सेहो उल्लेख कयल गेल अछि।

---

१९ रामायण, बालकांड, ४५-२२-२६; ६६-११-१२।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भगवान् शिवक उपासना देव आ' मानव तँ करिते छलाह, मुदा एहि युग मे दानव सेहो शिवक उपासना प्रारम्भ क' देने छल। कारण, एक बेरि जखन रावणक गर्व टूटि गेलनि, तखन ओहो शिवक भक्त भ' गेलाह। विद्युत्केश दानवकेँ तँ पार्वती स्वयं पोष्य पुत्रक रूपमे स्वीकार कयने छलथिन आ' शिव हुनका अमरत्वक वरदान देने छलथिन।

महाभारत-कालमे शिवक दार्शनिक आ' लोक प्रचलित—दुनू रूप दृष्टिगत होइत अछि। ओ 'परम्' छथि आ' हुनकासँ परम् किछु नहि अछि। ओ महाभूतक एक मात्र आधार छथि। ओ एक रहितो अनेकरूप छथि। ओ सभमे व्याप्त आ' सभक उद्गम छथि। ठीक रामायण-कालक सदृश एहू कालमे हुनका विश्वक आदि आ' हुनकेमे विश्वक अन्त देखाओल गेल अछि। सृष्टिक विलय-कर्त्ताक रूपमे हुनका 'कालरुद्र' कहल गेल छनि। एहि प्रकारसँ जे स्थान हुनका श्वेताश्वतर उपनिषद्मे देल गेल छलनि ओकरा एतय पूर्ण रूपसँ मान्यता देल गेल अछि। अतएव बुझना जाइछ जे ओहि कालमे शिव अपन चरमोत्कर्ष पर पहुँचि गेल छलाह। शिव आ' विष्णुक मध्य कोनो प्रतिस्पर्द्धा नहि छलनि। दुहूकेँ समान कहल जाइत छलनि। मुदा विष्णु स्वयं शिवक महिमाक गान आ' उपासना करैत देखल गेल छथि।

उपनिषद् सदृश महाभारतमे सेहो शिवकेँ 'सांख्य' कहल गेल छनि। रामायणकालक सदृश एहू कालमे शिवक प्राप्तिक एक साधन तपस्या आ' भक्ति बूझल जाइत छल। एक स्थलपर महाभारतमे कहल गेल अछि जे शिवकेँ तप आ' भक्तिए द्वारा पाओल जा सकैत अछि। ओ योगी सभक परम पुरुष छथि। ओ आत्माक योग आ' समस्त तपश्चर्याकेँ जनैत छथि आ' स्वयं महायोगी छथि।

शिवकेँ एकमात्र ईश्वर, जगतक स्रष्टा, पालनकर्त्ता आ' संहर्त्ता मानल गेल छनि। ओ देवता, मानव आ' दानव सभक परम प्रभु छथि। ओ असीम छथि, अचिन्त्य छथि आ' देवता लोकनि द्वारा सेहो अनधिगम्य छथि। हुनकर नाम छनि 'ईशान', 'महेश्वर', 'महादेव', 'भगवत्' आ' 'शिव'। हुनका अन्य सभ देवतासँ पैघ मानल गेल छनि। सभ देवता ब्रह्मा-विष्णुक संग हुनक शरणमे अबैत छथिन। एक स्थल पर ब्रह्मा आ' विष्णुकेँ भगवान् शिवक दुनू दिश ठाढ़ देखाओल गेल छनि।

शिवक उपासनाक सार भक्ति अछि आ' रामायणक सदृश एतहु शिवक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कल्पना सतत मानव जातिक कल्याणकारी आ' भक्तानुकम्पी देवताक रूपमे कयल गेल छनि। जहिना प्राचीनकाल आ' रामायण आदिक कालमे ऋषिलोकनि अपन भक्तिक बल पर शिवसँ अनेक वरदान पओने छलाह, तहिना महाभारत-काल में सेहो अर्जुन एवं उपमन्यु आदि वर पओने छलाह।

एहि युगमे एक विशेष उपासनाक प्रचलन भेल छल, जाहिसँ शिव प्रसन्न होइत छलाह। ई 'पाशुपत व्रत' छल, जकर उल्लेख महाभारतक कर्णपर्व (२५-२४) मे कयल गेल अछि। व्रत कयनिहारक परिस्थिति आ' ओकर उद्देश्यक अनुसार एहि व्रतक अवधि १२ दिनसँ १२ वर्ष धरि होइत छल। मुदा एहि व्रतक विस्तृत वर्णन नहि कयल गेल अछि।

महाभारतमे शिवक रुद्र रूप सेहो भेटैत अछि। कर्णपर्वमे हुनका 'ब्रह्मद्विट्-संहातिन्' अर्थात् देवता आ' ब्राह्मण सभक शत्रुक संहार करयबला कहल गेल छनि। 'पिनाक' नामक धनुष आ' 'शूल' नामक वज्र हुनक प्रिय अस्त्र छनि। एही कारणसँ हुनका 'प्रवरायुधयोमी' सेहो कहल जाइत छनि। हुनकर शक्तिक केओ सामना नहि कय सकैत छनि। हुनकर जे विरोध करैत छनि ओकरा हेतु तँ ओ साक्षात् काल छथि। एहि रूपमे ओ कुपित, भयावह आ' महासंहारकर्त्ता छथि। हुनक सम्पूर्ण आकृति भयंकर छनि। एहि रूपमे हुनका 'कृष्णवस्त्रधारी' मानल गेल छनि। मुदा साधारणतया ओ श्वेतवस्त्रधारिये छलाह।

एहि कालमे शिवक दुनू रूप—सौम्य आ' भयंकर देखल जाइत अछि। एक स्थल पर स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे शिवक ई दूटा भिन्न रूप छनि। मुदा जे केओ शिवक शरणागत होइत छथि, तनिक सभ पाप ओ हरण कय लैत छथिन।

रामायण-सदृश महाभारतोमे शिव-सम्बन्धी अनेक कथा अछि। महाभारतमे किछु एहनो कथा भेटैत अछि, जकर रामायणमे बीज मात्र भेटैत अछि। एहिमे कार्त्तिकेयक जन्मक कथा सर्वप्रमुख अछि। महाभारतमे एकर विस्तृत उल्लेख कयल गेल अछि। एहिसँ शिव तथा स्कन्दक परस्पर सम्बन्धपर सेहो बहुत प्रकाश पड़ैत अछि। एकर संगहि संग, देवकथा सभक क्रमिक विकास कोन प्रकारसँ होइत अछि, एकरो कथा बड़ रोचक अछि। एहि कथाक सभसँ प्राचीन रूप वनपर्वमे भेटैत अछि।

भगवान् शिवक उपासनाक जे विधि रामायणमे दृष्टिगोचर होइत अछि ओहिसँ किछु अधिक महाभारत कालमे उपलब्ध होइत अछि। साधारण रूपसँ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवक पूजा स्तुतिगान आ' प्रार्थना द्वारा कयल जाइत छल।[२०]

विभिन्न पुराणक सांगोपांग अध्ययनसँ ज्ञात होइत अछि जे पुराण सभमे बेदोत्तरकालीन शैव धर्मक विकसित रूप दृष्टिगोचर होइत अछि। रामायण आ' महाभारतमे जे शिवक रूप निहित छल, से सभ पुराणकालमे व्यक्त भय गेल छल। शिवक दार्शनिक आ' लोक-प्रचलित रूप पौराणिक युगमे सेहो दृष्टिगत होइत अछि।

अग्निपुराण (८८-७), ब्रह्मपुराण (१-९) आ' लिंगपुराण (२१-१६) मे शिवकेँ द्रष्टा कहल गेल छनि। ओएह विश्वक आदि कारण छथि। हुनके महिमा पर चारू वेदक गान कयल जाइत अछि। ओ दार्शनिक ब्रह्म छथि, आत्मा छथि, असीम आ' शाश्वत छथि।[२१] ओ अव्यक्तो छथि आ' जीवात्माक रूपमे व्यक्तो छथि। ओ सर्वज्ञ छथि आ' सर्वस्थित छथि। ओ चर-अचरक स्वामी छथि आ' सभ प्राणीमे आत्मरूपमे बसैत छथि।[२२] ओ स्वयंभू छथि, विश्वक सृजन, पालन आ' संहार कयनिहार छथि। एहि हेतु ओ तीन रूप धारण करैत छथि।[२३]

विद्यापति सेहो अपन शैवसर्वस्वसारमे उपर्युक्त मतक समर्थनक हेतु लिंगपुराण, शिवधर्म आ' दानधर्मक वचनकेँ उद्धृत करैत छथि। सर्वप्रथम ओ लिंगपुराणक वचनक अनुसार कहैत छथि जे 'शंकरसँ पैघ कोनो देव नहि छथि।' तत्पश्चात् शिवधर्मक वचनक आधारपर रुद्रक सर्वश्रेष्ठताकेँ प्रामाणित करैत छथि—रुद्रक सदृश ने तँ कोनो देव छथि आ' ने गुरु। हुनक सदृश ने कोनो ज्ञान अछि आ' ने तपस्या।[२४]

पुराणमे शिवक त्रिधा रूप दृष्टिगत होइत अछि। विष्णुक रूपमे विश्वक रक्षक छथि, ब्रह्माक रूपमे ओ उत्पादक आ' हरक रूपमे संहारकर्त्ता छथि।

---

२० महाभारत, कर्णपर्व २४. ६०-६४, ७१; अनुशासनपर्व, २२. १४४-४५; २३. १७, ४३; ११२. ५३, १५१. ३; द्रोणपर्व, ५०. ४३; ७४. १६, ४१, ४३, ५१; १६९. २९; वनपर्व ८५. २५; १८३; शल्यपर्व ३९. ६; सौप्तिकपर्व ६ ३२।

२१ लिंगपुराण, भाग २, २१. ४९; वायुपुराण, ५५. ३९; गरुड़ पुराण, १६. ६-७।

२२ वायुपुराण, २४. ७१; ५४. ७४; अग्निपुराण, ७४. ८२।

२३ लिंगपुराण, भाग १, १. १; वायुपुराण, ६६. १०८।

२४ शैवसर्वस्वसार (हस्तलेख, संस्कृतविद्यालयसँ पं० श्री जीवानन्द ठाकुरक सौजन्यसँ प्राप्त) पात न० २।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रमाणं शब्द उच्यते ।
तत्रापि वैदिकः शब्दः प्रमाणं परमं मतः ॥
वेदेन गीयते यस्तु पुरुषः स परात्परः ।
मूर्तोऽपरः स विज्ञेयो ह्यमूर्तः पर उच्यते ॥
योऽमूर्तः स परो ज्ञेयो ह्यपरो मूर्त उच्यते ।
गुणाभिव्याप्तिभेदेन मूर्तोऽसौ त्रिविधो भवेत् ॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवश्चेति एक एव त्रिधोच्यते ।
त्रयाणामपि देवानां वेद्यमेकं परं हि तत् ॥
एकस्य बहुधा व्याप्तिर्गुणकर्मविभेदतः ।
लोकानामुपकारार्थमाकृतित्रितयं भवेत् ॥
यस्तत्वं वेत्ति परमं स च विद्वान् न चेतरः ।
तत्र यो भेदमाचष्टे लिङ्गभेदी स उच्यते ॥[२५]

अर्थात्, धर्मार्थकाममोक्षक निश्चय करयबला (प्रमाण) शब्द अछि। ओहू मे वेदक शब्द प्रमाण अछि। वेद जनिक वर्णन करैत अछि, से पुरुष[२६] छथि जे कारणोक कारण छथि। परक नाम अमृत अछि आ' अपरकेँ मृत बुझबाक चाही। जे निराकार छथि से पर छथि आ' साकारक नाम मूर्त्त। गुणक व्याप्तिक भेदसँ ई साकार तीन प्रकारक होइत छथि। एकेकेँ तीन प्रकारसँ कहल जाइत छनि—ब्रह्मा, विष्णु आ' महेश। तीन देवक सेहो वेद्य वस्तु ओएह अछि, जकरा 'तत्' आ' 'पर' कहल जाइछ। गुण आ' कर्मक भेदसँ एके नाना रूपसँ विस्तृत छथि। लोक सभक उपकारक हेतु आकृति सभ तीन प्रकारक भय गेल अछि। जे एहि परम तत्त्व (सत्य)केँ जनैत छथि, सैह विद्वान छथि—दोसर नहि। एहि मे जे भेद मानैत छथि, तनिक नाम लिङ्गभेदी होइछ।

एका तनुः स्मृता वेदे धर्मशास्त्रे पुरातने ।
सांख्ययोगपरैर्वीरैः पृथक्त्वैकत्वदर्शिभिः ॥
इदं परमिदं नेति ब्रुवन्तोऽभिन्नदर्शनाः ।
ब्रह्माणं कारणं केचिन् केचित् प्राहुः प्रजापतिम् ॥
केचिच्छिवं परत्वेन प्राहुर्विष्णुं तथाऽपरे ।
अविज्ञानेन संसक्ताः सक्ता रत्यादिचेतसा ॥

---

२५ ब्रह्मपुराण, १३०, ७-१२।
२६ भारतीय प्रतीकविद्या, पृ० ९४, पादटिप्पणी, १, पुरुषक अर्थ अछि परमात्मा। एहि शब्दक अनेक प्रकारसँ अर्थ कयल गेल अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्त्वं कालं च देशं च कार्याण्यावेक्ष्य तत्त्वतः ।
कारणं च स्मृता ह्येता नानार्थेष्विह देवताः ॥
एकं निन्दन्ति यस्तेषां सर्वानेव स निन्दति ।
एकं प्रशंसमानस्तु सर्वानेव प्रशंसति ॥
एकं यो वेत्ति पुरुषं तमाहुर्ब्रह्मवादिनम् ।
अद्वेषस्तु सदा कार्यो देवतासु विजानता ॥
न शक्यमीश्वरं ज्ञातुमैश्वर्येण व्यवस्थितम् ।
एकात्मा च त्रिधा भूत्वा संमोहयति यः प्रजाः ॥
एतेषां च त्रयाणां तु विचरन्त्यन्तरे जनाः ।[२७]

अर्थात्, वेद आ' धर्मशास्त्रमे एके टा रूप कहल गेल अछि। भिन्नता मे एकता देखयबला सांख्ययोगक वेत्ता वीरो सभ सैह कहने छथि। ई श्रेष्ठ अछि (परं) आ' ई नहि—एहन कहयबला भिन्न रूप सभकें देखि क' केओ ब्रह्माकें आ' केओ प्रजापतिकें कारण मानैत छथि। अज्ञानमे डुबल आ' भोगविलासमे संलिप्त लोक केओ शिवकें आ' केओ विष्णुकें कारण मानैत छथि। तत्त्व, काल, देश आ' काज सभ पर गम्भीरतापूर्वक विचार क' एहि देवता सभकें नाना प्रकारक काजक कारण कहल गेल छनि। एहिमेसँ एको गोटेक जे निन्दा करैत छथि, ओ सभक निन्दा करैत छथि। एकक प्रशंसा करयबला सभक प्रशंसा करैत छथि। जे केवल पुरुषकें (पर) बुझैत छथि, सैह ब्रह्मवादी छथि, ज्ञानवान्कें देवता सभसँ द्वेष नहि करबाक चाही। ईश्वर अपन शक्तिसँ स्थित छथि। हुनका केओ जानि नहि सकैछ। ओ असगर रहलो उत्तर तीन प्रकारक (त्रिगुण)सँ सृष्टिकें मोहमे देने रहैत छथि। एहि तीनूक भीतर सृष्टि घूमैत रहैत अछि।

सौर पुराणसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे त्रिमूर्त्तिमे एकता अछि :—

त्रिधाभिन्नोऽस्म्यहं ब्रह्मन् ब्रह्म-विष्णु-हराख्यया ।
सर्गरक्षालयगुणैर्निर्गुणोऽहं न संशयः ॥

एतावता सिद्ध होइत अछि जे ब्रह्मा, विष्णु आ महेश—तीनू एके छथि।

ठीक ओहिना पुराणसभमे विष्णु आ' शिवक एकात्मरूपक वर्णन अछि। स्वयं विष्णु शिवकें अपन देव मानैत छथि। ओहो शिवक उपासना करैत छथि।

ठीक ओहिना शिव कहैत छथि जे :—

ममैव हृदये विष्णुर्विष्णोश्च हृदये ह्यहम् ।
उभयोरन्तरं यो न विजानाति मनो मम ॥

---

२७ ऐजन, पृ० ९३ पर उद्धृत।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्यापति सेहो कूर्मपुराणक वचनसँ एकर समर्थन करैत छथि।
सौरपुराणमे शिवक प्रशंसा करैत कहैत छथि :—

मत्स्वामिनोऽवगणना नहि शक्यते मे
कृत्वापि पूज्यतमर्मूत्तिमिमं गिरीशम्।
नो मन्यते तदिह वज्रसमं ममैव॥
अस्ति सर्वं वरारोहे मयि तत्तथ्यमेव हि॥
श्रीमन्महेश्वराल्लब्धं मदीयं नहि किंचन।
वेदवेदांगवेत्तॄणां सहस्राण्यग्रजन्मनाम्॥
हननान्मुच्यते जीवो न तु श्रीशिवहेलनात्।
स्वामी मदीयः श्रीकंठस्तस्य दासोऽस्मि सर्वदा॥

प्रायः सभ पुराणमे शिव आ विष्णुक तादात्म्य पर जोर देल गेल अछि। शिवपुराणक कथन अछि जे शिव तथा विष्णुमे कोनो प्रकारक पार्थक्य नहि अछि। वायुपुराण जे शैव पक्षक अछि ओहूमे शिवकेँ विष्णुसँ अभिन्न मानल गेल अछि।[२८] एतबे नहि, एहि पुराणक किछु स्थलपर शिवकेँ विष्णुक नाम देल गेल अछि यथा नारायण।[२९]

सौरपुराणमे सेहो कहल गेल अछि जे शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि अछि—

नावाभ्यां विद्यते भेदो मच्छक्तिस्त्वं न संशयः।

पुनश्च :—

सूत भद्रं समाचक्ष्व सेवको यस्य माधवः।
श्रीमहेशस्य विष्णोश्च तुल्यत्वं ब्रुवते कथम्।
ब्रुवन्ति तुल्यतां केचित् वैपरीत्येन केचन।
एकत्वं केचिदीशेन केशवस्य वदन्ति हि॥
अत्र सिद्धान्तमर्यादां ब्रूहि तत्त्वेन सूतज॥

पुनश्च :—

अद्वैतं शिवमीशानमज्ञात्वा नैव मुच्यते॥[३०]

---

२८ वायुपुराण, २५.२१; २४: २०, २३ :—
प्रकाशं चाप्रकाशं च जंगमं स्थावरं च यत्।
विश्वरूपमिदं सर्वं रुद्रनारायणात्मकम्॥
आत्मानं प्रकृतिं विद्धि मां विद्धि पुरुषं शिवम्।
भवानर्धशरीरं मे त्वहं तव तथैव च॥

२९ वायुपुराण, ५४. ७७।

३० सौरपुराण, ४०.१, २, ३, ९।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ई तँ भेल शिव पक्षक पुराणक बात। मुदा वैष्णव पक्षक अनेक पुराणमे सेहो शिव आ विष्णुक एकरूपताक चर्चा कयल गेल अछि। विष्णुपुराणमे कहल गेल अछि जे दुनूमे कोनो अन्तर नहि छनि आ दुनूक मध्य ओहने सम्बन्ध अछि जेहन घैल आ घैलक मध्य जलक रहैछ :—

स एवाहं महादेवः स एवाहं जनार्दनः।
उभयोरन्तरं नास्ति घटस्थजलयोरिव॥

ठीक ओहिना एहि पुराणमे शिव आ पार्वतीकेँ विष्णु आ लक्ष्मीसँ अभिन्न मानल गेल छनि।[३१] मत्स्यपुराणमे शिवकेँ 'विष्णुरूपिन्' कहल गेल छनि।[३२] ब्रह्मपुराण (२०६.४७)मे तँ स्वयं विष्णु घोषणा करैत छथि जे शिव आ हम एक छी।

वाराहपुराण (१०.१६) मे एतेक दूर धरि कहल गेल अछि जे त्रेता युगमे विष्णु शिवक रूप धारण कयने छलाह। ओहि पुराणमे अन्य स्थल पर शिवकेँ परम पुरुष मानल गेल छनि आ विष्णुसँ हुनक तादाम्य स्थापित कयल गेल छनि। यथा :—

येयं मूर्त्तिर्भगवतः शंकरः स स्वयं हरिः॥
पुरुषो विष्णुरित्युक्तः शिवो वा नामतः श्रुतः॥
अव्यक्तं तु उमा देवी श्रीर्वा पद्मनिभेक्षणा॥
त्रिशूलपाणे पुरुषोत्तमाच्युत।
त्वमादिदेवः पुरुषोत्तमो हरिः।
भवो महेशस्त्रिपुरान्तको विभुः।
कपालमालिन् शशिखण्डशेखर।
श्मशानवासिन् सितभस्मगुण्ठित।[३३]

एहिना पद्मपुराणमे सेहो शिव आ विष्णुक तादात्म्यक उल्लेख अछि :—

ममास्ति हृदये शर्वो भवतो हृदये त्वहम्।
आवयोरन्तरं नास्ति मूढाः पश्यन्ति दुर्धियः॥[३४]

एहि मतक समर्थन विद्यापति प्रस्तुत ग्रन्थमे विभिन्न पुराणक वचनसँ

---

३१ विष्णुपुराण, ८-२१।
३२ मत्स्यपुराण, १५४-७; २४९, ३८; २५०, ३०।
३३ वाराहपुराण, ९. ७; २५.४, ५, १८, १९, २४।
३४ पद्मपुराण, पाताल खण्ड, २८.२१।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सेहो करैत छथि। सर्वप्रथम ओ हरिवंशक अनुसार हरि आ हरक अद्वैत रूपक वर्णन करैत छथि।

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः।।
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं शिवः।[३५]

अर्थात् शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि छनि। एके दू भागमे विभक्त भ' नित्य रूपसँ संसारमे विचरण करैत छथि। शंकरक विना विष्णु नहि आ ने केशवक विना शिव। एहि हेतु रुद्र आ विष्णु एकत्वकें प्राप्त कयलनि।

एहि मतक समर्थनमे दोसर प्रमाणक रूपमे निबन्धकार विद्यापति लिंगपुराणक उद्धरण दैत कहैत छथि, जे विष्णु छथि से स्वयं रुद्र, जे रुद्र छथि सैह जनार्दन। दुनूकें एक मानि क' जे पूजा करैत छथि हुनका परम गति भेटैत छनि—

यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्दनः।
इति मत्वा यजेद्देवं स याति परमां गतिम्।।

हयशीर्षपंचरात्रमे सेहो एहि बातपर जोर देल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे जे व्यक्ति दुनूमे भेद नहि बुझैत छथि हुनका अवश्ये मुक्ति भेटैत छनि। जे बुद्धिमान दुनूमे भेद नहि मानैत छथि से शिवक श्रेष्ठ भक्तमे गनल जाइत छथि—

यस्त्वभेदेन तौ पश्येत् तस्य मुक्तिर्न संशयः।।

मुदा जे विष्णु आ शिवमे भेद मानैत छथि से मानव मोहसँ ग्रसित भ' नरक जाइत छथि।

कवि विद्यापतिक अन्य अन्य रचना यथा विभागसार, गंगावाक्यावली आ पदावलीसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे शिव आ विष्णु एक छथि। उदाहरण स्वरूप एहि सम्बन्धक दू गोट पद द्रष्टव्य अछि:—

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पितवसन खनहि बघछला।।
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन संकर खन देव मुरारि।।

---

३५ शैवसर्वस्वसार, हस्तलेख, पात सं० २।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खन गोकुल भए चराइअ गाय।
खन भिखि मांगिए डमरु बजाय॥
खन गोविन्द भए लिअ महादान॥
खनहि भसम भरु काँख बोकान।
एक सरीर लेल दुइ वास॥
खन वैकुण्ठ खनहि कैलास॥
भनहि विद्यापति विपरीत वानि।
ओं नारायन ओं सुलपानि॥[३६]

एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे दुनूक प्रकृति एक छनि; प्रत्ययभेदसँ दुनू मे भेद पाओल जाइत छनि। यथा—

हरिहरयोः प्रकृतिरेका प्रत्ययभेदेन रूपभेदोऽयम्।
एकस्यैव नटस्यानेकविधा भूमिका भेदात्॥

अतएव कहल गेल अछि जे जे शिवक निन्दा करैत अछि से कहिओ सत्य वैष्णव नहि मानल जा सकैछ आ' जे विष्णुक निन्दा करैत अछि से कहिओ सत्य शैव नहि मानल जा सकैछ।

शैवमतावलम्बीक हेतु सभसँ प्रमुख रूप लिंगपूजा अछि। प्रारम्भमे एकर सम्बन्ध जननेन्द्रियसँ छल। मुदा एहि मतक किछु विद्वान विरोधी सेहो छथि। ओ लिंगकेँ दोसर रूपमे मानैत छथि।[३७]

सर्वप्रथम मोहन जो दड़ोक उत्खननसँ ज्ञात होइत अछि जे ओहि युग मेँ शिवलिंगक पूजा प्रशस्त छल। कारण, उत्खननमे पाथरक अनेक शिवलिंग प्राप्त भेल अछि।

तत्पश्चात् महाभारतमे स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे लिंगमूर्त्तिमे भगावान शिवक जननेन्द्रियेक उपासना होइत छल, जकर वर्णन हम पूर्वहि कय चुकल छी।

प्राचीन पुराण सभमे सेहो लिंगमूर्त्तिकेँ जननेन्द्रियसम्बन्धी मानल गेल अछि आ' ओकर उपासनाक कारण बतयबाक हेतु अनेक कथासभक रचना भेल अछि।[३८]

---

३६ विद्यापति, सम्पादक, मित्र ओ मजूमदार पृ० ५०५, पदसंख्या ७७३।
३७ विस्तृत वर्णनक हेतु द्रष्टव्य, सी० बी० अय्यर, ओरिजिन एन्ड अर्ली हिस्ट्री ऑफ शैविज्म इन साउथ इन्डिया।
३८ शैवमत, अध्ययन ५।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुराणकाल, धरि लिंग शिवक सर्वमान्य आ' सम्मानित प्रतीक बनि गेल छल तथा ओकर उपासना दीर्घकालसँ स्थापित भ' गेल छल। एहि युगमे एहि लिंगके देखि ककरो मनमे ई विचार नहि अबैत अछि जे 'लिंगमूर्त्ति' प्रारम्भमे जननेन्द्रियक प्रतीक छल। एकर पूजा लोक ओहिना करैत छल जेना शिवक मानवाकार मूर्त्तिक।

शिवलिंगक उत्पत्तिक सम्बन्धमें एक गोट कथा प्रचलित अछि, जकर मूल रूप सभ पुराणमे एके रंग अछि। मुदा विस्तृत रूपमे किछु विभिन्नता अवश्य अछि। एकर कथानक एहि रूपक अछि :—

एक खेप ब्रह्मा आ' विष्णुमे ई विवाद भ' गेलनि जे के श्रेष्ठ छथि। ओहि समयमें भगवान शिव एक लिंगाकार अग्निस्तम्भक रूपमे ओहि दुनूक समक्ष प्रकट भलाह आ' हुनका लोकनिकें ओहि स्तम्भक ओर-छोरक पता लगयबाक हेतु कहलथिन। विष्णु नीचा दिस आ' ब्रह्मा उपर दिस बढ़लाह। मुदा केओ ओहि स्तम्भक पता नहि लगा सकलाह। अन्तमे हारि क' दुनू गोटा लौटि गेलाह। तखन ओ सभ भगवान शिवेकें सर्वश्रेष्ठ मानलनि आ' लिंगरूपक यथोचित सम्मान कयलनि। एहि कथाक जे रूप लिंगपुराणमे देल गेल अछि, ओहिमे शिवलिंगक उत्कर्ष अपन चरम सीमापर पहुँचैत अछि।

अतएव निबन्धकार विद्यापति सेहो शवैसर्वस्वसारमे लिंगपुराणेक वचन उद्धृत करैत छथि। एतय स्वयं कृष्ण कहैत छथिन जे जे महादेवक प्रारम्भिक तेज अछि, सैह प्रथम लिंग कहल गेल अछि। कल्पान्तमे सभ देवता ओहिमे लीन भय जाइत छथि। हुनकेसँ ब्रह्मासँ लय चराचर सहित सभ उत्पन्न होइत छनि।[३९] एहि मतक समर्थनमे विद्यापति भविष्यपुराणक वचनकें उद्धृत करैत कहैत छथि जे आकाश ओकर लिंग अछि, पृथ्वी ओकर पीठिका। ओ सभ भूतक निवास स्थान अछि। ओहिमे सभकें लीन होयबाक कारणें ओ लिंग कहल जाइत अछि।

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवानां लयनाल्लिंगमुच्यते॥[४०]

स्कन्दपुराणमे सेहो 'लयनाल्लिङ्गमुच्यते' कहल गेल अछि। एही लिंगमे सम्पूर्ण विश्वक लय भ' जाइत अछि आ' पुनः सृष्टिक आदिमे सम्पूर्ण संसार लिंगेसँ उत्पन्न होइत अछि। लय होयब आ प्रलय होयब एके बात होइत अछि।

३९ शैवसर्वस्वसार, पात न० २६९।
४० शैवसर्वस्वसार, पात न० २।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओ लिंग साक्षात् महेश्वर छथि :—

मूले ब्रह्मा तथा मध्ये विष्णुस्त्रिभुवनेश्वरः।
रूद्रोपरि महादेवः प्रणवाख्यः सदाशिवः।
लिङ्गवेदी महादेवी लिङ्गः साक्षान्महेश्वरः।

उपनिषद् आ' वेदान्तक तीन ग्रन्थिक अधिष्ठाता तान्त्रिकक तीन लिंग होइछ। ब्रह्मग्रन्थिमे स्वयंभूलिंग, विष्णुग्रन्थिमे बाणलिंग आ' रुद्रग्रन्थिमे इतर-लिंग। स्वयंभूलिंगक विवरण एहि रूपमे अछि :—

तन्मध्ये लिङ्गरूपी द्रुतकनककलाकोमलः पश्चिमास्यो
ज्ञानध्यानप्रकाशः प्रथमकिसलयाकाररूपः स्वयंभूः।
विद्युत्पूर्णेन्दुबिम्बप्रखरकरचयस्निग्धसन्तानहासी
काशीवासी विलासी विलसति सरिदावर्त्तरूपप्रकारः॥

अर्थात् ओकर (मूलाधारक) बीच लिंगरूप, धिपल सोनाक सदृश कोमल, ऊपरक दिस मुह (छिद्र) बला, ज्ञान-ध्यानसँ प्रकट होबयबला नवीन पत्र सदृश आकारबला स्वयंभू अछि। ओकर हास अनेक बिजली आ पूर्णचन्द्रक बिम्बक समूह सदृश अछि। ई काशीवासी (शिव) जलक भँवरक सदृश अछि आ (मूलाधारमे) शोभायमान अछि।

एतय स्वयंभू लिंगकेँ जलावर्त्तक सदृश कहल गेल अछि। बाणलिंगक वर्णन एहि रूपसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि :—

एतन्नीरजकर्णिकान्तरलसच्छक्तिस्त्रिकोणाभिधा
विद्युत्कोटिसमानकोमलवपुः सास्ते तदन्तर्गतः।
बाणाख्यः शिवलिङ्गकोऽपि कनकाकाराङ्गरागोज्ज्वलो
मौलौ सूक्ष्मविभेदयुङ्मणिरिव प्रोल्लासलक्ष्म्यालयः॥

अर्थात्, एहि कमल (अनाहत)क भीतर शक्ति पड़ल अछि, जकर नाम त्रिकोण अछि। ई कोटि विद्युतक सदृश कोमल शरीरबाली अछि। ओकर भीतरमे बाण नामक छोट सन लिंग सेहो अछि जे सोनक सदृश चमकैत रहैत अछि। ओकर माथपर छोट सन छिद्र मणिक सदृश अछि। ई उल्लासक शोभालय अछि।

एकर सभक अतिरिक्त अनेक लिंगक चर्चा कयल गेल अछि। यथा इन्द्रलिङ्ग, याम्यलिङ्ग, नैर्ऋतलिङ्ग, वारुणलिङ्ग, कुबेरलिङ्ग, रौद्रलिङ्ग, वैष्णवलिङ्ग, दैवलिङ्ग, गोललिङ्ग, आर्षलिङ्ग आ' पार्थिव आदि लिङ्ग।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्यापति विभिन्न पुराणादिक आधार पर विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिंग सभक उल्लेख शैवसर्वस्वसारमे कयने छथि। एहि लिंगमेसँ बेसी लिंगक पूजा विभिन्न देवता सभक द्वारा कयल गेल छनि। यथा :

इन्द्रनीलमयलिंग—भगवान विष्णु प्रत्येक दिन इन्द्रनीलमय लिंगक पूजा करैत छथि। एहि हेतु ओ अद्‌भुत तथा सनातन विष्णुत्वकेँ प्राप्त कयलनि अछि।

मणिमयलिंग—देवदेवेन्द्र इन्द्र प्रतिदिन उत्तम मणिमय लिंगक भक्तिपूर्वक पूजन करैत छथि। एहि कारणसँ ओ शक्रत्वकेँ प्राप्त कयलनि।

हेमलिंग—स्वर्णमय सुन्दर लिंगक पूजा नित्यहि कुवेर करैत छथि। एहिसँ ओ कुवेरत्व प्राप्त कयलनि।

चाँदीक लिंग—महात्मा विश्वेदेव विधिवत् भक्तिपूर्वक सुन्दर चानीक लिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ विश्वत्वकेँ प्राप्त कयलनि।

प्रवाललिंग - पन्नगराज प्रवालनिर्मित शिवलिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ साँपक मध्य भोगसँ समृद्ध परम पदकेँ प्राप्त कयलनि।

वज्रलोहमयलिंग—मायसभ सदिखन वज्रलोहमय लिङ्गकेँ पुजैत छथि, जाहिसँ ओ सभ मातृत्व पदकेँ प्राप्त कय परम पदकेँ प्राप्त करैत छथि।

एहि रूपसँ आनो आन लिङ्गक पूजाक उल्लेख कयल गेल अछि।

विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिङ्गक पूजा कयनिहारकेँ विभिन्न प्रकारक फल होइत छनि। यथा—एकदिस गुड़सँ निर्मित लिङ्गक पूजनसँ पुरुष श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त कय अनेक राज्यक अधिकारी होइत अछि तँ दोसर दिस स्त्री हजारो सौतिन सभक मध्य अतुलनीय सौभाग्य प्राप्त कय सर्वश्रेष्ठ (स्त्री) बनि रहैत छथि आ पुत्र-पौत्रक संग मात्र सुख प्राप्त करैत छथि।

मक्खनसँ निर्मित लिंगक पूजा कयनिहार छओ मासमे अपन अभीष्ट फल प्राप्त करैत अछि आ शिवलोकमे वास करैत अछि। ठीक ओहिना जे नोनसँ निर्मित लिंगकेँ पुजैत अछि, से श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त करैत अछि।

निबन्धकार विद्यापतिक पुराणादिक आधार पर देल गेल प्रमाणसँ ज्ञात होइत अछि जे लिंगक संख्यापर, पूजाक समयपर आ' पूजाक अवधिपर फलक मात्रा आ' विशेषता निर्भर करैत अछि।

शिवधर्मक अनुसार एकदिस प्रातःकालमे भक्तिपूर्वक जे एको खेप लिंग केँ पूजैत अछि, से एक सय कपिला गाय-दानक फल प्राप्त करैत अछि। दोसर दिस मध्याह्नमे जे शिवलिंगक पूजा करैत अछि, से सम्पूर्ण पृथ्वी-दानक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फल प्राप्त करैत अछि। तेसर दिस जे अपराह्नमे शिवलिंग कें पूजैत अछि, से दस हजार गो-दानक फल प्राप्त करैत अछि। चारिम दिस जे ब्रह्मचारी पवित्र भय तीनू सन्ध्यामे शिवकें पुजैत अछि से अपन सात पीढ़ीक उद्धार कय शिवलोकमे श्रेष्ठता प्राप्त करैत अछि।

निबन्धकार विद्यापति प्रस्तुत ग्रन्थक प्रारम्भ शिवक पंचाक्षरी मन्त्र सँ करैत छथि। ओ कहैत छथि 'ओँ नमः शिवाय' ई पंचाक्षरी मन्त्र अपन उपासक कें निश्चित रूपसँ मुक्ति प्रदान करयवला होइछ। अतएव मुक्तिक आकांक्षा राखयवला सभ ऋषि-मुनि द्वारा एकर सेवन कयल जाइत अछि। एहि मन्त्रक माहात्म्य चतुमुर्ख ब्रह्मा द्वारा सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। समस्त श्रुति, उपनिषद तथा धर्मशास्त्रक सारतत्त्व एहिमे सन्निहित अछि। सत्-चित् आ आनन्दक क्षणवला भगवान शिव स्वयं एहिमे रमण करैत रहैत छथि। एहि मन्त्रराजक आश्रय लय पैघ-पैघ ऋषि, मुनि आ' महात्मा लोकनि परम ब्रह्म कें प्राप्त कयने छलाह। भगवान शिवकें एहि प्रकार सेबलासँ जीव ब्रह्मैक्य प्राप्त कय लैत अछि।

भव-बन्धनमे ग्रसित प्राणी सभक उद्धारक हेतु भगवान शिव स्वयं एहि मन्त्रकें कहने छलाह। ई मन्त्र जाहि मानवक हृदयमे बसि जाइत अछि, ओकरा हेतु बहुत दोसर जप-तप, कष्ट सहनसँ कोन प्रयोजन छैक? ई देहधारी तखनहि धरि अनेक दुखकें भोगैत एहि दारुण जगतमे भ्रमण करैत रहैत अछि, जखन धरि एहि महामन्त्रक उच्चारण नहि कयने रहैत अछि। ई पंचाक्षरी मन्त्र अनेक मन्त्रराजक सेहो राजा अछि। ई सम्पूर्ण वेदान्तमे शिरोमणि अछि। ई सम्पूर्ण भांडार अछि। ई मोक्ष-मार्गक दीप अछि आ अविद्यासागरक बड़वानल अछि। ई महान पातकी समक पाप नष्ट करबाक हेतु दावाग्निक सदृश अछि। मुक्तिक इच्छा राखयवला व्यक्ति—चाहे ओ शूद्र, स्त्री अथवा निम्न कोटिक जाति किएक ने हो—एकरा बिना बाधाक धारण कय सकैत अछि। एहि मन्त्रराजक सभसँ पैघ विशेषता ई अछि जे एहि मे ने तँ कोनो दीक्षा अपेक्षित होइत अछि, ने कोनो होमक आवश्यकता होइत अछि आ ने कोनो संस्कार तर्पण करय पड़ैत अछि। एहि मन्त्रक कोनो विशेष काल नहि होइत अछि आ ने कोनो विशेष उपदेश होइत अछि। ई मन्त्र सदिखन शुद्धि रहैत अछि।[४१]

४१ स्कन्दपुराण, भाग १, सम्पादक श्री राम, प्रथम संस्करण, १९७०, भूमिका, पृ० २७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैवसर्वस्वसारः

ओं नमः शिवाय[1] ।।

सूर्य्याचन्द्रमसौ दृशौ तदुपरि ज्योतिर्मयं दर्शनं
बिभ्राणो गणयन्निव स्व[2]मनघं विश्वैकबीजं वपुः ।
धत्ते यः शिरसा सुधाकरकलामेणाङ्कमुद्रामयीं
देयादभ्युदयं त्रिकालविदयं देवो भवानीपतिः ।।१।।

गङ्गोत्तुङ्गतर[3]ङ्गसङ्गिमलसत्कीर्तिच्छटाक्षालित-
क्षोणिः क्ष्मातलशर्वपर्वतवरो वीरव्रता[4]लङ्कृतः ।
भूपालावलिमौलिमण्ड[5]नमणिप्रत्यर्चिताङ्घ्रिद्वयाऽ-
म्भोजः श्रीभवसिंहभूपतिरभूत् सर्वार्थिकल्पद्रुमः ।।२।।

दृप्यद्दुर्वारवैरिद्विपकुलदलनाकुण्ठकण्ठीरवश्री-
रासीमाशेषभूभृन्मणिमुकुटतटज्योतिरुद्द्योतिताङ्घ्रिः ।
तत्सूनुः पुण्यकीर्तिर्नयविनयदयादानदाक्षिण्यदक्षो
वृक्षः सर्वाश्रितानां मिथिलभुवि नृपो देवसिंहो बभूव ।।३।।

---

१ विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक हस्तलेख, नेपालसँ प्राप्त पांडुलिपिक प्रतिलिपि डॉ० जयमन्त मिश्र (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) सँ प्राप्त नेपाल पांडुलिपि, श्री शिवाय नमः ।

२ मूले, समनघं, विद्यापति-वाङ्मय, सम्पादक, डॉ० मुनीश्वर झा, निबन्धकार, पं० जीवानन्द ठाकुर, पृ० १२६, स्वमनघं ।

३ पुरुषपरीक्षा, सम्पादक प्रो० रमानाथ झा, पृ० ३७६, पाद-टिप्पणी, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गितामललसत्कीर्त्तिः; विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२६, गंगोत्तुङ्गतरङ्गिसङ्गिविलसत्, पाठान्तरम्, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गसङ्गिमलसत्; नेपाल पांडुलिपि, सङ्गम-लसत् ।

४ नेपाल पांडुलिपि, वीरप्रभालङ्कृतः ।

५ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७६, मण्डल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक

मैथिली अनुवाद

ॐ शिवकेँ प्रणाम

जे सूर्य ओ चन्द्ररूपी दू आँखिकेँ तथा ताहि दुनूक ऊपर (तेसर) ज्योतिर्मय आँखिकेँ धारण कयने छथि, जे अपन निष्कलुष शरीरकेँ विश्वक एकमात्र बीज (मूल कारण) जेकाँ मानैत छथि, ओ जे मृगाङ्क मुद्रा (हरिणक छाप) संयुक्त चन्द्रकलाकेँ मस्तकपर धारण कयने छथि से त्रिकालज्ञ भवानीपति महादेव अभ्युदय देथु ॥१॥

गंगाक उत्तुंग तरंगसँ सुशोभित अपन कीर्त्तिक छटासँ प्रक्षालित पृथ्वीतल-पर शिवपर्वत (कैलास) सदृश महान्, वीरव्रतसँ अलंकृत, राजा लोकनिक शिरो-मुकुटमणिसँ अर्चित पादपद्मद्वय एवं सकल याचक-गणकहेतु कल्पतरु-रूप श्रीभवसिंह भूपति (राजा) भेलाह ॥२॥

तनिक पुत्र देवसिंह दर्प करैत दुर्वार वैरी रूपी गज-समूहक दलन करबामे सिंह सदृश शक्तिमान्, सीमा-पर्यन्तक समस्त राजा लोकनिक मुकुटमणिक ज्योतिसँ द्योतित चरणवला पुण्यकीर्त्ति, नीति, विनय, दान ओ दाक्षिण्यमे दक्ष एवं सकल आश्रित जनक हेतु कल्पवृक्ष तुल्य मिथिलामे महाराज भेलाह ॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दत्तं येन द्विजेभ्यो द्विरदरथमहादानमन्यैरशक्यं
का वार्ता त्वन्यदाने कनकमयतुलापूरूषो येन दत्तः ।
यस्य क्रीडातडागस्तुलयति सकुरी[1]शासने वारिराशिं
देवोऽसौ देवसिंहः क्षितिपतितिलकः कस्य नाऽऽसीन्नमस्यः ॥४॥

क्षोणीभर्त्तुरमुष्य वैरिवनितावैध[2]व्यदीक्षागुरो-
रुद्भूतः शिवसिंहदेवनृपतिर्वंशावतंसः सुतः ।
शौर्य्यावर्ज्जितगौडगज्ज[3]नमहीपालोपनम्रीकृताऽ-
नेकोत्तुङ्गमतङ्गजाश्वकनकच्छत्राभिरामो[4]दयः ॥५॥

सङ्ग्रामाङ्गणसीमभीमसदृशस्तस्यानुजन्माऽभवद्
दानस्वल्पितकल्पवृक्षमहिमाऽसौ पद्मसिंहो नृपः ।
कैलासोदरसोदरीयति शरद्राकाशशाङ्कीयति
प्रालेयाचलशेखरीयति यशो यस्यारविन्दीयति ॥६॥

विद्यामङ्गिरसः सुतस्य विनयं रामस्य वृत्तं मुनेः
शौर्य्यं सूर्य्यसुतस्य धैर्य्यमवनेर्गाम्भीर्य्यमम्भोनिधेः ।
दानं दानवनन्दनस्य सकलं सारं समुच्चिन्वता
धात्रा यः शरदिन्दुसुन्दरयशाः क्षोणीपतिर्निर्मितः ॥७॥

---

१ मूले, सततं शासने; पुरुषपरीक्षा+नेपाल पांडुलिपि, सततं शासने; विद्यापति वाङ्मय, पृ० १२७, सकुरीशासने, पाठान्तर, सततमिति ।

२ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७+विद्यापयि-वाङ्मय, पृ० १२७ एवं मूले, वैदग्ध्य; पुरुषपरीक्षा, पाठान्तर, वैधव्य ।

३ मूले, गर्जन, नेपाल पांडुलिपि, तर्जन ।

४ नेपाल पांडुलिपि, भिमानोदयः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जे ब्राह्मण लोकनिकें गजरथ महादान देलनि जे अनका हेतु संभव नहि, अछि, जे स्वर्णपुरुषक तुलादान तक कयने छथि तखन अन्यान्य दानक कथे कोन ? जनिक क्रीड़ा-तड़ाग (जलकेलिक हेतु खुनाओल पोखरि) सकुरी (परागना) मे समुद्रक समता करैत अछि, एहन भूपाल तिलक देवतुल्य राजा देवसिंह ककर नमस्य नहि छलाह ॥४॥

शत्रु सभहिक पत्नीकें वैधव्यक दीक्षा देवामे आचार्य, एहि पृथिवी-पति देवसिंहक पुत्र भेलाह, अपन वंशक अलंकारस्वरूप राजा शिवसिंह जे शौर्यसँ वशीकृत गौड़, गज्जन देशक नम्रीकृत नरेश लोकनिक द्वारा समर्पित अनेकानेक विशाल हाथी, घोड़ा, स्वर्ण-छत्रादिसँ भव्य अभ्युदय कयलन्हि ॥५॥

तनिक छोट भाय छलाह राजा पद्मसिंह जे रणक्षेत्रक सीमापर (पराक्रममे) भीम सदृश छलाह, जे दानमे कल्पवृक्षक महिमाकें स्वल्प कय देने छलाह, जनिक यश कैलाश पर्वतक सहोदर सदृश, शरद्राकाक चन्द्रमा सदृश, हिमालय पर्वतक शिखर सदृश तथा श्वेत कमल सदृश (शुभ्र) छल ॥६॥

अङ्गिराक पुत्र बृहस्पतिक विद्या, रामक विनय, मुनिक आचरण, सूर्यपुत्र कर्णक शौर्य, पृथ्वीक धैर्य, समुद्रक गाम्भीर्य, दानव-सुत राजा बलिक दान—एहि रूपक (यत्र-तत्र सँ) सकल सारभूत लय विधाता राजा (पद्मसिंह) क निर्माण कयने छलाह, जनिक यश शरच्चन्द्र सदृश शुभ्र अछि ॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुग्धाम्भोधाविव[1] श्रीर्गुणगणसदन[2] विश्वविख्यातवंशे
सम्भूता पद्मसिंहक्षितिपतिदयिता धर्म्मकर्म्मैकसीमा ।
पत्युः सिंहासनस्था पृथुमिथिलमहीमण्डलं[3] पालयन्ती
श्रीमद्विश्वासदेवी जगति विजयते चर्य्ययाऽ[4]रुन्धतीव ॥८॥

इन्द्रस्येव शची समुज्ज्वलगुणा गौरीव गौरीपतेः
कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या ।
विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी
विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्त्ति भूमण्डले ॥९॥

दातारः कति नाऽभवन् कति न वा सन्तीह भूमण्डले
नैकोऽपि प्रथितप्रदानयशसो विश्वासदेव्याः समः[5] ।
यस्याः स्वर्णतुलामुखाखिलमहादानप्रदानोत्सव-
स्वर्णैरर्थि[6]मृगीदृशामपि तुलाकोटिध्वनिः श्रूयते॥१०॥

---

१ विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२७+पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७ मूले + म० म० उमेश मिश्र, विद्यापति ठाकुर, पृ० २५, पादटिप्पणी ३, एवं+ मूले दुग्धाम्भोधेरिव; विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, सं० डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पृ० ४८+विद्यापतिपदावली, प्रथम भाग, (बिहार राष्ट्रभाषापरिषद, पटना) पृ० ८५, दुग्धाम्भोधाविव ।

२ विद्यापति, सम्पादक, खगेन्द्रनाथ मित्र एवं विमानबिहारी, मजुमदार, हिन्दी रूपान्तरकर्त्ता हरेश्वरी प्रसाद, पादटिप्पणी ३७ + नेपाल पांडुलिपि + पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७+विद्यापतिपदावली (बिहार राष्ट्रभाषापरिषद, पटना) भाग १, पृ० ८५ + विद्यापति वाङ्मय, पृ० १२७+विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, पृ० ४८ एवं मूले, सदृशे ।

३ नेपाल पांडुलिपि, पृथुमखिल ।

४ तत्रैव+पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, विद्यापति-वाङ्मय पृ० १२७+ विद्यापति अनुशीलन एव मूल्यांकन, प्रथम भाग, पृ० ४८+विद्यापति, सम्पादक, खगेन्द्रनाथ मित्र एवं विमानबिहारी मजुमदार, पृ० ३८, चर्य्यया; मूले, धर्म्यं ।

५ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, समो, मूले समः ।

६ पुरुषपरीक्षा,पृ० ३७७+विद्यापति, पृ० १४+विद्यापति ठाकुर, पृ० ३०, स्वर्गग्राम ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जहिना क्षीरसागरमे लक्ष्मी उत्पन्न भेलीह तहिना गुण-गण-सदन विश्व-विख्यात वंशमे पृथ्वी-पति पद्मसिहक पत्नी श्रीमती विश्वास देवी उत्पन्न भेलीह; धर्म-कर्मक अनुष्ठानमे अद्वितीया आ' चर्या (आचरण) मे अरुन्धतीक सदृश ओ सम्प्रति पतिक सिंहासन पर आसीन विस्तृत मिथिला-मंडलक पालन करैत जगत् मे विराजमान छथि ।।८।।

उत्कृष्ट गुणवती, मधुर स्वभाववाली, ब्राह्मण-वंशजा, नीति-कौशलमे विश्वविख्यात ओ महारानी विश्वासदेवी सम्प्रति संसारमे सुशोभित छथि जे पृथ्वी-पति पद्मसिहकेँ तहिना परम प्रिय छलीह जहिना इन्द्रकेँ शची, शिवकेँ गौरी, कामकेँ रति, रामकेँ सीता ओ विष्णुकेँ लक्ष्मी ।।९।।

संसारमे कतेको दाता भय गेल छथि आ' कतेको सम्प्रति छथिहो, किन्तु दान-यशमे विख्यात ओहि विश्वासदेवीक समान ने केओ भेलाह वा ने छथि; जनिक स्वर्ण-तुलादान सन-सन महादानक अवसर पर बाँटल गेल स्वर्ण याचक-वृन्दक गृहिणीक द्वारा (अपन-अपन घरमे सोना तौलैत काल) तराजूक डंडीक टनटनाएव शब्द सुनल जाइत अछि ।।१०।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लीलालोलावनालीद्विज[1]निचयचलद्वीचिविस्तारभार-
प्रव्यक्तोन्मुक्तमुक्ताफलतरलतरद् विन्दुसन्दोहवाहः ।
पुष्यत्पुष्पौघमालाकुललिततलसद्भृङ्गसङ्गीतसङ्गी
श्रीमद्विश्वासदेव्याः समरुचिरुचिरो विश्वभागस्तडागः ॥११॥
नित्यं देवद्विजार्च्चाद्रविणवितरणारम्भसम्भावितश्री-
र्द्धर्म्मज्ञा चन्द्रचूड़प्रतिदिवससमाराधनैकाग्रचित्ता ।
विद्याऽनुज्ञाप्य विद्यापतिकृतिनमसौ विश्वविख्यातकीर्त्तिः
श्रीमद्विश्वासदेवी विरचयति शिवं शैवसर्वस्वसारम् ॥१२॥
प्रमाणमूला[2] नवपल्लवाढ्या सपुष्पिका रम्यफलोपपन्ना ।
अभीष्टसिद्ध्यै विबुधैरुपेया वाक्यावली कल्पलतेव शम्भोः ॥१३॥

(तत्रादौ शिवमाहात्म्यम्)

स्कन्दपुराणे—

उत्कृष्टतुल्यजातीनां महच्छब्दः प्रयुज्यते ।
तस्मात् समस्तदेवानां महादेवोऽयमुत्तमः ॥१४॥

लिंगपुराणे कृष्णाउवाच—

यदाद्यमैश्वरं तेजस्तल्लिङ्गं प्रथमं स्मृतम् ।
कल्पान्ते तस्य लिङ्गस्य लीयन्ते सर्वदेवताः ॥१५॥
दक्षिणे लीयते ब्रह्मा वामतश्चाप्यहं प्रभोः ।
हृदये चैव गायत्री सर्ववेदोत्तमोत्तमा ॥१६॥

---

१ विद्यापतिपदावली, प्रथम भाग पृ० ८५ + विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२८ + नेपाल पांडुलिपि एवं मूले, कुच; पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, द्विज ।

२ नेपाल पांडुलिपि, प्रणाममूला ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जलकेलिक कारणे तरंगित जलसमूह मे (पड़लासँ) माछ सभक चंचलताक कारणे आस्फालित तरंगावलीक प्रसार भार (वेगें) सँ व्यक्त ओ उन्मुक्त मोतीक दाना सन चंचल जल-विन्दु-युक्त तथा असंख्य प्रस्फुटित कमलपुष्पपर मरड़ाइत भ्रमर सभहिक संगीतसँ गुंजायमान 'विश्वभाग' नामक तड़ाग विश्वासदेवीक कान्ति सन सुन्दर अछि ॥११॥

नित्य प्रति देवता तथा ब्राह्मण लोकनिक अर्चनासँ तथा द्रव्य दानक समारोहसँ श्रीसम्पन्ना, धर्मज्ञा, प्रत्यह भगवान शंकरक आराधनामे एकाग्रचित्त भेलि, विश्व-विख्यातकीर्ति (स्वयं) विदुषी श्रीमती विश्वासदेवी पण्डित विद्यापति-केँ आज्ञा दय एहि कल्याणप्रद 'शैवसर्वस्वसार' ग्रन्थक रचना करा रहल छथि ॥१२॥

विद्वान् लोकनि अपन-अपन अभीष्ट (मनोरथ) क सिद्ध्यर्थ शम्भु-सम्वन्धी एहि वाक्यावली (शैवसर्वस्वसार नामक ग्रन्थ)केँ कल्पलता जेकाँ अपनाबथु जे प्रमाण (पुराणादि) मूलक थिक पुराणक वचनसँ नव संकल्प वाक्य रूप नव-पल्लव, सुन्दर पुष्प (पुष्पिकावाक्य) तथा भव्यफल (अभीष्ट फल-श्रुति रूप फल) सभसँ युक्त अछि ॥१३॥

प्रारम्भमे शिव-माहात्म्य एहि प्रकारसँ वर्णित अछि :—

स्कन्द पुराणमे

महत्[1] शब्दक प्रयोग समान जाति सभमे उत्कृष्टताक बोधक हेतु कयल जाइत अछि। सभ देवतामे श्रेष्ठ छथि महादेव ॥१४॥

लिङ्गपुराण मे कृष्ण कहलनि अछि :—

"जे महादेवक आद्य प्रारम्भिक तेज अछि, सएह प्रथम लिंग कहल गेल अछि। कल्पक[2] अन्तमे सभ देवता ओहि लिङ्गमे विलीन भय जाइत छथि ॥१५॥

महादेवक दक्षिण भागमे ब्रह्मा, वाम भागमे हम, हृदयमे सभ वेदमे श्रेष्ठ गायत्री[3] लीन भय जाइत छथि ॥१६॥

---

१ वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, १९६६, मोतीलाल वनारसी दास, पृ० ७८३ शिवक विशेषण ।

२ ऐजन, पृ० २५८ सृष्टिक अन्त, प्रलय, ब्रह्मक एक दिन अथवा १००० युग, मानवक ४३२०००००० वर्षक समय, सृष्टिक अवधिक माप ।

३ ऐजन, पृ० ३४३ [गायन्तं गायते—गायत्+आ+क+ङीप्] चौबीस मात्राक एक वैदिक छन्द, सन्ध्या (प्रातः आ सायम्) क समय प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा कयल गेल गुरुक मंत्र, एकरा जपलासँ बहुत पापक प्रायश्चित्त होइत अछि ओ मंत्र ई अछि— तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् (ऋग्वेद, ३।६२।१०) ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लीयन्ते मूर्द्धिन वैवेदा: सषडङ्गपदक्रमा: ।
जठरे लीयते सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
पुनरुत्पद्यते तस्माद् ब्रह्माद्यं सचराचरम् ॥१७॥

भविष्यपुराणे—

आकाशं लिङ्गमित्याहु: पृथिवी तस्य पीठिका ।
आलय: सर्वभूतानां लयनाल्लिङ्गमुच्यते ॥१८॥

कूर्म्मपुराणे कृष्णवाक्यम्—

भूतानां ब्राह्मणा देवा ब्राह्मणानान्तु देवता: ।
देवानामप्यहं देवो मम देवो महेश्वर: ॥१९॥

लिङ्गपुराणे—

सत्यं सत्यञ्च सत्यञ्च न देव: शङ्करात्पर: ।
नान्ये मुक्तिप्रदादेवा: कल्पकोटिशतैरपि ॥२०॥

शिवधर्म्मे—

नास्ति रुद्रसमो देवो नास्ति रुद्रसमो गुरु: ।
नास्ति रुद्रसमं ज्ञानं नास्ति रुद्रसमं तप: ॥२१॥

दानधर्म्मे—

ये सर्वभावानुगता: प्रपद्यन्ते महेश्वरम् ।
प्रपन्नवत्सलो देव: संसारात्तान् समुद्धरेत् ॥२२॥

अथ हरिहराद्वैतम्

हरिवंशे—

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परम: शिव: ।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यश: ॥२३॥
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं[1] शिव: ।
तस्मादेकत्वमायातौ रुद्रोपेन्द्रौ ततौ पुन: ॥२४॥

कूर्म्मपुराणे श्रीरुद्र-वाक्यम्—

योऽहं सुनिष्कलो देव: सोऽपि नारायण: पर: ।
एकीभावेन पश्यन्ति न तेषां पुनरुद्भव: ॥२५॥

---

१ ने० पा०, विष्णुना ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मस्तकमे पद-क्रम प्रमुख षड़ङ्ग सहित वेद आ पेटमे सम्पूर्ण—जगत् स्थावर-जंगम लीन भय जाइत अछि। पुनः ओहिसँ ब्रह्मासँ लक चराचर जीव उत्पन्न होइत अछि ॥१७॥

भविष्य पुराणमे कहल गेल अछि—

आकाश ओकर लिङ्ग अछि, पृथ्वी ओकर पीठिका। ओ सभ भूतक निवास-स्थान (अछि)। ओहिमे सभकेँ लीन होयबाक कारणे ओ लिङ्ग कहल जाइत अछि ॥१८॥

कूर्मपुराणमे कृष्णक वाक्य अछि—

सभ प्राणीमे श्रेष्ठ ब्राह्मण छथि आ' ब्राह्मण सभमे श्रेष्ठ देवता छथि। देवतो सभमे हम देवता छी आ हमरो देवता महेश्वर (थिकाह) ॥१९॥

लिङ्गपुराण मे कहल गेल अछि—

सत्य थिक, सत्य थिक, सत्य थिक—शंकरसँ पैघ कोनो देव नहि छथि। सय करोड़ कल्पमे सेहो दोसर देव मुक्ति नहि दय सकैत छथि। अर्थात् मुक्ति देवाक एकमात्र स्वामी शंकरे छथि ॥२०॥

शिवधर्ममे कहल गेल अछि—

रुद्रक सदृश दोसर देव नहि छथि। रुद्रक सदृश दोसर गुरु नहि छथि। रुद्रक ज्ञान सदृश कोनो ज्ञान नहि अछि आ रुद्रक सदृश (कोनो) तप नहि अछि ॥२१॥

दानधर्ममे कहल गेल अछि—

जे सभ प्रकारेँ अनुगत भय महेश्वरक शरणमे जाइत छथि, शरणागत-पर दया करयवाला देव संसारसँ हुनक उद्धार करैत छथि ॥२२॥

हरिहराद्वैत वर्णन

हरिवंशमे कहल गेल अछि—

रुद्रसँ उत्कृष्ट विष्णु आ विष्णुसँ उत्कृष्ट शिव; एके दू भागमे विभक्त भय नित्य रूपसँ संसारमे विचरण करैत रहैत छथि। ने शंकरक विना विष्णु आ ने विष्णुक विना शिव। अतएव, रुद्र आ विष्णु एकत्वकेँ प्राप्त कयने छथि ॥२३॥

कूर्मपुराण मे श्रीरुद्रक वाक्य अछि—

"जेहन निष्कलुष देव हम छी, ओहने परम विष्णु छथि। (जे लोक हमरा दुनूकेँ) एक भावसँ देखैत छथि, संसारमे हुनक पुनर्जन्म नहि होइत छनि ॥२५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हयशीर्षपञ्चरात्रे—

यस्तु भेदेन नो[1] पश्येत्तस्य मुक्तिर्न संशयः ॥२६॥

लैङ्गे—

यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्द्दनः ।
इति मत्वा यजेद्देवं स याति परमाङ्गतिम् ॥२७॥

कौर्म्मे—

मन्यन्ते ये जगद्योनिं विभिन्नं विष्णुमीश्वरात् ।
मोहादवेदनिष्ठत्वात्ते यान्ति नरकं नराः ॥२८॥

भविष्यपुराणे—

शिवस्य विष्णोर्यो भेदं न करोति महामतिः ।
शिवभक्तः स विज्ञेयो महापाशुपतश्च सः ॥२९॥

अथ शिवभक्त-लक्षणम्

शिवरहस्ये-

क इह भवति भक्तः शाश्वतश्चाष्टमूर्त्ते-
रितिमुनिरभिपृष्टो गो[2]तमेनोपमन्युः ।
प्रथितगुणगणौघः प्राह यद्विप्रवर्य्यः
श्रृणु तदनघ भूयो मोहपापापहारि ॥३०॥

न चलति निजवर्णधर्म्मतो यः ।
सममतिरात्मसुहृद्विपक्षवर्गे ॥
न हरति न च हन्ति किञ्चदुच्चैः ।
स्थिरमनसं तमवेहि देवभक्तम् ॥३१॥

स्फटिकमणिशिलानिभः क्व शम्भु-
र्म्मनसि नृणां क्वच मत्सरादिदोषः ॥
नहि तुहिनमयूषरश्मिपुञ्जे ।
भवति हुताशनदीप्तिजः प्रतापः ॥३२॥

---

१ ने० पा०, तौ०
२ तत्रैव, गौतम ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हयशीर्षपंचरात्र मे कहल गेल अछि—

ज दुनू मे भेद नहि बुझैत छथि, हुनकर मुक्ति असंदिग्ध अर्थात् निश्चय अछि ।।२६।।

लिङ्गमे कहल गेल अछि—

जे विष्णु छथि ओ स्वयं रुद्र थिकाह आ' जे रुद्र छथि, सयह विष्णु (जनार्दन) थिकाह। एहन मानि कय जे ओहि देवक आराधना करैत छथि, हुनका परम गति भेटैत छनि ।।२७।।

कूर्मपुराणमे कहल गेल अछि—

जे संसारक मूलभूत विष्णुकें शिवसँ भिन्न मानैत छथि, मोहसँ ग्रस्त ओहन मानव वेदमे निष्ठा नहि रहवाक कारणें नरक जाइत छथि ।।२८।।

भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि—

जे बुद्धिमान् शिव आ विष्णुमे भेद नहि बुझैत छथि, हुनका शिवक भक्त बुझबाक चाही आ' ओ महापाशुपत थिकाह ।।२९।।

शिवभक्तक लक्षण

शिवरहस्यमे कहल गेल अछि—

गौतम उपमन्यु[1] मुनि सँ पुछलथिन :—एहि संसारमे अष्टमूर्त्ति महादेवक शाश्वत भक्त के छथि ? एहिपर अनेक गुणसँ युक्त श्रेष्ठ विप्र (उपमन्यु) कहलथिन—बहुतो मोह आ' पापकें पुनःपुनःअपहरण करयबाला एहि बातकें सुनल जाय । जे अपन वर्ण-धर्मसँ बिचलित नहि होइत अछि, अपन मित्र आ' शत्रु सभमे समान बुद्धि राखयवाला अछि, अकस्मातो ने ककरो किछु हरण करैत अछि ने ककरो मारैत अछि, एहन स्थिर चित्तवला कें शिवभक्त बुझू ।।३०—३१।।

स्फटिक मणि शिला सदृश कतय शंभु आ कतय मानवक मनमे इर्ष्या आदि दोष। हिमकिरण (चन्द्रमा)क रश्मि-समूहमे अग्निक ज्वालाक प्रखरता नहि होइछ ।।३२।।

---

१ शिवक अनन्य भक्तमे अर्जुन आ उपमन्यु छलाह। अर्जुन अपन त्याग तपस्या द्वारा वांछित पाशुपत अस्त्र प्राप्त कयलनि। उपमन्यु जनिक तपस्या अर्जुनो सँ कठोर छलनि, ओ शिवकें छोड़ि अन्य देवताक उपासना करब अस्वीकार कय देने छलाह। शिवक आराधनाक फलस्वरूप ओ जे किछु चाहलनि से हुनका प्राप्त भेलनि आ अन्त मे शिव प्रसन्न भय हुनका अमरत्वक वरदान सेहो देलथिन। हुनकर गणना एक आदर्श भक्तमे होइत छनि। महाभारत अनुशासन पर्व, २२, ८५, ९०, एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विमलमतिरमत्सरः प्रशान्तः
शुचिचरितोऽखिलसर्वभूतरक्षी ।
मितहितवचनः सुवागमायो·
भवति शिवो हृदि यस्य शुद्धकीर्त्तेः ॥३३॥

वसति हृदि सनातने च तस्मिन्
भवति पुमान् जगतोऽस्य[1] सौम्यरूपः ।
क्षितिरसमभिर[2]स्य चात्मनोऽन्तः
कथयति चारुतयैव शालपोतः[3] ॥३४॥

यमनियमविधूतकल्मषाणा-
मनुदिनमीश्वरसक्तमानसानाम् ।
अपगतमदरागमानमत्सराणां-
जगति न दुर्लभमस्ति किञ्चिदेव ॥३५॥

अथभक्तिः

महाभारते

जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु ।
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजा[4]यते ॥३६॥
दिवसं दिवसार्द्धं वा मुहूर्त्तं वा क्षणं लवम् ।
नह्यलब्धप्रसादस्य भक्तिर्भवति शङ्करे ॥३७॥

बाणं प्रति शिववाक्यम् —

भविता सर्वमेतत्ते यथेच्छसि महासुर ।
भक्तस्त्वं मे नचादेयं भक्तानां विद्यते मम[5] ॥३८॥

---

१ ने० पा०, येन तत्रस्य ।
२ तत्रैव, क्षितिरसमतिरस्य ।
३ तत्रैव, सारपोतः
४ तत्रैव, रजायत ।
५ तत्रैव, मम विद्यते ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाहि विशुद्धकीर्त्तिबालाक हृदयमे शिव रहैत छथिन ओ व्यक्ति निर्मल बुद्धिबाला, मत्सरता-रहित, शान्त पवित्र चरित्रबाला, सभ प्राणीक रक्षक, परिमित एवं हितकारी वचन बाजयवाला, मधुरभाषी एवं माया-रहित होइत छथि ॥३३॥

ओहि सनातन (शिव)क हृदयमे निवास भेलासँ ओ पुरुष एहि संसारमे सौम्य रूपबाला होइत अछि। अपन मधुर रूपक भीतर पृथ्वीक रसकें ग्रहण कय ओ सुन्दरताककारणें शालपोत (?) कहैत छथि—॥३४॥

यम-नियमसँ जकर पाप धोआ गेल छैक, जे नित्य ईश्वरमे आसक्त मनबाला अछि, जकर मद, मान आ मत्सरता समाप्त भय गेल छैक तकरा लेल संसारमे किछुओ दुर्लभ नहि छैक ॥३५॥

आब भक्तिक सम्बन्धमे

महाभारतमे कहल गेल अछि—

हजारो करोड़ जन्ममे—संसारक अनेक योनिमे (जन्म लेलापर) जे प्राणी पाप-रहित होइत अछि, ओकरे महादेवमे भक्ति होइत छैक ॥३६॥

एक दिन अथवा आध दिन वा एक मुहूर्त्त अथवा एक क्षण वा एक पल शंकरक कृपा विना प्राप्त कयने भक्ति नहि होइत छैक ॥३७॥

बाणक प्रति शिवक वाक्य अछि :—

हे बली असुर ! जहिना चाहैत छह, तहिना तोरा सभ किछ होयतह। हमर भक्त छह आ' भक्तक हेतु किछुओ हमरा अदेय नहि अछि ॥३८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे—

श्रुतिमात्रेण योे[1] देवि मम भक्तिपरायणः[2] ।
गाणपत्यं ध्रुवं तस्य[3] ददामि कमलानने ॥३९॥
अनिष्टैव महायज्ञैरकृत्वैव महत्तपः ।
मद्भक्ता मद्गतात्मानो लभन्ते पदमव्ययम् ॥४०॥

भविष्यपुराणे—

एकः पूजयते भक्त्या भक्त्या चान्यः प्रपश्यति ।
तुल्यमेव फलं ताभ्यां भक्तिरेवात्र कारणम् ॥४१॥

भक्तिरुपास्यतया निश्चयः क्वचिदुपासनाप्युच्यते ।

देवीं प्रति शिववाक्यम्

शिवपुराणे —

मद्भक्तजनवात्सल्यं पूजायाश्चानुमोदनम् ।
स्वयमभ्यर्चनं भक्त्या ममार्थेचाङ्गचेष्टितम् ॥४२॥
मत्कथाश्रवणे सक्तिः स्व[4]रनेत्राङ्गविक्रिया ।
ममा[5]र्थे स्मरणं नित्यं य[6]च्च मां नोपजीवति ॥४३॥
भक्तिरष्टविधाह्येषा यस्मिन् म्लेच्छेऽ[7]पि वर्तते ।
स विप्रेन्द्रो मुनिः श्रीमान् स यतिः स च पण्डितः ॥
सुदुर्लभमिदं ज्ञात्वा शिवे भक्तिं समाश्रयेत् ॥४५॥

अथाविका[8]रिणः

भविष्यपुराणे—

यस्तु पूजयते लिङ्गे देवादिं मां जगत्पतिम् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा मत्परायणः ॥
तेषां प्रीतः प्रदास्यामि शुभाँल्लोकाननुत्तमान् ।४६॥

---

१ तत्रैव, ये ।
२ तत्रैव, परायणाः ।
३ तत्रैव, तेषां ।
४ तत्रैव, सूत इति ।
५ तत्रैव, ममानु स्मरणं ।
६ तत्रैव, यश्च ।
७ तत्रैव, म्लेच्छापि ।
८ तत्रैव, अथाधिकारणः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे (कहल गेल अछि) :—

हे कमलक सदृश मुखवाली (कमलवदने) देवि ! श्रवण मात्रसँ जे हमरा भक्ति मे लीन होइत अछि, ओकरा हम निश्चित रूपसँ गाणपत्य पद दय दैत छिऐक। हमर भक्त महान यज्ञ आ महान तपस्या विना कयनहि हमरामे अपना-केँ समर्पित कय अक्षय पद-(मोक्ष) केँ प्राप्त करैत अछि ॥३९—४०॥

भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि :—

एक जे भक्तिसँ पूजा करैत अछि आ दोसर जे भक्तिपूर्वक देखैत अछि, ओहि दुनू गोटेकेँ एके रंग फल भेटैत छैक। एतय (एहि समानतामे) भक्तिए कारण अछि ॥४१॥

भक्ति आराध्यपरक होइत अछि। ई सिद्धान्त अछि। कतहु उपासना सेहो भक्ति कहल जाइत अछि।

शिवपुराणमे देवीक प्रति शिवक कथन अछि :—

"हमर भक्त सभक प्रति वत्सलता, पूजाक समर्थन, भक्तिपूर्वक स्वयं पूजन करब, हमरे हेतु अपन अंगक संचालन करब, हमर कथा सुनबामे आसक्ति, हमरे हेतु वाणी आ नेत्रक काज, हमरे लेल नित्य स्मरण एवं निःस्वार्थ (विना हेतुक) भजन—ई आठो प्रकारक भक्ति जाहि म्लेच्छोमे विद्यमान अछि, ओ (म्लेच्छ) ब्राह्मण सभमे श्रेष्ठ, मुनि, लक्ष्मीवान्, संन्यासी तथा पंडित थिक। एकरा अत्यन्त दुर्लभ बुझि (लोक) शिवमे अपन भक्ति लगावय ॥४२—४५॥

एकर बाद अधिकारीक विषयमे भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि :—

जे हमर भक्त शिवलिंगमे आदिदेव जगत्पति हमर पूजा करैत अछि ओ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, (एवं) शूद्र (जे हो), ओकरापर प्रसन्न भय हम शुभ परम (उत्तम) लोक प्रदान करैत छिऐक ॥४६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्कन्दपुराणे—

विप्रस्य तु सदैवाहं शुचेरप्यशुचेरपि ।
गृह्णन् बलिं प्रहृष्यामि प्रियाणामिव दर्शना[1]त् ॥४७॥

बलिः-पूजा ।

शूद्रः[2] कर्म्माणि यो नित्यं स्वीयानि कुरुते प्रिये ।
तस्याहमर्च्चां गृह्णामि चन्द्रखण्डविभूषिते[3] ॥४८॥

स्कन्दपुराणे शिवपूजाधिकारे—

रत्नावलीन्तु यो दद्याद् ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
शूद्रः स्त्री वा महत् सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥४९॥

स्कन्दपुराणे एवं यज्ञवैभवे—

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थश्च सुव्रतः[4] ॥
एवं दिने दिने देवं पूजयेदम्बिकापतिम् ॥५०॥

संन्यासी देवदेवेशं प्रणवेनैव पूजयेत् ।
नमोऽन्तेन शिवेनैव स्त्रीणां पूजा विधीयते ॥५१॥

तदेतद्वा[5]क्यजातपर्य्यालोचनया सर्ववर्णानां सर्ववर्णस्त्रीणां सर्वाश्रमिणाञ्च शिवपूजायामधिकारोऽवसीयते ।

स्कन्दपुराणे—

नह्यहं[6] स्मयदत्तानि अहङ्कारकृतानि च ।
उपभुञ्जामि भोज्यानि पेयानि च विभावरि ॥५२॥

विभावरीति पार्वत्याः सम्बोधनम् ।

---

१ ने० पा० दर्शनाः ।
२ तत्रैव शूद्रं ।
३ तत्रैव विभूषितः ।
४ तत्रैव, सव्रतः ।
५ तत्रैव, तदेतद्बाह्यतोऽप्यर्थालोचनया ।
६ तत्रैव, नित्यहं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्कन्दपुराणमे कहल गेल अछि :—

पवित्र अथवा अपवित्रो ब्राह्मणक पूजाकें सदिखन ग्रहण करैत हम ओहिना प्रसन्न होइत छी, जेना प्रेमीक दर्शनसँ (लोक) प्रसन्न होइत अछि ।।४७।।

वलिक अर्थ पूजा अछि ।

हे प्रिये, चन्द्रखण्डविभूषिते ! जे शूद्र नित्य अपन कर्म करैत अछि, ओकर पूजाकें हम ग्रहण करैत छिऐक ।।४८।।

स्कन्दपुराणमे शिव-पूजाक अधिकारक प्रसंगमे (कहल गेल अछि :—

जे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अथवा स्त्री रत्नावली दैत अछि, ओ हमरा लोकमे महान् सौख्यकें प्राप्त करैत अछि ।।४९।।

स्कन्दपुराणमे यज्ञवैभवक प्रकरणमे (कहल गेल अछि) :—

ब्रह्मचारी, गृहस्थ आ वानप्रस्थ तथा व्रतधारी व्यक्ति प्रतिदिन एहि प्रकारसँ अम्बिकापति महादेवक पूजा करथि ।।५०।।

संन्यासी प्रणवक[1] द्वारा देवदेवेश (देवाधिदेव महादेव)क पूजा करथि । 'शिवाय नमः' एहिसँ स्त्रीगणक हेतु पूजाक विधान अछि ।।५१।।

एहि प्रकारसँ एहि वाक्य सभक पर्यालोचनासँ ज्ञात होइत अछि जे शिव-पूजामे सभ वर्ण, सभ वर्णक स्त्री आ' सभ आश्रमक लोक सभकें अधिकार अछि ।

स्कन्दपुराणमे कहल गेल अछि :—

हे पार्वती हम गर्व-पूर्वक देल गेल आ अहंकारसँ बनाओल भोज्य तथा पेय पदार्थ सभकें ग्रहण नहि करैत छिऐक ।।५२।।

['विभावरि'[2] पार्वतीक सम्बोधन थिक ।]

---

१ पवित्र अक्षर 'ओम्' ।; रघुवंश, १. ११—
आसीन्महिक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव, मनुस्मृति, २.७४; भगवद्गीता, ७. ८।

२ पार्वती जगदम्बा दुर्गासँ अभिन्न छथि । दुर्गाकें सप्तशती मे रात्रिस्वरूपा मानल गेल अछि । अतः पार्वती लेल एहि सम्बोधनक प्रयोग कयल गेल अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ स्मरणफलकथनम्

स्कन्दपुराणे शिवस्मरणस्य—

कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते ।
प्रायश्चित्तन्तु तस्यैकं शिवसंस्मरणं परम् ॥५३॥

अद्यकृतपापनिवृत्तिकामः शिवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुरणे रुद्रस्मरणस्य—

स्मरणादेव रुद्रस्य पापसंघातपञ्जरम् ।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा ॥५४॥

अद्य पापसंघातपञ्जरभेदकामनया रुद्रस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये सततरुद्रस्मरणस्य—

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोपि वा ।
यः स्मरेत् सततं रुद्रं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥५५॥

अद्य वाह्याभ्यन्तरशुचित्वभवनकामनया सततं भगवतो रुद्रस्य स्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये शिवस्मरणस्य—

ये स्मरन्ति च मां देवि शाठ्येनापि यशस्विनि ।
राजानस्ते नरा मर्त्ये चित्तसाध्यानुरूपतः[1] ॥५६॥

अद्य मर्त्यलोकाधिकरणकराजत्वभवनकामनया शिवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्मे महादेवस्मरणस्य—

महादेवेति यो नाम कीर्त्तयेत् संस्मरेदपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥५७॥

अद्य सर्वपापविमुक्तिरुद्रलोकप्राप्तिकामनया महादेवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये चंद्रशेखरपादाब्जस्मरणस्य—

संसारोरगदष्टानां जन्तूनामविवेकिनाम् ।
चन्द्रशेखरपादाब्जस्मरणं परमौषधम् ॥५८॥

---

१ ने० पा०, चित्त-शब्दानुरूपतः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आव (शिव) स्मरणक फल कहल जाइत अछि—

स्कन्दपुराणमे—

पाप कयला उत्तर जाहि मनुष्यकें पश्चात्ताप होइत छैक, ओकरा हेतु एक गोट उत्कृष्ट प्रायश्चित्त अछि – शिवक स्मरण ॥५३॥

आइ कयल गेल पापक निवृत्तिक कामनासँ हम शिवक स्मरण करब।

भविष्य पुराणमे रुद्रक स्मरणक विषयमे कहल गेल अछि :—

रुद्रक स्मरणहिसँ पाप-समूहक पिंजरा सय टूक भय जाइत अछि; यथा वज्रक प्रहारसँ पहाड़ ॥५४॥

आइ हम पाप-समूहक पिंजराकें तोड़बाक कामनासँ रुद्रक स्मरण करब।

शिवमाहात्म्यमे सदिखन रुद्रक स्मरणक विषयमे कहल गेल अछि :—

अपवित्र, पवित्र अथवा सभ अवस्थामे अवस्थित जे सतत रुद्रक स्मरण करैत अछि, ओ बाहर आ भीतरसँ पवित्र भय जाइत अछि ॥५५॥

आइ हम बाह्याभ्यन्तर (भीतर-बाहर) पवित्र होयबाक कामनासँ सतत रुद्रक स्मरण करब।

शिवरहस्यमे शिव-स्मरणक विषयमे कहल गेल अछि :—

हे यशस्विनी देवि ! जे शठतोसँ हमर स्मरण करैत अछि, आ मर्त्यलोकमे चित्तसाध्यक अनुसार राजा भय जाइत अछि ॥५६॥

आइ हम मर्त्यलोकमे राजा होयबाक कामनासँ शिवक स्मरण करब।

शिवधर्ममे महादेवक स्मरणक विषयमे कहल गेल अछि—

'महादेव'—एहि नामक जे कीर्त्तन अथवा स्मरण करैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भय रुद्रलोक जाइत अछि ॥५७॥

आइ हम सभ पापसँ विमुक्त भय रुद्र लोकक प्राप्तिक कामनासँ महादेवक स्मरण करब।

शिवमाहात्म्यमे चन्द्रशेखर (महादेव)क पदकमल-स्मरणक फल :—

संसाररूप सापसँ काटल गेल अविवेकी लोकसभक हेतु सभसँ पैघ औषधि चन्द्रशेखरक पद-कमलक स्मरण अछि ॥५८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यसांसारिकदुःखाभावकामो भगवतश्चन्द्रशेखरस्य पादाब्जस्मरणमहङ्करिष्ये ।

अथ स्कन्दपुराणे नित्यं महेश्वरस्मरणस्य—

शाठ्येना[1]पि नरा नित्यं ये स्मरन्ति महेश्वरम् ।
तेपि यान्ति तनुं त्यक्त्वा शिवलोकमनामयम् ॥५९॥

नित्यं सङ्कल्पप्रभृतियावज्जीवम्[2] ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं तनुत्यागानन्तरानामयशिवलोकगमनकामो महेश्वरस्मरणमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव[3] नित्यमित्युपक्रम्य विरूपाक्षस्मरणस्य—

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा द्विजोत्तमाः ।
ये स्मरन्ति विरूपाक्षं विज्ञेयास्ते महेश्वराः[4] ॥६०॥

एककालमित्यादि विकल्पः शक्त्यपेक्षया फलभूतापेक्षया वा व्यवस्थितः

अद्यादि महेश्वरत्वभ[5]वनकाम एककालं द्विकालं त्रिकालं वा नित्यशो विरूपाक्षस्मरणमहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सदा रुद्रस्य स्मरणस्य—

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः ।
ये स्मरन्ति सदा रुद्रं पापं तेषां न विद्यते ॥६१॥

सदेति पदस्मरणात् सङ्कल्पप्रभृति यावज्जीवं प्रतिदिनकर्त्तव्यताव गम्यते ।

अद्य लाभजयपरकर्तृकपराभवाभावपापशून्यत्वकामोभगवतो रुद्रस्य यावज्जीवं प्रत्यहं स्मरणमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा० शब्देनापि ।
२ तत्रैव, 'प्रत्यहम्' अधिक पाठ अछि ।
३ तत्रैव, अत्रैव ।
४ तत्रैव, गणेश्वराः ।
५ तत्रैव, गणेश्वरत्व ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हम आइ सांसारिक दुःखसँ मुक्तिक कामनासँ भगवान् चन्द्रशेखरक पद-कमलक स्मरण करब ।

ओकर बाद स्कन्दपुराणमे महेश्वरक नित्य स्मरणक विषयमे कहल गेल अछि :—

जे मानव शठतो पूर्वक महेश्वरक स्मरण करैत अछि, ओ शरीर त्याग कय अनामय (रोगरहित वा पापरहित) शिवलोकके॑ प्राप्त करैत अछि ॥५९॥

'नित्यक' अर्थ अछि संकल्पक दिनसँ लय जीवनपर्यन्त प्रत्येक दिन ।

आइसँ यावत्-जीवन प्रतिदिन हम शरीर त्यागलाक बाद दुःख-शोकादि-रहित शिवलोक जयबाक कामनासँ महादेवक स्मरण करब ।

ओतहि प्रतिदिन विरूपाक्ष (महादेव)क स्मरणक फल:—

हे द्विज-श्रेष्ठ ! जे व्यक्ति नित्य एक बेर, दू बेर अथवा तीन बेर विरूपाक्षक स्मरण करैत छथि, तनिका महेश्वर बुझबाक चाही ॥६०॥

शक्तिक अनुसार एक बेर, दू बेर आदि विकल्प रूपसँ कहल गेल अछि ।

आइ हम महेश्वर होयबाक कामनासँ नित्य एक बेर, दू बेर अथवा तीन बेर विरूपाक्षक स्मरण करब ।

नन्दिकेश्वरमे सर्वदा रुद्रक स्मरणक फल :—

जे सदिखन रुद्रक स्मरण करैत अछि, ओकरा लाभ होइत छैक, विजय होइत छैक, ओकरा पराभव कतय ? ओकरामे कोनो पाप नहि रहैत छैक ॥६१॥

'सदा' ई पद जन्मसँ लय जीवनपर्यन्त प्रत्येक दिन (स्मरणक) कर्त्तव्यताक बोध करबैत अछि ।

आइ हम लाभ, जय, दोसरसँ पराभव तथा पापक निवारणक कामनासँ आजीवन प्रतिदिन भगवान् रुद्रक स्मरण करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवमाहात्म्ये प्रात्यहिक[1] शिवस्मरणस्य—

सर्वथा वर्त्तमानोपि यो मां देवि सदा स्मरेत्।
रुद्रलोकमवाप्नोति पश्यते वृषभध्वजम् ॥६२॥

अद्यादि रुद्रलोकावाप्तिवृषभध्वजदर्शनकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शिवस्मरण-महङ्करिष्ये।

अथकीर्त्तनफलम्

स्कन्दपुराणे महादेवेतिकीर्त्तनस्य—

अश्वमेधसहस्रस्य सहस्रगुणितस्य च।
फलमाप्नोतिवचनान्मे महादेवेति नामतः ॥६३॥

अद्य सहस्रगुणिताश्वमेधसहस्रजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो महादेवेति कीर्त्तन-महङ्करिष्ये।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य—

कोटिष्वष्टादशसु यत्तीर्थानां लभते[2] फलम्।
एकस्थं लभते तत्तु महादेवेतिकीर्त्तनात् ॥६४॥

अद्याष्टादशतीर्थकोटिसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो महादेवेति कीर्त्तन-महङ्करिष्ये।

नारदीये महादेवेति कीर्त्तनस्य

धेनूनामष्टकोटीनां सम्यग्दानेन यत्फलम्।
तत्तुल्यं तद्विशिष्टं वा महादेवेति कीर्त्तनात् ॥६५॥

अद्याष्टकोटिसंख्यकधेनुसम्यग्दानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामोमहादेवेतिकीर्त्तन-महङ्करिष्ये।

तत्रैव महादेवेति नामकीर्त्तनस्य—

महादेवेति यैर्नाम सकृदुच्चरितं नरैः।
अलं भयं यमात्तेषां सुघोरान्नरकादपि[3] ॥६६॥

---

१ ने० पा० प्रात्याहिक।
२ तत्रैव, समता।
३ तत्रैव, सुघारनरकादपि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवमाहात्म्यमे प्रतितिन शिवक स्मरणक फल :—

हे देवि ! सब वस्तु वर्त्तमान रहलोपर अर्थात् सभ प्रकारक सुख-सुविधा रहलोपर जे सर्वदा हमर स्मरण करैत अछि, ओ रुद्रलोकके प्राप्त कय वृषभध्वज-(महादेव)क दर्शन करैत अछि ।।६२।।

आइ हम रुद्रलोकक प्राप्ति आ' वृषभध्वज (महादेव)क दर्शनक कामनासँ आजीवन प्रतिदिन शिवक स्मरण करब ।

आव कीर्त्तनक फल

स्कन्दपुराणमे 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तनक फल :—

महादेव एहि नामक कीर्त्तनसँ हजारो अश्वमेध यज्ञ तथा सहस्रो गुणित अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ।।६३।।

आइ हम सहस्र गुणित सहस्र अश्वमेध यज्ञक अनुष्ठानसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ महादेव' एहि नामक कीर्त्तन करब ।

ओतहि महादेव नामक कीर्त्तनक फल :—

(केओ) जे फल अठारह कोटि तीर्थक दर्शनसँ प्राप्त करैत अछि, ओ फल 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तनसँ एकहि ठाम प्राप्त करैत अछि ।।६४।।

आइ हम अठारह करोड़ तीर्थ सभक सेवनजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तन करब ।

नारदीय पुराणमे महादेवक कीर्त्तनक फल :—

आठ करोड़ गायक सम्यक् दानसँ जे फल प्राप्त होइत अछि, ओकर सदृश अथवा ओहूसँ बढ़िकय महादेवक कीर्त्तनसँ प्राप्त होइत अछि ।।६५

आइ हम आठ करोड़ गायक सम्यक् दानजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ महादेवक कीर्त्तन करब ।

ओतहि 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तनक फल :—

जाहि लोक सभक द्वारा एको बेर महादेवक नाम उच्चरित भेल अछि, हुनका लोकनिक हेतु यमराजसँ आ' घोर नरकहुसँ भय व्यर्थ थिक ।।६६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य यमभयघोरनरकभयाभावकामो महादेवेति नामोच्चारणमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये शङ्करकीर्त्तनस्य—

ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्च्चयन् ।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ सङ्कीर्त्य शङ्करम् ॥६७॥

अद्य सत्ययुगाधिकरणकशिवध्यानत्रेतायुगाधिकरणकबहुशिवयज्ञद्वापरयुगाधिकरणकशिवार्च्चनजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शङ्करमहं कीर्त्तयिष्ये ।

भविष्ये रुद्रकीर्त्तनस्य—

कीर्त्तयन्ति च ये रुद्रं सकृदप्येव मानवाः ।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते सप्तजन्मकृतैरपि ॥६८॥

अद्य सप्तजन्मकृतसर्वपापविमुक्तिकामो भगवन्तं शङ्करमहं कीर्त्तयिष्ये

नन्दिकेश्वरे महेश्वरसततकीर्त्तनस्य—

ये कीर्त्तयन्ति सततं देवदेवं महेश्वरम् ।
न मोहमधि[1]गच्छन्ति येऽपि स्युः पापयोनयः ॥६९॥

अद्य मोहविरहकामो भगवन्तं महेश्वरमहं कीर्त्तयिष्ये ।

तत्रैव ब्राह्मणकर्त्तृककीर्त्तनस्य—

कीर्त्तनाद्देवदेवस्य तेजस्वी ब्राह्मणो भवेत् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकमवाप्नुयात् ॥७०॥

अद्य तेजस्वित्वसर्वपापविमुक्तत्वरुद्रलोकावाप्तिकामो भगवतो महेश्वरस्य कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव रुद्रेति त्रिःकीर्त्तस्य

रुद्र रुद्रेति रुद्रेति यश्च ब्रूयाद्विचक्षणः ।
कीर्त्तनान्नीलकण्ठस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७१॥

अद्य सर्वपापविमुक्तत्वकामो नीलकण्ठकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, मवगच्छन्ति ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम यम आ घोर नरकक भयक निवारणक कामनासँ 'महादेव' एहि नामक उच्चारण करब ।

शिवरहस्यमे शंकर-कीर्त्तनक फल :—

सत्ययुगमे ध्यान करैत, त्रेतामे यज्ञ करैत, द्वापरमे पूजा करैत जे फल प्राप्त करैत अछि, ओ फल कलियुगमे शंकरक कीर्त्तन कय पबैत अछि ॥६७॥

आइ हम सत्ययुगमे शिवक ध्यानसँ त्रेतायुगमे अनेक शिव-यज्ञ तथा द्वापरयुगमे शिवक अर्चनजन्य पुण्यक समान पुण्य फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शंकरक कीर्त्तन करब ।

भविष्यपुराणमे रुद्रक कीर्त्तनक फल :—

जे मनुष्य एको बेरि रुद्रक कीर्त्तन करैत अछि, ओ सातो जन्मक कयल सभ पापसँ मुक्त भय जाइत अछि ॥६८॥

आइ हम सात जन्ममे कयल गेल सभ पापसँ मुक्तिक कामनासँ भगवान शंकरक कीर्त्तन करब।

नन्दिकेश्वरमे महेश्वरक निरन्तर कीर्त्तनक फल अछि :—

जे व्यक्ति सर्वदा देवतो सभक देव महेश्वरक कीर्त्तन करैत अछि, ओ पाप-योनिमे रहिओ कय मोहकेँ नहि प्राप्त करैत अछि ॥६९॥

आइ हम मोहक अभावक कामनासँ भगवान् महेश्वरक कीर्त्तन करब।

ओतहि ब्राह्मण द्वारा कयल गेल कीर्त्तनक फल :—

महादेवक कीर्त्तनसँ ब्राह्मण तेजस्वी होइत छथि, सभ पापसँ मुक्त होइत छथि आ' रुद्रलोककेँ प्राप्त करैत छथि ॥७०॥

आइ हम तेजस्विता, सभ पापसँ मुक्ति आ रुद्रलोक जयबाक कामनासँ भगवान् महेश्वरक कीर्त्तन करब।

ओतहि 'रुद्र' एकर तीन बेरि कीर्त्तनक फल :—

जे बुद्धिमान रुद्र, रुद्र, रुद्र कहैत छथि, ओ नीलकण्ठ (महादेव)क कीर्त्तनसँ सभ पापसँ मुक्त भय जाइत छथि ॥७१॥

आइ हम सभ पापसँ मुक्तिक कामनासँ नीलकण्ठ (महादेव)क कीर्त्तन करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव महादेवेति नामकीर्त्तनस्य—

महादेवेति यो नाम कीर्त्तयेत् संस्मरेदपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥७२॥

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तत्वरुद्रलोकगमनकामो महादेवेति नामकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवइत्यक्षरद्वयसततकीर्त्तने—

यः शिवः शिव इत्येतद्[1]द्व्यक्षरं मन्त्रमभ्यसेत् ।
एकाक्षरं वा सततं स याति परमाङ्गतिम् ॥७३॥

ओम् इत्येकाक्षरम् ।

अद्य परमगतिप्राप्तिकामः सततं शिव इत्यक्षरद्वयकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।
ओम् इत्येकाक्षरसततकीर्त्तनेप्येतदेव फलम् ।

तत्रैव शिव इत्यक्षरद्वयसकृदुच्चारणे —

सकृदुच्चरितं येन शिवइत्यक्षरद्वयम् ।
बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥७४॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामः शिव इत्यक्षरद्वयोच्चारणमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य

महादेवेति शब्दोऽस्ति वागस्ति वशवर्त्तिनी ।
तथापि नरके घोरे पतन्तीह किमद्भुतम् ॥७५॥

अद्य घोरनरकपतनाभावकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेतिकीर्त्तनस्य

कोटयो ब्रह्महत्याया अगम्यागमनस्य च ।
सद्यः प्रलयमायान्ति महादेवेति कीर्त्तनात् ॥७६॥

अद्य तात्कालिककोटिसंख्यकब्रह्महननागम्यागमनजन्यपापक्षयकामो महादेवेतिकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति त्रिर्जपे

महादेव महादेव महादेवेति यो जपेत् ।
नित्यं जयो विभूतिश्च मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ॥७७॥

---

१. ने० पा०, इत्येव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तनक फल अछि—

'महादेव' एहि नामक जे कीर्त्तन अथवा स्मरणो करैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त होइत अछि आ' रुद्रलोक जाइत अछि ॥७२॥

आइ हम सभ पापसँ मुक्ति आ रुद्रलोकगमनक कामनासँ 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तन करब ।

ओतहि 'शिव' एहि दू अक्षरक सर्वदा कीर्त्तनक फल कहल गेल अछि :—

जे 'शिव', 'शिव'—एहि दू अक्षरक अथवा एक अक्षरक मन्त्रक सदिखन अभ्यास करैत अछि, ओ परम गतिकेँ प्राप्त करैत अछि ॥७३॥

एकाक्षरक अभिप्राय अछि 'ओम्' ।

आइ हम परम गति प्राप्तिक कामनासँ सर्वदा 'शिव' एहि दू अक्षर मन्त्रक कीर्त्तन करब ।

'ओम्' एहि एकाक्षरक सतत कीर्त्तनक सेहो इएह फल अछि ।

ओतहि 'शिव' एहि दू अरक्षक एको बेरि उच्चारणक फल :—

जे 'शिव' एहि दू अक्षरक उच्चारण एको बेरि करैत अछि, ओ मोक्ष-प्राप्तिक हेतु कटिबद्ध भ' जाइछ ॥७४॥

आइ हम मोक्ष-प्राप्तिक कामनासँ 'शिव' एहि दू अक्षरक उच्चारण करव ।

ओतहि महादेवक कीर्त्तनक फल :—

'महादेव' ई शब्द अछि आ वाणी वशवर्त्तिनी अछि, तथापि (लोक) घोर नरकमे खसैत अछि—ई केहेन आश्चर्य थीक ॥७५॥

आइ हम घोर नरकमे नहि खसबाक कामनासँ महादेवक कीर्त्तन करव ।

(पुनः) ओतहि महादेवक कीर्त्तनक फल—

'महादेव' एकर कीर्त्तनसँ कोटिओ ब्रह्महत्या आ' अगम्यागमनक पाप सद्यः नष्ट भय जाइछ ॥७६॥

आइ हम तात्कालिक कोटिसंख्यक ब्रह्महत्या आ' अगम्यागमन-जन्य पापक क्षयक कामनासँ महादेवक कीर्त्तन करब ।

ओतहि महादेवक तीन बेरि जपक विषयमे :—

जे महादेव, महादेव, महादेव तीन बेरि जपैत अछि, ओकर हाथमे जय, सम्पत्ति आ मुक्ति सदा रहैत छैक ॥७७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य सदातनजयविभूतिमत्वमुक्तिप्राप्तिकामो महादेवेति त्रिर्जपमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य—

महादेवेति वाग्वल्ली चतुरक्षरपल्लवा ।
भक्तिसिक्ताफलत्येषा चतुर्वर्गफलान्यहो ॥७८॥

अद्य चतुर्वर्गफलप्राप्तिकामो भक्त्या महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव पुनर्महादेवेति कीर्त्तनस्य —

महादेवेति यस्यास्ते वक्त्रे वर्णचतुष्टयम् ।
चतुर्भिराश्रमैर्वेदैः पुरुषार्थैः स युज्यते ॥७९॥

अद्य चतुराश्रमचतुर्वेदचतुःपुरुषार्थयोगित्वकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अथ देवीपुराणे महादेवेतिनित्यकीर्त्तनस्य—

वेदैरधीतैः किन्तस्य किं तीर्थैः सेवितैरपि ।
यो मर्त्यश्च पुनर्ब्रूते महादेवेति नित्यशः ॥८०॥

अद्यादि बहुवेदाध्ययनबहुतीर्थसेवनजन्यफलसमफल प्राप्तिकामो नित्यशो महादेवेति कीर्त्तनमहं करिष्ये ।

अथ यात्रा

भविष्यपुराणे—

सुदूरमपि गन्तव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥८१॥
विश्वजिन्न्यायात् स्वर्गः फलम्—

अद्य स्वर्गप्राप्तिकामया शिवक्षेत्रं प्रति यात्रामहङ्करिष्ये ।

शिवधर्मोत्तरे-शिवाश्रमतीर्थगमने—

ये शिवाश्रमतीर्थानि श्रद्धया यान्ति मानवाः ।
ते क्रीडन्ति महाभोगैर्दिव्यैः शिवपुरे नराः[1] ॥८२॥

---

१ ने० पा०, तथा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम सदातन जय, विभूति एवं मुक्तिक प्राप्तिक कामनासँ 'महादेव' एकर तीन बेरि जप करब।

ओतहि महादेवक कीर्त्तनक फल :—

महादेव एहि चारि अक्षर-रूप पल्लवसँ युक्त भक्तिसँ पटाओल एहि वाणीरूपी लतामे चारू पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम आ' मोक्षरूपी फल फड़ैत अछि ॥७८॥

आइ हम चतुर्वर्ग फल प्राप्तिक कामनासँ भक्तिपूर्वक 'महादेव' एहि नामक कीर्त्तन करब।

ओतहि पुनः 'महादेव' नामक कीर्त्तनक फल :—

'महादेव' ई चारू वर्ण जनिक मुँहमे छन्हि, ओ चारू आश्रम (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ आ संन्यास), चारू वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद आ' अथर्ववेद) आ चारू पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष)सँ युक्त रहैत छथि ॥७९॥

आइ हम चारू आश्रम, चारु वेद, चारू पुरुषार्थक योग्यता प्राप्तिक कामनासँ महादेवक कीर्त्तन करब।

एकर बाद देवी पुराणमे महादेवक कीर्त्तनक फल :—

जे मानव नित्य बारम्बार महादेवक नाम लैत अछि, ओकरा वेदक अध्ययन अथवा तीर्थक सेवनसँ की प्रयोजन ? ॥८०॥

आइ हम अनेक वेदक अध्ययन आ अन्यान्य तीर्थक सेवनसँ होअएबाला फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ महादेवक कीर्त्तन प्रतिदिन करब।

आब शिवतीर्थक यात्राक फल

भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि :—

जतय महादेव दूरोमे होथि, ओतय जयबाक चाही। विश्वजित न्यायसँ स्वर्गक फल भेटैत छैक ॥८१॥

आइ हम स्वर्गकप्राप्ति कामनासँ शिव-क्षेत्र दिस यात्रा करब।

शिवक आश्रम तथा शिवतीर्थ जयबाक विषयमे शिवधर्मोत्तर पुराणमे वचन अछि—

जे मानव श्रद्धापूर्वक शिवक आश्रमरूप तीर्थमे जाइत अछि, ओ कैलासमे दिव्य भोगक संग क्रीड़ा करैत अछि ॥८२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य शिवपुराधिकरणकबहुदिव्यमहाभोगसहितात्मक्रीडनकामः शिवक्षेत्र तीर्थानि प्रति यात्रामहङ्करिष्ये ।

अथदर्शनफलम्

नन्दिपुराणे—

गङ्गापुष्करकेदारनैमिषादिष्वनेकशः ।
तीर्थस्नानस्य यत्पुण्यं शिवं दृष्ट्वैव तल्लभेत् ॥८३॥

अद्य गंङ्गापुष्करकेदारनैमिषाद्यनेकतीर्थनिकस्नानजन्यपुण्यसमतात्कालिकपुण्य-प्राप्तिकायो भगवनः शिवदर्शमहङ्करिष्मे ।

लिङ्गपुराणे पूजित महादेवदर्शनस्य

पूजिनं वा महादेवं पूज्यमानमथापि वा ।
दृष्ट्वा प्रयाति वै मर्त्यो ब्रह्मलोकमसंशयम् ॥८४॥

अद्य ब्रह्मलोकप्राप्तिकामः पूजितमहादेवदर्शनमहङ्करिष्ये ।

पूज्यमानदर्शननेंपीयमेव कामना ।

नन्दिपुराणे लिङ्गदर्शनस्य—

शिवलिङ्गं महापुण्यं यः प्रपश्यति मानवः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥८५॥

अद्य सर्वपापविमुक्तिरुद्रलोकगमनकामः शिवलिङ्गदर्शनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मोत्तिरे सम्पूज्यमानशिवदर्शनस्य

सम्पूज्यमानं विधिना यः पश्येच्छ्रद्धया शिवम् ।
सोऽपि योगफलं कृत्स्नं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥८६॥

अद्याशेषयोगफलसमफलप्राप्तिकामः सम्पूज्यमानशिवदर्शनमहङ्करिष्ये ।

तत्रं वार्च्चितशिवदर्शनस्य

अर्च्चितं शङ्करं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥८७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम शिवपुरक दिव्य महाभोग सभक आनन्दक कामनासँ शिवक क्षेत्र तीर्थ दिस यात्रा करब ।

एकर बाद नन्दिपुराणमे शिव-दर्शनक फल कहल गेल अछि—

गंगा, पुष्कर, केदार आ नैमिषादि पवित्र स्थान सभमे अनेक बेरि तीर्थ-स्नानक जे फल अछि, ओ फल शिवक दर्शनेसँ प्राप्त होइत अछि ॥८३॥

हम आइ गंगा, पुष्कर, केदार आ नैमिषादि अनेक तीर्थ सभमे स्नानसँ प्राप्त होबएबला पुण्यक सदृश तात्कालिक पुण्यप्राप्तिक कामनासँ भगवान् शंकरक दर्शन करब ।

लिङ्गपुराणमे पूजित महादेवक दर्शनक फल—

पूजित अथवा पूजल जाइत महादेवकेँ देखिकए मनुष्य निश्चय ब्रह्मलोककेँ प्राप्त करैत अछि ॥८४॥

आइ हम ब्रह्मलोक-प्राप्तिक कामनासँ पूजित महादेवक दर्शन करब । पूजल जाइत (पूज्यमान) महादेवक दर्शनमे इएह कामना होइत अछि ।

नन्दिपुराणमे लिङ्गदर्शनक फल—

जे मानव महान पुण्यशाली शिव-लिंगक दर्शन करैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भय रुद्रलोक जाइत अछि ॥८५॥

आइ हम सभ पापसँ मुक्तिक आ रुद्रलोक-गमनक इच्छासँ शिवलिंगक दर्शन करब ।

शिवधर्मोत्तरमे पूजल जाइत शिवक दर्शनक फल—

जे विधिपूर्वक (शिवक) पूजा आ' श्रद्धापूर्वक शिवक दर्शन करैत अछि, ओहो सम्पूर्ण योगक फल प्राप्त करैत अछि । एहिमे कोनो संशय नहि ॥८६॥

आइ हम समस्त योग-फलसदृश फलप्राप्तिक कामनासँ पूजा होइत शिवक दर्शन करब ।

ओतहि पूजित शिवक दर्शनक फल—

पूजित शंकरक जे दर्शन करैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भय जाइत अछि ॥८७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य सर्वपापविमुक्तिकामनयाऽर्च्चितशङ्करदर्शनमहङ्करिष्ये ।

अथस्पर्शनफलम्

शिवधर्म्मे—

शिवलिङ्गं महापुण्यं सर्वदेवैर्नमस्कृतम् ।
यः स्पृशेदपि पाणिभ्यां न स पापैः प्रलिप्यते ॥८८॥

अद्य सर्वपापाऽप्रलिप्तत्वकामः पाणिभ्यां शिवलिङ्ग स्पर्शनमहं करिष्ये ।

अथालयसम्मार्जनफलम्

नन्दिकेश्वरे—

दृष्ट्वा परिहरन् जन्तून् मार्जन्या मृदुसूक्ष्मया ।
शनैः सम्मार्ज्जनं कुर्य्याच्चान्द्रायणफलं लभेत् ॥८९॥

अद्य चान्द्रायणफलसमफलप्राप्तिकामनया दृग्गोचरजन्तून् परिहरन् मृदुसूक्ष्ममार्ज्जन्या भगवतः शिवस्यालयसम्मार्ज्जनमहङ्करिष्ये ।

अथ रोगार्त्तसद्यःप्रसूतजीर्णवन्ध्येतरगवी[1]शुभस्थानाकाशान्यतरस्थानपतितजन्तुवर्जितोर्ध्वाधःपतितव्यतिरिक्तगोमयवस्त्रपूततोयकरणकलेपनस्य ।

भविष्यपुराणे —

नाहार[2]रसजीर्णाया वन्ध्याया न च भारत ।
रोगार्त्तनवसूताया न गोर्गोमयमाहरेत् ॥९०॥

खसंस्थं गोमयं गृह्यस्थाने वा पतितं शुभे[3] ।
उपर्य्यधश्च सन्त्यज्य प्रत्यग्रं जन्तुवर्ज्जितम् ॥९१॥

वस्त्रपूतेन तोयेन यः कुर्य्यादुपलेपनम् ।
पश्यन् परिहरन् जन्तून् चान्द्रायणफलं लभेत् ॥९२॥

---

१ ने० पा० नारीति ।
२ तत्रैव, आहार ।
३ तत्रैव, शुभम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम सभ पापसँ मुक्तिक कामनासँ पूजित शंकरक दर्शन करब।

आब शिवलिंगक स्पर्शक फल

शिवधर्ममे—

सभ देवतासँ नमस्कृत महान् पुण्यशाली शिवलिंगक स्पर्श जे दुनू हाथसँ करैत अछि, ओ पाप सभमे लिप्त नहि होइछ ॥८८॥

आइ हम सभ पापसँ अप्रलिप्त रहबाक इच्छासँ दुनू हाथसँ शिवलिंगक स्पर्श करब।

मन्दिरक सम्मार्जन (सफाइ)क फल

नन्दिकेश्वरमे—

जन्तु (कीट-पतंग आदि) केँ देखि, ओकर त्याग करैत मेहीँ आ' कोमल बाढ़निसँ (शिवालयक) नहू-नहू सम्मार्जन करबाक चाही। एहि रूपेँ सम्मार्जन कयनिहार चान्द्रायण[1] व्रतक (फल) लाभ करैछ ॥८९॥

आइ हम चान्द्रायण व्रतक फल-सदृश फल प्राप्तिक इच्छासँ दृष्टिगोचर होबयबला जीव सभकेँ छोड़ैत, कोमल आ मेहीँ बाढ़निसँ भगवान् शंकरक मन्दिरक सफाइ करब।

आब वस्त्रपूत पानिसँ मिश्रित ओहि गोबरसँ निपबाक फल कहैत छी—जे गोबर रोग-पीड़ित, सद्यः बिआइलि, बूढ़ि तथा बाँझ गायसँ भिन्न पवित्र स्थान वा आकाशमे खसल हो, जाहिमे कोनो जन्तु नहि हो तथा ओकर ऊपर आ' नीचा भागकेँ छोड़िकए मध्य भागक हो।

भविष्यपुराणमे—

हे अर्जुन ! अपचसँ दुबराइलि, बाँझ, रोगिआहि तथा नवप्रसूता गायकेर गोबर नहि लेबाक चाही ॥९०॥

आकाशमे खसैत वा पवित्र स्थानम खसल गोबरक ऊपर आ' नीचाक भाग सभकेँ छोड़िकए बीचसँ टटका आ' जन्तु-रहित ल' कए कपड़छान कएल पानिसँ जन्तु सभकेँ बचबैत जे (शिवालयकेँ) नीपैत अछि, ओ चान्द्रायण व्रतक फल प्राप्त करैत अछि ॥९१—९२॥

---

१ तारनाथवाचस्पत्यम्, चन्द्रस्यायनमिवायनमत्र; पूर्वपदात् संज्ञायां णत्वं, सज्ञायां दीर्घः, स्वार्थे अण् वा। एक धार्मिक व्रत वा प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या जे चन्द्रमाक वृद्धि वा क्षयसँ विनियमित अछि। एहि व्रतमे दैनिक आहार (जे पन्द्रह कओरक होइछ) पूर्णिमासँ प्रतिदिन एक-एक कओर घटैत रहैत अछि, एतए धरि जे अमावास्याक दिन नितान्त निराहार व्रत राखल जाइत अछि, ओकर पश्चात् पुनः शुक्लपक्षमे एक कओरसँ आरम्भ कए पूर्णिमाधरि बढ़ाय कए पुनः १५ कओर धरि आनल जाइत अछि।

याज्ञवल्क्य स्मृति ३। ३२४;

मनुस्मृति ११। २२७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आहाररसजीर्णाया अजीर्ण[1]कृशायाः प्रत्यग्रमपर्य्युषितम् ।

अद्य चान्द्रायणफलसमफलप्राप्तिकामो दृग्गोचरजन्तून् परिहरन् भगवतः शिवस्यायतने गोमयोदकाभ्यामुपलेपनमहं करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सम्मार्जनादौ—

सम्मार्ज्जनादि यः कुर्यान्नरः कर्म्म शिवालये ।
सोऽपि मोहात्त्यजेत् ज्ञानं प्राप्यान्ते शान्तिमाप्नुयात् ॥९३॥

आदिपदादुपलेपनम् ।

अद्य देहत्यागानन्तरज्ञानहेतुकशान्तिप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनादिकर्म्माहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे पक्षव्यापकसम्मार्जनाञ्जनयोः—

नैरन्तर्य्येण यः कुर्य्यात् पक्षं सम्मार्जनाञ्जनम् ।
युगकोटिशतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥९४॥

अञ्जनमुपलेनम् ।

अद्यादि पक्षं व्याप्य प्रत्यहं साग्रयुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्व-कामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनाञ्जनकर्म्माहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे पक्षव्यापकसम्मार्जनस्य

नैरन्तर्य्येण यः कुर्य्यात् पक्षं सम्मार्ज्जनं[3] जनः ।
युगकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ॥९५॥
तस्यान्ते स चतुर्वेदः स्वरूपः प्रियदर्शनः ।
आढ्यः सर्वगुणोपेतो राजा भवति धार्म्मिकः ॥९६॥

अद्यादि पक्षं व्याप्य प्रत्यहं दिव्ययुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहित-त्वानन्तरं चतुर्वेदित्व-स्वरूपत्व-प्रियदर्शनत्वाढ्यत्व-सर्वगुणोपेतत्व-धार्म्मिक-राज-त्वकामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनमहङ्करिष्ये ।

---

१ मूले अजिर्न्न ।
२ ने० पा०, देहात्यमे ।
३ तत्रैव, सम्मार्ज्जनाञ्जनम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आहाररसजीर्णाक अर्थ कुपचसँ कृशकाय थिक। प्रत्यग्रं = अपर्युषित = टटका।

आइ हम चान्द्रायण व्रत फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ दृष्टिगोचर कीट-पतङ्ग सभकेँ बचबैत भगवान् शिवक मन्दिरक गोबर आ' जलसँ उपलेपन करब।

नन्दिकेश्वरमे सम्मार्जन आदिक प्रसंगमे कहल गेल अछि—

जे मानव शिवक मन्दिरमे सम्मार्जन आदि काज करैत अछि, ओहो मोह-केँ त्याग करैत, ज्ञान प्राप्त कय, अन्तमे शान्ति पबैत अछि ।।९३।।

एतय आदि पदसँ उपलेपनक बोध होइत अछि।

आइ हम देह-त्यागक उपरान्त ज्ञानमूलक शान्ति-लाभक कामनासँ भगवान् शिवक मन्दिरमे सम्मार्जन आदि काज करब।

भविष्यपुराणमे एक पक्ष धरि सम्मार्जन आ मन्दिर उपलेपनक फल—

जे व्यक्ति एक पक्ष धरि निरन्तर सम्मार्जन आ' उपलेपनक काज करैत अछि; ओ सय करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे निवास करैत अछि ।।९४।।

अञ्जनक अर्थ अछि उपलेपन।

आइसँ हम एक पक्ष धरि प्रतिदिन करोड़ो वर्ष धरि शिवलोकमे महितत्वक प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक मन्दिरमे सम्मार्जन आ' उपलेपन कर्म करब।

नन्दिकेश्वरमे एक पक्ष धरि सम्मार्जनक फल –

जे मानव एक पक्ष धरि लगातार (शिव-मन्दिरक) सम्मार्जन करैत अछि ओ दू सय करोड़ दिव्य वर्ष धरि शिवलोकमे निवास करैत अछि ।।९५।।

एकर पश्चात् ओ चारू वेदक ज्ञाता, देखबामे सुन्दर रूपवला, समृद्धिशाली आ' सभ गुणसँ युक्त धार्मिक राजा होइत अछि ।।९६।।

आइसँ हम दू सय कोटि दिव्य (अलौकिक) युग पर्यन्त शिवलोकमे पूजित भय बादमे चतुर्वेदित्व स्वरूपत्व, प्रियदर्शनत्व आढ्यत्व लाभ आ' सभ गुणसँ युक्त धार्मिक राजा होयबाक कामनासँ भगवान शिवक मन्दिरमे एक पक्ष धरि प्रत्येक दिन सम्मार्जन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ स्कन्दपुराणे संवत्सरसम्मार्जनस्य ।

सम्मार्ज्जनन्तु यः कुर्य्यात् संवत्सरमनुव्रतः ।
विदधाति शुभाँल्लोकान् नित्यं तस्य ध्रुवं जयः ॥९७॥

संवत्सरमिति अत्यन्तसंयोगे द्वितीया अनुव्रतः कृतसङ्कल्पः जयः प्रतियोग्य-पेक्षयोत्कर्षलाभः। नित्यं सर्वदा । विदधाति शिव एव ॥

अद्यादि संवत्सरं व्याप्य प्रत्यहं बहुशुभलोकावाप्तिसार्वकालिकजय-प्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनमहङ्करिष्ये ॥

अथ निर्म्माल्यापनयनम्

भविष्यपुराणे—

शिवमाल्यापनयनं पूजान्ते भूप्रमार्जनम् ।
एकैकन्तु भवेत्पुण्यं चान्द्रायणफलेन तु ॥९८॥

पूजान्ते पूजोपक्रमे[1]अन्तशब्दस्य समीपवचनत्वात् । माल्यं निर्म्माल्यम् ।

अद्य चान्द्रायणफल समफलप्राप्तिकामः शिवनिर्माल्यापनयनमहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे चिरपर्य्युषित शिवमाल्यापनयनस्य—

चिरपर्य्युषितं माल्यं शिवस्यापनयेत्तु यः ।
गोसहस्रफलं तस्य भवतीति न संशयः ॥९९॥

अद्य गोसहस्रदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया चिरपर्य्युषितशिवमाल्याप-नयनमहङ्करिष्ये ।

अथाभ्यङ्गादौ द्रव्यमात्रा[2]दिपरिभाषा

तत्र लिङ्गं प्रकृत्य भविष्यपुराणे—

स्नाने पलशतं ज्ञेय[3]मभ्यङ्गे पञ्चविंशतिम् ।
पलानान्तु सहस्रे द्वे महास्नानं प्रकीर्त्तितम् ॥१००॥

---

१. ने० पा०, पूजोपक्रमः ।
२. तत्रैव, मानादि ।
३. तत्रैव, देय ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एकर उपरान्त स्कन्दपुराणमे एक वर्ष धरि सम्मार्जनक फल—

जे मानव एक वर्ष धरि नित्य संकल्प लय (शिव-मन्दिरक) सम्मार्जन करैत अछि, ओ पवित्र लोक (स्वर्गादि) कें प्राप्त करैत अछि, आ' ओकर जय निश्चित होइत छैक ॥९७॥

'संवत्सरम्' = एहि पदमे अत्यन्त संयोगमे द्वितीया थिक। अनुव्रत: = संकल्प-पूर्वक। जय: = प्रतियोगी (प्रतिद्वन्द्वी) क अपेक्षा उत्कर्षक लाभ। नित्यम् = सर्वदा। विदधाति शिव एव = महादेवे शुभ करैत छथिन।

हम आइसँ वर्ष-पर्यन्त प्रतिदिन बहुत सुन्दर लोक प्राप्ति आ' निरन्तर जय-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक मन्दिरमे सम्मार्जन करब।

आब भविष्यपुराणमे निर्माल्य हटयवाक फल

पूजाक आरम्भमे शिवक निर्माल्य हटायब आ' भूमिकें मार्जन करब—एहि दूनूमे प्रत्येक काज चान्द्रायण (व्रत)क फल सदृश पुण्य देबयबला होइत अछि ॥९८॥

एतय 'अन्त' शब्द समीप सूचक थीक। अत: पूजान्ते अर्थात् पूजाक आरम्भ-मे। माल्यम् = निर्माल्य।

आइ हम चान्द्रायण (व्रत) क फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवक निर्माल्य हटयबाक काज करब।

नन्दिकेश्वरमे चिर-कालक बासि शिवक-निर्माल्य हटएबाक फल —

जे बहुत दिनुक बासि निर्माल्य हटबैत अछि, ओकरा हजार गोदानक फल नि:सन्देह होइत छैक ॥९९॥

आइ हम सहस्र गोदानजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ चिर-कालक पर्युषित (बासि) शिवक निर्माल्यकें हटयबाक काज करब।

एकर बाद अभ्यंग—तेल, उबटन आदिमे द्रव्यक मात्रा आदिक परिभाषा अछि—

ओतय लिंगक प्रकरणमे भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि —

स्नान करबामे एक सय पल, अंगमर्दनमे २५ पल, तथा महास्नानमे दूहजार पल कहल गेल अछि ॥१००॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा च ब्रह्मपुराणे —

देवानां प्रतिमा यत्र घृताभ्यङ्गक्षमा भवेत् ।
पलानि तत्र देयानि श्रद्धया पञ्चविंशतिः ॥११०॥
अष्टोतरं पलशतं स्नाने देयन्तु सर्वदा
द्वे सहस्रे पलानान्तु महास्नाने तु संख्यया ।
दातव्यं येन सर्वासु दिक्षु निर्याति तद्घृतम् ॥१११॥

देवाङ्गलग्नघृतादेः प्रतिपत्तिमाह—

ब्रह्माङ्गलग्नं विप्रेभ्यो वैष्णवञ्च प्रदीयते ।
रुद्राङ्गलग्नमग्नौ च दहेत् सर्वन्तु तत्क्षणात् ॥११२॥

शिष्टेभ्यस्त्वथ देवेभ्यो यत्तद्दीनेषु निक्षिपेत् ।
अ[1]सञ्चरे च नैर्ऋत्यां निर्म्माल्यं निक्षिपेद्बुधः ॥११३॥

अथ घृताभ्यङ्गफलं भविष्यपुराणे—

वर्षकोटिसहस्रेण यत्पापं समुपार्जितम् ।
घृताभ्यङ्गेन लिङ्गस्य दहेत्सर्वं न संशयः ॥११४॥

अद्य वर्षकोटिसहस्रमुपार्जितपापक्षयकामो घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमभ्यञ्जयिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये घृताभ्यङ्गस्य—

घृतस्नानं घृताभ्यङ्गः सघृतो गुग्गुलुस्तथा ।
एतच्छिवाय दातव्यं सदैव वरमिच्छता ॥११५॥

वरो देवतादेरभीप्सितोऽर्थः

अद्य वरप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य घृतेनाभ्यञ्जनमहङ्करिष्ये ।

घृताभ्यङ्गे शास्त्रीयफलम् २५ ।

---

१. ने० पा०, सञ्चरे च ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आ' एहि तरहें ब्रह्मपुराणमे कहल गेल अछि—

जतय देवतो सभक मूर्त्ति घृताभ्यंग करबा योग्य हो, ओतय श्रद्धापूर्वक पचीस पल देबाक चाही ॥११०॥

स्नानमे सर्वदा १०८ पल आ महास्नानमे २००० पल, जाहिसँ सभ दिशामे छिड़कल जा सकय ॥१११॥

देवता सभक प्रतिमामे लगाओल घीक उपयोग—

ब्रह्माक अंग (प्रतिमा) मे लागल तथा विष्णुक प्रतिमामे लागल घी ब्राह्मण लोकनिककें दय देबाक चाही। शिवक प्रतिमामे लागल घी तुरन्त आगिमे जरा देबाक चाही। अन्य देवताक शरीरमे लागल घी निर्धन वर्गमे बाँटि देबाक चाही। बुद्धिमान् लोकके चाही जे निर्माल्यके नैर्ऋत्य कोणमे, निर्जन स्थानमे फेंकि देथि ॥११२–११३॥

आब भविष्यपुराणमे घृत द्वारा अभ्यंगक फल—

हजार वा करोड़ वर्षसँ जे पाप उपार्जन कयलहुँ, से सभ लिंगक घृताभ्यंग (घी सँ कयल गेल उबटन) सँ जरि जाइछ; एहिमे कोनो संदेह नहि ॥११४॥

आइ हम हजार कोटि वर्षक उपार्जित पापक क्षयक कामनासँ घृत द्वारा भगवान् शिवक लिंगक अभ्यंग करब।

शिवमाहात्म्यमे घृताभ्यंगक विषयमे कहल गेल अछि—

घृतक स्नान, घृतक अभ्यंग तथा घृत सहित गुगुलक (धूप) ई सभ अभिलषित वर चाहयवलाकें सदिखन शिवकें देबाक चाही ॥११५॥

वरः = देवता आदिसँ अभिलषित प्रयोजन।

आइ हम वर-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक घृताभ्यंग करब।

घृतसँ अभ्यंगमे शास्त्रीय परिमाण २५ पल थिक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथोद्वर्त्तनम्

भविष्यपुराणे

घृताभ्यङ्गे घृतस्नाने यत्नाल्लिङ्गं विरुक्षयेत् ।
यवगोधूमजैश्चूर्णैः कषायैर्गन्धयोजितैः ॥११६॥

कषायैर्लोध्रादीनां गन्धः सुरभिद्रव्यम् —

सुखोष्णेनाम्भसा चा[1]पि स्नापयेत्तदनन्तरम् ।
घर्षयेद्बिल्वपत्रेण तद्वत्पीठ[2]ञ्च शोधयेत् ॥११७॥

दशधेनुसहस्राणि यद्दत्वा लभते फलम् ।
तत्फलं लभते सर्वं लिङ्गस्योद्वर्त्तने कृते ॥११८॥

अद्य दशधेनुसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामो यवगोधूमचूर्णैः सुरभिद्रव्य-संयुक्त[3]लोध्रादिकषायैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गोद्वर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अनन्तरं सुखोष्णेन वारिणा स्नापयित्वा बिल्वपत्रैर्निघृष्य पीठं विशोधयेत् ।

अथस्नपनम्

नन्दिकेश्वरे—

लिङ्गमूर्त्तेर्महेशस्य शिवस्य परमेष्ठिनः ।
स्नानकाले प्रकुर्वीत जयशब्दादिमङ्गलम् ॥११९॥

अथ स्कन्दपुराणे जलस्नपनस्य

स्नापयित्वाम्भसा लिङ्गं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।१२०।

अद्य सर्वपापविमुक्तिकामोऽम्भसा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणे[4] दुग्धस्नपनस्य

अयुतं यो गवां दद्याद्दोग्ध्रीणां वेदपारगे ।
हेमवस्त्रादियुक्तानां क्षीरस्नानस्य यत्फलम् ॥१२१॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकहेमवस्त्रादियुतायुतादोग्ध्रीगवीदानजन्य-फलसमफलप्राप्तिकामः क्षीरेण भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

---

१. ने० पा०, वापि ।
२. तत्रैव, तत्पीठञ्चैव ।
३. तत्रैव संसक्त ।
४. तत्रैव, भविष्यपुराणे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्वर्तनक विषयमे

भविष्यपुराणमे—

घृताभ्यंग आ घृत-स्नानमे जौ आ गहूमक आँटाक सुगन्धि कषायसँ यत्नपूर्वक लिंगकेँ सम्मर्दन करबाक चाही ॥११६॥

कषायैः = लोध्र आदिक गन्धसँ सुगन्धित द्रव्य।

ओकर बाद सुखद सुसुम जलसँ स्नान करयबाक चाही आ बेलपातसँ रगड़क चाही। ओहिना आधार पीठक (जलधरीक) शोधन सेहो करबाक चाही ॥११७॥

दस हजार गोदानसँ जे फल होइत अछि, ओ फल लिंगक उद्वर्त्तन कयलासँ होइत अछि ॥११८॥

आइ हम दस हजार गायक दानसँ होबयबला फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ जौ-गहूमक चूर्णसँ सुगन्धित द्रव्ययुक्त लोध्र आदि कषाय सभसँ भगवान् शिवक लिंगक उद्वर्त्तन करब।

तदनन्तर सुखद गर्म पानिसँ लिंगकेँ स्नान कराय बेलपातसँ घर्षित कय लिंगपीठक विशुद्धि करबाक चाही।

आब स्नपनक विषय

नन्दिकेश्वरमे कहल गेल अछि—

लिंग-मूर्त्ति महेश परमेष्ठी शिवक स्नान कालमे 'जय' आदि मंगल शब्दक उच्चारण करी ॥११९॥

आब स्कन्दपुराणमे जलसँ स्नानक फल—

जलसँ लिंगक स्नान कराय सभ पापसँ मुक्त होइत अछि ॥१२०॥

आइ हम सभ पापसँ मुक्तिक कामना हेतु जलसँ भगवान् शिवक लिंग-स्नान करायब।

भविष्यपुराणमे दुग्ध स्नानक विषयमे कहल गेल अछि —

सोना, वस्त्र आदिसँ युक्त दस हजार लगहरि गाय वेदमे पारंगत व्यक्तिकेँ देबाक जे फल अछि ओएह फल दूधसँ स्नान करयबाक अछि ॥१२१॥

आइ हम वेदपारंगत ब्राह्मणकेँ सोना, वस्त्र आदिसँ युक्त दस हजार लगहरि गोदानजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ दूधसँ भगवान् शिवक लिंगकेँ स्नान करायब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणे धारोष्णपयःस्नपने—

सकृद्धारोष्णपयसा यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
राजतेन विमानेन शिवलोकं स गच्छति ॥१२२॥

अद्य राजतविमानकरणकशिवलोकप्राप्तिकामो धारोष्णपयसा भगवतः शिवस्य लिंगमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव दुग्धस्नपनस्य ।

क्षीरस्नानं तु यः कुर्यान्मिम भक्तश्च मानवः ।
वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयः ॥१२३॥

अद्य वाजपेययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया दुग्धेन भगवतः शिवस्य लिंगमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणीयाढकपरिमितदुग्धस्नपनस्य—

सकृदाढकेन पयसा यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
राजतेन विमानेन सोमलोकं स गच्छति ॥१२४॥

'आढकश्चतुःषष्टिपलानि' ।

अद्य राजतविमानकरणकसोमलोकगमनकाम आढकपरिमितेन पयसा भगवतः शिवस्य लिंगमहं स्नपयिष्ये—

लिङ्गपुराणीयक्षीरस्नपनस्य—

दशापराधांस्तोयेन क्षीरेण च शतं क्षमेत् ॥१२५॥

अद्य शिवविषयक-स्वीयापराधशतक्षान्तिकामनया क्षीरेण भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

स्कन्दपुराणे त्रिर्दुग्धस्नपनस्य—

क्षीरेण यो मां सततं स्नापयेच्च त्रिरुद्यतः ।
अपराधसहस्रन्तु क्षमे तस्याहमागसः ॥१२६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे धारोष्ण दूधसँ स्नान करयबाक फल—

जे मानव धारोष्ण दूधसँ एको बेरि लिंगकेँ स्नान करबैत अछि, ओ चानीक विमानसँ शिवलोक जाइत अछि ॥१२२॥

आइ हम रजतनिर्मित विमानसँ शिवलोक-प्राप्तिक कामनासँ धारोष्ण दूधसँ भगवान् शिवक लिगकेँ स्नान करायब।

ओतहि दूधसँ स्नान करयबाक फल—

"जे हमर भक्त मानव दूधसँ हमरा स्नान करबैत अछि ओ निःसन्देह वाजपेय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥१२३॥

आइ हम वाजपेय यज्ञक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ दूधसँ भगवान शिव-लिंगक स्नान करायब।

भविष्यपुराणमे आढ़क परिमित—अढ़ैया भरि (चारि सेरक बराबरिसँ नापल) दूधसँ स्नानक फल—

जे व्यक्ति एकहु वेर एक अढ़ैया दूधसँ लिंग स्नान करबैत अछि ओ चानीक विमानसँ चन्द्रलोक जाइत अछि ॥१२४॥

आढ़क = ६४ पल।

आइ हम रजतक विमानसँ सोमलोक गमनक कामनासँ आढ़कपरिमित दूधसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नान करायब।

लिंगपुराणमे दुग्धस्नानक फल—

जलसँ स्नान करओने दस अपराध तथा दूधसँ स्नान करओने सय अपराध शिव क्षमा करैत छथि ॥१२५॥

आइ हम शिव सम्बन्धी अपन कयल गेल सय अपराधक क्षमाक कामनासँ दूधसँ भगवान् शिवक स्नान करायब।

स्कन्दपुराणमे तीन बेरि दुग्ध-स्नानक फल—

(शिव कहैत छथि)—"जे नित्य तीन बेरि दूध (क्षीर)सँ हमरा स्नान करबैत अछि, ओकर पापक हजार अपराध हम क्षमा कय दैत छिऐक"॥ १२६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य शिवविषयकस्वीयापराधसहस्रक्ष ान्तिकामनया दुग्धेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं त्रिःस्नपयिष्ये ।।

संवत्सरं दुग्धस्नपनस्य—

संवत्सरन्तु यः कुर्यात् क्षीरेण स्नपनं शुचिः ।
गाणपत्यञ्च लभते वल्लभत्वञ्च नित्यशः ।।१२७।।

वल्लभत्वञ्चेत्यत्र समे[1]इति सिंहावलोकितन्यायेनानुषज्यते संवत्सरं वर्षं प्रतिदिनमित्यर्थः ।

अद्यादि संवत्सरं व्याप्य प्रत्यहं गाणपत्यप्राप्तिसार्वकालिकशिववल्लभत्व-कामनया दुग्धेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।।

अथ शिवपुराणीयदधि स्नपनस्य—

दध्ना तु स्नापयेल्लिङ्गं सकृद्भक्त्या तु यो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ।।१२८।।

अद्य सर्वपापविमुक्ति[2]विष्णुलोकमहितत्वकामनया दध्ना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणीय दधिस्नपनस्य—

स्नाप्य दध्ना सकृल्लिङ्गं शिवलोके महीयते ।।१२९।।

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो[3]दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गस्नपन-महङ्करिष्ये ।।

शिवपुराणे दधिस्नपनस्य—

स्नाप्य दध्ना सकृल्लिङ्गं विष्णुलोके महीयते ।।१३०।।

अद्य विष्णुलोकमहितत्वकामो दध्ना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।।

---

१. ममेति शुद्धपाठः ।

२. ने० पा०, पृ० ९ विमुक्तिक ।

३. तत्रैव, कामनय ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम शिव सम्बन्धी सहस्र अपराधक शान्तिक कामनासँ भगवान् शिवक लिंगकेँ तीन बेरि दूधसँ स्नान करायब।

वर्ष भरि दूधसँ स्नान करयबाक फल--

जे एक संवत्सर (वर्ष) धरि पवित्र भए दूधसँ भगवान शिवक स्नान करवैत अछि, ओ हमर प्रिय नित्य होइत अछि आ' गाणपत्य लाभ करैत अछि ॥१२७॥

[विद्यापति]

'वल्लभत्वञ्च'—एहिमे सिंहावलोकन-न्यायसँ 'समे'—ई पद संलग्न भए जाइछ। संवत्सरक अर्थ अछि वर्ष भरि प्रतिदिन।

आइ हम वर्ष भरि प्रतिदिन गाणपत्य प्राप्तिक आ' सदिखन शिवक प्रिय बनबाक कामनासँ भगवान् शिवकेँ स्नान करायब।

आब शिवपुराणमे दहीसँ स्नान करयबाक फल—

जे मानव भक्तिपूर्वक एको बेरि दहीसँ लिंगक स्नान करवैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भए विष्णुलोक प्राप्त करैत अछि ॥१२८॥

आइ हम सभ पापसँ विमुक्ति आ विष्णुलोक प्राप्तिक कामनासँ दहीसँ भगवान् शिवक लिंगकें स्नान करायब।

भविष्यपुराणमे दहीसँ स्नान करयबाक फल—

एको बेर दहीसँ शिवलिंगक स्नपन कय शिवलोकमे स्थान प्राप्त करैत अछि ॥१२९॥

आइ हम शिवलोकमे स्थान प्राप्तिक कामनासँ दहीसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करायब।

शिवपुराणमे दहीसँ स्नपनक फल—

दहीसँ एको बेरि शिवलिंगक स्नपन कराय, विष्णुलोकमे निवास करत अछि अर्थात् श्रेष्ठता प्राप्त करैत अछि ॥१३०॥

आइ हम विष्णुलोकमे निवास करबाक कामनासँ, दहीसँ शिवलिंगक स्नपन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव दधिस्नपनस्य—

स्नपनं यस्तु दध्ना मे करोत्यविमना नरः ।
सौत्रामणेस्तु यज्ञस्य फलं तस्मै वदाम्यहम्[1] ॥१३१॥

अद्य सौत्रामणियज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे दधिस्नपनस्य—

सहस्रं क्षमते दध्ना ॥१३२॥

अद्य शिवविषयकस्वीयापराधसहस्र-क्षान्तिकामनया दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्यपुराणीयघृतस्नपनस्य—

कल्पकोटिसहस्रैस्तु यत्पापं समुपार्ज्जितम् ।
घृतस्नानेन तत्पुण्यं दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥१३३॥

अद्य कल्पकोटिसहस्रसमुपार्ज्जितपापक्षयकामो घृतेन शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवपुराणे कपिलाघृतस्नपनस्य—

कापिलेन घृतेनेह स्नपनं यः करोति मे ।
सोऽश्वमेधफलं प्राप्य गवां लोके महीयते ॥१३४॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिपूर्वकगोलोकमहितत्वकामः कपिलाघृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे घृतस्नपनस्य—

इहामुत्रकृतं पापं घृतस्नानेन देहिनाम् ।
क्षमते शङ्करो यस्मात्तस्मात् स्नपनं समाचरेत् ॥१३५॥

अद्य ऐहिकामुष्मिकपापशान्तिकामनया घृतेन भगवन्तं शङ्करमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव घृतस्नपयिष्ये—

घृतेनाप्ययुतं क्षमम् ॥१३६॥

---

१. ने० पा०, ददाम्यहम्

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि दधिस्नपनक फल—

जे मानव सावधान भय दहीसँ हमरा स्नान करबैत छथि, हुनका हम सौत्रामणि यज्ञक फल दैत छियैन ॥१३१॥

आइ हम सौत्रामणि यज्ञक फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ दहीसँ शिवलिंगक स्नपन करब।

शिवधर्ममे दहीसँ स्नपनक फल—

दही-स्नपनसँ शिव सहस्र अपराधकेँ क्षमा करैत छथिन ॥१३२॥

आइ हम शिव-विषयक अपन कयल सहस्र अपराधक शान्तिक कामनासँ दहीसँ भगवान् शिवलिंगक स्नपन करब।

आब भविष्यपुराणमे घृत-स्नपनक फल—

जहिना अग्नि इन्धन (जारनि) केँ डाहि दैत छथि, तहिना (शिवलिंगक) घृत-स्नानसँ जे पुण्य होइछ, से हजार कोटि कल्प सँ जे पाप उपार्जित अछि, ओकरा डाहि दैत अछि ॥१३३॥

आइ हम सहस्र कोटि कल्पक समुपार्जित पापक क्षयक कामनासँ, घृत द्वारा शिवलिंगकेँ स्नान करायब।

शिवपुराणमे कपिला गायक घृत द्वारा स्नपनक फल—

कपिला गायक घृतसँ जे हमर स्नपन करबैत अछि ओ अश्वमेध यज्ञक फलकेँ प्राप्त कय गोलोकमे निवास करैत अछि ॥१३४।

आइ हम अश्वमेध यज्ञक फलक सदृश फल-प्राप्तिपूर्वक गोलोकमे निवास करबाक कामनासँ कपिला गायक घृतसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नान करायब।

शिवधर्ममे घृत-स्नपनक फल—

घृतसँ स्नानकरओलासँ भगवान् शंकर देहधारीकेर इहलोक वा परलोकमे कयल गेल पापकेँ, क्षमा कय दैत छथिन, तेँ घृतसँ हुनक स्नपन करबाक चाही ॥१३५॥

आइ हम इहलोक वा परलोकक पाप-शान्तिक कामनासँ घृतसँ भगवान् शंकरकेँ स्नान करायब।

ओतहि घृत-स्नानक फल—

घृत-स्नानसँ दस हजार अपराध शान्त होइत अछि ॥१३६॥

राष्ट्रिय ... संस्थान
क्रमांक 4982

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव दधिस्नपनस्य—

स्नपनं यस्तु दध्ना मे करोत्यविमना नरः ।
सौत्रामणेस्तु यज्ञस्य फलं तस्मै वदाम्यहम्[1] ॥१३१॥

अद्य सौत्रामणियज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे दधिस्नपनस्य—

सहस्रं क्षमते दध्ना ॥१३२॥

अद्य शिवविषयकस्वीयापराधसहस्र-क्षान्तिकामनया दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्यपुराणीयघृतस्नपनस्य—

कल्पकोटिसहस्रैस्तु यत्पापं समुपार्ज्जितम् ।
घृतस्नानेन तत्पुण्यं दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥१३३॥

अद्य कल्पकोटिसहस्रसमुपार्ज्जितपापक्षयकामो घृतेन शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवपुराणे कपिलाघृतस्नपनस्य—

कापिलेन घृतेनेह स्नपनं यः करोति मे ।
सोऽश्वमेधफलं प्राप्य गवां लोके महीयते ॥१३४॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिपूर्वकगोलोकमहितत्वकामः कपिलाघृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे घृतस्नपनस्य—

इहामुत्रकृतं पापं घृतस्नानेन देहिनाम् ।
क्षमते शङ्करो यस्मात्तस्मात् स्नपनं समाचरेत् ॥१३५॥

अद्य ऐहिकामुष्मिकपापशान्तिकामनया घृतेन भगवन्तं शङ्करमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव घृतस्नपयिष्ये—

घृतेनाप्ययुतं क्षमम् ॥१३६॥

---

१. ने० पा०, ददाम्यहम्

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि दधिस्नपनक फल—

जे मानव सावधान भय दहीसँ हमरा स्नान करवैत छथि, हुनका हम सौत्रामणि यज्ञक फल दैत छियैन ।।१३१।।

आइ हम सौत्रामणि यज्ञक फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ दहीसँ शिवलिंगक स्नपन करब ।

शिवधर्ममे दहीसँ स्नपनक फल—

दही-स्नपनसँ शिव सहस्र अपराधकेँ क्षमा करैत छथिन ।।१३२।।

आइ हम शिव-विषयक अपन कयल सहस्र अपराधक शान्तिक कामनासँ दहीसँ भगवान् शिवलिंगक स्नपन करब ।

आब भविष्यपुराणमे घृत-स्नपनक फल—

जहिना अग्नि इन्धन (जारनि) केँ डाहि दैत छथि, तहिना (शिवलिंगक) घृत-स्नानसँ जे पुण्य होइछ, से हजार कोटि कल्प सँ जे पाप उपार्जित अछि, ओकरा डाहि दैत अछि ।।१३३।।

आइ हम सहस्र कोटि कल्पक समुपार्जित पापक क्षयक कामनासँ, घृत द्वारा शिवलिंगकेँ स्नान करायब ।

शिवपुराणमे कपिला गायक घृत द्वारा स्नपनक फल—

कपिला गायक घृतसँ जे हमर स्नपन करवैत अछि ओ अश्वमेध यज्ञक फलकेँ प्राप्त कय गोलोकमे निवास करैत अछि ।।१३४।

आइ हम अश्वमेध यज्ञक फलक सदृश फल-प्राप्तिपूर्वक गोलोकमे निवास करवाक कामनासँ कपिला गायक घृतसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नान करायब ।

शिवधर्ममे घृत-स्नपनक फल—

घृतसँ स्नानकरओलासँ भगवान् शंकर देहधारीकेर इहलोक वा परलोकमे कयल गेल पापकेँ, क्षमा कय दैत छथिन, तेँ घृतसँ हुनक स्नपन करवाक चाही ।।१३५।।

आइ हम इहलोक वा परलोकक पाप-शान्तिक कामनासँ घृतसँ भगवान् शंकरकेँ स्नान करायब ।

ओतहि घृत-स्नानक फल—

घृत-स्नानसँ दस हजार अपराध शान्त होइत अछि ।।१३६।।

राष्ट्रिय ... संस्थान
क्रमांक 4982

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्मीय मासव्यापकघृतस्नपनस्य—

नैरन्तर्य्येण यो मासं घृतस्नपनं समाचरेत् ।
एकविंशतिकुलोपेतो न च्यवेदैश्वरात् पदात् ॥१३७॥

अद्यादि मासं व्याप्य प्रत्यहमेकविंशतिकुलोपेत स्वीयैश्वरपदाप्रच्यवनकामनया घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ शिवधर्म्मे मधुस्नपनस्य

मधुना स्नापयेल्लिङ्गं सकृद्भक्त्या तु यो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो वह्निलोके महीयते ॥१३८॥

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तिवह्निलोकमहितत्वकामनया मधुना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये मधुस्नपनस्य—

मधुना स्नापयित्वा तु शिवलोके महीयते ॥१३९॥

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो मधुना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्यपुराणीयेक्षुरसस्नपनस्य

स्नानमिक्षुरसेनेह यो लिङ्गे सकृदाचरेत् ।
लभेद्विद्याधरं लोकं सर्वकामसमन्वितः ॥१४०॥

अद्य सर्वकामसमन्वितात्वविद्याधरलोकप्राप्तिकाम इक्षुरसेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्ये सर्वौषधिस्नपनस्य

सर्वौषधीभिर्यो लिङ्गं सकृत्स्नापयते नरः ।
काञ्चनेन विमानेन ब्रह्मलोके महीयते ॥१४१॥

अद्य काञ्चनविमानकरणकब्रह्मलोकमहितत्वकामः सर्वौषधीभिर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्ममे एक मास पर्यन्त घृत-स्नपनक फल—

जे व्यक्ति एक मास धरि निरन्तर (भगवान् शिवक लिंगके) घृत-स्नपन करैत अछि, ओ अपन एकैस पीढ़ीक संग भगवान् शिवक लोकसँ च्युत नहि होइत अछि ॥१३७॥

आइसँ हम एक मास धरि प्रत्येक दिन अपन एकैस पीढ़ी धरि शिवलोकसँ च्युत नहि होयबाक कामनासँ घृत द्वारा भगवान् शिवक लिंगकें स्नपन करायब ।

आब शिवधर्म से मधु स्नपनक फल—

जे मानव भक्तिपूर्वक मधुसँ एको खेप (बेरि) शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, ओ सभ पापकें त्यागि वह्निलोकमे निवास करैत अछि ॥१३८॥

आइ हम सभ पापसँ; मुक्ति वा वह्निलोकमे महितत्वक कामनासँ मधुसँ भगवान् शिवलिंगक स्नपन करब ।

भविष्य पुराणमे मधुसँ स्नपनक फल—

(शिवकें) मधुसँ स्नान कराय (मानव) शिवलोक प्राप्त करैत अछि ॥१३९॥

आइ हम शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ मधुसँ शिवलिंगकें स्नान करायब ।

आब भविष्यपुराणमे इक्षुरस (कुसियारक रस)सँ स्नपनक फल—

एहि लोकमे जे एको बेरि कुसियारक रससँ शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, ओ सभ कामनासँ समन्वित भय विद्याधरलोक प्राप्त करैत अछि ॥१४०॥

आइ हम सभ कामनासँ समन्वित विद्याधरलोक-प्राप्तिक कामनासँ इक्षुक रससँ भगवान शिवक स्नपन करब ।

आब भविष्यपुराणमे सर्वौषधिसँ स्नपनक फल—

जे व्यक्ति भक्तिपूर्वक एको बेरि सर्वौषधिसँ शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, ओ स्वर्णक विमानसँ ब्रह्मलोकमे जाइत अछि ॥१४१॥

आइ हम कांचन विमानसँ ब्रह्मलोक प्राप्तिक कामनासँ सर्वौषधिसँ भगवान शिवलिंग स्नपन करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

सर्वौषध्यः परिभाषिताः—

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ।
शठीचम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः, इति ॥१४२॥

[विद्यापति]

मुरा–मोटस्वर इति प्रसिद्धम्। मांसी—जटामसी। शैलेयं—मूल-इति प्रसिद्धम्। रजनीद्वयम्—हरिद्रा-दारुहरिद्रे। शठी[1]-कञ्चोर इति प्रसिद्धा। अथ लिङ्गे।

समन्त्रककुशवारियुतकपिलापञ्चगव्यकरणकब्राह्मनामकस्नपनस्य—

कपिला पञ्चगव्येन कुशवारियुतेन च ।
स्नापयेन्मन्त्रपूतेन ब्राह्मं स्नानं हि तत्स्मृतम् ॥१४३॥

एकाहमपि यो लिङ्गे ब्राह्मस्नानं समाचरेत् ।
विधूय सर्वपापानि रुद्रलोके महीयते ॥१४४॥

[विद्यापति]

मन्त्रपूतेन पञ्चगव्यकरणमन्त्राभिमन्त्रितेन ।

पञ्चगव्यकरणं—मत्स्यपुराणे

सावित्र्यादाय गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम् ।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधि[2]क्रावुधृच्चा दधि ॥१४५॥

तेजोऽसीति घृतं तद्वद्देवस्यत्वा कुशोदकम् ।
कुशमिश्रं जपेद्विद्वान् पञ्चगव्यं भवेत्ततः ॥१४६॥

[विद्यापति]

मन्त्र आपोहिष्ठा मन्त्रः। शिवप्रकाशकमन्त्रो वा स्नपने योज्य इत्येके।

अद्य सर्वपापविमुक्तिपूर्वकरुद्रलोकमहितत्वकामो भगवतः शिवस्य लिङ्गे ब्राह्मस्नपनमहङ्करिष्ये।

---

१ मूले शची।

२ ने० पा०, दधिक्राण।; दधिक्रेति समीचीन पाठ अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वौषधिक परिभाषा

"मुरा, मांसी, वचा, कुष्ठ, शिलाजीत, हरदि, दारुहरदि, शठी, चम्पक आ' मुस्त"—ई सभ सर्वौषधि कहल गेल अछि ॥१४२॥

[विद्यापति]

मुरा = मोटस्वर नामसँ प्रसिद्ध अछि। मांसी = जटामसी। शैलेय = मूल ई प्रसिद्ध अछि। रजनीद्वयम्—हरिद्रा तथा दारुहरिद्रा। शठी = कञ्चोर ई प्रसिद्ध अछि।

आब लिंगपुराणमे

मन्त्र सहित कुशोदक आ कपिला गायकपंचगव्य (गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी) सँ ब्राह्म नामक स्नपनक (विषयमे) :—

मन्त्रसँ पवित्र कयल, कुशोदकसँ युक्त, कपिला गायक पंचगव्यसँ जे स्नपन होइछ, वैह 'ब्राह्म' स्नान कहल गेल अछि ॥१४३॥

जे व्यक्ति एको दिन शिवलिंगक ब्राह्म स्नान करबैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भ' रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥१४४॥

[विद्यापति]

मन्त्र-पूतेन = पञ्चगव्य बनयबाक मन्त्रसँ अभिमन्त्रित।

मत्स्यपुराणमे पंचगव्य बनयबाक विधि—

'सावित्री' मन्त्रसँ गोमूत्र, 'गन्धद्वार' मन्त्रसँ गोबर, 'आप्यायस्व' मन्त्रसँ दूध, 'दधिक्रा बुधृच्चे' मन्त्रसँ दही, 'तेजोऽसि' मन्त्रसँ घृत, 'देवस्यत्वा' मन्त्रसँ कुशोदक लय, ओहिमे कुश मिलाय विद्वान् मन्त्र जपथि। तखन पंचगव्य होइत अछि ॥१४५-१४६॥

[विद्यापति]

मन्त्र थिक 'आपोहिष्ठा' इत्यादि। शिव-प्रकाशक मन्त्र, ओम् नमः शिवाय' ई मन्त्र जोड़बाक थिक—ई दोसराक कथन अछि।

आइ हम सभ पापसँ मुक्त भ' रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक लिंग पर ब्राह्म-स्नपन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव सितभस्मस्नपनस्य

सितेन भस्मना स्नाप्य सकृल्लिङ्गं प्रमोदते ।
चन्द्रांशुनिर्म्मलः श्रीमान् शिववत् सोममण्डले ।।१५१।।

अद्य सोममण्डलाधिकरणकचन्द्रांशुनिर्मलश्रीमदात्मशिवहर्षतुल्यहर्षकामः सितभस्मना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ तोयस्नपनस्य

ये चन्दनतोयस्नपनस्य—

यस्तु चन्दनतोयेन स्नपयेत् सकृदीश्वरम् ।
गन्धर्वलोकमाप्नोति गन्धर्वैश्चापि पूज्यते ।।१५२।।

अद्य गन्धर्वलोकप्राप्तिबहुगन्धर्वपूज्यत्वकामश्चन्दनोदकेन भगवन्तमीश्वरमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव फलोदकस्नपनस्य—

फलोदकेन यो लिङ्गं सकृत् स्नपयते नरः ।
उत्सृज्य पापकलिलं पितृलोके महीयते ।।१५३।।

अद्य पापकलिलोत्सर्गपूर्वकपितृलोकमहितत्वकामः फलोदकेन शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव पुष्पोदक[1]स्नपनस्य—

पुष्पोदकेन गायत्रं कौवेरं हेमवारिणा ।
रत्नोदकेन[2] वै रौद्रं लोकं प्राप्य स मोदते ।।१५४।।

अद्य गायत्रलोकप्राप्तिकामः पुष्पोदकेन शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

---

१. ने० पा० पुष्पोदकेन ।

२. तत्रैव, रत्नोदकेन ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि उज्जर भस्म-स्नपनक फल—

(जे व्यक्ति) श्वेत भस्मसँ एको वेरि शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, ओ चन्द्रकिरण सदृश निर्मल आ' श्री-सम्पन्न भए चन्द्रमण्डलमे शिवक सदृश आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥१५१॥

आइ हम सोममंडलमे चन्द्रमाक किरण सदृश निर्मल, श्री-सम्पन्न तथा शिवक हर्षक तुल्य हर्षक कामनासँ उज्जर भस्मसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब।

आब जलस्नपनक फल

भविष्यपुराणमे चन्दन सहित जलक स्नपनक फल—

जे चन्दन-सहित जलसँ एको वेरि शिवकेँ स्नान करबैत अछि, ओ गन्धर्वलोककेँ प्राप्त करैत अछि आ गन्धर्व सभक द्वारा पूजित होइत अछि ॥१५२॥

आइ हम गन्धर्वलोक प्राप्ति आ गन्धर्व सभक द्वारा पूजित होयबाक कामनासँ चन्दन-सहित जलसँ भगवान् शंकरक स्नपन करब।

ओतहि फलोदक स्नपनक फल अछि—

फलोदकसँ जे व्यक्ति एकोबेरि शिवलिंगकेँ स्नपन करबैत छथि, ओ पाप-कल्मषकेँ छोड़ि पितृलोकमे महितत्त्व प्राप्त करैत छथि ॥१५३॥

आइ हम पाप-कल्मषक उत्सर्गपूर्वक पितुलोकमे महितत्त्व प्राप्तिक कामनासँ फलोदकसँ शिवलिंगकेँ स्नपन करायब।

ओतहि पुष्पोदकसँ स्नपनक फल—

जे पुष्पोदक (पुष्पान्वित जल)सँ स्नपन करबैत अछि, ओ गायत्रीलोक, जे हेमवारि (स्वर्णपात्रक जल)सँ स्नपन करबैत अछि, ओ कुबेरलोक आ' जे रत्नोदक (रत्न-पात्रक जल)सँ स्नपन करबैत अछि, ओ रुद्रलोक प्राप्त कय प्रसन्न भय जाइत अछि ॥१५४॥

आइ हम गायत्रीलोक-प्राप्तिक कामना करैत पुष्पोदकसँ शिवलिंगक स्नपन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हेमवारिस्नपनस्य ।

अद्य कौबेरलोकप्राप्तिकामो हेमवारिणा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

रत्नोदकस्नपनस्य ।

अद्य रुद्रलोकप्राप्तिपूर्वकतल्लोकाधिकरणकहर्षकामनया रत्नोदकेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव कर्पूरागुरुतोयस्नपनस्य—

कर्पूरागुरुतोयेन यो लिङ्गं स्नापयेत् सकृत् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा शिवलोके महीयते ॥१५५॥

अद्य सर्वपापविशुद्धात्मकत्वशिवलोकमहितत्वकामः कर्पूरागुरुतोयेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्मे शीतवारिस्नपनस्य ।

पितॄनुद्दिश्य यो लिङ्गं स्नापयेच्छीतवारिणा ।
तृप्ताः स्वर्गं गमिष्यन्ति पितरो नरकादपि ॥१५६॥

अद्य बहुपितृतृप्तिबहुपितृस्वर्गप्राप्तिकामः शीतेन वारिणा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव वस्त्रपूततोयेन स्नपनस्य—

वस्त्रपूतेन तोयेन यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
सर्वकामसुतृप्तात्मा वारुणं लोकमाप्नुयात् ॥१५७॥

अद्य सर्वकामसुतृप्तात्मकत्ववरुणलोकप्राप्तिकामो वस्त्रपूततोयेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये वस्त्रपूततोयस्नपनस्य—

वस्त्रपूतेन तोयेन स्नापयेत् सकृदीश्वरम् ।
शर्वलोकमवाप्नोति गन्धर्वैश्चापि पूज्यते ॥१५८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वर्णपात्रस्थित जलसँ स्नपनक फल—

आइ हम कुबेर-लोकक प्राप्तिक कामनासँ स्वर्णपात्रक जलसँ शिव लिंगक स्नपन करब ।

रत्नोदकसँ स्नपनक फल—

आइ हम रुद्रलोक-प्राप्ति-पूर्वक ओही लोकमे प्रसन्नताक प्राप्तिक कामनासँ रत्नपात्रक जलसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब ।

ओतहि कर्पूर तथा अगुरु (अगर) सँ सुवासित जलसँ स्नपनक फल—

जे कर्पूर तथा अगुरुसँ सुवासित जलसँ शिवलिंगक एको वेरि स्नपन करैत अछि, ओ सभ पापसँ विशुद्धात्मा (पवित्रमना) भय शिवलोकमे महितत्त्व प्राप्त करैत अछि ॥१५५॥

आइ हम सभ पापसँ विशुद्धात्मत्व आ शिवलोकमे महितत्त्व-प्राप्तिक कामना-सँ कर्पूर आ अगुरु-सुवासित जलसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब ।

शिवधर्ममे शीतल जलसँ स्नपनक फल—

जे पितरलोकनिकेँ उद्देश्य कय शीतल जलसँ शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, तकर पितर संतृप्त भ' नरकसँ स्वर्ग चल जाइत छथिन ॥१५६॥

आइ हम बहुतो पितरक तृप्ति आ' स्वर्ग-प्राप्तिक कामनासँ शीतल जलसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब ।

ओतहि वस्त्रसँ पवित्र कयल अर्थात् छानल जलक स्नपनक फल—

जे वस्त्रपूत जलसँ महादेवक स्नपन करैत अछि, ओ सभ कामनासँ परिपूर्ण भ' वरुणलोककेँ प्राप्त करैत अछि ॥१५७॥

आइ हम सभ कामनासँ संतृप्तात्मकत्व आ' वरुणलोक प्राप्तिक कामनासँ वस्त्रपूत जलसँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब ।

भविष्यपुराणमे वस्त्रपूत जलसँ स्नपनक फल -

(जे) वस्त्रपूत (वस्त्रसँ छानल) जलसँ एको वेरि ईश्वर (शंकर)क स्नपन करबैत अछि, ओ अनेकों गन्धर्वसँ पूजित भ' शिवलोकक प्राप्ति करैत अछि ॥१५८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

शर्वः = शिवः

अद्य शर्वलोकावाप्तिबहुगन्धर्वपूज्यत्वकामनया वस्त्रपूततोयेन भगवन्तमीश्वरमहं स्नपयिष्ये ।

शिवपुराणे धूपितजलस्नपनस्य—

जलेन साधिवासेन स्नापयेद्यो हि मां नरः ।
अग्निष्टोमफलं तस्मै ददामि कमलानने ॥१५९॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो धूपितजलेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे कुशोदकस्नपनस्य —

कुशोकदकेन यो लिङ्गं सकृत्स्नापयते नरः ।
काञ्चनेन विमानेन ब्रह्मलोके महीयते ॥१६०॥

अद्य काञ्चनविमानकरणकब्रह्मलोकमहितत्वकामः कुशोदकेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव पाटलोदकस्नपनस्य —

पाटलोत्पलपद्मानि करवीराणि सर्वदा ।
स्नानतोयेषु योज्यानि स्थिराणि सुरभीणि च ॥१६१॥

एषामेकतमं स्नानं यः कुर्याद्भक्तितः शिवे ।
विधूय पापकलिलं शिवलोके महीयते ॥१६२॥

[विद्यापति]

'अन्यान्यपि स्थिरसौरभाणि' ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

शर्वः = शिव

आइ शिवलोक प्राप्ति आ' अनेक गन्धर्वसँ पूज्य होयबाक कामनासँ वस्त्रसँ छानल जलसँ भगवान् ईश्वर (शिव)क स्नपन करब।

शिवपुराणमे धूपित (धूपसँ सुवासित) जल-स्नपनक फल—

"हे कमलानने ! जे मनुष्य सुगन्धित जलक संग हमर स्नपन करैत अछि ओकरा हम अग्निष्टोम यज्ञक फल दैत छिऐक" ॥१५९॥

आइ हम अग्निष्टोम यज्ञक फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ धूपित (धूपसँ सुवासित) जलसँ भगवान् शिवक स्नपन करब।

शिवधर्ममे कुशोदक-स्नपनक फल—

जे मानव कुशोदकसँ लिंगक एको बेरि स्नपन करैत अछि, ओ स्वर्ण विमानसँ ब्रह्मलोककेँ पबैत अछि ॥१६०॥

आइ हम काञ्चन विमानसँ (जाय) ब्रह्मलोकमे शोभित होयबाक कामनासँ भगवान् शिवक लिंगक स्नपन करब।

ओतहि पाटलोदक (गुलाब-जल) सँ स्नपनक फल—

सर्वदा सुगन्धित गुलाब, कुमुद, कमल आ करबीरक फूल एवं स्थायी सुगन्ध स्नानक जलमे योज्य थीक ॥१६१॥

"हे शिवे ! जे एहि सबमे एकोटासँ स्नान करबैत छथि से पाप-समूहकेँ त्यागि शिवलोक (कैलास)मे महितत्त्व प्राप्त करैत छथि ॥१६२॥

[विद्यापति]

एकर अतिरिक्त, स्थायी सुगन्धसँ युक्त कोनो फूल वा कोनो द्रव्य लेल जा सकैत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य पापकलिलविधूननपूर्वकं शिवलोकमहितत्वकामः पाटलोदकेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

उत्पलपद्मकरवीरतोयान्यतमस्नपनेंष्येतदेवफलम् ।

नन्दिकेश्वरे शिवमन्त्राष्ट[1]शतजप्तविमलाम्भः स्नपनस्य—

मन्त्राष्टशतजप्तेन विमलेनाम्भसा शिवम् ।
स्नापयित्वा सकृद्भक्त्या शिवलोके महीयते ॥१६३॥

[विद्यापति]

मन्त्राष्टशतजप्तेन—अष्टोत्तरशतवारजप्तमन्त्राभिमन्त्रितेन ।

मन्त्रः शिवप्रकाशकः स च नमःशिवायेत्यादिकः ।

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो मन्त्राष्टशतजप्तेन विमलाम्भसा शक्त्या शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव तोयस्नपनस्य—

दशापराधांस्तोयेन ॥१६४॥

अद्य शिवविषयकस्वीयदशापराधक्षान्तिकामस्तोयेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

अथ स्नानभाजनफलम्

स्कन्दपुराणे—

मृत्कुम्भात्ताम्रजैः कुम्भैः स्नानं शतगुणोत्तरम् ।
रौप्यैर्लक्षतरं प्रोक्तं हेमैः कोटिगुणोत्तरम् ॥१६५॥

---

१. ने० पा० शिवमन्त्रशतजप्त ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम पाप-समूहक त्याग-पूर्वक शिवलोकमे महितत्त्व-प्राप्तिक कामनासँ पाटलोदकसँ भगवान् शिवक स्नान करायब।

[विद्यापति]

कमल, पद्म, तथा करवीरमेसँ कोनो एकहुसँ मिश्रित जलसँ स्नपन करओनहुँ इएह फल होइत अछि।

नन्दिकेश्वरमे एकसय आठ बेरि शिवमन्त्रक जपसँ पवित्र कयल जलसँ स्नपनक फल—

१०८ बेरि शिवमन्त्रक जपसँ पवित्र कयल जलसँ भक्तिपूर्वक एको बेरि शिवक स्नपन कय शिवलोकमे महितत्त्व प्राप्त करैत अछि ।।१६३।।

[विद्यापति]

मन्त्राष्टशतजप्तेन-एकसय आठ बेरि जप कयल मन्त्रसँ; एतय शिवप्रकाशक 'ओम् नमः शिवाय' इत्यादि मन्त्र लेल जाइत अछि।

आइ हम शिवलोक (कैलास)मे महितत्त्व-प्राप्तिक कामनासँ 'ओम नमः 'शिवाय' एहि मन्त्रक अष्टोत्तरशत जपसँ पवित्र कयल जलसँ सामर्थ्य भरि शिवलिंगकेँ स्नान कराय़ब।

ओतहि तोय-स्नपनक फल—

जलसँ (शिवलिंगकेँ स्नान करओने) शिव दश अपराधकेँ क्षमा करैत छथि ।।१६४।।

अथवा

जल-स्नानसँ दश अपराध दूर होइत अछि।

आइ हम शिव-विषयक अपन दश अपराधक क्षमाक कामनासँ जलसँ भगवान् शिवकेँ स्नान करायब।

आब स्नान-पात्रक फल

स्कन्दपुराणमे—

माटिक घैलसँ कराओल गेल स्नानक फलसँ सय गुना अधिक (फल) तामाक घैलसँ स्नान करओने होइत छैक। चानीक घैलसँ कराओल गेल स्नान लाख गुना अधिक आ' सोनाक घैलसँ (कराओल गेल) स्नान कोटि गुण अधिक (फलप्रद) कहल गेल अछि ।।१६५।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्र ताम्रघटस्य—

अद्य मृत्कुम्भकरणकस्नानशतगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनया ताम्रकुम्भेन शिवस्य पयसा स्नपनमहं करिष्ये ।

रौप्यघटस्य—

अद्य मृत्कुम्भकरणकलक्षस्नानफलोत्तरफलप्राप्तिकामो रौप्यघटेन भगवतः शिवस्य पयसा स्नपनमहङ्करिष्ये ।

हेमघटस्य[1]—

अद्य मृत्कुम्भकरणककोटिस्नानफलोत्तरफलप्राप्तिकामो हेमघटेन भगवतः शिवस्य स्नपनमहङ्करिष्ये ।

बृहन्नन्दिकेश्वरे गडुकस्नपनस्य—

सामान्यवारिणा दत्ते गडुके शिवमूर्द्धनि ।
फलं शतगुणं प्रोक्तं सहस्रं जाह्नवीजलैः ॥१६६॥

अद्य तोयकरणकशिवस्नानशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो गडुकेनाम्भसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

गडुककरणकगङ्गाम्भसा स्नपनस्य—

अद्य तोयकरणकशिवस्नानसहस्रजन्यफलसमफलप्राप्तिकायो गडुकेन गङ्गाम्भसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

लिङ्गपुराणे ग्रीष्मकालिकपयोधारापातने—

विचित्रदारुयन्त्रस्थैः कुम्भैर्ग्रीष्मे शिवोपरि ।
पातयेद्यः पयोधारां स ब्राह्मं पदमश्नुते ॥१६७॥

अद्यादि ब्रह्मपदप्राप्तिकामोऽस्मिन् ग्रीष्मे भगवतः शिवस्योपरि विचित्रदारुयन्त्रस्थबहुकुम्भकरणकपयोधारामहं पातयिष्ये—

नन्दिकेश्वरे स्नानकालीनत्रिसन्ध्या[2]गाननृत्यमुखवाद्यानामन्यतमकरणे—

स्नानकाले त्रिसन्ध्यन्तु यः कुर्य्याद्गेयवादनम् ।
नृत्यं वा मुखवाद्यं वा तस्य पुण्यफलं श्रृणु ॥१६८॥

---

१. तत्रैव, सुवर्णघटस्य ।

२. ने० पा०, त्रिसन्ध्य ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तमघैलसँ स्नान करएवाक फल :—

आइ हम माटिक घैलक जलसँ स्नान करयबाक फलक सयगुन अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ तमघैलक जलसँ भगवान शिवक स्नपन करब ।

चानीक घैलक फल—

आइ हम माटिक घैलसँ लाख गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ चानीक घैलक जलसँ भगवान् शिवक स्नपन करब ।

सोनाक घैलक फल—

आइ हम माटिक घैलसँ स्नानजन्य फलसँ कोटि गुण अधिक फल-प्राप्तिक कामनासँ सोनाक घैलक जलसँ भगवान् शिवक स्नपन करब ।

बृहन्नन्दिकेश्वरमे गडुक[1]स्नपन फल—

गडुकमे राखि शिवक मस्तकपर सामान्य जल देलासँ सय गुना अधिक फल आ' गङ्गाजल देलासँ लाख गुना अधिक फल कहल गेल अछि ॥१६६॥

आइ हम जल-स्नपनक फलसँ सय गुना अधिक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ गडुकक जलसँ शिवलिंगक स्नपन करब ।

गडुकक द्वारा गंगाजलसँ स्नपनक फल—

आइ हम सामान्य जलक द्वारा स्नपनक फलक सहस्र गुना फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ गडुक जलपात्रमे स्थित गंगाजलसँ शिवलिंक स्नपन करब ।

लिंगपुराणमे ग्रीष्मकालिक जलधारा देबाक फल—

ग्रीष्मकालमे विचित्र काठक यन्त्रपर स्थित बहुत घैलसँ शिवपर जे जलक धारा देअबैत अछि, ओ ब्रह्म-पदकेँ प्राप्त करैत अछि ॥१६७॥

आइ हम ब्रह्मपद-प्राप्तिक कामनासँ एहि ग्रीष्म-ऋतुमे भगवान् शिवक ऊपर काठक विचित्र यन्त्रपर स्थित बहुत घैलक जल द्वारा जलधारा दिआयब ।

नन्दिकेश्वरमे स्नानक समय तीनू सन्ध्या गान, नृत्य आ मुखवादमेसँ एको गोट करबाक फल—

स्नान-कालमे तीनू साँझ जे गान, बजान, नृत्य अथवा मुखवादन करैत अछि, ओकर फल सुनू ॥१६८॥

---

१. जलपात्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यावदेतानि कुरुते गेयनृत्यादिवादनम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥१६९॥

अद्य युगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया भगवतः शिवस्याग्रे नृत्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

एवं गानमुखवाद्ययोरप्येतदेव फलम् ।

अथ पूजाकाले त्रिसन्ध्यनृत्यादिफलम्

स्कन्दपुराणे—

पूजाकाले त्रिसन्ध्यञ्च कुर्याद्देवस्य वादनम् ।
नृत्यं वा मुखवाद्यं वा सोऽपीश्वरपदं लभेत् ॥१७०॥

अद्य ईश्वरपदप्राप्तिकामस्त्रिसन्ध्यं भगवतः शिवस्य पूजाकाले नृत्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

वाद्यवादनमुखवाद्ययोरप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्म्मे मुखवाद्यस्य—

भूमिदानेन यत्पुण्यं कन्यादानेन यत्फलम् ।
मुखवाद्येन तत्पुण्यमुभयं लभते नरः ॥१७१॥
तदेव पुण्यं गीतस्य नृत्यस्य च विशेषतः ।
तदेव जयशब्दस्य तदेव तालकध्वनेः ॥१७२॥

अद्य भूमिदान-कन्यादानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्याग्रे मुखवाद्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

नृत्यगीत-जयशब्द-तालकध्वनीनामन्यतमकरणेऽप्येतदेव फलम् ।

लिङ्ग[1]पुराणे गीतस्य—

सर्वेषामेवपुण्यानामस्ति संख्या यशस्विनि ।
ममाग्रे गीयते येन तस्य संख्या न विद्यते ॥१७३॥

अद्यासंख्येयपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्याग्रे गानमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव गानस्य—

न घृते तादृशी प्रीतिर्न क्षीरे न च गुग्गुलौ ।
यादृशी चैव गान्धर्वे मम प्रीतिर्वरानने ॥१७४॥

अद्य घृतक्षीरगुग्गुलुदानजन्यशिवप्रीत्यधिकशिवप्रीतिकामो भगवतः शिवस्याग्रे गानमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पाठ, शिवपुराणे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(मानव) जतेक समयतक गान, बजान, नृत्य आदि करैत अछि, ओतेक सहस्र युगपर्यन्त रुद्रलोकमे वास करैत अछि ॥१६९॥

आइ हम हजार युग-पर्यन्त रुद्रलोकमे शोभित होयबाक कामनासँ भगवान् शिवक आगाँमे नृत्य करब।

[विद्यापति]

एही तरहें गान आ मुख-वादनहुक इएह फल होइत अछि।

एकर बाद तीनू साँझ पूजाक अवसर पर नृत्यादिक फल

स्कन्दपुराणमे

महादेवक पूजाक काल तीनू सन्ध्यामे जे गान-बजान, नाच अथवा मुख-वादन करैत अछि सेहो ईश्वर पद अर्थात् शिवत्व लाभ करैत अछि ॥१७०॥

आइ हम ईश्वर-पद प्राप्तिक कामनासँ तीनू साँझ भगवान् शंकरक पूजाक समयमे नृत्य करब।

[विद्यापति]

इयह फल वाद्यवादन आ' मुखवादनक सेहो अछि।

शिवधर्ममे मुखवादनक फल—

जे पुण्य भूमिदानक अछि तथा जे पुण्य कन्यादावक अछि—ओ दुनू पुण्य शिवपूजाक समयमे मुखवादनसँ लोक प्राप्त करैत अछि ॥१७१॥

उपर्युक्त पुण्य गीत, नृत्य तथा ताल-ध्वनि आ' भगवान् शंकरक 'जय' शब्दक सेहो अछि ।१७२ ।।

आइ हम भूमिदान आ कन्यादानसँ उत्पन्न फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक सम्मुख मुखवादन करब।

[विद्यापति]

नृत्य, गीत, जय शब्द तथा तालध्वनिमेसँ एकोटाक ओएह फल अछि।

लिंगपुराणमे गीतक फल –

"हे कीर्त्तिशालिनि ! सभ पुण्यक संख्या अछि, मुदा हमरा सम्मुख जे गबैत अछि, ओकर (पुण्य) असंख्य अछि" ॥१७३॥

आइ हम असंख्य पुण्य-फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शंकरक सम्मुख गान करब।

ओतहि गानक फल—

हे वरानने ! जेहन प्रीति हमरा गान्धर्व विद्यासँ अछि, ओहन प्रीति ने घृतमे, ने क्षीरमे, तथा ने गुग्गुलमे अछि ॥१७४॥

आइ हम घृत, क्षीर, गुग्गुल दानसँ जे शिवकें आनन्द होइत अछि ओहिसँ अधिक शिवक प्रसन्नताक कामनासँ भगवान् शिवक आगूमे गान करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

वीणादिवादनेप्येतदेव फलम् ।

याज्ञवल्क्ये गानस्य—

गीतज्ञो यदि गीतेन[1] नाप्नोति परमं पदम् ।
रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते[2] ॥१७५॥

अद्य परमपदप्राप्तिकामः रुद्रानुचरभवनपूर्वकरुद्रसहहर्षकामो भगवतः शिवस्याग्रे गानमहङ्करिष्ये

अथ पूजाफलम्

भविष्ये महेशार्च्चनस्य ।

अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ।
महेशार्च्चनपुण्यस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥१७६॥

अद्य षोडशगुणाश्वमेधबहुसहस्रराजसूयबहुशतपुण्याधिकपुण्यप्राप्तिकामो महेशार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

कौर्म्मे महादेवार्चनस्य ।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं नित्यमेव वा ।
येऽर्च्चयन्ति महादेवं ते रुद्रा नात्र संशयः ॥१७७॥

[विद्यापति]

शक्त्यपेक्षया फलभूमापेक्षया वा विकल्पः ।

अद्य रुद्रत्वभवनकामनया एककालं द्विकालं त्रिकालं वा महादेवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

नित्यपूजाफलम्[3]

अद्यादिरुद्रभवनकामो यावज्जीवं प्रत्यहं महादेवपूजामहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

अग्निहोत्रं त्रिवेदाश्च यज्ञाश्च बहुदक्षिणाः ।
शिवलिङ्गार्चनस्यैते कोट्यंशेनापि नो समाः ॥१७८॥

अद्य अग्निहोत्रित्व-त्रिवेदित्व-बहुदक्षिण-बहुयज्ञयायित्वफलकोटिगुणाधिकफल-प्राप्तिकामः शिवलिङ्गमर्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा० याज्ञवल्क्यस्मृति, श्लोक सं० ११६, योगेन पाठ अछि ।

२ तत्रैव टीका—गीतज्ञो यदि कथंचिद्योगेन परमं पदं नाप्नोति तर्हि रुद्रस्य सचिवो भूत्वा तेनैव सह मोदते-क्रीडति ।

३ तत्रैव नित्य पूजायाय् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

वीणा आदि वादनक सेहो इएह फल अछि।

याज्ञवल्क्यमे गानक फल—

"जँ गीतज्ञ गीत द्वारा परमपद प्राप्त नहि करैछ तँ रुद्रक अनुचर भय हुनके संग मोद (हर्ष)कें प्राप्त करैछ।" ॥१७५॥

आइ हम परमपद प्राप्तिक कामनासँ रुद्रक अनुचर भ' रुद्रक संग हर्ष प्राप्तिक कामनासँ भगवान्-शिवक समक्ष गान करब।

आब पूजाक फल

भविष्यपुराणमे महेशक अर्चनाक फल—

सहस्र अश्वमेध यज्ञ आ सैकड़ो राजसूय यज्ञ महेशक अर्चनाक पुण्यक सोलहमो भागक बराबरि नहि कय सकैछ।॥१७६॥

आइ हम सहस्र अश्वमेध यज्ञ आ शताधिक राजसूय यज्ञक पुण्यसँ सोलह गुणा अधिक पुण्य प्राप्तिक कामनासँ महेशक पूजा करब।

कूर्मपुराणमे महेशक अर्चनाक फल—

जे नित्य एक खेप, दू खेप अथवा त्रिकाल महादेवक पूजा करैत अछि ओ रुद्र भय जाइत अछि। एहिमे कोनो सन्देह नहि ॥१७७॥

[विद्यापति]

शक्तिक अपेक्षासँ अथवा फलक परिमाणक अपेक्षासँ ई भेद अछि।

आइ हम रुद्रत्व प्राप्त करबाक कामनासँ एक काल, द्विकाल अथवा त्रिकाल महादेवक अर्चना करब।

नित्य पूजाक फल—

आइसँ हम रुद्रत्व प्राप्तिक कामनासँ यावत् जीवन प्रतिदिन महादेवक पूजा करब।

ओतहि शिवलिंगार्चनक फल—

अग्निहोत्र,[1] तीनू वेद आ बहुतो दक्षिणा द्वारा सम्पादित यज्ञ—ई सभ शिवलिंगार्चनक कोट्यंशहुक बराबरि नहि होइछ ॥१७८॥

आइ हम अग्निहोत्र कयनिहार, तीनू वेद पढ़निहार आ' बहुतो दक्षिणा बाला अनेक यज्ञ कयनिहारक फलसँ कोटि गुणा अधिक फल—प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक अर्चन करब।

---

१. जे व्यक्ति अग्निहोत्र द्वारा होमाग्निकेँ सुरक्षित रखैत अछि, ओकरा अग्निहोत्री कहल जाइछ। विद्यापति-कृत लिखनावली, सम्पादक, डा० इन्द्रकान्त झा, पृ० ९।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाभारते विरूपाक्षपूजनस्य—

छित्वा भित्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् ।
यजेद्देवं विरूपाक्षं न स पापेन लिप्यते ॥१७९॥

अद्य बहुप्राणिकर्म्मक-छेदन-भेदन-जगद्धननजन्यपापालिप्तत्वकामो भगवन्तं विरूपाक्षमहं पूजयिष्ये ।

लिङ्गपुराणे शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

अनेकजन्मसाहस्रं भ्राम्यमाणस्तु योनिषु ।
कः समाप्नोति वै मुक्तिं लिङ्गार्च्चनमृते नरः ॥१८०॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामः शिवलिङ्गार्चनमहं करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य

भवनानि मनोज्ञानि विचित्राभरणाः स्त्रियः ।
धनं वा तुष्टिपर्य्यन्तं शिवस्यार्च्चनतो लभेत् ॥१८१॥

अद्य मनोज्ञबहुभवनविचित्राभरणबहुस्त्रीलाभकामः सन्तोषहेतुधनावाप्तिकामो भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे प्रातः शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

प्रातरुत्थाय यो लिङ्गं भक्त्या पूजयते सकृत् ।
कपिलाशतदानस्य यत्फलं समवाप्नुयात् ॥१८२॥

अद्यः प्रातः कपिलगवीशतदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भक्त्या शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये

मध्याह्ने शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

मध्यन्दिनकरे प्राप्ते यो लिङ्गं प्रतिपूजयेत् ।
सम्पूर्णां पृथिवीं दत्वा यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥१८३॥

अद्य मध्याह्ने सम्पूर्णपृथिवीदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

अपराह्ने शिवलिङ्गपूजनस्य ।

वारुणीमाश्रिते सूर्य्ये यः शिवं सम्यगर्च्चयेत् ।
गवां शतसहस्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात् ॥१८४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाभारतमे विरूपाक्षक पूजनक फल—

प्राणी सभकें छिन्न-भिन्न कय एहि समस्त जगत्कें नष्ट कय जे विरूपाक्षक पूजन करैत अछि, ओ पापभागी नहि होइत अछि ।।१७९।।

आइ हम वहुत प्राणीक छेदन, भेदन आ संसारक हननजन्य पापसँ अलिप्त होयबाक कामनासँ भगवान् विरूपाक्षक पूजन करव ।

लिंगपुराणमे शिवलिंगक अर्चनक फल—

अनेक सहस्र जन्मधरि अनेक योनि सभमे भ्रमण करैत कोन मनुष्य बिना लिंगार्चन कयने मुक्ति प्राप्त करैछ ? ।।१८०।।

आइ हम मुक्ति प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक पूजन करव ।

ओतहि शिवार्चनक फल—

शिवलिंगक पूजनसँ मानव अनेक सुन्दर भवन संतोषप्रद धन तथा अलंकृत ललनाकें प्राप्त करैत अछि ।।१८१।।

आइ हम मनोहर भवन, नाना प्रकारक आभरणसँ सुशोभित बहुत स्त्री आ' संतोषप्रद धन-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजव करव ।

शिवधर्ममे प्रातःकाल शिवलिंगार्चनक फल—

प्रातःकाल उठि जे भक्तिपूर्वक एको बेरि शिवलिंगक पूजव करैत अछि, ओ सय कपिला (गाय) दानक फल प्राप्त करैत अछि ।।१८२।।

आइ हम प्रातः सय कपिला (गाय) दानजन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ भक्तिपूर्वक शिवलिंगक पूजा करब ।

मध्याह्नमे शिवलिंगक पूजाक फल—

मध्याह्नमे जे शिवलिंगक पूजा करैत तछि, ओ सम्पूर्ण पृथ्वीक दावसँ जे फल होइछ, से फल प्राप्त करैत अछि ।।१८३।।

आइ हम मध्याह्नमे सम्पूर्ण पृथ्वी-दान-जन्य फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक लिंगक पूजन करव ।

अपराह्न मे विर्वलिंगक पूजनक भल—

जखन सूर्य वारुणी[१] अर्थात् पश्चिम दिशामे होइत छथि तखन जे सविधि शिवक अर्चना करैत छथि, ओ एक लाख गो-दानक फल प्राप्त करैत छथि ।।१८४।।

---

१ गंगावाक्यावली, पृ० -१७६-१७८ इन्द्रकान्त झा, विद्यापति-विमर्श, पृ० ६६ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यापराह्ने गोशतसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं सम्यगर्च्चयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मासि मासि च योऽश्नीऽयाद्यावज्जीवं सकृन्नरः ।
यश्चार्च्चयेत् सकृल्लिङ्गं सममेव न संशयः ॥१८५॥

अद्य यावज्जीवं मासान्तरितैकभोजनजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

स स्नातः सर्वतीर्थेषु स सर्वोपरि संस्थितः ।
यः पूजयेन्महापुण्यं लिङ्गं सर्वार्थसाधकम् ॥१८६॥

अद्य सर्वतीर्थस्नानजन्यफलसमफलसर्वोपरिसंस्थितत्वकामः शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यः प्रदद्याद् गवां लक्षं दोग्ध्रीणां वेदपारगे ।
एकाहमर्च्चयेल्लिङ्गं तस्य पुण्यं ततोऽधिकम् ॥१८७॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदोग्ध्रीगवीलक्षदानजन्यपुण्याधिकपुण्यप्राप्तिकामः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

स्कन्दपुराणे शिवलिङ्गपूजायाम्—

अर्च्चायामर्च्चयेद्यो यां पूर्णवर्षशतं नरः ।
एकं वा दिवसं लिङ्गे सममेतन्न संशयः ॥१८८॥

अद्य पूर्णवर्षशतकालिकप्रथमाधिकरणकशिवपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे शिवार्च्चनस्य—

मेरुमन्दरमात्रोऽपि राशिः पापस्य कर्म्मणः ।
शिवस्यार्च्चनतः क्षिप्रं विलयं याति सर्वशः ॥१८९॥

अद्य क्षिप्रं मेरुमन्दार[1]मात्रपापराशिक्षयकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, मेरुमन्दार ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम अपराह्णमे एक लाख गो-दानक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवक सविधि पूजा करब।

ओतहि शिवलिंगक अर्चनक फल—

जे मनुष्य आजीवन मासे-मास अर्थात्, प्रतिमास एक वेरि भोजन करैत छथि आ, जे एक वेरि लिंगक पूजन करैत छथि—(से दूनू) समाने थिकाह अर्थात् दुनू समाने पुण्यक भागी थिकाह। (एहिमे कोनो) सन्देह नहि ॥१८५॥

आइ हम आजीवन मासमे एकाहारजन्य पुण्यक तुल्य पुण्यक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक लिंगक पूजन करब।

ओतहि शिवलिंगार्चनक फल—

जे सम्पूर्ण अर्थक साधक, महाकल्याणकारी लिंगक पूजा करैत छथि, ओ सर्वश्रेष्ठ छथि आ' सभ तीर्थमे स्नानक फल पबैत छथि ॥१८६॥

आइ हम सभ तीर्थस्थान जन्य फलक सदृश फल आ' सर्वोपरि रहबाक कामनासँ शिवलिंगक पूजन करब।

ओतहि शिवलिंगक अर्चनक फल—

वेद-पारंगत विद्वान्कें एक लाख दूध-देबयवाली गाय-दान जे दैत अछि, ओहिसँ अधिक पुण्य एक दिन शिवलिंगक पूजनसँ होइत अछि ॥१८७॥

आइ हम वेद-पारंगत ब्राह्मणक हेतु देल गेल एक लाख दुधगरि गायसँ उत्पन्न पुण्यसँ अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक पूजन करब।

स्कन्दपुराणमे शिवलिंगक पूजाक फल—

"जे मनुष्य सम्पूर्ण सय वर्ष धरि प्रतिमामे हमरा पूजैत छथि अथवा, एको दिन हमर लिंगकें पूजैत छथि, ओहि दुनू पजाक फल बराबरिए होइछ। (एहिमे कोनो) सन्देह नहि ॥१८८॥

आइ हम पूर्ण सय वर्ष धरि पूजासँ उत्पन्न फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक पूजा करब।

शिवधर्ममे शिवार्चनक फल—

मेरु आ मन्दराचलक समानो पाप-कर्मक ढेर शिवक अर्चनसँ तुरन्त पूर्णतः समाप्त भ' जाइछ ॥१८९॥

आइ हम शीघ्र मेरु आ' मन्दराचलक समान पाप-राशिक क्षयक कामनासँ शिवार्चन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्ये शिवलिङ्गाच्चर्चनस्य—

यस्तु पूजयते लिङ्गं देवादिन्तु जगत्पतिम् ।
ब्राह्मणः क्षत्त्रियो वैश्यः शूद्रो वा मत्परायणः ॥१९०॥
तेषां प्रीतः प्रदास्यामि शुभाँल्लोकाननुत्तमान् ।

अद्य शिवप्रीतिशुभानुत्तमलोकप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे शिवपूजायाम्—

सौभाग्यं कान्तिमद्रूपं सत्यं त्यागः प्रभाविता ।
शौर्य्यञ्च जगति ख्यातिः शिवमच्चर्चयतो भवेत् ॥१९१॥

अद्य सुभगत्वकान्तिमद्रूपवत्वसत्यत्यागप्रभावित्वशूरत्वजगत्ख्यातित्वकामो भगवतः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवलिङ्गपूजायाम्—

न ते भूयः प्रयास्यन्ति योनिमार्गं सुसङ्कटम् ।
क्रमान्मोक्षं गमिष्यन्ति ये नरा लिङ्गमाश्रिताः ॥१९२॥

अद्य योनिसङ्कटागमनक्रमिकमोक्षावाप्तिकामः शिवलिङ्गमहमच्चर्चयिष्ये ।

तत्रैव ब्रह्मचर्य्येण त्रिसन्ध्यपूजायाम्—

ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा त्रिसन्ध्यं योऽच्चर्चयेच्छिवम् ।
कुलसप्तकमुद्धृत्य शिवलोके महीयते ॥१९३॥

अद्य कुलसप्तकनरकोद्धरणपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया ब्रह्मचर्य्येण त्रिसन्ध्यं भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भविष्ये शङ्कराच्चर्चनस्य—

न तत्र देशे दुर्भिक्षं न च मारो प्रवर्त्तते ।
नाकाले म्रियते राजा पूज्यते यत्र शङ्करः ॥१९४॥

अद्य दुर्भिक्षाभावमारीप्रवर्त्तनाभावाकालिकराजमरणाभावकामो भगवतः शिवस्य पूजनमहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे शिवलिंगार्चनक फल—

हमरामे अनन्य भक्ति रखनिहार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र जगत्पति आ' आदिदेव (हमरा) पूजैत अछि, ओकरा पर प्रसन्न भ' हम सर्वोत्तम शुभ लोक दैत छिऐक ॥१९०॥

आइ हम शिवप्रीतिपूर्वक परमोत्तम शुभ लोकक प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक लिंगक पूजन करब।

शिवधर्मम शिवपूजाक फल—

शिवक अर्चनसँ सौभाग्य, सुन्दर रूप, सत्य, त्याग, अधिकार, शौर्य आ' संसारमे ख्याति होइछ ॥१९१॥

आइ हम सौभाग्य, सुन्दर रूप, सत्य, त्याग, प्रभाव, शूरता आ' संसार मे ख्यातिक कामनासँ भगवान शिवक अर्चन करब।

शिवलिंगक पूजामे (फल) :—

जे मनुष्य शिवलिंगक आश्रित अछि, ओ क्रमशः मोक्ष प्राप्त करत आ' ओ फेर कष्टमय योनिमार्गमे नहि जायत ॥१९२॥

आइ हम योनि-संकटक अनागमन अर्थात् अप्राप्ति आ' क्रमशः मोक्ष प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक अर्चन करब।

ओतहि ब्रह्मचर्यपूर्वक त्रिसन्ध्य पूजामे (फल) :—

जे ब्रह्मचारी पवित्र भ' तीनू सन्ध्यामे शिवक अर्चना करैत छथि, ओ अपन सात पीढ़ीक उद्धार कय शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत छथि ॥१९३॥

आइ हम अपन सात पीढी पर्यन्तकेँ नरकसँ उद्धार कय शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कांमनासँ ब्रह्मचर्य व्रतक पालन करैत तीनू सन्ध्यामे भगवान शिवक पूजा करब।

भविष्यपुराणमे शंकरक अर्चनक फल :—

जाहि देशमे शंकरक पूजा होइत अछि, ओहि देशमे ने'त दुर्भिक्ष होइत अचि, ने महामारी होइत अछि आ' ने अकालमे राजा मरैत छथि ॥१९४॥

आइ हम दुर्भिक्ष, महामारी तथा अकालमे राजाक मृत्यु निवारणक कामनासँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्मे शिवार्च्चनस्य—

सर्वावस्थां गतो वापि युक्तो वा सर्वपातकै: ।
शिवमिष्ट्वा नर: सोऽपि प्रयाति परमाङ्गतिम् ॥१९५॥

अद्य परमगतिप्राप्तिकाम: शिवपूजनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य—

य: पुन: स्थानसङ्कल्पमुत्सृज्य शिवमर्च्चयेत् ।
सोऽश्वमेधफलं सम्यक् लभते नात्र संशय: ॥१९६॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकाम: शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

भक्त्या शिवार्च्चनस्य—

यस्तमर्च्चयते भक्तया तस्य पुण्यं ततोऽधिकम् ॥१९७॥

अद्याश्वमेधफलाधिकफलप्राप्तिकामो भक्त्या शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

नद्यादिस्थानसङ्कल्पे शिवार्च्चनस्य—

सरित्समुद्रतीरेषु पर्वतेषु वनेषु च ।
गिरिशृङ्गेषु तुङ्गेषु गह्वरेषु गृहेषु च ॥१९८॥
पुष्करिण्यां तड़ागेषु तीर्थेष्वायतनेषु च ।
यत्र वा रमते बुद्धिस्तत्र य: शिवमर्च्चयेत् ॥
सर्वयज्ञेषु यत्पुण्यं लभते नात्र संशय: ॥१९९॥

अद्य सर्वयज्ञपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकाम: सरित्तीरे शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे शिवाद्वैतज्ञानपूर्वक शिवपूजायाम्—

यस्तु सर्वगतं ज्ञात्वा यत्र तत्रार्च्चयेच्छिवम् ।
स विन्दति महापुण्यं शिवसायुज्यतां व्रजेत् ॥२००॥

अद्य महापुण्यप्राप्तिशिवसायुज्यगमनकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यत्फलं पाकयज्ञेषु हविर्यज्ञेषु यत्फलम् ।
एकाहात्तदवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने तथा ॥२०१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्ममे शिवार्चनक फल :—

सभ अवस्थाकेँ अर्थात्, नीक अथवा अधलाह—कोनो तरहक अवस्थाकेँ प्राप्त अथवा सभ तरहक पापसँ युक्त जे मनुष्य अछि, सेहो महादेबक पूजा कय परम पदकेँ प्राप्त करैत अछि ।।१९५।।

आइ हम परम गतिक प्राप्तिक कामना सँ शिव-पूजन करब।

ओतहि शिवार्चनक फल :—

जे मनुष्य स्थानक संकल्पकेँ त्याग कय शिवक अर्चन करैत अछि ओ अश्वमेध यज्ञक सम्पूर्ण फल प्राप्त करैत अछि। एहिमे कोनो सन्देह नहि ।।१९६।।

आइ हम अश्वमेधयज्ञक फलसमफल प्राप्तिक कामनासँ शिवार्च्चन करव]

भक्तिपूर्वक शिवार्चनक फल :-

जे भक्तिपूर्वक शिवार्चन करैत अछि, ओकरा अश्वमेधयज्ञक फलसँ अधिक फल प्राप्त होइत छैक ।।१९७।।

आइ हम अश्वमेध यज्ञक फल सँ अधिक फलक प्राप्तिक कामवा सँ भक्ति-पूर्वक शिवार्चन करब।

नदी आदि स्थान पर संकल्प कय शिवार्चनक फल :—

नदी-तट, समुद्र-तट, पर्वत, वन, ऊँच-ऊँच पर्वत-शृंग (पर्वतक शिखर), गुफा, घर, पोखरि, पुष्करिणी (कमल-सरोवर) एवं तीर्थ—एहि सभमे जतय बुद्धि रमय, ओतय जे शिवक अर्चन करैत अछि, ओ सम्पूर्ण यज्ञक पुण्यक बराबरि पुण्य प्राप्त करैत अछि। एहिमे संशय नहि अछि ।।१९८-१९९।।

आइ हम सम्पूर्ण यज्ञक पुण्यक सदृश पुण्य प्राप्तिक कामनासँ नदीक तट पर शिवार्चन करब।

शिवपुराणमे शिवाद्वैतज्ञानपूर्वक शिवक पूजाक फल :—

जे शिवकेँ सर्वगत मानि जतय कतहु शिवक पूजा करैत अछि, ओ महापुण्य प्राप्त कय शिवक सायुज्यता प्राप्त करैत अछि ।।२००।।

आइ हम महापुण्य आ' शिव-सायुज्यक प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक पूजन करब।

ओतहि शिवलिंगार्चनक फल :—

जे फल पाकयज्ञमे आ' जे फल हविर्यज्ञ सभमे होइत अछि, से फल एक दिन शिवलिंगार्चन कयलासँ प्राप्त होइत अछि ।।२०1।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य बहुपाकयज्ञबहुहविर्यज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य लिङ्गार्चनमहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे शिवलिङ्गपूजनस्य—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ।
लीयन्ते तानि लिङ्गेषु तस्माल्लिङ्गं प्रपूजयेत् ॥२०२॥

अद्य पृथिवीवर्त्तिबहुतीर्थायतसेवनजन्यपुण्यसमपुण्यकामः शिवलिङ्गकहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव महादेवपूजायाम्—

सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ।
यः पूजयेन्महादेवं स गच्छेत् परमां गतिम् ॥२०३॥

अद्य सर्वतीर्थस्नानसर्वयज्ञदीक्षितत्वजन्यपुण्यसमपुण्यपरमगतिप्राप्तिकागो भगवन्तं महादेवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपुराणे शिवपूजायाम्—

कामेनाभ्यर्च्चमानस्य शृणु चैव महत्फलम् ॥२०४॥
मम तुल्यबलो भूत्वा त्रिशूली वृषवाहनः ।
न हन्यते गतिस्तस्य पवनस्याम्बरे यथा ॥२०५॥

अद्य शिवतुल्यबलत्वत्रिशूलित्व वृषवाहनत्वाप्रतिहतगतित्वकामनया भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शैवे ईश्वरपूजायाम्—

ईश्वरं येन भावेन पूजयेत्तस्य तत्फलम् ॥२०६॥
[विद्यापति]

भाव=इच्छा ।

अद्य वाञ्छितफलप्राप्तिकामो भगवन्तमीश्वरमहं पुजयिष्ये ॥

तत्रैव शिवलिङ्गर्च्चनस्य—

षष्टिकोटिसहस्राणि षष्टिकोटिशतानि च ।
षष्टितीर्थसहस्राणि परिसंख्या प्रकीर्त्तिता ॥
शिवलिङ्गार्च्चनस्यैते कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥२०७॥

अद्य बहुषष्टिकोटिसहस्रबहुषष्टिकोटिशतषष्टितीर्थसहस्रसेवनजन्यफलसमफल-शतगुणाधिकफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम बहुत पाकयज्ञ तथा बहुत हविर्यज्ञ फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिव-लिंगक अर्चन करब ।

नन्दिकेश्वरमे शिवलिंग-पूजनक फल :—

पृथ्वी मे जतेक तीर्थ अछि आ जतेक पुण्य-स्थान अछि, ओ सभ शिवलिंगमे लीन अछि । अतएव, लिंगक पूजा करबाक चाही । ॥२०२॥

आइ हम पृथ्वी परक बहुत तीर्थक सेवनसँ उत्पन्न पुण्यक सदृश पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक पूजन करब ।

ओतहि महादेवक पूजामे फल :—

जे महादेवक पूजा करैत अछि, मानू ओ सभ तीर्थमे स्नान कय चुकल, सभ यज्ञमे दीक्षित भय गेल आ' ओ परम गतिकेँ प्राप्त करैत अछि । ॥२०३॥

आइ हम सम्पूर्ण तीर्थस्नान, आ' सभ यज्ञमे दीक्षित होयबासँ उत्पन्न पुण्यक सदृश पुण्य आ' परमगति प्राप्तिक कामनासँ भगवान महादेवक पूजा करब ।

शिवपुराणमे शिव-पूजाक फल :—

कामनापूर्वक शिवार्चन कयनिहारकेँ प्राप्त होब' बाला महान फल सुनू ॥२०४॥

(एहन व्यक्ति) हमर समान पराक्रमी, त्रिशूलधारी तथा वृषभवाहन भ' जाइत अछि आ ओकर गति आकाशमे वायुक गतिसदृश कतहु प्रतिहत नहि होइत छैक ॥२०५॥

आइ हम शिव-तुल्य बलत्व, त्रिशूलित्व तथा वृष-वाहनत्व एवं अप्रतिहत गति प्राप्त करबाक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब ।

शैवमे ईश्वरक पूजाक फलः—

जे जाहि भावनासँ ईश्वरक पूजा करैत अछि, ओकरा ओए-एह फल होइत छैक ॥२०६॥

[विद्यापति]

भावक अर्थ इच्छा थीक ।

आइ हम वाञ्छित फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान् ईश्वरक पूजा करब ।

ओतहि शिवलिंगार्चनक फलः—

साठि हजार करोड़, साठि सय करोड़ तथा साठि हजार तीर्थक सेवनक फलक जे संख्या कहल गेल अछि ओ शिवलिंग-पूजनक सोलहमो कलाकेँ नहि प्राप्त कय सकैछ ॥२०७॥

आइ हम अनेक साठि कोटि सहस्र, अनेक साठि कोटि सय आ' साठि सहस्र तीर्थक सेवनसँ प्राप्त फलक अपेक्षा सय गुना अधिक फलक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समन्त्रकशिवार्च्चनस्य—

अयं विनैव मन्त्रेण पुण्यराशिः प्रकीर्त्तितः ।
स्यादयं मन्त्रयुक्तश्चेत् पुण्यं शतगुणं भवेत् ॥२०८॥

अद्यामन्त्रकशिवपूजाजन्यपुण्यशतगुणपुण्यप्राप्तिकामो मन्त्रेण भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ॥

मन्त्रः—"ॐनमः शिवायेति" ॥

शिवपुराणे शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

चान्द्रायणशतं कृत्वा यत्फलं लभते नरः ।
तत्फलं लभते मर्त्यो मम लिङ्गाभिपूजने ॥२०९॥

अद्य चान्द्रायणशताचरणजन्यफलसरूपफलप्राप्तिकामः शिवलिङ्गार्च्चनमहं करिष्ये ।

शिवधर्म्मे समन्त्रकशिवार्च्चनस्य—

जितेन्द्रियः शान्तमनाः शिवं मन्त्रेण योऽर्च्चयेत् ।
न तस्य शक्यते वक्तुं पुण्यं वर्षशतैरपि ॥२१०॥
एतावच्छक्यते वक्तुं यस्मिन्देशे वसेदयम् ।
सोपि देशो भवेत्पूतः किं पुनस्तस्य बान्धवाः ॥२११॥
यस्यायमन्नमश्नाति ये वा[1]स्य परिचारकाः ।
तेपीह तत्समाज्ञेया यैर्विना न शिवार्च्चनम् ॥२१२॥

अद्य वर्षशतानिर्वचनीयपुण्यप्राप्तिबहुबान्धवस्वान्नदातृपरिचारकपूजानुकूल-पुरुषत्तहितात्मीयपापक्षयकामो भगवतः शिवस्य मन्त्रेणार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

सततं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

सर्वभूतोद्भवं देवं सर्वभूतपतिं शिवम् ।
अर्च्चयेत् सततं लिङ्गे यदीच्छेद्भूतिमात्मनः ॥२१३॥

अद्यादि भूतिकामः सततं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

सततं भगवद्विभूषणस्य—

पुण्याभिरद्भिः स्नानञ्च चन्दनेनानुलेपनम् ।
मनोरमैश्च सततं गन्धमाल्यैर्विभूषितम् ॥
कुर्य्याद्वै सततं रुद्रं यदीच्छेद्भूतिमात्मनः ॥२१४॥

---

१. ने० पा०, चास्य ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मन्त्रसहित शिवार्चनक फल :–

बिना मन्त्रसँ (पूजनक) ई पुण्यराशि कहल गेल अछि। जँ ई (पूजन) मन्त्र-युक्त हो तँ एकर पुण्य शतगुण अधिक भ' जाइछ ॥२०८॥

आइ हम मन्त्ररहित शिव-पूजासँ उत्पन्न पुण्यसँ सय गुना अधिक पुण्य प्राप्तिक कामनासँ मन्त्र द्वारा भगवान् शिवक पूजा करब।

'ॐ नमः शिवाय' ई मन्त्र थीक।

शिवपुराणमे शिवलिंगार्चनक फल—

एक सय चान्द्रायण व्रत कय मानव जे फल प्राप्त करैत अछि, ओ फल हमर लिंगकँ पूजनसँ प्राप्त होइछ ॥२०९॥

आइ हम सय चान्द्रायणव्रत कयलासँ उत्पन्न फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगार्चन करब।

शिवधर्मने समन्त्रक शिवार्चनक फल :–

जे व्यक्ति जितेन्द्रिय आ' शान्तचित्त भ' 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्रसँ शिवक पूजा करैत अछि, ओकर पुण्यक वर्णन सैयो वर्षमे नहि कयल जा सकैछ। एतबय कहल जा सकैछ जे जाहि देश मे ओ (पूजा कयनिहार) बसैत अछि, ओ देश पवित्र भय जाइत अछि। (तखन) ओकर बान्धवक कोन बात? ओ जकर अन्न खाइत अछि, आ' जे ओकर परिचारक अछि आ' जकर बिना शिवक पूजा नहि भय सकैछ, ओहो ओही (पूजक) क समान भय जाइछ ॥२१०-२१२॥

आइ हम सैयो वर्षमे अकथनीय पुण्यक प्राप्ति, बहुत बान्धव, अन्न देनिहार, सेवक तथा पूजानुकूल पुरुष-सहित अपन पापक्षयक कामनासँ भगवान् शिवक मन्त्र सहित अर्चना करब।

सतत शिवलिंगक अर्चनाक फल :—

जँ अपन ऐश्वर्यक इच्छा राखी तँ सम्पूर्ण भूतकेँ उत्पन्न करयवला आ' सभ प्राणीक स्वामी शिवक पूजा सतत करबाक चाही ॥२१३॥

आइसँ हम ऐश्वर्यक कामनासँ निरन्तर भगवान् शिवक लिंगक पूजन करब।

सतत भगवान् शिवकेँ विभूषित करबाक फल :–

यदि ऐश्वर्यक इच्छा हो तँ रुद्रके पवित्र जलसँ स्नान आ' चन्दनसँ अनुलेपन कय सुन्दर गन्धमाल्यसँ हुनका सतत विभूषित करबाक चाही ॥२१४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यादि भूतिकामः पुण्यजलैः स्नपयित्वा चन्दनानुलिप्य सुगन्धिबहुकुसुमैर्भगवतो रुद्रस्य विभूषणमहंकरिष्ये ।

शिवधर्म्मे रुद्रपूजनस्य—

पुष्पं वा यदि वा पत्रं यत्पादयुगले जलम् ।
दत्वा तरति संसारं रुद्रोऽसौ किं न पूज्यते ॥२१५॥

अद्य संसारतरणकामो भगवतो रुद्रस्य पूजामहं करिष्ये ।

अर्द्धरात्रे शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यो लिङ्गमर्द्धरात्रे तु शुचिर्भूत्वा समर्च्चयेत् ।
सम्यगिष्टं शतं तेन यज्ञानां लब्धमेव च ॥२१६॥

अद्यास्मिन्नर्द्धरात्रे सम्यगिष्टशतयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

स्कन्दपुराणे महोपहारपूजायाम्—

महामाल्योपहारैश्च यो मां जप्यैश्च पूजयेत् ।
ददामि ब्रह्मलोकस्य वासं वस्तुं सुपूजितम् ॥२१७॥

[विद्यापति]

"उपहारैर्गन्धादिभिः" ॥

अद्य ब्रह्मलोकाधिकरणकपूजितात्मीयवासकाम एभिर्म्महोपहारैर्जप्यैश्च भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

स्नानोत्तरप्रात्यहिक प्रातःपूजने—

स्नात्वा यः पूर्वसन्ध्यायां सदा मामधिच्छति[१] ।
स मृतो यक्षराजस्य मित्रं भवति वीर्य्यवान् ॥२१८॥

[विद्यापति]

"सदेति सङ्कल्पादारभ्य जीवनपर्य्यन्तम्" ।

अद्यादि तनुत्यागानन्तरयक्षराजमित्रत्ववीर्य्यवत्त्वप्राप्तिकामः स्नात्वाऽहरहः प्रातः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ॥

शिवधर्म्मे शीताम्बुस्नानधारोष्णपयःस्नानघृतस्नानोत्तरपूजायां—

लिङ्गं शीताम्बुना स्नाप्य धारोष्णपयसा ततः ।
स्नाप्य पश्चाद् घृतेनैव कृतमेतद्विशिष्यते ॥२१९॥

---

[१] ने० पा०, मभिगच्छति ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइसँ हम ऐश्वर्यक कामनासँ पवित्र जल द्वारा स्नान कराय, चन्दनसँ अनुलिप्त कय, नाना प्रकारक सुगन्धित फूल सभसँ भगवान् रुद्रकेँ विभूपित करब।

शिवधर्मसे रुद्र-पूजनक फल :—

जनिक पद-युगलमे पुष्प वा पत्र वा गंगाजल दय लोक संसारकेँ पार करैत अछि, ओहि रुद्रक पूजा किएक ने कयल जाय? ॥२१५॥

आइ हम संसारकेँ पार करबाक कामनासँ भगवान् रुद्रक पूजा करब।

अर्द्धरात्रिमे शिवलिंगार्चनक फल—

जे पवित्र भ' अर्द्धरात्रिमे शिवलिंगकेँ पूजैत अछि, बुझू ओ विधिपूर्वक सय यज्ञ करबाक फल पाबि चुकल ॥२१६॥

आइ हम एहि अर्द्धरात्रिमे यथोचित अनुष्ठान कय सय यज्ञक फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब।

स्कन्दपुराणमे महोपहार पूजाक फल :—

जे व्यक्ति गंध, मालादि उपहारसँ तथा जपसँ हमर पूजा करैत अछि, ओकरा हम ब्रह्मलोकमे बसबाक हेतु सुन्दर बास दैत छिऐक ॥२१७॥

[विद्यापति]

उपहार—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि।

आइ हम ब्रह्मलोकमे सम्मानित अपन बासक कामनासँ एहि जप तथा महोपहारसँ भगवान् शिवक पूजा करब।

स्नानोत्तर नित्य प्रातः पूजनमे फल—

जे प्रातःकाल स्नान कय सर्वदा हमर पूजा करैत अछि, ओ मृत्युक उपरान्त यक्षराजक मित्र आ' वीर्य्यवान होइत अछि ॥२१८॥

[विद्यापति]

'सदा' एहिसँ संकल्प लय जीवन पर्यन्त करबाक चाही।

आइसँ हम शरीर-त्यागानन्तर यक्षराज कुवेरक मित्रता ओ' वीर्यवत्त्वक कामनासँ प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान कय शिवक पूजा करब।

शिवधर्ममे शीतल जल-स्नान, धारोष्ण दुग्ध-स्नान एवं घृतस्नानोत्तर पूजाक फल—

(शिव-लिंगकेँ) शीतल जलसँ स्नान करय तत्पश्चात् धारोष्ण दूधसँ स्नान करयबाक बाद घी सँ स्नपन विशिष्ट मानल जाइत अछि ॥२१९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एतत्स्नानत्रयं कृत्वा पूजयित्वा तु भक्तितः ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोति मानवः ॥२२०॥

अद्य अश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामनया शिवलिङ्गस्य शीताम्बुस्नानोत्तर-पूजनमहङ्करिष्ये ॥

यावज्जीवपूजायाम्—

एवं वेलासु सर्वासु स्ववेलास्वपि शङ्करम् ।
भक्त्या पूजयते नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥२२१॥

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

शिवपूजायाम्—

सत्तयाजिसहस्रेभ्यः सर्वविद्यार्थपारगः ।
सर्वविद्यार्थवित् कोट्याः शिवभक्तो विशिष्यते ॥२२२॥

अद्य सर्वविद्यार्थवित्कोटिपुण्याधिकपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपूजायाम्—

ये भक्त्या देवदेवेशं शिवं वै शरणङ्गताः ।
इहलोके सुखं प्राप्य ते यान्ति परमं पदम् ॥२२३॥

अद्यैतल्लौकिकसुखावाप्तिपूर्वकपरमपदप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवार्चने—

सर्वमन्यत् परित्यज्य शिवैकाहि[1]तमानसः ।
शिवपूजाविधिं कुर्य्याद्यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥२२४॥

अद्य शुभावाप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपुराणे दिवसदशतयाधिकरणकशिवलिङ्गार्चने ।

गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ।
दशाहात्तदवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने रतः ॥२२५॥

अद्यादि दिवसदशतयं यावत् प्रत्यहं सम्यग्दत्तगोशतसहस्रफलसमफल-प्राप्तिकामनया शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, शिवैकावृतमानसः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एहि तीनू प्रकारक स्नान कराय भक्तिपूर्वक पूजा करयवला मानव सहस्र अश्वमेघ यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥२२०॥

आइ हम सहस्र अश्वमेघ यज्ञक फलक तुल्य फल प्राप्तिक कामनासँ शीतल जलसँ शिवलिंगक स्नपन कयलाक बाद पूजा करब।

आजीवन पूजा करबामे फल :–

जे एहि प्रकारेँ सभ समयमे आ' अपनो समयमे भक्तिभावसँ नित्य शंकरक पूजा करैत अछि, ओ सभ अभिलषित वस्तु प्राप्त करैत अछि ॥२२१॥

आइसँ हम सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ आजीवन प्रतिदिन शिवक पूजा करब।

शिवक पूजामे फल–

हजार सत्रयज्ञ कयनिहारसँ सभ विद्यामे पारंगत व्यक्ति विशिष्ट होइत अछि आ' एहेन कोटियो सभ विद्यामे पारंगतसँ शिवभक्त विशिष्ट होइत अछि ॥२२२॥

आइ हम कोटियो सर्वविद्याविदक पुण्यसँ अधिक पुण्यक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजन करब।

शिवक पूजामे फल–

जे भक्तिपूर्वक देव-देवेश शिवक शरणमे जाइत अछि, ओ एहि लोकमे सुख प्राप्त कय परमपदकेँ प्राप्त करैत अछि ॥२२३॥

आइ हम ऐहिक सुख प्राप्तिपूर्वक परमपद प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजन करब।

शिवार्चनक फल–

जँ अपन शुभ चाही तँ अन्य सभकेँ छोड़ि शिवमे मन लगा कय शिवक पूजाक विधान करबाक चाही ॥२२४॥

आइ हम शुभ-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब।

शिवपुराणमे दस दिन धरि शिवलिंगक अर्चनामे फल–

विधि-पूर्वक सय हजार अर्थात्—एक लाख गोदानक जे फल होइत अछि, ओ फल दसे दिन शिवलिंगक अर्चनमे रत रहला सँ प्राप्त होइत अछि ॥२२५॥

आइसँ दस दिन-पर्यन्त प्रतिदिन विधिपूर्वक सय हजार गोदानक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ हम शिवलिंगक अर्चन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विंशतिदिवसाधिकरणकशिवाराधनस्य—

वाजपेयशतैरिष्ट्वा यत्फलं विन्दते द्विजः ।
विप्रो विंशतिरात्रेण रुद्रभक्तस्तदश्नुते ॥२२६॥

अद्यादि विंशतिदिनप्रत्यहं वाजपेययज्ञशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतो रुद्रस्याराधनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

विप्रोऽत्राधिकारी ।

मासार्द्धं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मासार्द्धमपि यो लिङ्गं नैरन्तर्य्येण चार्च्चयेत् ।
पुरुषोत्तमः स विज्ञेयो नैरन्तर्य्यं हि दुष्करम् ॥२२७॥

अद्यादि मासार्द्धं व्याप्य प्रत्यहं पुरुषोत्तमत्वभवनकामनया शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे मासं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

अश्वमेधसहस्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ।
मासेन तदवाप्नोति रुद्रलिङ्गार्च्चने रतः ॥२२८॥

अद्यादि मासं यावत् प्रत्यहं सम्यगिष्टाश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामो रुद्रलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव मासं शिवलिङ्गार्च्चनस्य —

सर्वेषामेव तीर्थानां यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
मासेन तदवाप्नोति लिङ्गे योऽर्च्चयते शिवम् ॥२२९॥

अद्यादि मासमेकं यावत्प्रत्यहं सर्वतीर्थसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो लिङ्गे भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

कौर्म्मे मासं व्याप्य शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

[विद्यापति]

विप्र इत्यधिकृत्य

गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ।
मासेन तदवाप्नोति सम्यग्लिङ्गार्च्चने रतः ॥२३०॥

अद्यादि मासमेकं यावत्प्रत्यहं सम्यग्दत्तगोशतसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बीस दिन धरि शिवक आराधनाक फल—

सय वाजपेय यज्ञक अनुष्ठानसँ द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय आ' वैश्य जे फल प्राप्त करैत अछि, ओ फल रुद्रभक्त विप्र बीसे राति मे लाभ करैत अछि ॥२२६॥

आइसँ हम बीस दिन धरि प्रतिदिन सय वाजपेय यज्ञजन्य फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् रुद्रक आराधना करब ।

[विद्यापति]

विप्रक अर्थ अधिकारी थिक ।

मासक आधा अर्थात् एक पक्षधरि शिवलिंगार्चनक फल—

जे व्यक्ति मासार्द्ध भरि निरन्तर (शिव-लिंगक) अर्चन करैत अछि, ओकरा पुरुषोत्तम बूझक चाही। किएक तँ (साधनामे) नैरन्तर्य बहुत कठिन होइत छैक ॥२२७॥

आइसँ हम मासार्द्ध पर्यन्त प्रतिदिन पुरुषोत्तम होयबाक कामनासँ शिवलिंगक अर्चन करब ।

शिवपुराणमे मासपर्यन्त लिंगार्चनक फल—

जे फल विधिपूर्वक कयल गेल सहस्र अश्वमेध यज्ञक होइत अछि, ओ फल रुद्रलिंगार्चनमे संलग्न व्यक्ति मासे दिनमे प्राप्त कय लैत अछि ॥२२८॥

आइ सँ हम मास पर्यन्त प्रतिदिन विधिपूर्वक सहस्र अश्वमेध यज्ञक सम्यक् अनुष्ठानसँ प्राप्त फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ रुद्रलिंगार्चन करब ।

ओतहि मास पर्यन्त शिवलिंगक अर्चनक फल—

सभ तीर्थक जे फल कहल गेल अछि, ओ फल एके मास भरि शिवलिंगक पूजा कयनिहार प्राप्त करैत अछि ॥२२९॥

आइसँ एक मास पर्यन्त हम प्रतिदिन सर्व-तीर्थ-सेवनसँ उत्पन्न फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ लिंगमे भगवान् शिवक अर्चन करब ।

कूर्मपुराण मे मास-पर्यन्त शिवलिंगार्चनक फल—

[विद्यापति]

एहिसँ आगाँ विप्र अर्थात् अधिकारीक हेतु अछि ।

सविधि एक लाख गोदानक जे फल होइत अछि, से फल एके मास भरि लिंगार्चनमे विधिवत् रत रहि प्राप्त करैत अछि ॥२३०॥

आइसँ हम एक मास पर्यन्त प्रतिदिन विधिपूर्वक एक लाख गोदान कयलासँ प्राप्त फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंगक अर्चन करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवमाहात्म्ये मासं शिवार्च्चनस्य—

यः कुर्यात् पूजनं मासि एकाहारो जितेन्द्रियः ।
स यत्फलमवाप्नोति न तत्सर्वैर्महामखैः ॥२३१॥

अद्यादि सर्वमहामखकरणकफलाधिकफलप्राप्तिकामो मासमेकं व्याप्य प्रतिदिनमेकाहारो जितेन्द्रियः शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे मासत्रये शिवलिङ्गार्चनस्य—

राजसूयसहस्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ।
त्रिभिर्मासैरवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने रतः ॥२३२॥

अद्यादि सम्यगिष्टराजसूयसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामो मासत्रयं यावदहरहर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

मासनवतयाधिकरणकशिवलिङ्गपूजनस्य—

सर्वतीर्थाभिषेकञ्च सर्वदानफलानि च ।
सर्वयज्ञफलञ्चैव उपवासफलानि च ॥२३३॥
ततोपि विधिना व्यासव्रतानि विविधानि च ।
सम्यगिष्टफलाः सर्वे क्षमाचारसमाधिना ॥२३४॥
नवमासान् समासाद्य ब्राह्मणो विजितेन्द्रियः ।
सर्वमेतदवाप्नोति लिङ्गे योऽर्च्चयते शिवम् ॥२३५॥

अद्यादि क्षमाचारसमाधिमत्सर्वतीर्थाभिषेकसर्वदानसर्वयज्ञोपवासविधिमद्विविधबहुव्रतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो मासनवतयं यावदहरहः शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ॥

[विद्यापति]

जितेन्द्रियो ब्राह्मणोऽत्राधिकारी ।

शिवमाहात्म्ये संवत्सरं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

संवत्सरञ्च मां देवि एकाहारेण योऽर्च्चयेत् ।
न तस्य पुनरावृत्तिः सत्यमेतद्ब्रवामि ते ॥२३६॥

अद्यादि संवत्सरं यावत् प्रत्यहमेकाहारोऽपुनरावृत्तिकामो भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिव-माहात्म्यमे शिवार्चनक फल—

जे एकभुक्त कय इन्द्रियकें संयमित राखि एक मास पर्यन्त शिवक पूजन करैत अछि, ओ जे फल पबैत अछि, से फल सय महायज्ञहुसँ प्राप्त नहि होइत अछि ॥२३१॥

आइसँ हम सभ महायज्ञक अनुष्ठानसँ प्राप्त फलसँ अधिक फल-प्राप्तिक कामनासँ एक मास-पर्यन्त प्रतिदिन जितेन्द्रिय आ एकाहार रहि शिवक पूजा करब ।

शिवपुराणमे तीन मासपर्यन्त शिवलिंगार्चनक फल—

विधिपूर्वक कयल गेल सहस्र राजसूय यज्ञसँ जे फल होइत अछि, से फल शिवलिंगार्चनमे रत व्यक्ति तीन मासमे प्राप्त करैत अछि ॥२३२॥

आइसँ हम विधिपूर्वक कयल गेल सहस्र राजसूय यज्ञक फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ तीन मासपर्यन्त प्रतिदिन शिवलिंगक अर्चन करब ।

नओ मास पर्यन्त शिवलिंग-पूजनक फल—

जे जितेन्द्रिय ब्राह्मण नओ मास पर्यन्त प्रतिदिन शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओ ओहि सभ फलकें प्राप्त करैत अछि जे फल सभ तीर्थमे अभिषेक कयलासँ, सभ प्रकारक दान कयलासँ, सभ प्रकारक यज्ञक अनुष्ठानसँ, उपवास कयलासँ, विधि-विधानपूर्वक अनेक व्यास व्रत कयलासँ, क्षमाक आचार एवं समाधिसँ प्राप्त होइत अछि ॥२३३-२३५॥

आइसँ हम क्षमाक आचार, समाधियुक्त सर्वतीर्थक अभिषेक, सर्वदान, सर्वयज्ञ, उपवास, आ' विधिपूर्वक कयल गेल बहुत व्रतसँ उत्पन्न फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ नओ मास पर्यन्त प्रतिदिन शिवलिंगार्चन करब ।

[विद्यापति]

एतय जितेन्द्रिय ब्राह्मणक अर्थ अधिकारी होइत अछि ।

शिवमाहात्म्यमे संवत्सरपर्यन्त शिवलिंगार्चनक फल—

हे देवि ! संवत्सर पर्यन्त एकाहार कय जे हमर अर्चन करैत अछि, संसारमे ओकर पुनरागमन नहि होइत छैक । ई हम सत्य कहि रहल छी ॥२३६॥

आइसँ हम संवत्सर पर्यन्त प्रतिदिन एकाहार रहि (संसारमे) पुनरागमन नहि होयबाक कामनासँ भगवान् शिवक अर्चन करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणे संवत्सरमेकलिङ्गाधिकरणकशिवपूजनस्य—

यस्तु संवत्सरं पूर्णं पूजयेदेकलिङ्गके ।
तस्य तुष्टः प्रयच्छामि गाणपत्यं न संशयः ॥२३७॥

अद्यादि संवत्सरं यावत् अहरहः शिवप्रसादहेतुकगाणपत्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यैकलिङ्गे[1] पूजामहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

"वृषादिशून्यं लिङ्गमेकलिङ्गम्"

शिवधर्म्मे सङ्गपरित्यागपूर्वक निरन्तरसंवत्सरपूजनस्य— दिनादिपूजाफलमुक्तम् ।

अनेन क्रमयोगेन पुण्यवृद्धिर्दिने दिने ।
ज्ञेयं संवत्सरस्यापि यावत्कालं समर्च्चयेत् ॥२३८॥
यः पुनः सङ्गमुत्सृज्य शिवलिङ्गं प्रपूजयेत् ।
नैरन्तर्य्याच्छतगुण पुण्यं तस्य प्रवर्त्तते ॥२३९॥

[विद्यापति]

"सङ्गो विषयासङ्गः"

अद्यादि संवत्सरशिवपूजाजन्यफलशतगुणफलप्राप्तिकामः संवत्सरं यावत् प्रत्यहं विमुक्तसङ्गो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

तत्रैव मुक्तसङ्गस्याब्दार्द्ध पूजनस्य —

पञ्चाशद्गुणितं पुण्यमब्दार्द्धं योऽर्च्चयेच्छिवम् ॥२४०॥

अद्यादि षण्मासावच्छिन्नशिवपूजाजन्यफलपञ्चाशतगुणफलप्राप्तिकामनया विमुक्तसङ्गः षण्मासान् यावत् प्रत्यहं शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

ऋतुपूजनस्य —

ऋतावृतौ तदर्द्धं स्यात ॥२४१॥

[विद्यापति]

"तदर्द्धं पञ्चाशदर्द्धम् ।"

अद्यादि ऋतुपूजाजन्यफलपञ्चविंशतिगुणफलप्राप्तिकाम ऋतावहरर्हविमुक्तसङ्गो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा० लिङ्ग ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे संवत्सर-पर्यन्त एकलिंगमे शिव-पूजनक फल :—

जे व्यक्ति संवत्सर-पर्यन्त (वर्षपर्यन्त) एकलिंगमे शिव-पूजन करैत अछि, ओकरा पर प्रसन्न भ' हम ओकरा गाणपत्य दैत छिऐक। एहिमे संशय नहि ॥२३७॥

आइसँ हम संवत्सर पर्यन्त प्रतिदिन शिवक प्रसादजन्य गणपतित्वक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक एकलिंगमे पूजा करब।

[विद्यापति]

वृषादि अर्थात् बसहा आदिसँ शून्य लिंग 'एकलिंग' थिकाह।

संसारिक विषयमे आसक्तिपरित्यागपूर्वक वर्ष-पर्यन्त निरन्तर पूजनक फल :—

शिवधर्ममे दैनिक पूजाक फल प्रतिपादित कय ओहि क्रममे कहल गेल अछि—

एहि क्रमक योगसँ वर्ष पर्यन्त जखन धरि शिवक पूजा करैत अछि, तखन धरि क्रमशः प्रत्येक दिन पुण्यक वृद्धि होइत जाइत अछि ॥२३८॥

जे पुनः आसक्तिक त्याग कय शिवलिंग पूजैत अछि, ओकरा नैरन्तर्यक फलसँ शतगुण अधिक फल होइत छैक ॥२३९॥

[विद्यापति]

संगक अर्थ विषयासक्ति थिक।

आइ हम संवत्सर-पर्यन्त (वर्षपर्यन्त) शिव-पूजासँ उत्पन्न फलसँ शतगुण अधिक फलक कामनासँ संवत्सर-पर्यन्त प्रतिदिन संगरहित भ' भगवान् शंकरक पूजा करब।

ओतहि निर्लिप्त भ' छओ मास धरि शिवपूजनक फल :—

जे व्यक्ति आधा वर्ष धरि मुक्त-संग भ' शिवक पूजा करैत अछि, ओ पचास गुण अधिक फल प्राप्त करैत अछि ॥२४०॥

आइसँ हम छओ मास-पर्यन्त शिव-पूजाजन्य फलसँ पचास गुण अधिक फल-प्राप्तिक कामनासँ मुक्त-संग भ' छओ मास-पर्यन्त प्रतिदिन शिवक पूजन करब।

ऋतु-पूजाक फल :—

प्रत्येक ऋतुमे ऋतु भरि पूजा कयलासँ ओकर आधा अर्थात् पचीस गुण अधिक फल होइत अछि ॥२४१॥

[विद्यापति]

तदर्द्धम् अर्थात् पचासक आधा पचीस।

आइसँ हम ऋतु-पर्यन्त शिव पुजनजन्य फलसँ पचीस गुण अधिक फल-प्राप्तिक कामनासँ ऋतु भरि प्रतिदिन भगवान् शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ यावज्जीवं शिवार्च्चनस्य—

तत्र भविष्यपुराणे ।

यस्तु पूजयते लिङ्गं नित्यं त्रिभुवनेश्वरम् ।
सस्वर्गराज्यमोक्षाणां क्षिप्रं भवति भाजनम् ॥२४८॥

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम्"

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं स्वर्गराज्यमोक्षशीघ्रावाप्तिकामः शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य—

शिवपूजापरोनित्यं महापातकसम्भवैः ।
दोषैर्न लिप्यते सर्वैः पदमपत्रमिवाम्भसा ॥२४९॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं महापातकसम्भवसकलदोषालिप्तत्वकामः शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सदाशिवार्च्चनस्य—

शिवार्च्चनस्य तुल्योऽस्ति न धर्म्मो भुवनत्रये ।
इति विज्ञाय यत्नेन पूजनीयः सदा शिवः ॥२५०॥

"सदा यावज्जीवं विश्वजिन्न्यायात् स्वर्गः फलम्" ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं स्वर्गप्राप्तिकामः शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे सदा शिवार्च्चनस्य ।

ये वाञ्छन्ति महाभोगान्राज्यञ्च त्रिदशालये ।
तेऽर्च्चयन्ति सदा कालं हरस्य चरणाम्बुजौ[1] ॥२५१॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं बहुमहाभोगत्रिदशालयाधिकरणकराज्यप्राप्तिकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

[1] ने० पा० चरणाम्बुजम् । मूले चरणाम्बुजे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइसँ हम छओ मास पर्यन्त प्रतिदिन शिव-पूजासँ उत्पन्न पुण्यक समान पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ भरि माघ प्रतिदिन त्रिसन्ध्य अर्थात्—भोर, दुपहर आ' साँझमे शिव-पूजन करब।

[विद्यापति]

आषाढ़ आ' कार्त्तिक—एहि दुनूमेसँ कोनो एकमे त्रिसन्ध्य पूजामे सेहो इएह अभिलाषा करबाक चाही।

आब जीवन पर्यन्त शिवार्चनक फल

ओतहि भविष्य पुराणमे—

जे त्रिभुवनक अधिपति शिवलिङ्गक नित्य पूजा करैत अछि, ओ शीघ्र स्वर्ग, राज्य तथा मोक्षक भाजन भ' जाइत अछि ॥२४८॥

[विद्यापति]

नित्यक अर्थ थिक यावत जीवन अर्थात् आजीवन

आइसँ हस यावत्ज्जीवन प्रतिदिन स्वर्ग, राज्य, आ' मोक्ष शीघ्र प्राप्तिक कामनासँ शिवलिङ्गक पूजा करब।

ओतहि शिवार्चनक फल—

जे नित्य शिव-पूजनम तत्पर रहैत अछि, ओ ओहिना महापातक-जन्य दोषसँ लिप्त नहि होइत अछि जहिना कमलपत्त पानिसँ लिप्त नहि होइत अछि ॥२४९॥

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन महापातकजन्य सभ दोषसँ अलिप्त होयबाक कामनासँ शिव-पूजन करब।

नन्दिकेश्वरमे सर्वदा शिवार्चनक फल—

एहि त्रिभुवनमे शिवार्चनक तुल्य कोनो धर्म नहि अछि। ई जानि आजीवन यत्नपूर्वक शिवक पूजा करबाक चाही ॥२५०॥

[विद्यापति]

सदाक अर्थ अछि जीवन पर्यन्त। विश्वजिन्न्याय एकर फल अछि स्वर्गक प्राप्ति।

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन स्वर्ग-प्राप्तिक कामनासँ शिवकेँ पूजब।

शिवधर्ममे सदा शिवार्चनक फल—

जे महाभोग आ' स्वर्गमे राज्यक इच्छा करैत अछि, ओ शिवक दूनू चरण-कमलकेँ जीवन पर्यन्त पूजैत अछि ॥२५१॥

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन बहुत महाभोग आ' स्वर्गमे राज्यक प्राप्तिक कामनासँ शिवार्चन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव नित्यं शिवार्च्चनस्य —

य: शिवं पूजयेन्नित्यमन्त्यजोपि जितेन्द्रिय: ।
भवार्च्चनरतो यस्मात् स याति परमां गतिम् ॥२५२॥

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम्" ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं परमगतिप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

अत्र जितेन्द्रियशिवभक्तशूद्रस्याप्यधिकारः ।

भविष्यपुराणे यावज्जीवं शिवार्च्चनस्य—

स्फुटं निर्वहते यस्य यावज्जीवं शिवार्च्चनम् ।
मनुष्यचर्म्मणा नद्धः स रुद्रो नात्र संशय: ॥२५३॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं रुद्रत्वभवनकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे सदाशिवार्च्चनस्य—

सदा यजति[1] यज्ञेन सदा दानानि[2]यच्छति ।
सदा च वायुभक्ष: स्यात् सदा योऽर्च्चयते शिवम् ॥२५४॥

अद्यादि यावज्जीवमहरहः सार्वकालिकयष्टृत्वसदादातृत्वसदातनवायुभक्षत्वजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव नित्यं शिवार्च्चनस्य—

य: शिवं पूजयेन्नित्यं प्रणमेद्वापि भक्तित: ।
तस्य योगञ्च मोक्षञ्च शिवस्तुष्ट: प्रयच्छति ॥२५५॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं शिवप्रसादहेतुकयोगमोक्षावाप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव नित्यमीशानार्च्चनस्य—

ये स्मरन्ति विरूपाक्षमीशानं पूजयन्ति च ।
रुद्रलोकात्परिभ्रष्टा विज्ञेयास्ते गणेश्वरा: ॥२५६॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं रुद्रलोकप्रच्यवानन्तरगणेशत्वभवनकामो भगवत ईशानस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

---

१ तत्रैव, यजति; मूले जयति ।

२ तत्रैव दानं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि नित्य शिवार्चनक फल —

जे अन्त्यजो जितेन्दिय भ' जीवनपर्यन्त शिवक पूजा करैत अछि, ओ शिवक पूजामे लीन रहबाक कारणे परमगतिकेँ प्राप्त करैत अछि ॥२५२॥

[विद्यापति]

नित्य यावज्जीवन ।

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन परमगति प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब ।

[विद्यापति]

एतय (शिवार्चनमे) जितेन्द्रिय शिव-भक्त शूद्रकेँ सेहो अधिकार अछि ।

भविष्यपुराणमे यावत् जीवन शिवार्चनक फल—

जकर जीवन पर्यन्त शिवार्चन स्पष्ट रूपसँ निबहि जाइत छैक, ओ मानवक चामसँ आवेष्टित रहितो रुद्रे थिक । एहिमे संशय नहि अछि ॥२५३॥

आइसँ हम जीवन पर्यन्त प्रतिदिन रुद्रत्व-प्राप्तिक कामनासँ शिवक अर्चन करब ।

शिवधर्ममे सर्वदा शिवार्चनक फल—

जे सर्वदा शिवक पूजा करैत अछि, ओकरा सदिखन यज्ञ करबाक, सदा दान देवाक तथा सर्वदा वायु-भक्षण करबाक पुण्यक बरोबरि पुण्य प्राप्त होइत छैक ॥२५४॥

आइसँ हम जीवनपर्यन्त प्रतिदिन सदा यज्ञ कयलाक, सदिखन दान देवाक, सदा वायु-भक्षण-जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पूजा करब ।

ओतहि नित्य आजीवन शिवक पूजाक फल

जे व्यक्ति जीवन-पर्यन्त शिवक पूजा करैत अछि अथवा भक्तिपूर्वक प्रणाम करैत अछि, ओकरा शिव प्रसन्न भय योग आ मोक्ष दैत छथिन ॥२५५॥

आइसँ हम जीवनपर्यन्त प्रत्यह शिवक-अनुग्रहसँ योग तथा मोक्ष पयबाक कामनासँ भगवान शिवक पूजा करब ।

ओतहि ईशानक पूजाक फल—

जे मानव विरूपाक्ष (त्रिनेत्र) ईशानक पूजन करैत छथि, हुनका रुद्रलोकसँ खसल गणेश्वर बुझबाक चाही ॥२५६॥

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन रुद्रलोकसँ च्युत भेलापर गणेश्वर होयबाक कामनासँ भगवान् ईशानक पूजन करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैव यावज्जीवं शङ्करपूजायाम्—

सदा शङ्करमभ्यर्च्य सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।।२५७।।

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

कालिकापुराणे सार्व्वदिकपञ्चोपचारपूजायाम्—

अद्यादि पितृमनुष्यनाशहेतुकभयाभाववैवस्वतादर्शन-कुम्भिसंज्ञकनरकापतन-बहुकामविमानकरणकलोकविचरणपूर्वकमोक्षप्राप्तिकामः पञ्चोपचारेण भगवतो हरस्य यावज्जीवं प्रत्यहं पूजामहङ्करिष्ये ।

भविष्ये गंगास्नानानन्तरनित्यपूजायाम्—

गङ्गायान्तु नरः स्नात्वा यो लिङ्गं नित्यमर्च्चयेत् ।
एकेन जन्मना मुक्तिं परामाप्नोति स ध्रुवम् ।।२५८।।

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम् ।"

अद्यादि यावज्जीवं परममुक्तिप्राप्तिकामो गंगायां स्नात्वाऽहरहः शिव-लिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

अथ पुण्यकाला[1]र्च्चनफलम्—

कालिकापुराणे—

व्यतीपाते दिनच्छेदे चन्द्रसूर्य्यग्रहेषु च ।
युगादौ विषुवे क्रान्तौ पुण्ययोगेषु सर्व्वशः ।।२५९।।
यत्र यत्रार्च्चते देवो विषमाक्षो वृषध्वजः ।
तत्र तत्राक्षयं पुण्यमिति प्राह पितामहः ।।२६०।।

[विद्यापति]

क्रान्तौ रविसंक्रान्तौ, अक्षयं आहू[2]तसंप्लवस्थायि ।

अद्य व्यतीपातेऽक्षयपुण्यप्राप्तिकामो वृषभध्वजमहं पूजयिष्ये ।

दिनच्छेदचन्द्रसूर्य्योपरागविषुवसंक्रान्त्याद्यन्यतमपुण्यसमयेपीयमेव कामना ।

---

१. ने० पा०, अथ अक्षयपुण्यकालार्च्चनफलम् ।
२. तत्रैव, आकूत ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि यावज्जीवन शंकरपूजनक फल—

सर्वदा शंकरक पूजा कय सम्पूर्ण कामनाकें प्राप्त करैत अछि ॥२५७॥

आइसँ हम सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ यावज्जीवन प्रतिदिन शंकरकें पूजब ।

कालिकापुराणमे प्रतिदिन पंचोपचार पूजाक फल —

आइसँ हम पितर आ' मनुष्यक विनाशक भयक अभाव, यमराजक अदर्शन, कुम्भीनामक नरकमे पतनाभाव तथा विमान द्वारा (विभिन्न) लोकमे विचरण पूर्वक मोक्ष-प्राप्तिक कामनासँ जीवन-पर्यन्त प्रतिदिन पंचोपचारसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

भविष्यपुराणमे गंगास्नानक अनन्तर नित्य जीवनपर्यन्त पूजा करबाक फल—

गंगामे स्नान कय जे जीवन पर्यन्त शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओ एकहि जन्ममे परममुक्तिकें निश्चित प्राप्त करैत अछि ॥२५८॥

[विद्यापति]

नित्यक अर्थ यावज्जीवन अछि ।

आइसँ हम यावज्जीवन परममुक्तिक प्राप्तिक कामनासँ गंगा-स्नान कय प्रतिदिन शिवलिंगकें पूजब ।

आब पुण्य-कालमे पूजनक फल

कालिकापुराणमे—

ब्रह्मा कहैत छथि जे व्यतीपात (विष्कम्भ आदि सत्ताइस योगक एक योग) मे, दिनान्त (सन्ध्याकाल) मे, चन्द्रग्रहण आ' सूर्यग्रहणमे, युगादिमे अर्थात् युगारम्भक तिथिमे (वैशाख-शुक्ला तृतीया सत्ययुग, कार्त्तिक-शुक्ला नवमी त्रेतायुग, भाद्र-कृष्ण त्रयोदशी द्वापर युग आ' पौष-अमावास्या कलियुगक आरम्भक तिथि थिक), विषुवमे अर्थात् मेष राशि अथवा तुला राशिक प्रथम विन्दु, जाहिमे सूर्य शारदीय अथवा वासन्तिक विषुवमे प्रविष्ट होइत छथि, ताहिमे, रविक संक्रान्तिमे अर्थात् सूर्यक एक राशिसँ दोसर राशिमे प्रवेशक समयमे आ' सब प्रकारक पुण्य योगमे जतय-जतय त्रिलोचन वृषभध्वज महादेव पूजित होइत छथि, ततय-ततय अक्षय पुण्य होइछ ॥२५९-२६०॥

[विद्यापति]

'क्रान्तौ'क तात्पर्य रविक संक्रान्तिमे । 'अक्षयम्' क तात्पर्य पूजाक आरम्भसँ प्रलय-पर्यन्त स्थायी ।

आइ हम व्यतीपात योगमे अक्षय-पुण्य प्राप्तिक कामनासँ वृषभध्वज (शंकर)-कें पूजब ।

दिनच्छेद, चन्द्र-सूर्य-ग्रहण, विषुवयोग, संक्रान्ति आदि कोनो पुण्यकालमे एही फलक कामना करक चाही ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्मे विषुवसंक्रान्तौ शिवार्च्चनस्य—

नैरन्तर्य्येण षण्मासं विधिना योऽर्च्चयेच्छिवम् ।
पुण्यं तदेव सकलं लभते विषुवार्च्चनात् ॥२६१॥

एतदेव तु विज्ञेयं ग्रहणे चोत्तरायणे ।
संक्रान्तिषु दिनच्छेदे षडशीतिमुखेषु च ॥२६२॥

अद्यविषुवद्रविसंक्रान्तौ वैधनिरन्तरषण्मासावाच्छिन्नप्रात्यहिकशङ्करपूजा-जन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

[विद्यापति]

एवं ग्रहणोत्तरायणापरसंक्रान्तितिथिक्षयेष्वपीदमेव फलम् ।

संक्रान्तिपदादेवलब्धे विषुवादिग्रहणमधिकफलार्थम् ।

कार्त्तिक्यां शिवार्च्चनस्य—

मासैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य शङ्करम् ।
तत्कार्त्तिक्यां भवेत्पुण्यं पौर्णमास्यां शिवार्च्चनात् ॥२६३॥
पुण्यं तदेव फाल्गुन्यामाषाढ्यामेवमेव च ॥२६४॥

अद्य कार्त्तिक्यां मासचतुष्टयावच्छिन्नसविधिशङ्करपूजाजन्यफलसमफल-प्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

आषाढीफाल्गुन्योरन्यतरस्यामप्येतदेव फलम् ।

अथ चतुर्द्दश्यां घृतादिस्नानोत्तरपूजायां

शिवपुराणे—

घृतेन पयसा दध्ना तैलेन च जलेन वा ।
गोक्षीरेण चतुर्द्दश्यां लिङ्गस्नपनकारणात् ॥२६५॥
ते ममेष्टाश्च जायन्ते तेऽक्षयास्तेऽजरामराः ।
ते युद्धेष्वजिता देवि ये लिङ्गार्च्चनतत्पराः ॥२६६॥
ब्रह्मलोकं विष्णुलोकं गोलोकं मामकं तथा ।
अव्याहताश्चरन्त्येतेऽक्षयास्तेऽजरा[1]मराः ॥२६७॥

---

१ ने० पा०, लिङ्गार्चनरता नराः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्ममे विषुव संक्रान्तिमे शिवार्चनक फल—

जे निरन्तर छओ मास विधि-विधानसँ शिवकेँ पूजैत अछि ओहिसँ ओकरा जे पुण्य होइत अछि ओ सबटा पुण्य विषुवमे पूजा कयलासँ होइत अछि ॥२६१॥

इएह पुण्य ग्रहण, उत्तरायण, संक्रान्ति, दिनक्षय आ' षडशीतिमुखमे (शिव-पूजन)सँ होइत अछि ॥२६२॥

आइ हम विषुवत् रविसंक्रान्तिमे विधि-विधान-पूर्वक निरन्तर छओ मास-पर्यन्त प्रतिदिन शंकरक पूजा-जन्य फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवकेँ पूजब।

[विद्यापति]

एहिना, ग्रहण, उत्तरायण, विषुव रविसंक्रान्तिसँ भिन्न संक्रान्ति आ तिथिक क्षयो सभमे इएह फल होइत अछि।

'संक्रांति' पदसँ अर्थ-निर्वाह होइते छैक, विषुवादि कहवाक प्रयोजन अधिक फलक प्राप्ति थिक।

कार्त्तिकपूर्णिमामे शिवार्चनक फल—

चारि मास धरि विधिपूर्वक शंकरक पूजा कयलासँ जे पुण्य प्राप्त होइत अछि, ओ पुण्य कार्त्तिकक पूर्णिमामे शिवार्चनसँ होइत अछि ॥२६३॥

ओएह फल फागुनक पूर्णिमा आ' आषाढ़क पूर्णिमामे सेहो होइत अछि ॥२६४॥

आइ हम कार्त्तिक पूर्णिमामे चारि मास-पर्यन्त सविधि शंकरपूजाजन्य फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शंकरक अर्चन करव।

[विद्यापति]

एहिना आषाढ़ी पूर्णिमा आ' फाल्गुनी पूर्णिमामे सेहो फल भेटैत अछि।

चतुर्दशी तिथिमे घृतादि द्वारा स्नपनपूर्वक शिव-पूजा करबाक फल

शिवपुराणमे—

शिव पार्वतीसँ कहैत छथिन जे हे देवि जे मानव घी, दूध, दही, तेल, जल तथा गायक दूधसँ चतुर्दशीमे लिंगक स्नपन करैत अछि, ओ हमर प्रिय भय जाइत अछि। ओ अक्षय, अजर आ' अमर भय जाइत अछि। (एकर अतिरिक्त) जे लिंगक पूजनमे तत्पर रहैत अछि ओ युद्धमे अजेय होइत अछि। ओ अक्षय अजर अमर व्यक्ति ब्रह्मलोक, विष्णुलोक, गोलोक तथा हमर लोक अर्थात् शिवलोकमे निर्बाधरूपसँ विचरण करैत अछि ॥२६५-२६७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य चतुर्द्दश्यां शिवेष्टत्वाक्षयत्वाजरामरत्व-बहुयुद्धानिर्जितत्व-ब्रह्मलोक-विष्णुलोकगोलोकशिवलोकाव्याहतगतित्वप्राप्तिकामो घृतदुग्धदधिजलक्षीरान्यतमस्नपनपूर्वकं शिवङ्गार्च्चलिनमहङ्करिष्ये ।

स्नात्वा कृष्णचतुर्द्दश्यामाराधनस्य—

यस्तु कृष्णचतुर्द्दश्यां स्नात्वा देवं पिनाकिनम् ।
आराधयेद्द्विजश्रेष्ठ ! न तस्यास्ति पुनर्भवः ॥२६८॥

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यामपुनर्भवकामः स्नात्वा पिनाकिनं देवमाराधयिष्ये ।
कृष्णचतुर्दश्यां प्रातर्मध्याह्नयोः पूजनस्य—

कृष्णपक्षे त्रयोदश्यामुपोष्य परमेश्वरम् ।
प्रातर्मध्याह्नयोः पूजां चतुर्दश्यां समाचरेत् ॥२६९॥

पञ्चगव्येन स्नात्वादौ हविर्भुञ्जीत वाग्यतः ।
दशानामश्वमेधानां फलमाप्नोति मानवः ॥२७०॥

अद्य कृष्णचतुर्दश्यां दशाश्वमेधजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः प्रातर्मध्याह्नयोर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

अमावास्यापूर्णिमयोः पूजाद्वयान्तरं च पञ्चगव्यपानपूर्वकं मौनेन हविर्भोजनम् ।

चतुर्दश्यादिषु पूजायाम्—

चतुर्दश्याममावास्यां पौर्णमास्याञ्च पाक्षिकम् ।
पुण्यमष्टगुणं ज्ञेयमष्टम्यां योऽर्चयेच्छिवम् ॥२७१॥

[विद्यापति]

अष्टम्यामष्टगुणत्वं पाक्षिकफलापक्षेया ।

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां पक्षावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम चतुर्दशी तिथिमे शिवप्रियत्व, अक्षयत्व, अजरामरत्व, बहुत युद्धमे अजेयत्व, ब्रह्मलोक, विष्णुलोक, गोलोक, शिवलोकमे निर्बाधगतिमत्त्व-प्राप्तिक कामनासँ घी, दूध, दही, तेल, जल आ' क्षीर एहिमे कोनो एकसँ स्नपन-पूर्वक शिवलिंगक पूजन करब।

कृष्ण चतुर्दशीमे स्नान कय पूजा करबाक फल—

हे द्विजश्रेष्ठ ! जे कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे स्नान कय पिनाकधारी शंकरकेँ पूजैत अछि, ओकर पुनर्जन्म नहि होइत छैक ॥२६८॥

आइ हम कृष्ण पक्षक चतुर्दशीमे स्नान कय पुनर्जन्मक अभावक कामनासँ पिनाकधारी शिवक आराधना करब।

कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे प्रातः काल तथा मध्याह्नकालमे पूजनक फल—

कृष्णपक्षक त्रयोदशीमे उपवास कय प्रातःकाल तथा मध्याह्नमे परमेश्वर शिवक पूजा करी। आरम्भमे पंचगव्यसँ स्नान कय, संयत वाक् (मौन) भ' हविष्य भोजन करी। (एना कयने) मानव दस अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्त करैछ ॥२६९-७०॥

आइ हम कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे दस अश्वमेध यज्ञ-जन्य फलक समान फल-प्राप्तिक कामनासँ प्रातःकाल तथा मध्याह्नमे भगवान शिवक पूजा करब।

[विद्यापति]

अमावास्या तथा पूर्णिमामे दुनू पूजाक बाद पंचगव्य पान-पूर्वक मौन रहि हविष्य भोजन करबाक चाही।

चतुर्दशी आदिमे पूजाक फल—

प्रतिपक्षमे चतुर्दशी, अमावास्या तथा पूर्णिमामे पूजा कयने जे फल होइत छैक तकर आठ गुण फल अष्टमीमे शिवक पूजासँ भेटैत अछि ॥२७१॥

[विद्यापति]

पाक्षिक फलक अपेक्षा अष्टमीमे आठ गुण फल होइछ।

आइ हम कृष्ण पक्षक चतुर्दशीमे पक्ष भरि शिव-पूजासँ उत्पन्न पुण्यक सदृश पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमावास्यापूर्णिमयोरपीदमेव फलम् ।

अष्टम्यां पूजनस्य—

अद्याष्टम्यां पक्षावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्याष्टगुणपुण्यप्राप्तिकामोभगवतः शिवस्यपूजामहंकरिष्ये ।

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां धारोष्णपयःस्नपनस्य—

धारोष्णपयसा स्नाप्य कृष्णाष्टम्यामुपोषितः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७२॥

अद्य कृष्णाष्टम्यामेकविंशतिकुलनरकोत्तारणपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया धारोष्णेन पयसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

कृतोपवासस्यात्राधिकारः ।

लैङ्गे कृष्णाष्टम्यां. दधिस्नपनस्य—

संस्नाप्य दध्ना लिङ्गन्तु कृष्णाष्टम्यामुपोषितः ।
कुलसप्तकमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७३॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां कुलसप्तकनरकोत्तारणपूर्व्वकशिवलोकमहितत्वकामनया दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

सप्तम्यां कृतोपवासस्यात्राधिकारः ।

शैवे कृष्णाष्टम्यां घृतस्नपनस्य—

कृष्णाष्टम्यां घृतस्नानं कृत्वा लिङ्गे सकृन्नरः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७४॥

अद्य कृष्णाष्टम्यामेकविंशतेकुलनरकोत्तारणपूर्व्वकशिवलोकमहितत्वकामो घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमावास्या तथा पूर्णिमामे सेहो इएह फल होइत अछि।

अष्टमीमे पूजनक फल—

आइ हम अष्टमी तिथिमे पक्ष भरि शिव-पूजासँ उत्पन्न पुण्यक आठ गुण पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक पूजा करब।

भविष्यपुराणमे कृष्णाष्टमीमे धारोष्ण दूधसँ स्नपनक फल—

जे उपवास कय कृष्णाष्टमीमे धारोष्ण दूधसँ शिवलिंगक स्नपन करैत अछि, ओ अपन कुलक एक्कैस पीढ़ीक उद्धार कय शिवलोकमे शोभित होइत अछि॥२७२॥

आइ हम कृष्णाष्टमीमे एक्कैस कुलकेँ नरकसँ उद्धारपूर्वक शिवलोकमे महितत्वक कामना हेतु धारोष्ण दूधसँ शिवलिंगक स्नपन करब।

[विद्यापति]

एहिमे उपवास कयनिहारे टाकेँ अधिकार छैक।

लिंगपुराणमे कृष्णपक्षक अष्टमीमे दधि-स्नपनक फल—

जे कृष्णाष्टमीमे उपवास कय लिंगकेँ दहीसँ स्नपन करैत अछि, ओ सात कुलकेँ उद्धार कय शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि॥२७३॥

आइ हम कृष्णपक्षक अष्टमीमे सात कुलकेँ उद्धार कय शिवलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनाक हेतु दहीसँ भगवान शिवक लिंगकेँ स्नपन करब।

[विद्यापति]

एहि कर्ममे सप्तमी तिथिमे उपवास कयनिहार व्यक्तिकेँ अधिकार छनि।

शिवपुराणमे कृष्ण अष्टमीमे घृतस्नपनक फल—

एक बेरि (शिव) लिंगके घृत-स्नपन कय मनुष्य एक्कैस कुलकेँ तारि (उद्धार कय) शिवलोक (कैलास) मे महितत्व प्राप्त करैत अछि॥२७४॥

आइ हम अष्टमीमे एक्कैस कुलकेँ उद्धार-पूर्वक शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक लिंगकेँ घृतसँ स्नपन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां वा दधिस्नपनस्य–

कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां दध्ना संस्नापयेच्छिवम् ।
यावज्जीवकृतात् पापान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥२७५॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां वा यावज्जीवपापविमुक्तिकामो दध्ना भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये।

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्द्दश्यां वा मधुस्नपने —

कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां मधुना स्नापयेच्छिवम् ।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥२७६॥

अद्य राजसूययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामः कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्द्दश्यां वा मधुना भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये।

चतुर्द्दश्यादिपर्वकालाराधने।

दानोपवासनियमै[1] पूजाजागरभोजनैः ।
महास्नानादिविधिना शिवं पर्वसु पूजयेत् ॥२७७॥

यावत्पर्वसु कालेषु यावदर्च्चयते शिवम् ।
यावत्कालार्च्चनं पुण्यं तावत्पर्वार्च्चनात् लभेत् ॥२७८॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन महाविभवविस्तरैः ।
पूजनीयः शिवो नित्यं महापुण्यजिगीषया ॥२७९

अद्य चतुर्द्दश्यादिपर्वणि सर्वपर्वकालिकशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो महास्नानादिविधिपूजादानोपवासनियनजागरतपस्विप्रभृतिभोजनादिभिर्भगवतः शिवस्याराधनमहङ्करिष्ये।

कार्तिकचतुर्द्दश्यां स्थाण्वर्च्चनस्य—

कार्तिके भौमवारेण चित्रा कृष्णा चतुर्द्दशी ।
अस्यामाराधितः स्थाणुर्नयेच्छिवपुरं ध्रुवम् ॥२८०॥

अद्य कार्तिकमासीयकुजवारचित्रायुतकृष्णचतुर्द्दश्यां शिवपुरप्राप्तिकामो भगवतः स्थाणोरर्च्चनमहङ्करिष्ये।

---

१ शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः ।
व्रतमौनोपवासञ्च स्नानं च नियमा दश ॥— अत्रि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे अष्टमी वा चतुर्दशीमे दधि-स्नपनक फल—

कृष्णाष्टमी अथवा चतुर्दशीमे दहीसँ जे शिवक स्नपन करैत अछि, ओ सम्पूर्ण जीवनमे कयल गेल पापसँ मुक्त भय जाइत अछि। एहिमे संशय नहि ॥२७५॥

आइ हम अष्टमी अथवा चतुर्दशीमे जीवन भरिक पापसँ मुक्तिक कामनासँ भगवान शिवकेँ दहीसँ स्नपन करब।

भविष्यपुराणमे अष्टमी वा चतुर्दशीमे मधु-स्नपनक फल—

चतुर्दशीमे जे मधुसँ शिवक स्नपन करैत अछि, ओ राजसूय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥२७६॥

आइ हम राजसूय यज्ञक फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ चतुर्दशीमे मधुसँ भगवान शिवकेँ स्नपन करब।

चतुर्दशी आदिपर्व कालमे आराधनाक फल —

दान, उपवास, नियम, पूजा, जागरण, (विप्रादि)केँ भोजन आ' महास्नान आदि विधि सभसँ पर्वक समयमे शिवक पूजा करी ॥२७७॥

सभ पर्वक अवसर पर शिवक जतेक (प्रकारेँ) पूजा कयला सँ सम्पूर्ण कालक पूजाजन्य जे-जे फल होइत अछि से सभटा पर्व (चतुर्दशी) आदिमे पूजा कयलासँ प्राप्त होइत अछि। तेँ प्रचुर धन-धान्यसँ यत्नपूर्वक महापुण्य जीतवाक इच्छासँ जीवनपर्यन्त शिवक पूजा करवाक चाही ॥२७८-२७९॥

आइ हम चतुर्दशी आदि पर्वमे सर्वपर्व-कालिक शिव-पूजासँ उत्पन्न पुण्यक सदृश पुण्यक-प्राप्तिक कामनासँ महास्नान आदि विधि, पूजा, दान, उपवास, नियम, जागरण, तपस्वी प्रभृतिक भोजन आदिसँ भगवान् शिवक आराधना करब।

कार्तिकचतुर्दशीमे स्थाणु (शिव) पूजनक फल—

कार्तिक मासमे मंगलदिन आ चित्रा नक्षत्रसँ युक्त कृष्ण पक्षक चतुर्दशीमे आराधित शिव निश्चित रूपसँ शिवपुर लय जाइत छथि ॥२८०॥

आइ हम कार्त्तिक मासक मंगलदिन तथा चित्रा नक्षत्रसँ युक्त कृष्ण पक्षक चतुर्दशीमे शिवलोक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् स्थाणु (शिव)क आराधना करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणे चतुर्दश्यष्टम्योरन्यतरार्च्चनस्य —

चतुर्द्दश्यां तथाष्टम्यां पक्षयोस्तु विधानतः ।
नियमेष्वभिरक्तस्य ब्रह्मचर्य्यपरस्य च ॥२८१॥

ब्राह्मणस्य च वात्सल्या[1]न्ममभक्तिपरस्य च ।
तस्य पुण्यं[2]फलं देवि मत्प्रसादादिदं श्रृणु ॥२८२॥

स्वच्छन्दनिरतो हृष्टो व्योमचारीविहङ्गवत् ।
अजितः सर्वभूतैस्तु स्वर्गलोके महीयते ॥२८३॥

अद्य चतुर्द्दश्यां स्वच्छन्दनिरतत्वहृष्टत्वव्योमचारित्वसर्वभूताजितत्व-स्वर्गलोकमहितत्वकामनया यथाविधिभगवतः शिवस्याराधनमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

ब्रह्मचर्य्यादिनियमयुक्तो ब्राह्मणोऽत्राधिकारी ।

अष्टम्यामपीयमेव कमना ।

चतुर्द्दश्याद्यन्यतमपर्वण्यर्कान्यतमपुष्पपूजनस्य—

शिवपुराणे ।

अर्कवकबिल्वपत्रचम्पककुशकरवीरपद्मधत्तूरकपुष्पाणि प्रस्तुत्य—

एवमेतानि पुष्पाणि निवेदयति यस्तु मे ।
तथा पर्वसु सुश्रोणि तस्य पुण्यफलं श्रृणु ॥२८४॥

संवत्सरेण चैकेन पुष्णाणां यत्फलं लभेत्[3] ।
दिवसेन तु तत्सर्वं विख्यातञ्च वरानने ॥२८५॥

अद्यामुकपर्वणि संवत्सरावच्छिन्नशिववह्रुपुष्पपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिरर्ककुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

वकबिल्वपत्रचम्पककुशकरवीरपद्मधत्तूरान्यतमकुसमैरपि पूजने फलमिदम् ।

शिवपुराणे चतुर्द्दश्यामर्कादिकुसुमपूजायां—

अर्कञ्च करवीरञ्च कुशःुन्म[4]त्तमेव चेत्यधिकृत्य—

---

१ वात्सल्यम्मम् मूले

२ पुण्यं मूले ।

३ ने० पा०, भवेत् ।

४ तत्रैव, कुशमुन्मत्तमेव च ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे चतुर्दशी अथवा अष्टमीमे शिवार्चनक फल—

हे देवि ! दुनू पक्षक चतुर्दशी तथा अष्टमीमे नियममे आवद्ध भ' ब्रह्मचर्यक पालन करैत, जे ब्राह्मण वात्सल्यपूर्वक हमर भक्तिमे लीन भय विधानपूर्वक पूजा करैत अछि तकरा जे पुण्य फल प्राप्त होइत छैक से हमरा कृपा सँ सुनू ॥२८१-२८२॥

ओ स्वच्छन्द, प्रसन्न पक्षीक समान आकाशमे विचरण करयवाला एवं सभ प्राणीमे अजेय भ' स्वर्गलोकमे निवास करैत अछि ॥२८३॥

आइ हम चतुर्दशीकें स्वच्छन्दनिरतत्व, हृष्टत्व, व्योमचारित्व सर्वभूताजितत्व, स्वर्गलोकमे महितत्वक प्राप्तिक कामनासँ विधिपुरस्सर भगवान् शिवक आराधना करव ।

[विद्यापति]

ब्रह्मचर्यादि नियमसँ युक्त ब्राह्मणेटा एकर अधिकारी छथि ।

अष्टमी मे सेहो इएह कामना कयल जाइत अछि।

शिवपुराणमे चतुर्दशी आदि कोनो पर्वमे आक आदि कोनो पुष्पसँ पूजा करबाक फल—

आक, बक, बेलपत्र, चम्पा, कुश, करवीर, कमल तथा धथूरक फूलक प्रसंग मे कहल गेल अछि—

हे सुश्रोणि, जे मानव पर्व सभमे एहि (उपर्युक्त) पुष्प सभकें हमरा अर्पित करैत अछि, ओकर पुण्यक फल सुनू ॥२८४॥

जे फल वर्ष भरि सभ फूल कें अर्पित कयला सँ होइत अछि से पर्वक एके दिनमे अर्पित कयलासँ भेटैत अछि ॥२८५॥

आइ हम अमुक पर्वमे वर्षपर्यन्त वहुत प्रकारक फूल सभसँ शिवक अर्चनाजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ आकक बहुतराश फूलसँ भगवान् शवक पूजा करव ।

वक, बेलपत्र, चम्पा, कुश, करवीर कमल एवं धथूरक पुष्प सभमेसँ कोनो फूलसँ शिवक पूजा कयला पर इएह फल होइत अछि ।

शिवपुराणमे चतुर्दशीमे आक आदिक फूलसँ पूजा करबाक फलः—

आक, करवीर, कुश, उन्मत्त आदिक प्रसंगमे कहल अछि—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टमीमपराह्णे तु तथा कृष्णाचतुर्दशीम् ।२८६॥
एतैः पुष्पविशेषैस्तु कुर्य्याद्योऽभ्यर्चनं मम ।
तस्य पुण्यतमालोकाः शिव लोक[1]निवासिनः ॥२८७॥
यथेष्टं गच्छते सोऽपि यत्र देवः शिवोऽव्ययः ॥२८८॥

अद्य चतुर्द्दश्यामपराह्णे शिवलोकनिवासिलोकप्राप्तियथेष्टशिवाधिष्ठित-लोकविहरणकाम एभिरर्ककुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

करवीरकुशोन्मत्तकानामन्यतमपुष्पेष्वपीदं फलम् ।

एवमष्टम्यामपि ।

कृष्णचतुर्द्दश्यां साज्यगुग्गुलुधूपस्य ।

शिवे कृष्णचतुर्द्दश्यां यः साज्यं गुग्गुलुं दहेत् ।
अपराधसहस्रैकमिहामुत्रकृतं क्षमेत्[2] ॥२८९॥

अद्य कृष्णचतुर्दश्यां शिवविषयैहिकामुष्मिकस्वीयापराधसहस्रक्षान्ति-कामनयाऽयं साज्यगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मे चतुर्दश्यां शालितण्डुलप्रस्थाधिकचरौ—

शालितण्डुलप्रस्थेन कुर्य्यादन्नं सुसंस्कृतम् ।
शिवायत्तं चरुं दत्वा चतुर्द्दश्यां विशेषतः ॥२९०॥
हरिद्रां कृसरं शुक्लं पायसं यावकं तथा ।
गुड़खण्डाज्यसम्मिश्रमेवमन्नं प्रकल्पयेत्[3] ॥२९१॥
यावन्तस्तण्डुलास्तस्मिन्नैवेद्ये परिसंख्यया ।
तावद्युगसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥२९२॥

अद्य चतुर्द्दश्यामेतच्चरुप्रहृति[4]तण्डुलसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नस्वर्गलोक-महितत्वकाम इमं शालितण्डुलप्रस्थसुसाधितचरुं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

---

१ ने० पा० मम लोकनिवासिनः ।

२ तत्रैव, क्षमे ।

३ तत्रैव, विकल्पयेत् ।

४ तत्रैव प्रकृति । मूले पहृति ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जे व्यक्ति अष्टमी तथा कृष्ण चतुर्दशीक अपराह्लकालमे आक, करवीर, कुश धथूर—एहि पुष्प विशेष सभसँ हमर पूजा करैत अछि, ओकरा शिवलोकनिवासी पुण्यमय लोक भेटैत छैक आ ओहो इच्छानुसार ओहि स्थानकेँ प्राप्त करैत अछि, जतय अविनाशी भगवान् शिव रहैत छथि ॥२८६-२८८॥

आइ हम शिवलोक–निवासस्थानक प्राप्ति तथा इच्छानुसार शिवक अधिष्ठित लोकमे बिहार करबाक कामनासँ एहि अर्क पुष्प सभसँ चतुर्दशीक अपराह्लमे भगवान् शिवक पूजा करब।

करवीर, कुश, धथूर—एहि मेसँ कोनो एकोसँ पूजा कयला पर इएह फल भेटैत अछि।

एहिना अष्टमी तिथिमे सेहो पूजा कयलासँ इएह फल भेटैत अछि।

कृष्णचतुर्दशीमे घृतयुक्तगुग्गुलक धूपक फल—

हे शिवे! कृष्णपक्षक चतुर्दशीकेँ घृत-सहित गुग्गुल जे जरबैत अछि तकर एहि लोक आ पर लोकमे कयल एक हजार अपराधकेँ हम क्षमा कय दैत छिऐक ॥२८९।

आइ हम कृष्णपक्षक चतुर्दशीकेँ ऐहिक तथा पारलौकिक शिवविषयक अपन सहस्र अपराधक क्षमाक कामनासँ कृष्णचतुर्दशीमे घृतयुक्त गुग्गुलक धूप भगवान् शिवकेँ देलहुँ।

चतुर्दशीमे प्रस्थसँ अधिक शालितण्डुलक चरु देबाक फल—

चतुर्दशीमे विशेष रूपसँ जे व्यक्ति एक सेर धानक चाउरसँ सुसंस्कृत चरु[1] (देवता तथा पितरक सेवामे प्रस्तुत करबाक हेतु तैयार कयल गेल आहुति) शिवकेँ अर्पित करैत अछि तथा हरदिक खिच्चड़ि. श्वेत खीर, यावक (जौ सँ तैयार कयल आहार), गुड़, खाँड तथा घी-मिश्रित अन्न समर्पित करैत अछि, ओ ओतेक सहस्र युग स्वर्गलोकमे निवास करैत अछि जतेक चाउर ओहि-ओहि नैवेद्यमे रहैत अछि ॥२९०—२९२॥

आइ हम एहि चरुमे देल गेल चाउरक संख्याक बरोबरि युगसहस्र धरि स्वर्गलोकमे महितत्वक कामनासँ चतुर्दशीमे शालितण्डुल, सुसाधित चरु भगवान शिवकेँ समर्पित करैत छी।

---

१ रघुवंश, १०।५१, ५४, ५६।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं हरिद्रासुसंस्कृतकृसरशुक्लपायसयावक[1]गुडखण्डाज्यसम्मिश्रान्नानामन्यतमस्य दानेपीदमेव फलम् ।

कृष्णचतुर्द्दश्यामन्नपानदाने—

योऽन्नपानं चतुर्द्दश्यां कृष्णस्य कुरुते मम ।
रथेन वृषयुक्तेन ममलोके स मोदते ॥२६३॥

[विद्यापति]

"कृष्णस्य - कृष्णपक्षस्य"

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां वृषयुक्तरथकरणकशिवलोकाधिकरणकसर्वकामनया एते अन्नपाने प्रजापतिवरुणदैवत्ते शिवस्य तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्कन्दपुराणे चतुर्द्दश्यामष्टम्यां वा पूजानन्तरं वामदेवेत्यादिनामकीर्त्तनस्य—

अर्च्चयित्वा तु मां देवि यो मे नामानि कीर्त्तयेत् ।
चतुर्द्दश्यामथाष्टम्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥२६४॥

वामदेव सुदेवेति हरगुप्तेति मानवः ।
उमापते नीलकण्ठ शान्त श्रीकण्ठ गोपते ॥२६५॥

शर्व भीम पशुपते शङ्करोग्र भवेति च ।
महादेवेति चाप्यन्नामगुह्यं[2] प्रकीर्त्तयन्[3] ॥२६६॥

सर्वपापैः प्रमुच्येत दिवि देवैश्च पूज्यते ।
एतेषामेकमपि यः पठेद् वा पाठयेत्तथा[4] ।
सदेहपद्धतिं भित्वा मामेव प्रतिपद्यते ॥२६७॥

अद्य चतुर्द्दश्यां सर्वपापविमुक्तिस्वर्गाधिकरणकबहुदेवपूज्यत्वकामो वामदेवादिमहादेवान्तनामकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अष्टम्यामपीयमेव कामना ।

---

१. ने० पा० संयाव ।

२. तत्रैव, गुह्यं ।

३. तत्रैव, प्रकीर्तयेत्

४. तत्रैव, पाठयेत्तदा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एहि प्रकारसँ हरदि-मिश्रित खिच्चड़ि, उज्जर खीर, यावक, गूड़. शक्कर तथा घी-मिश्रित अन्नमेसँ कोनो एकक दानमे सेहो इएह फल होइत अछि।

[विद्यापति]

कृष्णक = कृष्णपक्षक।

कृष्ण चतुर्दशीमे अन्न आ' पान दानक फलः—

जे व्यक्ति कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे हमरा अन्न आ' पान (पेय वस्तु) समर्पित करैत अछि, ओ वृषयुक्त रथ (सहित) हमर लोक अर्थात् शिवलोकमे रहि आनन्दित होइत अछि॥२९३॥

[विद्यापति]

कृष्णक = कृष्णपक्षक।

आइ हम कृष्ण चतुर्दशीमे वृषभयुक्त रथसँ शिवलोक प्राप्त कय ओतय प्रमुदित होयबाक कामनासँ प्रजापतिवरुणदैवतक ई अन्न आ' पान शिवकेँ देलहुँ।

स्कन्दपुराणमे —

चतुर्दशी अथवा अष्टमीमे पूजा कयलाक उपरान्त 'वामदेव' (शिव) इत्यादि नामकीर्त्तनक फल —

शिवजी पार्वतीसँ कहैत छथिन जे हे देवि ! जे हमर पूजा कय शुक्ल, कृष्ण दुनू पक्षमे चतुर्दशी अथवा अष्टमीमे वामदेव, सुदेव, हर, गुप्त, उमापति, नीलकण्ठ, शान्त, श्रीकण्ठ, गोपति, शर्व, भीम, पशुपति, शंकर, उग्र, भव, महादेव आ' आरो अन्य हमर शुभ नाम सभक कीर्त्तन करैत अछि ओ सभ पापसँ मुक्त होइत अछि आ' स्वर्गमे देवतहुसँ पूजित होइत अछि। एहि नाम सभमेसँ एकोटा नामक जे पाठ करैत अछि अथवा जे पाठ करवैत अछि, ओ एहि शरीरकेँ छोड़ि हमरहि प्राप्त करैत अछि॥२९४—२९७॥

आइ हम चतुर्दशीमे सभ पापसँ मुक्ति तथा स्वर्गमे देवता लोकनि द्वारा पूजित होयबाक कामनासँ वामदेवसँ लय महादेव तक नामक कीर्त्तन करब।

अष्टमीमे सेहो इएह कामना कयल जाइत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टम्यामुपोष्य कृष्णनवमीपूजायाम्—

समुपोष्याष्टमीं कृष्णामर्चयित्वा च शङ्करम् ।
प्राप्नोति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥२९८॥

अद्य कृष्णनवम्यां महेश्वरपुराधिष्ठितपरमस्थानप्राप्तिकामो भगवतः शङ्करस्य पूजामहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

अत्र कृष्णाष्टम्युपवासोऽङ्गम् ।

धर्म्मलब्धपुष्पार्च्चनस्य—

धर्म्मलब्धैश्च योऽभ्यर्च्चेद् बलिपुष्पनिवेदनैः ।
तस्मै प्रीतो महादेवः सर्वान् कामान् प्रयच्छति ॥२९९॥

अद्य महादेवप्रीतिहेतुकसर्वकामावाप्तिकामो भगवतः महादेवस्य धर्म्मलब्धबलि-पुष्पनिवदेनैरभ्यर्च्चनमहङ्करिष्ये ।

त्रिकालपार्थिवलिङ्गार्च्चनस्य—

त्रिसन्ध्यं योऽर्च्चयेल्लिङ्गं कृत्वा लिङ्गेन पार्थिवम् ।
दशैकादशिकं यावत्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥३००॥
अनेनैव सदेहेन रुद्रः सन्तिष्ठते क्षितौ ।
पापहा सर्वमर्त्यानां दर्शनात् स्पर्शनादपि ॥३०१

अद्यादृतदेहकरणकरुद्रवत्क्षितिसंस्थितत्वसकलमर्त्यपावनत्वकामो भगवतः शिवस्य दशैकादशिकं यावत् त्रिसन्ध्यं पार्थिवशिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

दशैकादशिकं दशोत्तरशतसङ्ख्यं त्रिसन्ध्यमित्यर्थः ।

शैवे सततं शिवार्च्चनस्य—

अर्च्चयेत् सततं देवं शुचिः प्रयतमानसः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा सर्वदुःखविवर्ज्जितः ॥
लोकान् कामदुघान् प्राप्य रुद्रलोके महीयते ॥३०२॥

---

१. रघुवंश, १/९५; ८/११; १३/७० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टमीमे उपवास कय नवमीमे पूजा करबाक फल—

जे कृष्णपक्षक अष्टमीमे उपवास कय शंकरक पूजा करैत अछि, ओ ओहि परम स्थानकेँ प्राप्त करैत अछि जतय भगवान् महेश्वर रहैत छथि। ॥२९८॥

आइ हम कृष्ण नवमीमे महेश्वरपुरगे परमस्थानक प्राप्तिक कामनासँ भगबान् शंकरक पूजा करब।

[विद्यापति]

एतय कृष्ण अष्टमीमे उपवास एकर अंग अछि।

धर्मलब्ध फूल द्वारा पूजनक फल—

धर्मलब्ध वलि आ' पुष्प निवेदनसँ जे पूजा करैत अछि, महादेव ओकरा पर प्रसन्न भ' ओकर सभ कामनाकेँ पूर्ण कय दैत छथिन ॥२९९॥

आइ हम महादेवक प्रसन्नताक हेतु तथा सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् महादेवक पूजा धर्मलब्ध बलि आ पुष्प-निवेदनसँ करव।

तीनू कालमे पार्थिव लिंगक पूजाक फल—

जे व्यक्ति तीनू सन्ध्या एक सय दस पार्थिव शिवलिंग वनाय पूजा करैत अछि, ओकर पुण्यक फल सुनू ॥३००॥

ओ एहि देहसँ पृथ्वी पर रुद्ररूप भ' जाइत अछि आ ओकर दर्शन तथा स्पर्शहुसँ लोक सभक पाप नष्ट भ' जाइत अछि ॥३०१॥

आइ हम अद्वैत शरीरसँ रुद्र सदृश भव पृथ्वी पर निवास करबाक संग-संग सभ मनुष्यकेँ पवित्र वनयवाक हेतु तीनू सन्ध्या भगवान् शिवक एक सय दस पार्थिव लिंग बनाय पूजा करव।

[विद्यापति]

दशैकादशिक अर्थात् एक सय दस पार्थिव-शिवलिङ्ग तीनू सन्ध्यामे।

शिवपुराणमे सदिखन शिवार्चनक फल—

जे व्यक्ति पवित्र तथा प्रय[1]तमानस भय सर्वदा महादेवक पूजा करैत अछि, ओ सभ पापसँ निर्मुक्त विशुद्ध एवं सभ प्रकारक दुःखसँ निर्मुक्त भय अभिलषित लोककेँ प्राप्त कय रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥३०२॥

१ नियंत्रित, जितेन्द्रिय! धार्मिक अनुष्ठान आ' साधना सभसँ जे अपनाके पवित्र बनाय लेलक अछि, आत्मयसंमी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यादि सर्वपापविशुद्धात्मत्व-सर्वदुःखविवर्जितत्व-कामदु[1]घबहुलोकप्राप्ति-पूर्वकरुद्रलोकमहितत्वकामः सततं भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

अथ पूज्यफलकथनम् ।

भविष्यपुराणे वाणलिङ्गार्च्चनस्य—

वाणश्चैव स्वयम्भूश्च स्वयं देवेन निर्मितः ।
तस्माद्वाणः सदा पूज्यः स्वयम्भूपूजने फलम् ॥३०३॥

अद्य स्वयम्भूपूजाफलसमफलप्राप्तिकामो वाणलिङ्गपूजामहं करिष्ये ।

बृहन्नन्दिकेश्वरे वाणपूजायाः—

भुक्तिमुक्तिप्रदो वाणः पूजितस्तु न संशयः ॥३०४॥

अद्य भुक्तिमुक्तिप्राप्तिकामो वाणपूजामहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

वाणलिङ्गप्रतिष्ठाव्यतिरेकेणापि फलप्रदम् ।

तथा च स्कन्दपुराणे—

वाणलिंगानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये ।
न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषामावाहनं तथा ॥
एवमेव प्रपूज्यामि शिवरूपाणि भारत ॥३०५॥

लिंगपुराणे स्फटिकलिंगपूजनस्य—

द्रव्यमायुः स्त्रियं पुत्रान् यच्चान्यन्मनसेप्सितम् ।
स्फाटिकं लिङ्गमासाद्य यजमानः समश्नुते ॥३०६॥

अद्य द्रव्यदीर्घायुष्ट्व-स्त्रीबहुपुत्रेप्सितकामः स्फाटिकलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

भविष्यपुराणे प्रतिमार्च्चनस्य—

अच्चर्यां पूजयेद्यो मां विष्णर्भवति पूजितः ॥३०७॥

[विद्यापति]

अर्च्चा = प्रतिमा ।

अद्य विष्णुपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामोऽर्च्चायां शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१. ने० पा०, सर्वदुःखविवर्जितत्वकामलाभ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ सभ पापसँ विशुद्ध तथा सभ दुःखसँ रहित भ' कामधेनु सदृश (अभिलषित फलप्रद) अनेक लोकक प्राप्तिक संग-संग रुद्रलोकमे महितत्वक कामनासँ हम सदिखन भगवान् शिवक पूजा करब।

आब पूजनीय (लिंगादिक) फलक कथन।

भविष्यपुराणमे वाणलिंगक पूजनक फल—

वाण तथा स्वयंभू स्वयं देवतासँ निर्मित छथि। अतएव, सर्वदा वाणक पूजा करवाक चाही जाहिसँ स्वयंभू-पूजाक फल होइत अछि ॥३०३॥

आइ हम स्वयंभू पूजाक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ वाणलिंगक पूजा करब।

बृहन्नन्दिकेश्वरमे वाण (लिंग)क पूजाक फल—

वाण (लिंग) पूजित भेला उत्तर भोग तथा मोक्ष दैत छथि। एहिमे कोनो सन्देह नहि ॥३०४॥

आइ हम मुक्ति आ' मुक्ति-प्राप्तिक कामनासँ वाणक पूजा करब।

[विद्यापति]

वाणलिंग प्रतिष्ठा आदिक विना सेहो फल देवयवला होइत छथि।

एहिना स्कन्दपुराणमे कहल गेल अछि

हे राजन्! वाणलिंग तीनू भुवनमे प्रसिद्धे छथि। एहि हेतु हुनक स्थापना, संस्कार तथा आवाहन नहि होइछ। हे भारत! ओ ओहिना शिवरूपमे पूज्य छथि ॥३०५॥

लिंगपुराणमे स्फटिकलिंग-पूजनक फल—

स्फटिकलिंगक पूजा कयनिहार द्रव्य, आयु, स्त्री, पुत्र तथा आरो अन्य अभिलषित पदार्थ प्राप्त करैत अछि ॥३०६॥

आइ हम द्रव्य, दीर्घायु, स्त्री आ' बहुत पुत्र तथा मनोऽभिलषित पदार्थ-प्राप्तिक कामनासँ स्फटिकलिंगक पूजा करब।

भविष्यपुराणमे प्रतिमा-पूजाक फल—

प्रतिमामे जे हमर (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ विष्णु-पूजाक फलभागी होइत अछि ॥३०७॥

[विद्यापति]

एतय अर्च्चाक अर्थ प्रतिमा होइछ।

आइ हम विष्णुपूजाजन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ प्रतिमामे शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतिमादिपूजने स्मृतिः—

स्थण्डिले यत्फलं प्रोक्तं द्विगुणं प्रतिमासु तत् ।
स्फाटिकं त्रिगुणं प्रोक्तं वाणे चैव चतुर्गुणम् ॥३०८॥

अद्य स्थण्डिलपूजाजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामः प्रतिमायां शिवमहं पूजयिष्ये ।

स्फाटिकलिङ्गे—

अद्य स्थण्डिलपूजाजन्यफलचतुर्गुणफल-प्राप्तिकामो वाणलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

पूजाधिकरणा[1]न्तरमाह—

निजमूर्त्तौ गुरोर्मूर्त्तौ पुस्तके सलिलेऽनले ।
चित्रादौ स्थण्डिले वाणो वाणश्चात्यन्तउत्तमः ॥३०९॥

अथ पार्थिवादिलिङ्गपूजनफलम् ।

भविष्ये—

यः कृत्वा पार्थिवं लिङ्गमर्च्चयेच्छुभवेदिकम् ।
इहैव धनवान् श्रीमानन्ते रुद्रोऽभिजायते ॥३१०॥

[विद्यापति]

शुभवेदिकं शोभनपिण्डिकायुक्तम्

अद्य ऐहिकधनवत्वानन्तकालिकरुद्रत्वभवनकामः पार्थिवशुभवेदिकं कृत्वा-शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव पार्थिवलिङ्गपूजायाम्—

मृन्मयं धनदं धान्यं[2] श्रीपदं सर्वकामदम् ॥३११॥

अद्य धनवत्व-श्रीमत्वसर्वकामावाप्तिकामः पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव पार्थिवशिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मृदुभस्मगोशकृत् पिष्टयैस्तथा बालुकयापि वा ।
कृत्वा लिङ्गं सकृत्पूज्यं वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥३१२॥

[विद्यापति]

गोशकृत् = गोमयम्

१. ने० पा० पूजाकरणान्तरमाह ।
२ तत्रैव, धन्यं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतिमा आदिक पूजामे स्मृतिक वचन अछि—

स्थण्डिल (भूखंड अथवा वेदी)मे पूजा कयलासँ जे फल होइत अछि; ओहिसँ दुगुना फल प्रतिमामे, तीन गुना फल स्फटिकमे तथा चारिगुना फल वाण (लिंग)मे भेटैत अछि ।।३०८।।

आइ स्थण्डिलमे शिवपूजा जन्य फलसँ दू गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ हम प्रतिमामे शिवक पूजा करव ।

स्फटिकलिंगमे शिवपूजाक फल –

आइ स्थण्डिल-पूजाजन्य फलसँ तीन गुना वेसी फल प्राप्त करबाक हेतु हम प्रतिमामे शिवक पूजा करव ।

वाणलिंगमे पूजाक फल—

आइ स्थण्डिल-पूजाजन्य फलसँ चौगुना फलक प्राप्तिक कामनासँ वाणलिंगक पूजा करव ।

पूजाधिकरणान्तरक विषयमे कहल गेल अछि —

अपन मूर्त्ति, गुरुक मूर्त्ति, पोथी, जल, आगि, चित्र आदि, भूखण्ड तथा वाणमे वाण अत्यन्त उत्तम अछि ।।३०९।।

आब पार्थिव आदि लिंग पूजनक फल कहैत छी—

भविष्यपुराण मे—

जे सुन्दर पिण्डयुक्त पार्थिव लिंग वनाय पूजा करैत अछि, ओ एतहि धनवान एवं लक्ष्मीवान भ' अन्तमे रुद्र भ' जाइत अछि ।।३१०।।

[विद्यापति]

शुभ वेदीक शब्दक अर्थ अछि सुन्दर पिण्डिकायुक्त ।

आइ हम ऐहिक (सांसारिक) धनक प्राप्ति तथा अन्तमे रुद्रत्वभवनक कामनासँ शुभवेदिक पार्थिवलिंग वनाय शिवक पूजा करव ।

ओतहि पार्थिव लिंगपूजाक फल—

मृन्मय लिंग धन, धान्य, लक्ष्मी तथा सभ कामनाकेँ देवयवला अछि ।।३११।।

आइ हम धनवान, लक्ष्मीवान तथा सभ कामनाकेँ प्राप्तिक हेतु पार्थिव शिवलिंगक पूजा करव ।

ओतहि पार्थिव शिवलिंगक पूजाक फल—

माटि, भस्म, गोमय (गोवर) तथा वालुसँ लिंग वनाय जे एक बेर पूजा करैत अछि, ओ दस हजार कल्प स्वर्गमे निवास करैत अछि ।।३१२।।

[विद्यापति]

गोशकृतक अर्थ गोमय (गोवर) होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य स्वर्गाधिकरणककल्पायुतावच्छिन्नवासकामो मृन्मयं शिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

भस्मगोमयवालुकापिष्टान्यतमघटितलिङ्गेपीयमेव कामना ।

शिवधर्म्मे पार्थिवलिङ्गविशेषमाह—

अयुग्मं पूजयेल्लिङ्गं दारिद्र्यं समवाप्नुयात् ।
तस्माद् युग्मं मुनिश्रेष्ठ पूजयेत् पार्थिवं शिवम् ।।३१३।।

असंस्कृतमृदा कृत्वा पूजयेद् यो महेश्वरम् ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च तस्य कुप्यन्ति वै सकृत् ।।३१४।।

तीर्थमृद्भिः पवित्राभिर्हीनाभिः केशकीटकैः ।
विरचिता त्रियत्नेन लिङ्गं निर्माय पूजयेत् ।।३१५।।

गंङ्गामृत्तिकया यस्तु लिङ्गं निर्माय पूजयेत् ।
सर्वापराधान् क्षमते तस्य देवो महेश्वरः ।।३१६।।

पूजयेद् यो लभेत् सौख्यं चतुरो विपुलं धनम् ।
षट् कर्म लभतेऽनन्तमष्टौ मोक्षाय पूजयेत् ।।३१७।।

दश वा द्वादशाभ्यर्च्य लभते वाञ्छितं फलम् ।
अयुग्मं पूजयेद्विद्वाँल्लभेज्जन्मान्तरे रुजम् ।।३१८।।

शिवधर्म्मे पार्थिवशिवलिङ्गपूजनस्य—

क्रीडन्ति शिशिरोप्यत्र लिङ्गं कृत्वा यजन्ति ये ।
मृन्मयं सैकतं वापि भूपालाः स्युर्महर्द्धिकाः[1] ।।३१९।।

अद्य महर्द्धिकभूपतित्वभवनकामो मृन्मयं शिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

सैकतलिङ्गेप्येवैव कामना ।

नन्दिपुराणे पार्थिवलिङ्गपूजनस्य—

आयुष्मान् धनवान् श्रीमान् पुत्रवान् बलवान् सुखी ।
वरमिष्टं लभेल्लिङ्गं पार्थिवं यः समाचरेत् ।।३२०।।

अद्य दीर्घायुष्ट्व-धनवत्व-श्रीमत्व-पुत्रवत्व बलवत्व-सुखित्व-वरेष्टप्राप्तिकामनया पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

१. ने० पा०, महेश्वराः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम स्वर्गमे दस हजार कल्प (ब्रह्माक एक दिन; एक हजार महायुग; चारि अरब वत्तीस करोड़ मानव-वर्ष) पर्यन्त निवास करवाक हेतु पार्थिव शिवलिंग बनाय पूजा करब।

भस्म, गोवर एवं बालुक पिण्डमेसँ कोनो एकक निर्मित लिंगक पूजामे सेहो इएह कामना होइत अछि।

शिवधर्ममे पार्थिवलिंग-विशेषक पूजाक फल—

जे व्यक्ति अयुग्म (एकल, एकेटा, विषम) लिंगक पूजा करैतअ छि, ओ दारिद्र्यकेँ प्राप्त करैत अछि। अतएव, हे मुनिश्रेष्ठ ! युग्म (जोड़ा) पार्थिव लिंगक पूजा करवाक चाही ।।३१३।।

जे व्यक्ति असंस्कृत माटिसँ महेश्वर वनाय पूजा करैत अछि, ओकरा पर एकहि वेर ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र क्रुद्ध भ' जाइत छथिन। (अतएव,) केश तथा कीड़ा आदिसँ रहित तीर्थक पवित्र माटिसँ यत्नपूर्वक लिंग वनाय पूजा करी ।।३१४-३१५।।

जे व्यक्ति गंगाक माटिसँ शिवलिंग वनाय पूजा करैत अछि, ओकर सभ अपराधकेँ महादेव क्षमा कय दैत छथिन ।।३१६।।

जे युग्म लिंगमे दू टा केँ पूजैत अछि, ओकरा सौख्य; जे चारि लिंगकेँ पूजा करैत अछि ओकरा विपुल धन, जे छओ लिंगक पूजा करैत अछि, ओकरा अनन्त कर्मफल, जे आठकेँ पूजैत अछि, ओकरा मोक्ष तथा दस वा वारह लिंगकेँ पूजा कयलासँ मनोवाञ्छित फल भेटैत अछि। (मुदा) अयुग्म लिंगक पूजा कयलासँ विद्वानकेँ सेहो जन्मान्तरमे रोग होइत अछि ।।३१७-३१८।।

शिवधर्म से पार्थिवलिंग-पूजनक फल—

वाल्यावस्थोमे खेलक वहानासँ जे माटि वा सैकत (वालु) क लिंग वनाय पूजा करैत अछि, ओ ऐश्वर्यशाली राजा (भूपति) होइत अछि ।।३१९।।

आइ हम ऐश्वर्यशाली भूपति होयवाक कामनासँ माटिक शिवलिंग वनाय पूजा करब।

वालुक लिंगक (पूजामे) सेहो इएह कामना होइत अछि।

नन्दिपुराणमे पार्थिवलिंग-पूजनक फल—

जे व्यक्ति पार्थिव लिंगक पूजा करैत अछि, ओ आयुष्मान्, धनवान्, लक्ष्मीवान्, पुत्रवान्, वलवान्, तथा सुखी भ' अभिलषित वर पवैत अछि ।।३२०।।

आइ हम दीर्घायु, धन, लक्ष्मी, पुत्र, बल, सुख तथा अभिलषित वर प्राप्तिक कामनासँ पार्थिवलिंगक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पार्थिवपूजायाम्—

तस्मात्तु[1] पार्थिवं लिङ्गं ज्ञेयं सर्वार्थसाधकम् ॥३२१॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकामनया पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्कान्दे पार्थिवादिलिङ्गघटनस्य—

प्रतिमालिङ्गवेदीषु यावन्तः परमाणवः ।
तावत्कल्पं महाभोगैस्तत्कर्त्तास्ते शिवे पुरे ॥३२२॥

सुनिर्मितं तु यो लिङ्गं कृत्वाऽर्चयति शंकरम् ।
स प्राप्नोत्यक्षयं लोकं निर्माणसदृशं फलम् ॥३२३॥

पुत्रः शिष्योऽथ पत्नी वा पतिधर्मपरायणा ।
भक्त्या निर्माति यल्लिङ्गं स्वयं तन्निर्मितं भवेत् ॥३२४॥

परिमाणमाह—

अक्षादल्पं परीमाणं न लिङ्गं कारयेत् क्वचित् ।
तथैवाङ्गुष्ठतो ह्रस्वं न कदाचित् समाचरेत् ॥३२५॥

इदं मृदादिषु, रत्नादौ मानान्तर माह

अप्यामलकवल्लिङ्गं (सम्यक्) कृत्वाभिपूज्य च ।
हिरण्मयं रत्नमयं शिवलोके महीयते ॥३२६॥

तथा—

लिङ्गमस्तकविस्तारो लिङ्गोच्छ्रायसमोभवेत् ।
द्विगुणः परिणाहः स्यात्तस्य पीठी व्यवस्थिता ॥३२७॥

कर्कशं कपिलं लिङ्गं तथा युग्मविवर्जितम् ।
नैवसिद्धिप्रदं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३२८॥

अद्य लिङ्गयुतवेद्यारम्भकमृत्पिण्डस्थपरमाणुसमसंख्यकल्पावच्छिन्नबहुमहाभोगयुतात्मशिवपुराधिकरणकवासकामनया पार्थिवशिवलिङ्गघटनमहं करिष्ये ।

एवं गोमयादिलिङ्गस्यघटनेपि कामना

१. ने० पा०, तस्मात्ते ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पार्थिवलिंग-पूजाक फल—

पार्थिवलिंगक पूजन सभ कामनाक सिद्ध करयवाला मानल गेल अछि ॥३२१॥

आइ हम ईप्सित फल प्राप्त करवाक हेतु पार्थिव शिवलिंगक पूजा करव ।

स्कन्दपुराणमे पार्थिवादि लिंग संघटनक फल ।

प्रतिमा, लिंग एवं वेदीमे जतेक परमाणु होइत अछि, ओतेक कल्प धरि प्रतिमा आदिक निर्माण कयनिहार ऐश्वर्यक संग शिवलोकमे निवास करैत अछि ॥३२२॥

जे व्यक्ति सुन्दर लिंग वनाय शंकरक पूजा करैत अछि, ओ अक्षयलोक प्राप्त कय निर्माणक सदृश फल पवैत अछि ॥३२३॥

पुत्र, शिष्य अथवा पतिव्रता पत्नी द्वारा भक्तिपूर्वक जे (शिव) लिंग बनाओल जाइत अछि, ओ स्वनिर्मित मानल जाइत अछि ॥३२४॥

परिमाणक विषयमे

अक्ष अर्थात् कर्ष नामक १६ माशाक एक तौलसँ कम परिमाणक आ' अँङ्गुठासँ छोट (शिव)लिंग कहियो ने बनयबाक चाही ॥३२५॥

ई परिमाण माटिक (शिव) लिंग बनयबामे कहल गेल अछि । आव रत्नादिकसँ (शिव)लिंग बनयबाक दोसर परिमाण कहल जाइत अछि ।

सम्यक् रीतिसँ औरा (धात्री)क बराबरि सोना आ' रत्नक लिंग वनाय जे पूजैत अछि, ओ शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥३२६॥

तथा

महादेव पार्वतीसँ कहैत छथिन जे हे देवि, लिंगक मस्तकक विस्तार लिंगक ऊँचाइक समान, मोटाइ आ चौड़ाइ दुगुन तथा पीठ-वेदी व्यवस्थित होयवाक चाही । कठोर, कपिलवर्ण एवं अयुग्म (शिव)लिंग सिद्धिप्रद नहि होइत अछि । ई हम सर्वथा सत्य कहैत छी ॥३२७-२८॥

आइ हम लिंग सहित वेदी–निर्माणमे प्रयुक्त माटिक पिण्डक परमाणु बरोबरि संख्याक कल्प धरि बहुत महाभोगक संग शिवपुरमे निवासक कामनासँ पार्थि शिवलिंगक संघटन करब ।

एहिना गोवरक आदिक संगठनमे कामना होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरे पार्थिवलिङ्गघटनस्य —

क्रीडातोपि च यो बाल्याल्लिङ्गं करोति पांशुना ।
लभते राज्यमेकान्तं निःसपत्नमकण्टकम् ॥३२९॥

अद्य ऐहिका[1]न्तिकनिःसपत्नाकण्टकराज्यप्राप्तिकामः पार्थिवशिवलिङ्गघटनमहङ्करिष्ये ।

देवीपुराणे पार्थिवादिलिङ्गपूजायां मृदाहरणादि —

मृदाहरणसंघट्टः प्रतिष्ठाह्वानमेव च ।
स्नपनं पूजनञ्चैव विसर्ज्जनमतः परम् ॥३३०॥

क्रमेण मन्त्रानाह—

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति स्मृतः ॥३३१॥

भविष्यपुराणे पूजामन्त्राः—

ॐ नमः शिवाय । ओं शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः । ओं भवाय जलमूर्त्तये नमः। ओं रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः । ओं उग्राय वायुमूर्त्तये नमः । ओं भीमायाकाशमूर्त्तये नमः। ओ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः । ओं महादेवाय सोममूर्त्तये नमः । ओ ईशानाय सूर्य्यमूर्त्तये नमः ॥

मूर्त्तयोऽष्टौ शिवस्यैताः पूर्वादिक्रमयोगतः ।
आग्नेय्यन्ताः प्रयोज्यास्तु वेद्यां लिङ्गे शिवं यजेत् ॥३३२॥

पूर्वतो वामावर्त्तेनाग्नेयान्ता वेद्यामष्टौ मूर्त्तयः पूज्याः ।
ओ नमः शिवायेति मन्त्रेण लिङ्गे शिवं पूजयेदित्यर्थः ।

नन्दिपुराणे—

गोभूमिवस्त्रदानादिबलिपुष्पनिवेदने ।
ज्ञेयो नमः शिवायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥
सर्वमन्त्राधिकश्चायमोङ्काराद्यः षडक्षरः ॥३३३॥

अथ पूजादिविधाने विष्णुः

स्नातः सुप्रक्षालितपाणिपादः शुचिर्बद्धशिखो दर्भपाणिराचान्तः प्राङ्मुख उदङ्मुखोपविष्टो ध्यानी मौनी देवतां सम्पूजयेत् ।

1. ने० पा० एकान्तिक ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरमे पार्थिव लिंग बनयबाक फल —

जे व्यक्ति नेनपनोसँ (बाल्यावस्थामे) खेलमे माटिक (शिव)लिंग बनवैत अछि, ओ शत्रुरहित निष्कण्टक स्थायी राज्य प्राप्त करैत अछि ॥३२९॥

आइ हम ऐहिकान्तिक शत्रुरहित निष्कण्टक राज्य पयबाक कामनासँ पार्थिव शिवलिंग बनायब

देवीपुराणमे पार्थिवादि-लिंग पूजाक हेतु माटि आदि अनबाक विषयमे कहल गेल अछि।

माटि अनबाक प्रयत्न, शिवक प्रतिष्ठा, आवाहन, स्नपन, पूजन तथा ओकर बाद विसर्जन करबाक चाही ॥३३०॥

हर, महेश्वर, शूलपाणि, पिनाकधारी, पशुपति, शिव तथा महादेव ई (मन्त्र) अछि ॥३३१॥

भविष्यपुराणमे पूजाक मन्त्र

शिवकें नमस्कार। पृथ्वीरूप शर्वकें नमस्कार। जलरूप भवकें नमस्कार। अग्निरूप रुद्रकें नमस्कार। वायुरूपरुद्रकें नमस्कार। आकाशरूप भीमकें नमस्कार। यजमानरूप पशुपतिकें नमस्कार। चन्द्ररूप महादेवकें नमस्कार। सूर्यरूप ईशानकें नमस्कार।

वेदी पर लिंगमे शिवक पूजा करैत पूजा कयनिहार पूर्वादि चारू दिस तथा आग्नेयान्त चारू कोणमे क्रमशः शिवक एहि आठ उपर्युक्त मूर्त्ति सभक विनियोग करथि ॥३३२॥

पूर्वसँ प्रारम्भ कय वाम भाग एहि क्रमसँ वेदीक ऊपर आठो मूर्त्तिक पूजा करी। ओं नमः शिवाय (शिव कें नमस्कार) एहि मन्त्रसँ लिंग में शिवक पूजा करी।

नन्दिपुराणमे—

गाय, भूमि, वस्त्रक दानमे तथा वलि, पुष्पक निवेदनमे 'नमः शिवाय' (शिव कें नमस्कार) ई 'मन्त्र सभ अर्थक साधक मानल गेल अछि। 'ओं नमः शिवाय' ई षडक्षर मन्त्र सभ मन्त्रसँ वेसी महत्त्वपूर्ण अछि ॥३३३॥

विष्णुस्मृतिमे पूजाविधानक विषयमे कहल गेल अछि—

स्नान कय हाथ पायरकें बढ़िञा जकाँ प्रक्षालन कयं पवित्रतापूर्वक शिखा (टीक) वान्हि, कुश हाथमे लय आचमन कय पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख भ' सुखपूर्वक बैसि मौन भ' ध्यान करैत शिवक पूजा करी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोत[1]मस्मृतिः—

रात्रावुदङ्मुखः कुर्य्याद्दैवकार्य्यं सदैव हि ।
शिवार्च्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्य्यादुदङ्मुखः ॥३३४॥

स्कन्दपुराणे—

स्नात्वा शुद्धे समे देशे गोमयेनोपलेपिते ।
सदासीनः सदा मौनी निश्चलोदङ्मुखः शिखी[2] ॥३३५॥
विचित्रमासनं तत्र निधाय सुमनोहरम् ।
अगस्त्येनैव शास्त्रेण प्रोक्तलक्षणलक्षितम् ॥३३६॥
आधाय श्रद्धया तत्र शिवलिङ्गं समाहितः ।
तत्रैवावाह्य देवेशं प्रणवेन हृदि स्थितम् ॥३३७॥
अर्घं दत्वा द्विजश्रेष्ठाः पूर्वोक्तेनैव मन्त्रतः ।
पुनः स्नाप्य महादेवमापोहिष्ठादिभिस्त्रिभिः ॥३३८॥
पुनराचमनं दत्वा प्रतिष्ठाप्यासने हरम् ।
दत्वा वस्त्रोपवीतञ्च भूषणानि च सादरम् ॥३३९॥
गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपञ्चैव निवेदयेत् ।
पंचाक्षरेण मन्त्रेण प्रणवेनोभयेन तु ॥३४०॥
हविर्न्निवेद्य देवाय पानीयेन सहादरात्[3] ।
पुनराचमनं दत्वा ताम्बूलं सोपदंशकम् ॥३४१॥
माल्यं दत्वानुलेपं च प्रणमेद् भुवि दण्डवत् ।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थश्च सुव्रतः ॥३४२॥
एवं दिने दिने देवं पूजयेदम्बिकापतिम् ।
संन्यासी देवदेवेशं प्रणवेनैव पूजयेत् ॥३४३॥
नमोऽन्तेन शिवेनैव स्त्रीणां पूजा विधीयते ।
विविक्तानाञ्च शूद्राणामेव पूजा प्रकीर्त्तिता ॥३४४॥
अन्येषामपि सर्वेषां शूद्राणां तु पूजादौ प्रणमेत् ।

१. ने० पा, गौतम ।
२. तत्रैव, सुखः ।
३ तत्रैव, महादरात् ।
४. श्लोक संख्या ३४२ सँ ३४४ धरि नेपाल पाण्डुलिपिक अंश थिक ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौतमस्मृतिमे कहल गेल अछि—

रातिमे सभ देवकार्य सर्वदा उत्तराभिमुख भ' करबाक चाही। शिवक पूजा सेहो पवित्र भ' सर्वदा उत्तराभिमुख भ' करबाक चाही ॥३३४॥

स्कन्दपुराणमे कहल गेल अछि—

स्नान कय गोबरसँ नीपल पवित्र समतल स्थानमे वैसि आ' उत्तराभिमुख भ' सुखपूर्वक स्थिर तथा सदा मौन रही ॥३३५॥

ओहि स्थान पर अगस्त्यक द्वारा प्रतिपादित लक्षणसँ युक्त सुमनोहर आसनकेँ बिछावी ॥३३६॥

ओतय श्रद्धासँ शिवलिंगकेँ स्थापित करी। ओतहि प्रणवमंत्रसँ हृदयमे स्थित महादेवक आवाहन करी ॥३३७॥

पूर्वोक्त मन्त्रहिसँ अर्घ दय "आपोहिष्ठामयो भुवः" एहि मन्त्रसँ महादेवकेँ पुनः तीन खेप स्नपन करी ॥३३८॥

पुनश्च आचमन दय आसन पर शिवक प्रतिष्ठा कय वस्त्र, जनउ तथा गहना आदरक संग दी ॥३३९॥

पंचाक्षर मन्त्रसँ प्रणवसँ अथवा दूनूसँ गन्ध, पुष्प, धूप तथा दीपक निवेदन करी ॥३४०॥

आदरपूर्वक पानिक संग हवि महादेवकेँ निवेदन कय पुनः आचमन कराय सुपारी आ मसालाक संग पान दी ॥३४१॥

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, एवं वानप्रस्थमे रहयवला आ' व्रतधारी व्यक्ति माला एवं चानन दय पृथ्वीपर दण्डवत् प्रणाम करय ॥३४२॥

एहि रूपसँ प्रत्येक दिन अम्बिकापति शिवक पूजा करबाक चाही। संन्यासी प्रणवहिसँ देवदेवेशक पूजा करथि ॥३४३॥

स्त्रीगणकेँ 'शिवाय नमः' मन्त्रसँ पूजा करबाक चाही। (सच्छूद्र) शूद्रक हेतु सेहो एहि रूपक पूजाक विधान विहित अछि ॥३४४॥

अन्य आ' सभ शूद्र सेहो पूजादि मे प्रणाम करय।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे—

सर्वाङ्गज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने[1] ।
नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहितेरत ॥३४५॥

अनन्तकान्तिसम्पन्न अनन्तासनसंस्थित ।
अनन्तकान्तिसम्भोग परमेश नमोस्तु ते ॥३४६॥

परापरपरातीत उत्पत्तिस्थितिकारक ।
सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोस्तु ते ॥३४७॥

बहुरूप महारूप सर्वरूपोत्तमोत्तम ।
पशुपाशार्णवातीत वरप्रद नमोऽस्तु ते[2] ॥३४८॥

स्वभावनिर्मलाभोग सर्वव्याधिविनाशन ।
योगियोगिमहायोगि योगीश्वर नमोस्तु ते ॥३४९॥

निरञ्जन निराधार साधार निरुपद्रव ।
प्रसन्न परमेशान महेशान नमोऽस्तु ते ॥३५०॥

जिह्वाचपलभावेन (न स्तुतं नाम) यन्मया ।
तत्क्षन्तव्यमनौपम्य कस्त्वां स्तौति गुणालयम्[3] ॥३५१॥

कृत्वा लिङ्गप्रतिष्ठान्तु ध्यात्वा लिङ्गं सदाशिवम् ।
पूजयित्वा महादेवं स्तवमेनमुदीरयेत्[4] ॥३५२॥

लिङ्गस्तवं महापुण्यं यः[5] शृणोति सदा नरः ।
नोत्पद्यते स संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ॥३५३॥

---

१ ने० पा० महात्मनः ।
२ श्लोक संख्या ३८४=ने० पा० क अंश थिक ।
३ श्लोक संख्या ३५०—३५१, ने० पा० क अंश थिक ।
४ ३५२संख्यक श्लोकक अन्तिम दू चरण ने० पा०क अंश थीक ।
५ ने० पा०—दिनेदिने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि—

सर्वाङ्ग, ज्ञान आ' विज्ञान प्रदान करयवला महात्मा तथा सभ प्राणीक कल्याण करबामे लीन हे देवता सभक देव ! अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३४५॥

अनन्त कान्तिसँ युक्त, अनन्त आसन पर बैसल तथा अनन्त-कान्ति-सम्भोग हे शिव ! अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३४६

परापर (पर आ अपर) ज्ञानसँ ऊपर उठल, उत्पत्ति एवं स्थितिक निर्माण कयनिहार तथा सभ कामनाक सिद्धमे साधक हे विश्वेश्वर (शिवक एक मूर्त्ति) अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३४७॥

हे वहुरूप ! महारूप ! सर्वरूप ! उत्तमोत्तम ! पशुपाशरूपी समुद्रसँ परे ! वरप्रद ! अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३४८॥

हे योगीश्वर (शिव) ! स्वभावसँ निर्मल, सभ व्याधि (रोग)केँ नाश करयवला योगी ! योगी ! महायोगी ! अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३४९॥

हे महेशान ! निरञ्जन (अंजन-रहित, निर्दोष, अज्ञानसँ रहित), विना आधारक आधारयुक्त, उपद्रवसँ रहित तथा प्रसन्न परमेशान अहाँकेँ नमस्कार अछि ॥३५०॥

जीहक चपलताक कारण हम जे अहाँक नामक-स्तुति नहि कयलहुँ, इ अनुपमेय ओकरा अहाँ क्षमा करू, किएक तँ हे गुणालय ! अहाँक स्तुति के कय सकैत अछि ? ॥३५१॥

(शिव) लिंगक निर्माण कय ओकर प्रतिष्ठा कयलाक उपरान्त सदाशिव लिंगक ध्यान लगा कय महादेवक पूजा तथा स्तुति करी ॥३५२॥

जे मानव सर्वदा परम पवित्र लिंगस्तव सुनैत अछि, ओ संसारमे जन्म नहि लैत अछि आ' शाश्वतपद, नित्य,सततस्थायी स्वर्ग प्राप्त करैत अछि ॥३५३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रृणुयाल्लिङ्गसंस्तवम् ।
पापकञ्चुकनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ॥३५४॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ।
विश्वाद्यं विश्वरूपं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥३५५॥

नन्दिकेश्वरे शिवलिङ्गार्चनस्य —

लिङ्गं समर्चयेन्नित्यं महतीं श्रियमाप्नुयात् ॥३५६॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं महालक्ष्मीप्राप्तिकामो घटयित्वा पार्थिवशिवलिङ्गमहमर्चयिष्ये ।

सहस्रलिङ्गार्चनस्य—

सहस्रमर्चयेल्लिङ्गं निरयं स न पश्यति ।
शिवलोकमवाप्नोति भुक्त्वा भोगाननुत्तमान् ॥३५७॥

तथा—

सहस्रपूजनात् सोऽपि लभते वाञ्छितं फलम्[१] ॥३५८॥

अद्यादि निरयादर्शनानन्दितबहुभोगभुक्तिपूर्वकरुद्रलोकप्राप्तिकामनया सहस्रं पार्थिवलिङ्गान्यहमर्चयिष्ये[२] ।

लक्षलिङ्गपूजनस्य—

लक्षं पूजयते यस्तु शिवत्वं लभते ध्रुवम् ॥३५९॥

अद्यादि शिवत्वप्राप्तिकामनया लक्षं पार्थिवशिवलिङ्गान्यहं पूजयिष्ये ।

१. ने० पा० सें प्राप्त ।
२. तत्रैव, शिवलिङ्गस्याहमर्चयिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अतएव, जे सभ प्रयत्नसँ शिवलिंग-स्तव सुनैत अछि, ओ पापकञ्चुकसँ निर्मुक्त भ' सभसँ उच्च स्थान अथवा मुक्ति प्राप्त करैत अछि ॥३५४॥

आब शिवक ध्यानक सम्बन्धमे कहल गेल अछि

चानीक गिरिक सदृश जनिक कान्ति छनि, जे चन्द्रमारूपी सुन्दर आभूषण धारण कयने छथि, जनिक अंग रत्न जकाँ उज्ज्वल छनि, जनिक हाथमे परशु, मृग, वर (वरदान) आ अभय छनि, जे प्रसन्न छथि, जे कमलक आसन पर विराजित छथि, देवता लोकनि जनिका चारू कात ठाढ़ भ' स्तुति करैत छथिन, जे बाघक खाल पहिरने छथि, जे विश्वक (संसारक) आदि आ' विश्वरूप तथा सभ प्रकारक भय हरण करयवला थिकाह, जनिका पाँच गोट मुँह आ तीन गोट आँखि छनि, ओहि महेश्वरक प्रत्येक दिन ध्यान करी ॥३५५॥

नन्दिकेश्वर मे शिवलिंगार्चनक फल—

जे (शिव)लिंगक नित्य पूजा करैत अछि, ओ महान् ऐश्वर्यकेँ प्राप्त करैत अछि ॥३५६॥

आइसँ हम प्रत्येक दिन जीवनपर्यन्त महालक्ष्मीक प्राप्तिक हेतु पार्थिव लिंग बनाय पूजा करब।

सहस्र शिवलिंग पूजनक फल—

जे हजार शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओ नरक नहि देखैत अछि आ' उत्तम भोगकेँ भोगि शिवलोक प्राप्त करैत अछि ॥३५७॥

आ' ओ हजार लिंगक पूजा कयलासँ वाञ्छित फल सेहो प्राप्त करैत अछि ॥३५८॥

आइ हम नरककेँ नहि देखबाक तथा विविध भोग सभक उपभोगपूर्वक रुद्रलोकक प्राप्तिक कामनासँ सहस्र पार्थिव शिवलिंगक अर्चना करब।

लाख शिवलिंग-पूजाक फल—

जे एक लाख शिवलिंगक अर्चना करैत अछि, ओ अवश्ये शिवत्वकेँ प्राप्त करैत अछि ॥३५९॥

आइ हम शिवत्व-प्राप्तिक कामनासँ एक लक्ष पार्थिव शिवलिंगक अर्चना करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दशलक्षलिङ्गपूजनस्य—

लक्षैर्दशभिरिन्द्रत्वम् ॥३६०क॥

अद्यादि इन्द्रत्वप्राप्तिकामो दशलक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

विंशतिलक्षलिङ्गपूजनस्य—

ब्रह्मत्वं विंशतेः स्मृतम् ॥३६०ख॥

अद्यादि ब्रह्मत्वप्राप्तिकामो विंशतिलक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

त्रिंशल्लक्षलिङ्गपूजनस्य—

त्रिंशल्लक्षैस्तु सायुज्यम् ॥३६१॥

शिवस्येति शेषः।

अद्यादि शिवसायुज्यप्राप्तिकामस्त्रिंशल्लक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

चत्वारिंशल्लक्षपूजनस्य--

रुद्रत्वञ्च चतुर्गुणैः ॥३६२॥

[विद्यापति]

चतुर्गुणैर्दशभिश्चत्वारिंशल्लक्षैरित्यर्थः।

अद्यादि रुद्रत्वकामश्चत्वारिंशल्लक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहङ्करिष्ये।

कोटिलिङ्गपूजनस्य—

लक्षेण शिवतां याति कोटिमभ्यर्च्चय गच्छति ।
स्वशरीरेण सायुज्यं पुनरावृत्तिदुर्ल्लभम् ॥३६३॥

अद्यादि पुनरावृत्तिरहितत्व शिवसायुज्यप्राप्तिकामः कोटिसंख्यकपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

शिवधर्म्मे पञ्चगव्यप्रोक्षितान्न[1]लिङ्गपूजनस्य—

पञ्चगव्येन सम्प्रोक्ष्य सदालिङ्गं प्रपूजयेत् ।
अन्नलिङ्गन्तु[2]कृत्वाच्चर्य लभते कामिकं[3] फलम् ॥३६४॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पञ्चगव्यसंप्रोक्षितान्नमयलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

---

१. ने० पा०, प्रोक्षितार्थलिङ्ग।
२. तत्रैव, अन्तर्लिङ्गं।
३. तत्रैव, कान्तिकम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दस लाख शिवलिंग-पूजाक फल—

दस लाख शिवलिंगक पूजा कयलासँ इन्द्रत्वकेँ प्राप्त करैत अछि ॥३६०क॥

आइ हम इन्द्रत्व पयबाक हेतु दस लाख पार्थिव शिवलिंगक पूजा करब।

बीस लाख शिवलिंग-पूजनक फल—

बीस लाख शिवलिंगक पूजा कयला उत्तर ब्रह्मत्व प्राप्त होइत अछि ॥३६०ख॥

[विद्यापति]

प्रत्येक ठाम शिवक बुझबाक थिक।

आइ हम ब्रह्मत्व प्राप्तिक कामनासँ बीस लाख पार्थिव शिवलिंगक पूजा करब।

तीस लाख शिवलिंग-पूजनक फल—

तीस लाख (शिवलिंग) पूजा कयलासँ सायुज्य (मुक्तिक चारि अवस्थामेसँ एक अर्थात् मुक्तिक एक भेद जाहिमे जीवात्मा परमात्मामे लीन भ' जाइत अछि) भेटैत अछि ॥३६१॥

आइ हम शिव-सायुज्यक प्राप्तिक हेतु तीस लाख पार्थिव शिवलिंगक पूजा करब।

चालीस लाख (शिवलिंग) पूजनक फल—

चालीस लाख पार्थिव शिवलिंग पूजा कयला उत्तर रुद्रत्व प्राप्त होइत अछि ॥३६२॥

[विद्यापति]

एतय चतुर्गुणक अर्थ अछि दशक चारि गुना चालीस लाख।

आइ हम रुद्रत्व-प्राप्तिक कामनासँ चालीस लाख पार्थिव शिवलिंगक पूजा करब।

कोटि शिवलिंगक पूजनक फल—

एक लाख शिवलिंगक पूजनसँ शिवत्व प्राप्त होइत अछि आ' एक कोटि शिवलिंगक पूजा कयला पर सदेह (शिवक) सायुज्य प्राप्त करैत अछि तथा पुनरागमन दुर्लभ भ' जाइत अछि ॥३६३॥

आइ हम पुनरागमन-रहित शिवसायुज्य-प्राप्तिक कामनासँ एक कोटि पार्थिव शिवलिंगक पूजन करब।

शिवधर्ममे पंचगव्यसँ प्रोक्षित अन्नमय लिंगपूजनक फल—

पंचगव्यसँ सिक्त कय सर्वदा शिवलिंगक पूजा करवाक चाही। जे अन्नक लिंग बनाय पूजा करैत अछि, ओ अपन कामनाक अनुसार फल प्राप्त करैत अछि ॥३६४॥

आइ हम ईप्सित फल प्राप्त करबाक कामनासँ पंचगव्यसँ सिक्त शिवक अन्नमय लिंगक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुडमयलिङ्गपूजनस्य—

गुडलिङ्गं समभ्यर्च्च्य परं सौभाग्यमाप्नुयात् ।
कन्याशतपतिश्चैव प्रतिराज्येश्वरो भवेत् ॥३६५॥
नारी चैव सहस्रेण सापत्नेन वृता सती ।
लभते सौभाग्यमतुलं सर्वेषामुपरिस्थितम् ॥३६६॥
रमते पुत्रपौत्रैश्च सुखमेकान्तमश्नुते ।
अर्च्चयेच्च नरोनारी खण्डलिङ्गञ्च नित्यशः ॥३६६ क॥

अद्य सौभाग्यकन्याशतपतित्वप्रतिराज्येश्वरत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य गुडमयलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्त्रीकर्तृकगुडमयलिङ्गपूजनस्य—

अद्य बहुसपत्नीपरिवृतत्वातुलसौभाग्यसर्वोपरिस्थितत्वबहुपुत्रपौत्रहेतुक सन्तोषै-कान्तसुखावाप्तिकामनया गुडमयशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

खण्डमयलिङ्गपूजने स्त्रिया इयमेव कामना । पुरुषस्य तु पूर्वा ।

इतिपूर्वोक्तफलत्वयानुवर्त्तौ सत्यामभिधानात् ।

शर्कराघटितशिवलिङ्गपूजनस्य—

कृत्वा लिङ्ग[1]न्तु सितया प्रत्यहं यः समर्च्चयेत् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति षड्भिर्मासैर्न संशयः ॥३६७॥

[विद्यापति]

सिताशर्करा

अद्यादिसर्वकामावाप्तिकामनया सितया घटयित्वा षण्मासान् यावदहरहः शिवलिङ्गमहमर्चयिष्ये ।

नवनीतमयलिङ्गपूजनस्य—

नवनीतमये लिङ्गे लभते चेप्सितं फलम् ।
षण्मासेन विशुद्धात्मा शिवलोके महीयते ॥३६८॥

---

१. ने० पा०, लिङ्गं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुडमय शिवलिंग-पूजनक फल—

जे पुरुष गुड़मय शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओ उत्कृष्ट सौभाग्य प्राप्त कय सय कन्याक पति तथा शत्रुराज्यक मालिक होइत अछि ॥३६५॥

स्त्री सेहो हजार सौतिन सभसँ युक्त रहलो उत्तर अतुलनीय सौभाग्य प्राप्त कय सभमे श्रेष्ठ बनल रहैत अछि आ' पुत्र-पौत्रक संग आनन्द उठबैत एकान्त सुख प्राप्त करैत अछि ॥३६६क॥

पुरुष आ' स्त्री खाँडकलिंगक नित्य पूजा करय ॥३६६क॥

आइ हम सौभाग्य प्राप्त करबाक, सय कन्याक पति होयबाक तथा शत्रुराज्यक मालिक बनबाक कामनासँ भगवान् शिवक गुड़मय लिंगक पूजा करब।

स्त्रीक द्वारा कयल गेल गुडमय लिंगक पूजनक फल—

आइ हम बहुत सौतिनसँ आवेष्टित रहितहु अद्वितीय सौभाग्य प्राप्त करबाक, सभ सौतिनसँ ऊपर रहबाक, अनेक पुत्र-पौत्र सभक द्वारा सन्तोष आ' परम सुख प्राप्त करबाक कामनासँ गुडमय शिवलिंगक पूजा करब।

[विद्यापति]

स्त्री द्वारा खाँड़लिंग-पूजनक सेहो इएह फल होइत अछि। पुरुषक हेतु पूर्वोक्त फल प्राप्त होइत अछि। एहि कथनमे पूर्वोक्त दुनू फलक सम्बन्ध होइत अछि।

शर्करा[1] निर्मित शिवलिंग पूजनक फल—

जे मनुष्य शक्करसँ शिवलिंग बनाय प्रत्येक दिन पूजा करैत अछि, ओ छवे मासमे सभ कामनाकेँ प्राप्त कय लैत अछि ॥३६७॥

[विद्यापति]

सिताक अर्थ शक्कर अछि ॥

आइसँ हम सभ कामनाक प्राप्तिक हेतु शक्करसँ शिवलिंग बनाय लगातार छओ मास धरि प्रत्येक दिन ओकर पूजा करब।

मक्खनसँ निर्मित शिवलिंगपूजनक फल—

जे नवनीतमय लिंगक पूजा करैत अछि, ओ अभीष्ट फल पाबि छओ मासमे विशुद्धात्मा भ' शिवलोकमे निवास करैत अछि ॥३६८॥

---

१ शक्करः-रवादार चीनी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यादि ईप्सितफलप्राप्तिविशुद्धात्मत्व-शिवलोकमहितत्वकामनया षण्मासान् यावत्प्रत्यहं नवनीतमयशिवलिङ्गमपूजनहङ्करिष्ये[1]।

लवणमयलिङ्गपूजनस्य—

लवणेन[2] तु लिङ्गेन लभेत्सौभाग्यमुत्तमम् ॥३६९॥

अद्योत्तमसौभाग्यप्राप्तिकामनया लावणं लिङ्गमहं पूजयिष्ये[3]।

पार्थिवशिवलिङ्गसहस्रपूजनस्य—

बालुकानि च लिङ्गानि पार्थिवानि च कारयेत् ।
सहस्रपूजनात् सोऽपि लभते वाञ्छितं फलम् ॥३७०॥

अद्यादि ईप्सितफलप्राप्तिकामनया सहस्रं पार्थिवशिवलिङ्गान्यहं पूजयिष्ये।

[विद्यापति]

बालुकामयशिवलिङ्गपूजनस्याप्येतदेव फलम्।

एकदिवसेनैव पूजनत्वस्येति योज्यम्।

शिवधर्म्मे पाषाणलिङ्गपूजनस्य—

ब्रह्मा पूजयते नित्यं लिङ्गं शैलमयं शुभम् ।
तस्य सम्पूजनात्तेन प्राप्तं ब्रह्मत्वमुत्तमम् ॥३७१॥

[विद्यापति]

नित्यंयावज्जीवम्

अद्यादि यावज्जीवमुत्तमब्रह्मत्वप्राप्तिकामः प्रत्यहं शैलं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये।

इन्द्रनीलमयलिङ्गपूजनस्य—

इन्द्रनीलमयं लिङ्गं विष्णुरर्च्चयते सदा ।
विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेन सोऽद्भुतैकसनातनम् ॥३७२॥

[विद्यापति]

सदानित्यम्

अद्यादि यावज्जीवमद्भुतैकसनातनविष्णुत्वभवनकामनया प्रत्यहमिन्द्रनीलमयं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये।

---

१. ने० पा०, पूजयिष्ये।

२. तत्रैव, लावणेन।

३. तत्रैव, करिष्ये।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइसँ हम ईप्सित फल, विशुद्धात्मत्व तथा शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ छओ मास पर्यन्त प्रत्येक दिन मक्खनमय शिवलिंगक पूजा करब।

नोनमय शिवलिंग-पूजनक फल—

लवणमय शिवलिंगक पूजासँ लोक उत्तम सौभाग्य प्राप्त करैत अछि ॥६३९॥

आइ हम उत्तम सौभाग्य प्राप्तिक कामनासँ नोनमय लिंगक पूजा करब।

एक हजार पार्थिव शिवलिंग-पूजनक फल—

जे बालुक तथा माटिक एक हजार शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओहो ईप्सित फल प्राप्त करैत अछि ॥३७०॥

आइसँ हम ईप्सित फल-प्राप्तिक कामनासँ एक हजार पार्थिव शिवलिंगक पूजा करब।

[विद्यापति

बालुकामय शिवलिंग पूजनहुक इएह फल अछि।

ई फल एक दिनमे सहस्र (पार्थिवलिंग) पूजनक बुझबाक थिक।

शिवधर्मंमे पाथरक लिंग-पूजनक फल—

ब्रह्मा प्रतिदिन पवित्र पाथर निर्मित शिवलिंगक पूजा करैत छथि आ ओकरे पूजनसँ हुनका उत्तम ब्रह्मत्व प्राप्त भेलनि ॥३७१॥

[विद्यापति]

नित्यक अर्थ जीवन पर्यन्त अछि।

आइसँ हम जीवन पर्यन्त उत्तम ब्रह्मत्व प्राप्तिक कामनासँ प्रतिदिन शैलमय शिवलिंगक पूजा करब।

इन्द्रनीलसँ निर्मित शिवलिंग पूजनक फल—

विष्णु नित्य इन्द्रनीलमय शिवलिंगक पूजा करैत छथि ताही कारणे ओ अद्भुत तथा सनातन विष्णुत्व केँ प्राप्त कयने छथि ॥३७२॥

[विद्यापति]

सदाक अर्थ नित्य अछि।

आइ सँ हम जीवन पर्यन्त अद्भुत सनातन विष्णुत्व प्राप्त करबाक हेतु प्रत्येक दिन इन्द्रनीलमय शिवलिंगक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मणिमयलिङ्गपूजनस्य—

शक्रोपि देवदेवेन्द्रो लिङ्गं मणिमयं शुभम् ।
नित्यमर्च्चयते भक्त्या तेन शक्रत्वमाप्तवान् ॥३७३॥

अद्यादि यावज्जीवं शक्रत्वभवनकामः प्रत्यहं मणिमयशिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

हेमलिङ्गपूजनस्य—

लिङ्गं हेममयं कान्तं धनदोऽर्च्चयते सदा ।
तेनासौ[1] धनदोदेवो धनदत्वमवाप्तवान् ॥३७४॥

अद्यादि यावज्जीवं धनदत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य हेमलिङ्गपूजनं प्रत्यहमहं करिष्ये।

रौप्यलिङ्गपूजनस्य—

विश्वेदेवा महात्मानो रौप्यं लिङ्गं मनोहरम् ।
यजन्ते विधिवद्भक्त्या तेन विश्वत्वमाप्नुयुः ॥३७५॥

अद्य विश्वेदेवत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य रौप्यं लिंगमहं पूजयिष्ये ।

पित्तललिङ्गपूजनस्य—

वायुः परेण भावेन लिङ्गं पित्तलजं शुभम् ।
त्रिकालेऽर्च्चयते तेन वायुत्वं प्राप्तमुत्तमम् ॥३७६॥

अद्यानौपम्यगुणावहवायुत्वभवनकामो भगवतः शिवस्य पैत्तलं लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

कांस्यलिङ्गपूजनस्य—

वसवः कांसिकं लिङ्गं पूजयन्ति विधानतः ।
प्राप्तं तेन महात्मानो वसुत्वं सुमहोदयम् ॥३७७॥

---

१. ने० पा०, ततोऽसौ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मणिसँ निर्मित शिवलिंगक पूजनक फल—

देवदेवेन्द्र शक्र मणिमय शुभ शिवलिंगक प्रत्येक दिन भक्तिपूर्वक पूजा करैत छथि ताही कारणें ओ इन्द्रत्व प्राप्त कयने छथि ।।३७३।।

आइसँ हम इन्द्रत्व-प्राप्तिक कामनासँ प्रत्येक दिन मणिमय शिवलिंगक पूजा करव ।

हेमलिंगपूजनक फल—

कुवेर सुन्दर सोनाक शिवलिंगक सदा पूजा करैत छथि ताही कारणें ओ देव धनदत्व (कुवेरत्व) प्राप्त कयने छथि ।।३७४।।

आइसँ हम धनदत्व-प्राप्ति करवाक कामनासँ भगवान शिवक हेमलिंगक पूजा करव ।

चानीक शिवलिंगपूजनक फल—

महात्मा विश्वेदेव लोकनि चानीक सुन्दर शिवलिंगक पूजा भक्तिपूर्वक विधिवत् करैत छथि तैं ओ लोकनि विश्वेदेवत्व प्राप्त कयने छथि।।३७५।।

आइ हम विश्वेदेवत्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक चानीक वनल लिंगक पूजन करव ।

पित्तड़िक लिंग-पूजनक फल—

वायुदेवता अत्यन्त भक्तिक संग प्रातः, मध्याह्‌न तथा साँझ में पवित्र पित्तड़िक शिवलिङ्गक पूजन करैत छथि तैं उत्तम वायुत्व प्राप्त कयने छथि ।।३७६।।

आइ हम उपमाहीन गुणवाही वायुत्व प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शंकरक पित्तड़िक वनल शिवलिंगक पूजन करव ।

काँसाक लिङ्गक पूजनक फल—

महात्मा वसु सभ काँसाक वनल शिवलिंगक विधानपूर्वक पूजा करैत छथि जाहिसँ ओ सभ सुसमृद्धि वसुत्वकेँ प्राप्त कयने छथि ।।३७७।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य सुमहोदयवसुत्वप्राप्तिकामः कांस्यमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

पार्थिवशिवलिङ्गपूजनस्य—

अश्विनौ पार्थिवं लिङ्गं पूजयेतां विधानतः ।
तेन तावश्विनौ देवौ दिव्यदेहं गतावुभौ ॥३७८॥

अद्य दिव्यदेहाश्वित्व भवनकामो भगवतः शिवस्य पार्थिवलिङ्गमहं पजयिष्ये ।

स्फटिकलिङ्गपूजनस्य—

स्फटिकं निर्मलं लिङ्गं वरुणोऽर्चयते सदा ।
तेन तद्वरुणत्वंहि प्राप्तमृद्धिबलान्वितम् ॥३७९॥

अद्यादि यावज्जीवमृद्धिबलान्वितवरुणत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य स्फाटिकलिङ्गमहं प्रत्यहं पूजयिष्ये ।

रत्नमयलिङ्गपूजनस्य—

लिङ्गं रत्नमयं पुण्यमग्निरर्चयते सदा ।
अग्नित्वं प्राप्तवाँस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥३८०

अद्य तेजोरूपसमन्वितानित्वप्राप्तिकामो रत्नमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

ताम्रलिङ्गपूजनस्य—

ताम्रलिङ्गं सदाकालं भक्त्या देवो दिवाकरः ।
समभ्यर्च्च्य ततस्तेन प्राप्तं सूर्य्यत्वमुत्तमम् ॥३८१॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहमुत्तमसूर्य्यत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य ताम्रमयलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

मौक्तिकलिङ्गपूजनस्य —

मुक्ताफलमयं लिङ्गंसोमः पूजयते सदा ।
तेन सोमोपि सम्प्राप्तः सोमत्वं सततोज्ज्वलम्[1] ॥३८२॥

---

१ ने० पा०, सततोज्ज्वलः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम सुमहोदय वसुत्व प्राप्त करबाक कामनासँ काँसाक शिवलिंगक पूजा करब ।

पार्थिव शिवलिंग-पूजनक फल—

दुनू अश्विनीकुमार विधानपूर्वक पार्थिव लिंगक पूजन करैत छथि, तेँ हेतु ओ दुनू देवता अश्वनीकुमार भ' दिव्य देहकेँ प्राप्त कयने छथि ।३७८॥

आइ हम दिव्यदेहाश्वित्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक पार्थिव लिंगक पूजन करब ।

स्फटिक लिंगक पूजनक फल—

स्वच्छ स्फटिक लिंगक पूजा वरुण नित्य करैत छथि, तेँ समृद्धि आ बलसँ समन्वित वरुणत्व प्राप्त कयने छथि ॥३७९॥

आइसँ हम जीवनपर्यन्त समृद्धि, बल आ' वरुणत्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक स्फटिक लिंगक पूजा प्रत्यह करब ।

रत्नमय लिंगक पूजनक फल

अग्नि सर्वदा रत्नमय पवित्र लिंगक पूजा करैत छथि, तेँ तेजःस्वरूप अग्नित्व केँ प्राप्त कयने छथि ॥३८०॥

आइ हम तेजस्विरूप अग्नित्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक रत्नमय लिंगक पूजा करब ।

ताम्रक लिंगक पूजनक फल—

भगवान् सूर्य ताम्रलिंगक भक्तिपूर्वक नित्य पूजन कय उत्तम सूर्यत्वकेँ प्राप्त कयने छथि ॥३८१॥

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन उत्तम सूर्यत्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक ताम्रमय लिंगक पूजन करब ।

मुक्ता सँ बनल लिंगक पूजनक फल—

भगवान् चन्द्रमा प्रतिदिन मुक्ताक फलसँ बनल शिवलिंगक पूजन करैत छथि, जाहिसँ चन्द्रमा सेहो सतत प्रकाशमान सोमत्व पद के प्राप्त कयने छथि ॥३८२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं सततोज्ज्वलसोमत्वभवनकामो भगवतः शिवस्य मौक्तिकलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

प्रवाललिङ्गपूजनस्य—

प्रवालकमयं लिङ्गं यजन्ते पन्नगोत्तमाः ।
तेन नागेषु भोगाढ्या यान्ति ते परमं पदम् ॥३८३॥

अद्य भोगाढ्यत्वपरमपदप्राप्तिकामः प्रवालमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

कृष्णायसलिङ्गपूजनस्य—

कृष्णायसमयंलिङ्गं पूजयन्त्यसुरोत्तमाः ।
राक्षसाश्च[१] महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥३८४॥

अद्यादि अमितविक्रमत्वकामः कृष्णायसमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

त्रपुमयलिङ्गपूजनस्य—

त्रपुसीसमयं लिङ्गं पिशाचाः पूजयन्ति ते ।
तेन सर्वे बलोपेताः प्रयान्ति परमं पदम् ॥३८५॥

अद्य बलत्वपरमपदप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य त्रपुमयं सीसकमयं वा लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

त्रैलोहिकलिङ्गपूजनस्य—

त्रैलोहिकं सदाकालं यजन्ते गुह्यकादयः ।
तेन योगबलोपेताः प्रयान्तीश्वरमन्दिरम् ॥३८६॥

[विद्यापति]

त्रैलोहिकं कृष्णायसकनकताम्रमयम् ।

---

१ ने० पा०, रक्षसाञ्च ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइसँ हम यावज्जीवन प्रतिदिन सतत प्रकाशमान सोमत्व पदक प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक मौक्तिक लिंगक पूजन करब ।

प्रवाललिंगपूजनक फल—

भोगसँ समृद्ध पन्नगराज प्रवालसँ बनल शिवलिंगक पूजा करैत छथि जाहिसँ ओ नाग सभमे श्रेष्ठ पदकेँ प्राप्त कयने छथि ॥३८३॥

आइ हम भोगसँ समृद्ध परम पदक कामनासँ प्रवालमय भगवान् शिवलिंगक पूजन करब ।

कारी लोहाक शिवलिंगक पूजनक फल—

असुरराज कारी लोहासँ बनल शिवलिंगक पूजन करैत छथि आ एहि हेतु राक्षसगण महात्मा आ अत्यन्त पराक्रमशाली छथि ॥३८४॥

आइ हम अपरिमित पराक्रमक कामनासँ कारी लोहाक बनल भगवान शिवक लिंगक पूजा करब ।

त्रपुमय लिंग पूजनक फल—

पिशाच राँगा वा सीसाक लिंगक पूजन करैत अछि । जाहिसँ ओ अत्यन्त बलशाली अछि आ परम पद केँ प्राप्त करैत अछि ॥३८५॥

आइ हम शक्ति रूपी परम फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक सीसाक लिंगक पूजा करब ।

त्रैलोहिक लिंग-पूजनक फल—

सिद्ध आदि त्रैलोहिक शिव-लिंगक पूजन सदा (नित्य) करैत छथि, जाहिसँ ओ योगबल सम्पन्न भ' ईश्वर (शिव)क घर अर्थात् शिवलोक प्राप्त करैत छथि ॥३८६॥

[विद्यापति]

त्रैलोहिक, कारी लोहा, ताम्बा आ' सोना एहि तीन धातुक मिश्रणकेँ कहल जाइछ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्यादि योगबलोपेतात्मेश्वरमन्दिरगमनकामो भगवतः शिवस्य त्रैलोहिक-लिङ्गं यावज्जीवं प्रत्यहं पूजयिष्ये ।

वज्रलौहमयलिङ्गपूजनस्य—

वज्रलौहमयं लिङ्गं यजन्ते मातरः[१] सदा ।
मातृत्वं प्राप्नुयुस्तेन प्रयान्ति परमं पदम् ॥३८७॥

अद्यादि मातृत्वप्राप्तिपूर्वक परमपदप्राप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं वज्रलौहमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

वार्क्षलिङ्गपूजनस्य—

वार्क्षं वित्तप्रदं लिङ्गम् ॥३८८॥

[विद्यापति]

वार्क्षं शुभवृक्षभवम् ।

अद्य वित्तप्राप्तिकामो वार्क्षं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्फाटिकलिङ्गपूजनस्य—

स्फाटिकं सर्वकमादम् ॥३८९॥

अद्येप्सितफलप्राप्तिकामः स्फाटिकं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

लिङ्गाधिकरणकपूजनस्य—

लिङ्गे पूजयते वै शङ्करमग्नौ तु पुष्टये ॥३९०॥

अद्य पुष्टिप्राप्तिकामो भगवतः शङ्करस्य लिङ्गे पूजामहं करिष्ये ।
एवमग्नौ फलम् ।

गुरुमूर्त्यादिषु पूजनस्य—

मोक्षार्थी गुरुमूर्त्तौ च आकाशे च जले स्थले ॥३९१॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामो गुरुमूर्त्तौ शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

आकाशजलस्थलान्यतमाधिकरणकस्य पूजनस्यापीदमेव फलम् ।

---

१. मातरं मूले ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइसँ हम योगबलसँ सम्पन्न भ' शिवमन्दिर-प्राप्तिक कामनासँ भगवान् शिवक त्रैलोहिक लिंगक प्रतिदिन जीवनपर्यन्त पूजा करब।

वज्रलिंगमय लिंगपूजनक फल—

मातृगण (षोडशमातृका आदि) सर्वदा वज्रलौह-निर्मित लिंगक पूजन करैत छथि, जाहिसँ ओ मातृत्व पदकेँ प्राप्त कय परम पदकेँ प्राप्त कयलनि ॥३८७॥

हम आइसँ मातृत्वप्राप्तिपूर्वक परमपद प्राप्तिक कामनासँ जीवन पर्यन्त प्रतिदिन वज्रलौहमय भगवान् शिवक लिंगक पूजन करब।

वार्क्ष लिंगक पूजनक फल :—

वार्क्ष लिंग वित्तप्रद अर्थात् धन देबवला होइत अछि ॥३८८॥

[विद्यापति]

शुभ वृक्षसँ बनल लिंग के वार्क्ष लिंग कहल जाइछ।

हम आइ वित्त-प्राप्तिक कामनासँ वार्क्ष शिवलिंगक पूजन करब।

स्फटिकक लिंगपूजनक फल :—

स्फटिकक (शिवलिंग) सभ प्रकारक मनोरथकेँ पूर्ण करयवला होइत अछि ॥२८९॥

हम आइ ईप्सित फल प्राप्तिक कामनासँ स्फटिकक शिवलिंगक पूजा करब।

शंकरक पूजामे अधिकरण विशेषक फल :—

पुष्टि-वृद्धिक कामनासँ अग्निकेँ आधार बनाकय भगवान शंकर पूजल जाइत छथि ॥३९०॥

आइ हम पुष्टि-प्राप्तिक कामनासँ अग्न्यधिकरणक भगवान् शंकरक पूजा करब।

एही प्रकारसँ अग्निमे शिवपूजनक फल बुझबाक चाही।

गुरुमूर्ति आदिक आधार बनाय शिवपूजनक फल—

मोक्षार्थी गुरुक मूर्तिमे, आकाशमे, जलमे एवं स्थल पर शिवक पूजा करथि ॥३९१॥

आइ हम मोक्ष-प्राप्तिक कामनासँ गुरुक मूर्त्तिपर शंकरक पूजा करब।

आकाश, जल तथा स्थल सभमेसँ कोनो एक आधार पर पूजन कयला उत्तर इएह फल भेटैत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथावाहनादिः

पुष्पाक्षतैः—भगवन् शिव इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाहनस्थापने विधाय पुष्पाक्षत-दधिदूर्वाकुशत्रयतिलकुङ्कुमबिल्वपत्रैरर्घदानं ततश्चन्दनानुलेपनम् । विहितपुष्पैः पूजनं विधाय धूपंदीपं नानानैवेद्यं वस्त्रं हिरण्यं रत्नं छत्रं प्रत्येकं दद्यात् । ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रणम्य किञ्चित्स्तोत्रं पठित्वा भगवन् शिव क्षमस्वेति विसर्जयेत् ।

नन्दिपुराण—

सम्पूज्य पशुभर्त्तारं[1] विशुद्धेनान्तरात्मना ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा भक्त्या स्तोत्रमुदीरयेत् ।३९२॥

शिवं शिवकरं शान्तं शिवात्मानं शिवोत्तमम् ।
शिवमार्गप्रणेतारं प्रणमामि सदाशिवम् ॥३९३॥

शाश्वतं शोभनं शुद्धं शश्वद्दोषप्रशोधनम्[2] ।
विश्वविश्वेश्वरं देवं शङ्करं प्रणमाम्यहम् ॥३९४॥

सर्वपापहरन्नाथं सर्वरोगहरं शुभम् ।
सर्वबाधाहरन्नित्यं नमाम्यार्तिहरं विभुम्[3] ॥३९५॥

अस्थानस्थानसंस्थानं संस्थितिं स्थितिभासकम् ।
स्थिरस्थानस्थयोगस्थं स्थावरं प्रणमाम्यहम् ॥३९६॥

ईशानं वरदं देवमीशानं मन्त्रनायकम् ।
श्मशानं सर्वभूतानामीश्वरं प्रणमाम्यहम् ॥३९७॥

इति पूजाविधिं पुण्यं यः शृणोति सकृन्नरः ।
स मुक्तः सर्वपापेभ्यो रुद्रलोके महीयते ॥३९८॥

इति नन्दिकेश्वरप्रोक्तस्तवः ।

---

१. मूले पशुभक्तारम् ।
२. ने० पा०, प्रशोधकम् ।
३. तत्रैव, प्रभुम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब (शिवक) आवाहन आदि क्रिया

पुष्प आ अक्षतसँ–भगवान शिव एतय आउ आ' एतय बैसू। ई कहि आवाहन, स्थापन कय पुष्प, अक्षत, दही, दूर्वा, तेकुसा (तीन कुशसँ निर्मित होयबाक कारणें तेकुसा आ संस्कृत मे कुशत्रय कहबैछ) तिल, कुंकुम, बिल्वपत्र, अर्घदान तथा ओकर बाद चाननक अनुलेपन करी। पुनः विहित पुष्प सभक द्वारा पूजन कय धूप, दीप, नाना प्रकारक नैवेद्य, वस्त्र, हिरण्य, रत्न एवं छत्र–प्रत्येक दी। तदनन्तर प्रदक्षिणा कय प्रणाम करी आ' कोनो स्तोत्र पढ़ि कय "भगवान् शिव हमरा क्षमा करथु"—ई कहि विसर्जन करी।

नन्दिपुराणमे :—

विशुद्ध चित्तसँ पशुपतिक विधिपूर्वक पूजन कय आँजुर जोड़ि भक्तिक संग स्तोत्रक पाठ करी ॥३९२॥

शिव कल्याणप्रद, शान्त, शिवप्राण, शिवोत्तम, कल्याण-पथक निर्माता सदाशिवकेँ प्रणाम करैत छी ॥३९३॥

शाश्वत, शोभन, शुद्ध, शाश्वत दोष सभकेँ प्रक्षालन करयवला देवाधिदेव विश्वेश्वर महादेवकेँ हम प्रणाम करैत छी ॥३९४॥

सभ प्रकारक पापकेँ हरयवला प्रभु (स्वामी), सभ प्रकारक रोगकेँ हटावय वला सभ प्रकारक बाधाकेँ दूर करयवला, सभकष्टकेँ दूर करयवला' सर्वव्यापक मंगलमय शिवकेँ हम नित्य प्रणाम करैत छी ॥३९५॥

जे स्थान नहि अछि ओहि स्थान मे संस्थित रहयवला, (अर्थात् श्मशानमे रहयबला,) अपन स्थितिअहिसँ प्रकाशमान, सुस्थिर स्थानमे स्थिर भ' योगमे रहय-वला' स्थावर (शिव)केँ हम प्रणाम करै छी ॥३९६॥

वर देमयवला, देव ईशान मन्त्रक नायक, ईशान, श्मशानस्वरूपवला, सभ प्राणीक ईश्वरकेँ हम प्रणाम करै छी ॥३९७॥

जे व्यक्ति एहि प्रकारक पवित्र पूजाक विधि एको बेरि श्रवण करैत अछि ओ सभ पापसँ मुक्त भ' रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥३९८॥

ई नन्दिकेश्वरक द्वारा कहल गेल स्तोत्र अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथार्घपात्रम्

लिङ्गपुराणे—

षट्त्रिंशदङ्गुलं पात्रमुत्तमं परिकीर्त्तितम् ।
मध्यमन्तु त्रिभागोनं कनीयो द्वादशाङ्गुलम् ॥३९९॥

वस्वङ्गुलिविहीनन्तु न पात्रं कारयेत् क्वचित् ।
नानाविचित्ररूपाणि पुण्डरीकाकृतीनि च ॥४००॥

शङ्खनीलोत्पलाभानि पात्राणि परिकल्पयेत् ।
रत्नादिरचितान्येव काञ्चीमूलयुतानि च ॥४०१॥

यथालाभं यथाशोभं तथा पात्राणि कारयेत् ।
विना पात्रेण यः कुर्य्यात् प्रतिष्ठां[1] याज्ञिकीं क्रियाम्[2]
विफला जायते सर्वाविाहनादिधनापहा ॥४०२॥

अथार्घपात्रफलम्

भविष्यपुराणे सुवर्णपात्रार्घे—

हेमपात्रेण सर्वाणि ईहितानि लभेन्मुने ॥४०३॥

अद्य सर्वेहितप्राप्तिकामनया हेमपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहं करिष्ये ।

रजतपात्रार्घस्य—

अर्घं कृत्वा तु रौप्येण आयूराज्यं सुखानि च ॥४०४॥

अद्यायूराज्यसुखावाप्तिकामनया राजतपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

ताम्रपात्रार्घस्य ।

ताम्रपात्रेण सौभाग्यम् ॥४०५॥

---

१. तत्रैव, प्रतीच्यां ।
२. तत्रैव, क्रिया ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अर्घंपात्रक विषयमे कहल गेल अछि

लिंगपुराणमे—

छत्तीस (३६) आँगुरक पात्र उत्तम, चौबीस (२४) आँगुरक पात्र मध्यम आ' बारह (१२) आँगुरक पात्र अधम मानल जाइत अछि ॥३९९।

आठ आँगुरसँ छोट पात्रक व्यवहार कतहु नहि करबाक चाही। नाना प्रकारक कमलक आकृतिक, शंखक आकृतिक वा नील कमलकसदृश रत्न आदिसँ निर्मित तथा सोनाक मूठबुला होयबाक चाही। एहि सभमे जे भेटय तथा जे नीक लागय तेहन पात्र बनयबाक चाही। लाभक अनुकूल तथा शोभाक योग्य पात्र होयबाक चाही। बिना पात्रक जे व्यक्ति यज्ञसंबंधी कोनो क्रिया करैत अछि एवं देवाधिदेव प्रतिष्ठित करैत अछि, ओकर सभ क्रिया विफल होइत अछि आ' वाहन, धन आदिक नाश-कारक होइत अछि ॥४००-४०२॥

आब अर्घपात्र फल

भविष्यपुराणमे सोनाक पात्रसँ अर्घ देबाक फल—

हे मुने। सोनक पात्रसँ अर्घ देलापर 'सभ अभीष्टक प्राप्ति होइत अछि ॥४०३॥

आइ हम सभ प्रकारक मनोरथक सिद्धिक हेतु स्वर्णपात्रसँ भगवान शिवकेँ अर्घदान करब।

चानीक पात्रसँ अर्घ देबाक फल—

रजतक पात्रसँ अर्घदान कयला पर आयु, राज्य तथा सुखक प्राप्ति होइत अछि ॥४०४॥

आइ हम आयु, राज्य एवं सुखादि प्राप्तिक हेतु चानीक पात्रसँ भगवान महादेवकेँ अर्घदान करब।

ताँबाक पात्रसँ अर्घदानक फल—

तामक पात्रसँ अर्घ देला उत्तर सौभाग्य प्राप्त होइत अछि ॥४०५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य सौभाग्यप्राप्तिकामनया ताम्रपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहं करिष्ये ।

मृन्मयपात्रार्घस्य —

धर्म्मर्यन्तु मृन्मयं भवेत् ॥४०६॥

अद्य धर्माबाप्तिकामनया मृन्मयपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

मृन्मयपात्रार्घस्य —

दारवेणार्घपात्रेण यद्दत्वा लभते फलम् ।
तस्माद्दशगुणं देयं[1] पुण्यं मृत्पात्रदानके[2] ॥४०७॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलदशगुणफलप्राप्तिकामो मृत्पात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

ताम्रपात्रार्घदानस्य—

ताम्रपात्रार्घदानेन तस्माच्छतगुणोत्तरम् ।
पलाशपद्मपात्राभ्यां ताम्रपात्रसमं भवेत् ॥४०८॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलशतगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनया ताम्रपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

पलाशपद्मपत्रान्यतरपात्रकरणकार्घदानस्याप्येतदेव फलम् ।

रौप्यपात्रकरणकार्घदानस्य —

रौप्यपात्रेण विज्ञेयं[3] तस्माल्लक्षगुणाधिकम् ॥४०९॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलक्षलगुणाधिकफलप्राप्तिकामो रौप्यपात्रेण भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

सौवर्णपात्रकरणकार्घस्य—

सुवर्णपात्रविन्यस्तमर्घं कोटिगुणोत्तरम् ॥४१०॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलकोटिगुणोत्तरफलकामनया] सौवर्णपात्रेण भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा० ज्ञेयं ।
२. तत्रैव, मृत्पात्रदानतः ।
३. मूले, विद्येयं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम सौभाग्य प्राप्त करबाक हेतु तामक पात्रसँ भगवान महादेवकेँ अर्घदान करब ।

माटिक पात्रसँ अर्घदानक फल—

माटिक पात्रसँ अर्घदान कयलासँ धर्मक प्राप्ति होइत अछि ।।४०६।।

आइ हम धर्म-प्राप्तिक कामनासँ मृन्मय पात्रसँ भगवान् महादेवकेँ अर्घदान करब ।

मृत्तिकाक पात्रसँ अर्घदानक फल —

दारुमय पात्रसँ अर्घदानक द्वारा जे फल प्राप्त होइत अछि, ओहिसँ दस गुणा पुण्य माटिक पात्रसँ (अर्घ) दानमे प्राप्त होइत अछि ।।४०७।।

आइ हम दारुमय पात्रसँ शिवार्घदान फलक दसगुणा अधिक फल प्राप्तिक इच्छासँ माटिक पात्रसँ भगवान् महादेवकेँ अर्घदान करब ।

तामक पात्रसँ अर्घ-दानक फल—

तामक पात्रसँ अर्घ देने माटिक पात्रक अपेक्षा सय गुणा अधिक फल होइत छैक । पलाश तथा पद्मक पात्रसँ तामक पात्रक समान फल होइत छैक ।।४०८।।

आइ हम दारुमय पात्रसँ शिवार्घदानमे जे फल प्राप्त होइत अछि, ओहिसँ सय गुणा बेसी फल प्राप्तिक इच्छासँ ताम्रपात्रक द्वारा भगवान महादेवकेँ अर्घदान करब ।

पलाश आ कमलक पातमेसँ कोनो एकक द्वारा अर्घदानक इएह फल बुझबाक चाही ।

चानीक पात्रसँ अर्घदानक फल—

चानीक पात्रसँ अर्घदान कयला उत्तर दारुमय पात्र द्वारा अर्घदानसँ लाख गुणा अधिक फल प्राप्त होइत अछि ।।४०९।।

आइ दारुसँ बनल पात्रसँ शिवकेँ अर्घदान कयला पर जे फल प्राप्त होइत अछि; ओहिसँ लाख गुना अधिक फल प्राप्त करबाक इच्छासँ चानीक पात्रसँ भगवान महादेवकेँ हम अर्घदान करब ।

सोनाक पात्रसँ अर्घदानक फल —

काठसँ बनल पात्रद्वारा अर्घदानक फलसँ करोड़ गुणा अधिक फल स्वर्ण पात्रमँ अर्घदान कयला पर प्राप्त होइत अछि ।।४१०।।

आइ हम काठक पात्रसँ शिवार्घदान द्वारा जे फल प्राप्त होइत अछि, ओहिसँ कोटिगुणा अधिक फल प्राप्तिक इच्छासँ स्वर्णपात्रसँ भगवान महादेवकेँ अर्घदान करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं स्नानार्घनैवेद्यबलिधूपादिषु क्रमात् ।
पात्रान्तरविशेषेण तत्फलं चोत्तरोत्तम् ॥४११॥

रक्तबिल्वाक्षतैः पुष्पैर्द्दधिदूर्वातिलैः कुशैः ।
सामान्यः सर्वदेवानामर्घोऽयं परिकीर्त्तितः ॥४१२॥

[विद्यापति]

रक्तमत्र कुङ्कुमम् ।

अथार्घदानफलम्

तत्र शुद्धार्घदानस्य शिवपुराणे—

अर्घपुष्पप्रदानेन धूपदानेन यत्फलम् ।
दास्यामि च गतिं पुण्यां गाणपत्यञ्च दुर्ल्लभम् ॥४१३॥

अद्य पुण्यगतिदुर्ल्लभगाणपत्यप्राप्तिकामनया भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

पुष्पफलोपेतार्घदानस्य—

अर्घं पुष्पफलोपेतं यः शिवाय निवेदयेत् ।
स पूज्यः सर्वलोकेषु शिववन्मोदते दिवि ॥४१४॥

अद्य सर्वलोकपूज्यत्वस्वर्गाधिकरणकशिवहर्षतुल्यहर्षकामोऽमुं पुष्पफलोपेतार्घं भगवते शिवाय तुभ्यमहन्ददे ।

गन्धोदकसम्मिश्रार्घस्य—

गन्धतोयेन सम्मिश्रमुदकार्घं दशोत्तरम् ॥४१५॥

अद्य उदकार्घदानजन्यफलदशगुणोत्तरफलप्राप्तिकामोऽमुं गन्धोदकसम्मिश्रार्घं भगवते महादेवाय तुभ्यमहं ददे ।

पञ्चगव्यसमायुतार्घस्य—

पञ्चगव्यसमायुक्तमर्घं दशगुणोत्तरम् ॥४१६॥

अद्योदकार्घदानजन्यफलदशगुणोत्तरफलप्राप्तिकामोऽमुं पञ्चगव्यसमायुक्तमर्घं भगवते महादेवाय तुभ्यमहं ददे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एहि प्रकारसँ स्नान, अर्घ, नैवेद्य, बलि, धूप आदि देवामे क्रमशः पात्रान्तर विशेषक कारणसँ ओकर फलो उत्तरोत्तर बुझबाक चाही। ।।४११।।

रक्त (कुंकुम) बेलपात, अक्षत, पुष्प, दही, दूर्वा, तिल एवं कुश आदिक द्वारा सामान्यतः सभ देवताक हेतु अर्घप्रदान विहित अछि ।।४१२।।

[विद्यापति]

एतय रक्तक तात्पर्य कुंकुमसँ अछि।

आब अर्घदानक फल

ओतय शिवपुराणमे शुद्ध अर्घदानक फल—

अर्घ, पुष्प तथा धूप-दानसँ जे फल (प्राप्त होइत अछि ओहिसँ अतिरिक्त) ओकरा हम पवित्र गति प्रदान करैत छिऐक आ' दुर्लभ गाणपत्यो दैत छिऐक ।।४१३।।

आइ हम पुण्य गति तथा दुर्लभ गाणपत्यकेँ प्राप्त करबाक इच्छासँ भगवान् महादेवकेँ अर्घदान करब।

पुष्प-फलसँ युक्त अर्घदानक फल—

पुष्प-फलसँ युक्त अर्घ जे शिवकेँ निवेदन करैत अछि, ओ सभ लोकमे पूजल जाइत अछि, आ स्वर्गमे सेहो शिवक सदृश प्रसन्न रहैत अछि ।।४१४।।

आइ हम सभलोकमे पूजा प्राप्तिक हेतु, स्वर्गमे शिवक सतत प्रसन्नता प्राप्त करबाक इच्छासँ पुष्प, फलसँ युक्त अर्घ भगवान शिव, अहाँकेँ दैत छी।

गंधयुक्त जलसँ अर्घदान करवाक फल—

शुद्ध जलक अर्घदानसँ दस गुणा अधिक फल गन्धयुक्त जलक अर्घदानमे प्राप्त होइत छैक ।।४१५।।

आइ हम शुद्ध जलक अर्घदानजन्य फलसँ दस गुणा अधिक फल प्राप्तिक इच्छासँ गंधोदकयुक्त अर्घ भगवान शंकर, अहाँकेँ दैत छी।

पंचगव्ययुक्त अर्घदानक फल

शुद्ध जलक अर्घदानसँ सय गुना अधिक फल पंचगव्ययुक्त अर्घ-दानमे होइत अछि ।।४१६।।

आइ हम शुद्ध जलक अर्घदान जन्य फलसँ सय गुणा अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई पंचगव्ययुक्त अर्घ भगवान महादेव, अहाँकेँ दैत छी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टाङ्गार्घस्य—

आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्याज्यमधुतण्डुलाः ।
तिलाः[1] सिद्धार्थकाश्चैतदर्घमष्टाङ्गमुच्यते ॥४१७॥

[विद्यापति]

सिद्धार्थकाः सितसर्षपाः, अप्सुक्षीराद्यष्टयोगेनाष्टङ्गता ।

शिवधर्म्मे—

आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतञ्च दधितण्डुलाः ।
तिलाः सिद्धार्थकाश्चैतदर्घमष्टाङ्गमुच्यते ॥४१८॥

[विद्यापति]

इत्यष्टाङ्गतोक्ता

योऽष्टाङ्गमर्घमापूर्य्य लिङ्गमूर्द्धिन् विनिक्षिपेत् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥४१९॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामोऽमुमष्टाङ्गार्घं शिवलिङ्ग-मूर्द्ध्नि विनिक्षिपामि ।

तुल्यमेव फलं प्रोक्तं शिवे चाढ्यदरिद्रयोः ।
तयोरप्यधिकं पुण्यं यः शिवे भक्तिभावितः ॥४२०॥

विभवे सति यो मोहान्न कुर्य्याद्विधिविस्तरम् ।
न तत्फलमवाप्नोति प्रलोभा[2]क्रान्तमानसः ॥४२१॥

तस्मात् पुष्पैः फलैः पत्रैस्तोयैरपि च यत्फलम् ।
तदनन्तफलं ज्ञेयं भक्तिरेवात्र कारणम् ॥४२२॥

अथानुलेपनम्

तत्रोत्कृष्टसुगन्धिद्रव्यानुलेपनस्य, भविष्यपुराणे—

लिङ्गानुलेपनं कुर्य्याद्दिव्यगन्धैः सुगन्धिभिः ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ॥४२३॥

अद्य दिव्यवर्षकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम उत्कृष्टसुगन्धि-द्रव्यैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गानुलेपमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, यवाः ।
२. तत्रैव, प्रमादाक्रान्तमानसः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टांग अर्घदानक फल—

जल, दूध, कुशक अग्र भाग, दही, घी (आज्य), मधु, तण्डुल, उजरा सरिसब, आ' तिल एहि सभसँ युक्त अर्घ अष्टांग अर्घ कहबैत अछि ।।४१७।।

[विद्यापति]

सिद्धार्थक अर्थ उज्जर सरिसब होइत अछि।

जलमे दूध आदि आठ पदार्थक योगसँ अर्घक अष्टांगता होइत अछि।

शिवधर्मसे सेहो कहल गेल अछि—

जलमे क्षीर (दूध), कुशक अग्र भाग, मधु, घृत, दही, चाउर, तिल आ' सिद्धार्थ (उज्जर सरिसब)क मिश्रणसँ बनल अर्घकेँ अष्टांग अर्घ कहल जाइत अछि ।।४१८।।

[विद्यापति]

अर्घक इएह अष्टांगता कहल गेल अछि।

जे अष्टांगसँ अर्घकेँ भरि शिवलिंगक ऊपर ढारैत अछि ओ दस हजार वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ।।४१९।।

आइ हम दस हजार वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ अष्टांगार्घ शिवलिंगक ऊपर विनिक्षेप करैत छियनि।

धनिक आ' गरीबकेँ शिवभक्तिक समान फल कहल गेल अछि। मुदा ओहूसँ अधिक फल ओकरा भेटैत छैक जे भक्तिसँ पूजा करैत अछि ।।४२०।।

धन रहैत मोहवश जे विधि-विस्तारक संग पूजा नहि करैत अछि, ओ अधिक लोभसँ आक्रान्त धनी मानव शिवपूजाक ओ फल नहि प्राप्त करैत अछि, अतएव पुष्प, फल, पत्र आ' जलसँ सेहो जे फल प्राप्त होइत अछि ओ अनन्त फल अछि। ओकर कारण भक्तिएकेँ बुझबाक चाही ।।४२१-४२२।।

आब लेपनक विषयमे कहल गेल अछि

भविष्यपुराणमे उत्कृष्ट सुगन्धित द्रव्यसँ अनुलेपनक फल—

दिव्य गन्ध एवं सुरभित अनुलेपन शिवलिंगमे कयलासँ सय करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।३२३।।

आइ हम शत कोटि दिव्य वर्ष यावत् शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ उत्कृष्ट सुगन्धित द्रव्यसँ युक्त द्रव्यसँ भगवान शिवक लिंगक अनुलेपन करब

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ चन्दनानुलेपनस्य—

गन्धानुलेपनात् पुण्यं द्विगुणं चन्दनस्य तु ।
चन्दनादगुरोर्ज्ञेयं पुण्यमष्टगुणाधिकम् ॥४२४॥

कृष्णागुरोर्विशेषेण द्विगुणं फलमिष्यते ।
तस्माच्छतगुणं पुण्यं कुङ्कुमस्य विधीयते ॥४२५॥

तत्र चन्दनाद्यनुलेपनस्य

अद्य दिव्यवर्षकोटिशतद्वयावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामश्चन्दनेन शिव-लिङ्गानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

अगुरुणानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यःषोडशवर्षकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामोऽगुरुणा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

कृष्णागुरुणानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यद्वात्रिंशद्वर्षकोटिशताविच्छन्नशिवलोकमहितत्वकामः कृष्णागुरुणा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

कुङ्कुमानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यद्वात्रिंशद्वर्षकोट्ययुतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामः कुङ्कुमेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

चतुःसमानुलेपनस्य—

चन्दनागुरुकर्पूरैः श्लक्ष्णपिष्टैः सकुङ्कुमैः ।
लिङ्गं पर्य्याप्तमालिप्य कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥४२६॥

[विद्यापति]

पर्य्याप्तमापीठम् ।

अद्य कल्पकोट्यवच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकवासकामश्चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमैः श्लक्ष्ण-पिष्टैर्भगवतः शिवस्यापीठं लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

[विद्यापति]

तत्र कर्पूराभावे चतुःसमे सिह्लकं[1] चतुर्थं योज्यम् ।

---

१. ने० पा० सिन्दूरम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओकर बाद चन्दन आदिसँ अनुलेपनक फल—

गन्धानुलेपनक पुण्यसँ चन्दनमे दुगुणा पुण्य प्राप्त होइत अछि। चन्दनसँ अगुरुमे आठगुणा अधिक फल बुझबाक चाही। कृष्णअगुरुमे ओहिसँ अर्थात् अगुरुसँ दुगुणा फलक प्राप्ति होइत अछि आ' ओहिसँ सय गुणा अधिक पुण्य कुंकुमानुलेपनसँ प्राप्त होइत अछि ।।४२४-४२५।।

ओतहि चन्दनानुलेपनक संकल्प—

आइ हम दू सय कोटि दिव्य वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक इच्छासँ शिवलिंगक अनुलेपन चाननसँ करब।

अगुरुलेपनक संकल्प—

आइ हम सोलह सय करोड़ दिव्य वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ भगवान शिवलिंगक अगुरुसँ अनुलेपन करब।

कृष्णअगुरु लेपनक संकल्प—

आइ हम वत्तीस सए करोड़ दिव्य वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ कारी अगुरुसँ भगवान शिवक लिंगक अनुलेपन करब।

कुंकुम-अनुलेपनक संकल्प—

आइ हम वत्तीस करोड़ दिव्य वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ भगवान शिवक लिंगक कुंकुमसँ अनुलेपन करब।

चारू अर्थात् चन्दन, अगुरु कर्पूर तथा कुंकुम समान रूपसँ अनुलेपनक फल—

चन्दन, अगुरु, कर्पूर तथा अत्यन्त मेहीं पीसल कुंकुमसँ शिवलिंगक पर्याप्त (आधारपीठक) अनुलेपन कयलासँ कोटि कल्प धरि स्वर्गमे वास होइत अछि ।।४२६।।

[विद्यापति]

पर्याप्तक अर्थ थीक आधारपीठ धरि।

आइ हम कोटि कल्प धरि स्वर्गमे वास करवाक कामनासँ चानन, अगुरु कर्पूर, कुंकुम आ' उवटनसँ आधारपीठ समेत भगवान शिवलिंगक अनुलेपन करब।

[विद्यापति]

एतय चारूक बराबरि भाग करवामे कर्पूरक अभावमे सिह्लक चतुर्थ पदार्थक रूपमे मिलेबाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे चन्दनानुलेपनस्य—

चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कमोशीरपद्मकैः ।
अनुलिप्तः शिवो भक्त्या ददाति मनसेप्सितम् ॥४२७॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकाम एभिश्चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कमोशीरपद्मकैर्भगवतः शिवस्यानुलेपनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

पद्मकं पद्मकाष्ठम्

कर्पूरव्यतिमिश्रकस्तूरिकान्वितचन्दनाद्यनुलेपनस्य—

यः समालभते लिङ्गं चन्दनागुरुचम्पकैः ।
कर्पूरव्यतिमिश्रैश्च तथा कस्तूरिकान्वितैः ॥४२८॥

स्वमेकानां कोटिशतं विहृत्य त्रिदशालये ।
पुनः प्रजायते भूमौ राजराजो न संशयः ॥४२९॥

[विद्यापति]

स्वमेकः संवत्सरः स्वमेकः संवत्सर इतिश्रुतेः ।

अद्य वर्षकोटिशतावच्छिन्नत्रिदशालयविहरणपूर्वकपृथिव्यधिकरणकराजराजत्व-भवनकामनया एभिः कर्पूरव्यतिमिश्रकस्तूरिकान्वितचन्दनागुरुचम्पकैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

शिवपुराणे गन्धदानस्य—

मासे मासे तु योऽश्नीयाद् यावज्जीवं द्विजोत्तमः ।
गन्धदानेन तत्पुण्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥४३०॥

अद्य यावज्जीवमासान्तमात्रभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एष गन्धो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

कर्पूरव्यतिमिश्रेण[1] चन्दनेनानुलेपयेत् ।
विद्याधरत्वमाप्नोति रमते सुरपूजितः ॥४३१॥

अद्य विद्याधरत्वसुरपूजितात्महर्षवत्वप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहं करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, मिश्र ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे चन्दन आदि अनुलेपनक फल—

चन्दन, अगुरु, कर्पूर, कुंकुम, उशीर (खस) तथा पद्मकाष्ठसँ भक्तिपूर्वक अनुलेपन कयलासँ शिव मनवांछित फल दैत छथिन ।।४२७।।

आइ हम ईप्सित फल प्राप्तिक कामनासँ चन्दन, अगुरु कर्पूर, कुंकुम, उशीर तथा पद्मकाष्ठसँ भगवान् शिवक अनुलेपन करब।

[विद्यापति]

पद्मक अर्थ पद्मकाष्ठ अछि।

कर्पूर-मिश्रित कस्तूरिकासँ युक्त चानन आदिसँ अनुलपन फल—

जे कर्पूर मिश्रित एनं कस्तूरी-सहित चानन, अगुरु, चम्पक, आदि पदार्थ सभसँ शिवलिंगक अनुलेपन करैत अछि, ओ सय करोड़ संवत्सर धरि देवलोकमे विहार कय पुनः पृथ्वीपर महाराजाधिराज (अर्थात् राजा सभक राजा)क रूपमे जन्म लैत अछि। एहिमे संशय नहि अछि ।।४२८-४२९।।

[विद्यापति]

स्वमेकक तात्पर्य संवत्सर अछि। किएक तँ वेदमे स्वमेकके संवत्सर कहल गेल अछि।

आइ सय करोड़ बर्ष धरि देवलोकमे विचरण करैत पृथ्वी पर राजा सभक-राजा होयवाक कामनासँ एहि कर्पूरमिश्रित कस्तूरिकायुक्त चानन, अगुरु तथा चम्पकसँ भगवान शंकरक लिंगक हम अनुलेपन करब।

शिवपुराणमे गन्धदानक फल —

जे सद्ब्राह्मण जीवन पर्यन्त मासमे एकवेर भोजन कय जे पुण्य प्राप्त करैत छथि से पुण्य गन्धदानसँ निस्सन्देह प्राप्त होइत अछि ।।४३०।।

आइ हम यावज्जीवन मासान्त मात्रमे भोजनजन्य फलक तुल्य फल प्राप्तिक काममासँ ई गंध भगवान शिवकेँ देलहुँ।

कर्पूरमिश्रित चंदनानुलेपनक फल—

जे कर्पूरमिश्रित चाननसँ शिवक अनुलेपन करैत अछि ओ विद्याधरत्वकेँ प्राप्त करैत अछि आ' देवता लोकनिक द्वारा पूजित भ' प्रसन्न होइत अछि ।।४३१।।

आइ हम विद्याधरत्व एवं देवता लोकनिक द्वारा पूजितजन्य हर्ष प्राप्तिक कामनासँ कर्पूरमिश्रित चाननसँ भगवान शिवक अनुलेपन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेनदशरात्राद्यनुलेपनस्य

अश्वमेधफलञ्चैव दशरात्रेण चाप्नुयात् ।
मासेन गणतां याति अब्दात् सायुज्यमाप्नुयात् ॥४३२॥

अद्यादि दशरात्रं यावत् प्रतिदिनमश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन मासानुलेपनस्य—

अद्यादि शिवगणत्वप्राप्तिकामनया मासं यावत् प्रत्यहं कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

वर्षव्यापकसकर्पूरचन्दनानुलेपनस्य—

अद्याब्दपर्यन्तमहरहः शिवसायुज्यप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

बहुगन्धकरणकानुलेपनस्य—

गन्धैश्च लेपयेल्लिङ्गं दिव्यैश्चैव सुगन्धिभिः ।
वाजपेयस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥४३३॥

अद्य वाजपेययज्ञफलसमफलप्राप्तिकाम एभिर्मनोज्ञगन्धैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

भविष्ये—

कालेयकं तुरुष्कञ्च रक्तं चन्दनमेव च ।
यान्यात्मनः सदेष्टानि तानि शस्तान्युपाकुरु ॥४३४॥

[विद्यापति]

कालेयकं कलिकाया[1] काष्ठं, तुरुष्कं सिह्लकम् ।

शिवपुराणे—

भूमिदानेन यत्पुण्यं कालेयं यत्प्रयच्छति ।
चतुर्गुणसहस्रन्तु गन्धदानेन तत्फलम् ॥४३५॥

---

१ ने० पा० कालियाकाष्ठं ।

२ सूले॰यः प्रयच्छति ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्पूरमिश्रित चाननसँ दस राति धरि अनुलेपनक फल—

दस राति धरि कर्पूरमिश्रित चाननसँ शिवक अनुलेपन कयलासँ अश्वमेधक फल प्राप्त होइत अछि। एक मास धरि अनुलेपन कयला पर शिवगणत्वक प्राप्ति होइत अछि आ' एक वर्ष धरि अनुलेपनसँ सायुज्य-मुक्तिक प्राप्ति होइत अछि ॥४३२॥

आइ हम अश्वमेध-यज्ञजन्य फल-सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ कर्पूर-मिश्रित चाननसँ दस राति धरि प्रतिदिन भगवान शिवक अनुलेपन करब।

एक मास पर्यन्त कर्पूरमिश्रित चाननसँ अनुलेपनक संकल्प—

आइसँ शिवगणत्व प्राप्तिक कामनासँ एक मास पर्यन्त प्रतिदिन हम कर्पूर-मिश्रित चाननसँ भगवान शिवक अनुलेपन करब।

एक वर्षपर्यन्त कर्पूरयुक्त चंदनानुलेपनक संकल्प—

आइसँ हम एक वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन शिव-सायुज्यप्राप्तिक कामनासँ कर्पूर-मिश्रित चाननसँ भगवान शिवक अनुलेपन करब।

बहुत गन्धमिश्रित चंदनानुलेपनक फल—

दिव्य सुगन्धित गन्धसँ जे शिवलिंगक अनुलेपन करैत अछि ओ मानव वाजपेय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥४३३॥

आइ वाजपेय यज्ञक फलक तुल्य फल-प्राप्तिक कामनासँ एहि सुन्दर गन्धसँ भगवान शिवलिंगक अनुलेपन करब।

भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि—

कालेयक[1] (एक प्रकारक कारी चानन अथवा एक सुगन्धित काठ) तुरुष्क (एक गन्ध द्रव्य) आ रक्त चानन ई जे अपनो लेल इष्ट अछि, ओ शिवक हेतु सेहो प्रशस्त कहल गेल अछि। अतएव, एहि वस्तु सभकेँ शिवक हेतु समर्पित करी ॥४३४॥

[विद्यापति]

कालेयकक अर्थ अछि कलिकाक काठ आ तुरुष्कक अर्थ सिह्लक।

शिवपुराणमे कहल गेल अछि—

भूमिदानसँ जे पुण्य प्राप्त होइत अछि, आ' कालेयक देलासँ जे फल प्राप्त होइत अछि ओकर चारि हजार गुणा फल गन्धदानसँ होइत अछि ॥४३५॥

---

१ कुमारसंभव, ७।९।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालेयकदानस्य ।

अद्य भूमिदानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामनया इदं कालेयकं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अथ गन्धदानस्य —

अद्य भूमिदानजन्यपुण्यचतुःसहस्रगुणपुण्यप्राप्तिकामनया एषगन्धो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

कुङ्कुमानुलेपनस्य—

वर्षकोटिसहस्राणां द्वे च त्रिंशत्तथैव च ।
कुङ्कुमेनानुलिप्येह शिवलोके महीयते ॥४३६॥

अद्य द्वात्रिंशद्वर्षकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामो भगवतः शिवस्य कुङ्कुमेनानुलेपननहं करिष्ये ।

अथानुलिप्य संवीजनस्य

भविष्यपुराणे चतुःसमानुलेपनानन्तरं—

संवीज्य तालवृन्तेन लिङ्गं गन्धैः प्रलेपनम्[1] ।
दशवर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥४३७॥

[विद्यापति]

तालवृन्तेन व्यजनेन ।

अनुलेपनं संवीजनाङ्गमत्रैव विधेयं । फलवत्सन्निधिरितिन्यायात् ।

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामस्तालवृन्तेन चतुःसमानुलिप्तं शिवलिङ्गमहं बीजयिष्ये ।

शैवामृते संवीजनस्य—

संवीज्य तालवृन्तेन लिङ्गं गन्धानुलेपितम् ।
वर्षकोटिसहस्राणि वायुलोके महीयते ॥४३८॥

अद्य वर्षकोटिसहस्रावच्छिन्नवायुलोकमहितत्वकामस्तालवृन्तेन चतुःसमानुलिप्तं शिवलिङ्गमहं बीजयिष्ये ।

---

१ ने० पा०, प्रलेपितम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालेयक दानक संकल्प—

आइ हम भूमिदान जन्य पुण्यक सदृश पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ ई कालेयक भगवान शिवकेँ दैत छियनि।

आब गन्धदानक फल—

भूमिदानजन्य पुण्यक चारि हजार गुणा पुण्य प्राप्तिक कामनासँ ई गन्ध भगवान शिव, हम अहाँकेँ देलहुँ।

कुंकुमसँ अनुलेपनक फल—

कुंकुमसँ अनुलेपन कय लोक ३२ हजार करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥४३६॥

आइ हम ३२ हजार कोटि वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ भगवान शिवक कुंकुमसँ अनुलेपन करब।

आब अनुलेपन कय संवीजनक फल

भविष्यपुराणमे चारू कात समान रूपसँ अनुलेपनक फल—

भगवान् शिवक लिंगकेँ गन्धादिसँ प्रलेपित कय ताड़क पंखासँ हवा कयलापर दस हजार वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥४३७॥

[विद्यापति]

तालवृन्तक अर्थ अछि ताड़क पातक पंखा। अनुलेपन संवीजनक अंग अछि। अतएव अनुलेपनक बादे संवीजन होइत अछि "फलवत्सन्निधिन्यायसँ"।

आइ हम दस हजार वर्ष पर्यन्त शिवलोकमे पूजित होयबाक हेतु चारू सुगन्धित द्रव्यसँ अनुलेपन कय ताड़क पंखासँ संवीजन करब।

शैवामृतमे संवीजनक फल—

जे गन्धादिसँ अनुलेपित शिवलिंगकेँ ताड़क पंखासँ संवीजन करैत अछि, ओ हजार करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे प्रतिष्ठित होइत अछि ॥४३८॥

आइ हम हजारो कोटि वर्ष धरि वायुलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ चारू सुगन्धित द्रव्य द्वारा अनुलपित शिवलिंगक ताड़क पंखासँ संवीजन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ कृष्णतिलदानादिदानफलम्

स्कन्दपुराणे—

दद्यात्कृष्णतिलांश्चैव तथासिद्धार्थकांश्च ह ।
यो मे देवि सदा मूर्द्धिन स मे नन्दिसमो भवेत् ॥४३९॥

सर्वेषां प्रलये चैव प्राप्ते त्रैलोक्यसञ्चरे ।
त्यक्त्वा सर्वाणि दुःखानि मामेव प्रतिपद्यते ॥४४०॥

अद्य नन्दितुल्यत्वसकलप्रलयोत्तरसर्वदुःखपरित्यागपूर्वकशिवात्मत्वप्राप्तिकाम एतान् कृष्णतिलान् सितसर्षपान् वा भगवतः शिवस्य मूर्द्धिन दास्ये ।

अथ पुष्पत्रोटनसमयः

भविष्यपुराणे—

कनकानि कदम्बानि रात्रौ देयानि शङ्करे ।
दिवा शेषानि चान्यानि दिवारात्रौ च मल्लिका ॥४४१॥

[विद्यापति]

देयानि त्रोटनीयानि । दो अवखण्डन इति धात्वनुसारात् । न पुनः कनकपुष्पपूजायां रात्रिविधानं नवा रात्रिपूजायां कनकविधानमिदम् । उभयत्र समाचारविरोधादित्यनिरुद्धधर्म्माधिकरणिकाः । नच पुष्पविधानप्रकरणपरित्यागप्रसङ्गो दोषाय विधिमध्ये निषेधस्यापि प्रतीयमानत्वात् प्रकृतस्यापि निषेधे तात्पर्य्यात् ।

प्रहरं तिष्ठते जाती करवीरमहर्न्निशम् ॥४४२॥

ततः परं निर्म्माल्यतां यातीत्यर्थः

लघुहारीतः—

स्नानं कृत्वा तु ये केचित् पुष्पं चिन्वन्ति मानवाः ।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति भस्मीभवति काष्ठवत् ॥४४३॥

दक्षः—

द्वितीये च तथा भागे वेदाभ्यासो विधीयते ।
समित् पुष्पकुशादीनां सकालः परिकीर्त्तितः ॥४४४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब कारी तिलादिक दानक फल

स्कन्दपुराणमे—

हे देवि ! कृष्ण तिल आ सिद्धार्थ (उजरा सरिसब) जे हमरा माथ पर चढ़बैत अछि, ओ हमरा हेतु नन्दीक सदृश होइत अछि। प्रलयक समयमे जखन तीनू लोक नष्ट भ' जाइत अछि, तखन ओ सभ दुःखकें छोड़ि हमरा प्राप्त कय लैत अछि ।।४३९-४४०।।

आइ नन्दीक समान होयबाक एवं सभ प्रलयक उपरान्त सभ प्रकारक दुःख परित्याग कय शिवात्मत्व प्राप्तिक कामनासँ कारी तिल अथवा उजरा सरिसब शिवक माथ पर देब ।

फूल तोड़बाक समय

भविष्यपुराणमे—

शंकरक हेतु कनक (धथूर) तथा कदम्बक फूल रातिमे, दिनक शेषमे आन-आन फूल तथा दिन आ राति मे मल्लिका फूल तोड़बाक चाही ।।४४१।।

[विद्यापति]

एतय 'देयानि'क अर्थ 'तोड़बाव चाही' अछि।

दो अ'वखण्डने धातुसँ एतय 'देयानि' बनल अछि। अतएव 'देयेनि'क अर्थ 'तोड़बाक चाही' बुझक थिक ।

एतय धथूर फूलवला पूजामे रात्रिक विधान नहि अछि आ' ने रात्रिपूजामे धथूर फूलक विधान अछि। दुनू ठाम समाचार-परंपराक विरोध अछि। ई अनिरुद्ध आदि धर्माधिकरणिकक मत छनि। एतय पुष्प-विधान-प्रकरण-परित्यागक प्रसंग दोषयुक्त अछि। किएक तँ विधिक मध्य मे निषेधक विस्तार सेहो कयल जाइत अछि। अंतएव प्रस्तुत अंशक निषेधेमे तात्पर्य अछि।

(तोड़लाक बाद) एक पहर (प्रहर) धरि जाती (चमेली) पुष्प शुद्ध रहैत अछि। करवीर अहोरात्र शुद्ध रहैत अछि आ' ओकर बाद ओ सभ निर्माल्य भय जाइत अछि ।।४४२।।

लघुहारीतक कथन अछि—

स्नान कयलाक उपरान्त जे केओ फूल तोड़ैत अछि, देवता ओकरा ग्रहण नहि करैत छथि आ' ओ काठक सदृश भस्मीभूत भ' जाइत अछि ।।४४३।।

दक्षक वचन अछि—

(दिनक) द्वितीय भागमे वेदाभ्यासक विधान कयल गेल अछि। समिधा, फूल तथा कुश आदिक आहरणक समय सकाल अर्थात् प्रातः कहल गेल अछि ।।४४४।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ पुष्पफलम्

तत्रानिषिद्धपुष्पस्य शिवधर्म्मे—

पुष्पैररण्यसम्भूतैः पत्रैर्वा गिरिसम्भवैः ।
अपर्य्युषितनिश्छिद्रैः प्रोक्षितैर्जन्तुवर्जितैः ॥४४५॥

आत्मारामोद्भवैर्वापि सुपुष्पैः पूजयेत् शिवम् ।
पुष्पजातिविशेषेण भवेत् पुण्यं ततोधिकम् ।४४६॥

ततः पत्रपुष्पसामान्यं पूजनात् । पुष्पसामान्यप्रपूजने फलम्—

तपःशीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे ।
दत्वा दशसुवर्णानि यत्फलं कुसुमस्य तत् ॥४४७॥

[विद्यापति]

विशिष्यानुक्तफलविषयमिदम् ।

अद्य तपःशीलगुणोपेतवेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामोऽनेन पुष्पेण भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

अथ पुष्पजातिविशेषेषु मध्ये अर्क्कपुष्पस्य—

अर्क्कपुष्पे तथैकस्मिन् शिवाय विनिवेदिते ।
दश दत्वा सुवर्णानि यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥४४८॥

[विद्यापति]

तथेत्युक्त्वाऽरण्यसम्भवत्वादि रूपयति । दत्वा पूर्वोक्ते विप्रे ।

अद्य तपःशीलगुणोपेते वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदमर्क्कपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

करवीरपुष्पस्य—

एवं पुष्पविशेषेण फलं तस्य ततोऽधिकम् ।
ज्ञेयं पुष्पान्तरज्ञेन यथा स्यात्तन्निबोध मे ॥४४९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभिन्न पुष्प चढ़यवाक फल

ओतहि शिवधर्ममे अनिषिद्ध पुष्पसँ पूजनक फल—

जंगलमे उत्पन्न वा पर्वत पर उत्पन्न फूल-पात तथा अपना वाटिकामे फुलायल फूल जे बासि नहि हो, जाहिमे छिद्र नहि हो, जे स्वच्छ हो तथा जे कीड़ा आदिसँ रहित हो, ताहि फूल सभसँ शिवक पूजा करबाक चाही।

विशेष प्रकारक फूल सभसँ पूजनक आरो अधिक फल होइत अछि ।।४४५-४४६।।

ओकर बाद पत्र-पुष्प-सामान्य पूजनक फल—

तपस्या आ' सदाचारसँ युक्त वेदविद् ब्राह्मणक हेतु दस स्वर्णदानक जे फल अछि ओ फल सुन्दर पुष्पसँ (भगवान शंकर)क पूजन कयलासँ होइछ ।।४४७।।

[विद्यापति]

ई समान्य फूलसँ पूजा करबाक फल थीक।

आइ हम तपस्या, सदाचार आदि विशिष्ट गुण सभसँ युक्त वेदविद् ब्राह्मणक हेतु देल गेल दस स्वर्णदानक सदृश फलप्राप्तिक कामनासँ एहि फूलसँ भगवान शंकरक पूजा करव।

आब विशेष जातिक फूलक मध्य आकफूल द्वारा पूजनक फल—

एको बेर आकक फूल जे शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ दस स्वर्ण दानक फल प्राप्त करैत अछि। ।।४४८।।

[विद्यापति]

ई कहिकय वन आदिमे उत्पन्न फूलक विषयमे कहल जाइत अछि। 'दत्वा'सँ तात्पर्य अछि ब्राह्मणकेँ दयकेँ।

आइ तपस्या आ' शीलगुण सभसँ युक्त वेदपारग ब्राह्मणक हेतु देल गेल दस स्वर्णदानजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ हम ई आकक फूल भगवान शिवक हेतु निवेदित करैत छियनि।

करवीर पुष्पसँ पूजनक फल—

एहि प्रकारसँ पुष्प विशेष सभमे सेहो परस्पर फलमे न्यूनाधिकता अछि। विभिन्न पुष्पक ज्ञाता लोकनिक बुझबाक योग्य ई विषय हमरा बुझाउ।।४४९।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अर्क्कपुष्पसहस्रेभ्यः करवीरं विशिष्यते ॥४५०॥

[विद्यापति]

करवीरमित्येकवचनस्वरसादेकस्यैवकरवीरपुष्पस्यार्क्कसहस्रदानफलसमफलता । एवमन्यत्रापि ।

अद्यार्क्कपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं करवीरपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

जातीविजयपाटलाश्वेतमन्दारसितपद्मान्यतमपुष्पेपीयमेवकामना ।

तथा च भविष्यपुराणे—

करवीरसमाज्ञेया जातीविजयपाटलाः :
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मञ्च तत्समम् ॥४५१॥

[विद्यापति]

तत्समं करवीरसमम्, विजयोऽर्ज्जुनः ।

विल्वपत्रस्य—

करवीरसहस्रेभ्यो विल्वपत्रं विशिष्यते ॥४५२॥

अद्य करवीरसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं विल्वपत्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पद्मस्य—

विल्वपत्रसहस्रेभ्यः पद्ममेकं विशिष्यते ॥४५३॥

अद्य विल्वपत्रसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं पद्मपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

वकस्य—

पद्मपुष्पसहस्रेभ्यो वकमेकं विशिष्यते ॥४५४॥

अद्य पद्मपुष्पसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं वकपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एक सहस्र आकक फूलसँ एक करवीर फूलक विशेषता अछि ॥४५०॥

[विद्यापति]

'करवीरम्' मे एकवचनक प्रयोगसँ एकहि करवीर फूलक फल हजार आक फूल दानक समान फल अछि, ई अर्थ ध्वनित होइत अछि । तहिना अन्यत्र बुझवाक थीक ।

आइ हम हजार आकक फूल चढओलाक फलसँ विशिष्ट फल प्राप्त करबाक कामनासँ ई करवीर फूल भगवान शंकरकें देलियनि ।

चमेली, विजय, पाटल, श्वेतमन्दार तथा श्वेत कमलमेसँ कोनो एककें चढ़ावयमे एही फलक कामना कर्त्तव्य थिक ।

जेनाकि भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि—

करवीरक सदृश जाती, विजय, पाटल श्वेतमन्दार, सितपद्मकें बुझवाक चाही ॥४५१॥

[विद्यापति]

'तत्समम्'क अर्थ करवीरक सन । विजयक अर्थ अर्जुन फूल अछि ।

बिल्वपत्रक विशेषता—

हजारो करवीर फूलसँ एक बेलपात विशिष्ट होइत अछि ॥४५२॥

आइ हम सहस्र करवीर फूल दानजन्य फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई बेलपात भगवान शिवक लेल देलियनि ।

पद्म (फूल) पूजनक फल

सहस्र बेलपातसँ एक कमल विशिष्ट मानल जाइत अछि ॥४५४॥

आइ हम सहस्र बेलपात दानक फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई पद्मपुष्प भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि ।

अगस्त्य पुष्पसँ पूजनक फल—

सहस्र पद्म पुष्पक अपेक्षा एक वक (अगस्त्य पुष्प विशिष्ट अछि ४५४॥

आइ हम सहस्र पद्मपुष्प-दान-जन्य फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ वक पुष्प भगवान शिवक हेतु अर्पित कयलियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धुस्तूरकपुष्पस्य—

वकपुष्पसहस्रेभ्या एकं धुस्तूरकं वरम् ॥४५५॥

अद्य वकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं धुस्तूरकपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

बृहतीपुष्पस्य—

धुस्तूरकसहस्रेभ्यो बृहतीपुष्पं विशिष्यते ॥४५६॥

[विद्यापति]

बृहतीपुष्पं कंटकारिकापुष्पम्[१] ।

अद्य धुस्तूरकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं बृहतीपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

द्रोणपुष्पस्य—

बृहतीपुष्पसहस्रेभ्योद्रोणपुष्पं विशिष्यते ॥४५७॥

अद्य बृहतीपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं द्रोणपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अपामार्गपुष्पस्य—

द्रोणपुष्पसहस्रेभ्यः अपामार्गं विशिष्यते ॥४५८॥

[विद्यापति]

अपामार्गमपामार्गपुष्पं सन्दंशपातात् ।

अद्य द्रोणपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदमपमार्गपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

कुशपुष्पस्य—

अपामार्गसहस्रेभ्यः कुशपुष्पं विशिष्यते ॥४५९॥

अद्यापामार्गपुष्पसहस्रदानफलविविष्टफलप्राप्तिकामनया इदं कुशपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शमीपुष्पस्य—

कुशपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते ॥४६०॥

अद्य कुशपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं शमीपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तम् ।

---

१. अमरकोष, २/४/९३ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धथूर फूलसँ पूजनक फल

सहस्र वक पुष्पसँ एक धथूरक फूल विशिष्ट अछि ॥४५५॥

आइ हम सहस्र वक पुष्प दान द्वारा उत्पन्न विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई धथूरक फूल भगवान शंकरक हेतु देलियनि ।

वृहती पुष्पसँ पूजनक फल—

सहस्र धथूरक पुष्पक अपेक्षा एक वृहती पुष्प विशिष्ट अछि ॥४५६॥

[विद्यापति]

वृहती पुष्पसँ तात्पर्य कंटकारिका फूलसँ अछि ।

आइ सहस्र धथूरक फूलक दान द्वारा उत्पन्न विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई वृहतीपुष्प भगवान शिवक हेतु समर्पित कयलियनि ।

द्रोण फूलसँ पूजनक फल—

सहस्र वृहतीपुष्पसँ एक द्रोण पुष्प विशिष्ट अछि ॥४५७॥

आइ हम सहस्र वृहती पुष्पदान द्वारा उत्पन्न फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई द्रोण पुव्प भगवान शिवक लेल अर्पित करैत छियनि ।

अपामार्ग (चिरचिरी) फूलसँ पूजनक फल—

सहस्र द्रोण पुष्पक अपेक्षा एक अपामार्गक फूलक विशिष्टता अछि ॥४५८॥

[विद्यापति]

अपामार्गक अर्थ अछि चिरचिरीक फूल ।

आइ हम सहस्र द्रोण पुष्प-दान जन्य फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई अपमार्ग फूल भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि ।

कुश पुष्पसँ पूजनक फल

सहस्र अपामार्गसँ एक कुश पुष्पक विशिष्टता अछि ॥४५९॥

आइ हम सहस्र अपामार्ग पुष्प दानजन्य फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई कुश पुष्प भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि ।

शमी पुष्पस पूजाक फल—

सहस्र कुश पुष्पक अपेक्षा एक शमी पुष्प विशिष्ट अछि ॥४६०॥

आइ हम सहस्र कुश पुष्पदानक फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई शमी पुष्प भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नीलोत्पलस्य ।

शमीपुष्पसहस्रेभ्यः श्रीमन्नीलोत्पलं वरम् ।
अतः परतरं नास्ति पुष्पमन्यद्विशेषतः ॥४६१॥

अद्य शमीपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं नीलोत्पलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शमीपुष्पस्य ।

शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमिष्यते ॥४६२॥

[विद्यापति]

बृहती कण्टकारिका । तुल्यं-तुल्यफलम् ।

धत्तूरकसहस्रेभ्यो बृहतीपुष्पं विशिष्यते ॥४६२ख॥

इति तत्फलमतिदिश्यते ।

अद्य धत्तूरकसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं शमीपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तम् ।

नागकेसर-चम्पक-पुन्नागानामान्यतमस्य —

नागचम्पकपुन्नागा धत्तूरकसमा स्मृताः ॥४६३॥

[विद्यापति]

पुन्नागः पुनाल इति प्रसिद्धः । धत्तूरकसमा धत्तूरकसफलसफलाः ।

वकपुष्पसहस्रेभ्य एकं वरमित्यादि तत्फलमतिदिश्यते ।

अद्य वकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं नागकेसरपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

[विद्यापति]

चम्पकपुन्नागदानेप्येतदेव फलम् ।

अर्कपुष्पादारभ्य पुन्नागपुष्पपर्यन्तं बहुपुष्पदानपक्षे —

अद्य प्रतिपुष्पं दशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतान्यर्कपुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

करवीरपुष्पेषु –

अद्य प्रतिपुष्पमर्कपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया एतानि करवीर-पुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

[विद्यापति]

इत्यादिक्रमेण तत्तद्वाक्येषु प्रतिपुष्पमिति योज्यम् ।

इदं पुष्पमित्यपहाय एतानि पुष्पाणीति प्रयोक्तव्यमिति विशेषः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नीलोत्पल पुष्पसँ पूजनक फल—

सहस्र शमी पुष्पक अपेक्षा एक नील कमल श्रेयस्कर अछि। अतः एहिसँ विशिष्ट कोनो फूल नहि अछि ॥४६१॥

आइ हम सहस्र शमी पुष्प दानजन्य फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई नीलकमल भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि।

शमीपुष्पसँ पूजनक फल—

शमी पुष्प वृहती पुष्पक तुल्य अछि ॥४६२॥

[विद्यापति]

वृहतीके कण्टकारिका अर्थात् भटकटैया कहल जाइत अछि। 'तुल्यम्'क अर्थ समान फल होइत अछि।

हजार धथूरसँ एक बृहती पुष्प विशिष्ट मानल जाइत अछि ॥४६२ख॥

आइ सहस्र धथूरक फूलक दानक फलसँ विशिष्ट फलक प्राप्तिक कामनासँ ई शमी फूल भगवान शिवकें समर्पित करैत छियनि।

नागकेसर, चम्पा तथा पुन्नागक फूलमेसँ कोनो एकक फल—

नागकेसर, चम्पक तथा पुन्नागमे धथूरक समान फल होइत अछि ॥४६३॥

[विद्यापति]

पुन्नाग पुनाल नामसँ प्रसिद्ध अछि। 'धत्तूरकसमाः'क अर्थ अछि धथूरक फलक समान फलवला।

हजार बकपुष्पसँ एक धथूर श्रेयस्कर अछि—ई पहिने कहल जा चुकल अछि।

आइ हम सहस्र वकपुष्प (अगस्त्य) दानक फलसँ विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ ई नागकेसर पुष्प भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि।

चम्पक आ' पुन्नाग पुष्पक समर्पणक सेहो इएह फल होइत अछि।

आकक फूलसँ ल कऽ पुन्नाग फूल पर्यन्त एक जातिक अनेक फूल अर्पण करबाक फल—

आइ हम प्रत्येक फूल अर्पित कयलासँ दस स्वर्णदान फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई आकक फूल भगवान शिवकें अर्पित कयल।

अनेक करबीर फूलमे—

आइ हम प्रति पुष्पक दानमे हजार आक फूलक अर्पणसँ उत्पन्न फलक अपेक्षा विशिष्ट फल प्राप्तिक कामनासँ करवीरक ई बहुतरास फूल भगवान शिवकें अर्पित कयल।

[विद्यापति]

एहि क्रमे ओहि-ओहि वाक्यमे 'प्रतिपुष्प' एहि शब्दकें जोड़क चाही।

'इदं पुष्पम्'क स्थानमे 'एतानि पुष्पाणिक' प्रयोग करबाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिपुराणे—

अथ पुष्पविशेषे मल्लिकादीनामन्यतमपुष्पस्य ।

मल्लिकोत्पल-पद्मानि जातीपुन्नागचम्पकाः ।
अशोक[1]श्वेतमन्दारकर्णिकारवकानि च ॥४६४॥
करवीरार्कमन्दारशमीतगरकेसरः ।
कुशापामार्गकुमुदकदम्बद्रोणकानि च ॥४६५॥
पुष्पैरेतैर्यथालाभं यो नरः पूजयेच्छिवम् ।
स यत्फलमवाप्नोति तदेकाग्रमनाः शृणु ॥४६६॥
सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः ।
पुष्पमालापरिक्षिप्तैर्गीतवादित्रनादितैः ॥४६७॥
तन्त्रीमधुरवाद्यैश्च स्वच्छन्दगमनालसैः ।
रुद्रकन्यासमाकीर्णैर्देवदानवदुर्लभैः ॥४६८॥
दोधूयमानश्चमरैः स्तूयमानः[2] सुरासुरैः ।
गच्छेच्छिवपुरं दिव्यं यच्च चारुचिरं भवेत् ॥४६९॥

[विद्यापति]

केसरवकुलनागकेसर इति कश्चित्

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशसर्वकामसमन्वितपुष्पमालापरिक्षिप्तगीतवादित्रयुत-शब्दायमानमनोज्ञतन्त्रीकस्वच्छन्दगमनरुद्रकन्यासमाकीर्णदेवदानवाभीष्टबहुविमान-करणकबहुचामरवीज्ययानसुरासुरस्तूयमानात्मकचिरचारुदिव्यशिवपुरगमनकाम एभिर्मल्लिकाकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

एवमुक्तपुष्पान्तरेपि कामना ।

धत्तूरपुष्पेषु भविष्ये—

धत्तू[3]रकैस्तु यो लिङ्गं सकृत्पूजयते नरः ।
स गोलक्षफलं प्राप्य शिवलोके महीयते ॥४७०॥

अद्य गोलक्षफलसमाफलप्राप्तिपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया एतैर्धत्तूरपुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

नागचम्पकपुन्नागा धत्तूरकसमाः स्मृताः ।

इति तत्फलातिदेशात् ।

---

१. ने० पा०, अशोकाश्वेत मन्दारः ।
२. तत्रैव, संस्तुतश्च ।
३. तत्रैव, धस्तूर।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिपुराणमे पुष्प विशेष सभमे मल्लिका आदि अन्यतम फूलक फल—

जे मानव मल्लिका, उत्पल, कमल (पद्म), जाती, पुन्नाग,[१] चम्पक, अशोक, श्वेतमन्दार; कर्णिकार (कनैल), वक, करवीर, अर्क (आक), मन्दार, शमी, तगर, केसर, कुश, अपामार्ग, कुमुदिनी, कदम्ब तथा द्रोण एहि फूल सभमे जे सुलभ हो, ताहिसँ शिवक पूजा करैत अछि, ओ जे फल प्राप्त करैत अछि, से हम कहैत छी, एकाग्र मोनसँ सुनू ॥४६४-४६६॥

करोड़ सूर्यक सदृश चमकयवाला, सम्पूर्ण कामनाकेँ देमयवला, पुष्पमाला आदिसँ सुशोभित, गीत एवं वाद्य आदि मधुर ध्वनि सभसँ युक्त, वीणाक मधुर ध्वनिसँ गुञ्जित, स्वच्छन्द गमन करयवला, रुद्रकन्या सभसँ घेरल, चामरसँ हौंकल जाइत, देवता आ' असुर द्वारा स्तुति कयल जाइत दिव्य शिवपुर के प्राप्त करैत अछि जे शिवपुर चिरकाल धरि सुन्दर रहैत अछि ॥४६७-४६९॥

[विद्यापति]

केसरसँ वकुल बुझबाक थिक। केओ केसरकेँ नागकेसर कहैत छथि।

आइ हम करोड़ सूर्यक सदृश चमकयवला, सभ कामनाकेँ देमयवला पुष्पक, मालासँ सुशोभित, गान-बजानसँ निनादित, वीणाक मधुर स्वरसँ गुञ्जित, स्वच्छन्द गतिवला, रुद्रकन्या सभसँ घेरल, देवता आ' असुरक हेतु दुर्लभ, अनेक विमान द्वारा बहुत रास चामरसँ हौंकल जाइत तथा देवता आ' राक्षस द्वारा स्तूयमान चिर सुन्दर दिव्य शिवपुर-गमनक कामनासँ हम भगवान शिवक लिंगक एहि मल्लिकाक बहुत रास फूलसँ पूजन करब।

यैह कामना उपर्युक्त फूल सभसँ पूजनमे करबाक चाही।

भविष्यपुराणमे धथूर फूलक विषयमे कहल गेल अछि :—

जे व्यक्ति धथूरक फूल सभसँ एको खेप शिवक लिंगक पूजा करैत अछि, ओ लाख गाय दानक फल प्राप्त कय शवलोकमे पूजित होइत अछि ॥४७०॥

आइ हम लाख गाय-दान करवाक फलक सदृश फल प्राप्तिक लेल तथा शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ एहि धथूरक फूल सभसँ भगवान शिवक लिगक पूजा करब।

[विद्यापति]

नागकेसर, चम्पक, पुन्नाग तथा धथूरकेँ समान कहल गेल अछि।
समान फलक विधानक कारणेँ।

---

१. श्वेतकमल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथाखण्डबिल्वपत्रेषु भविष्ये—

बिल्वपत्रैरखण्डैस्तु यो लिङ्गं पूजयेत् सकृत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४७१॥

[विद्यापति]

अखण्डैर्निश्छिद्रपत्रत्रयैः ।

अद्य सर्वपापविमुक्ति-शिवलोकमहितत्वकामनया एतैरखण्डबिल्वपत्रैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैवकण्टकारिकाकुसुमेषु—

बृहतीकुसुमैर्भक्त्या यो लिङ्गं सकृदर्च्चयेत् ।
गवामयुतदानस्य फलं प्राप्य शिवं व्रजेत् ॥४७२॥

[विद्यापति]

बृहतीकण्टकारिका ।

गवामयुतदानस्य शक्रेण सह नित्यमोदनम् ।

अद्यायुतगवीदानफलसमफलप्राप्तिपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया एभिः कण्टकारिकाकुसुमैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

शमीपुष्पेष्विदमपि फलम् ।

शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमिष्यते इतितत्फलातिदेशात् ।
शैवामृते भविष्यपुराणीयाशोकादिपुष्पेषु—

अशोकश्वेतमन्दार-कर्णिकार-वकानि च ।
करवीरार्क-मन्दार-शमी-तगर-केशरम् ॥४७३॥

पुष्पैरेतैर्यथालाभं यो नरः पूजयेच्छिवम् ।
स यत्फलमवाप्नोति तदेकाग्रमनाः शृणु ॥४७४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे अखण्ड वेलपातक विषयमे कहल गेल अछि :—

जे अखण्ड (छिद्र-रहित तीन पातवला) बेलपातसँ एको बेर लिंगक पूजा करैत अछि, ओ सभ पापसँ मुक्त भय शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥४७१॥

[विद्यापति]

अखण्डसँ छिद्र-रहित तीनपतियाक बोध होइछ।

आइ हम सभ पापसँ मुक्ति होयबाक एवं शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ एहि अखण्ड बेलपातसँ भगवान शिवक लिंगक पूजा करब।

ओतहि कण्टकारिका (भटकटैया) फूलक विषयमे—

जे एक खेप भक्तिपूर्वक कण्टकारिका फूलसँ शिवलिंगक पूजा करैत अछि, ओ दस हजार गाय-दानक फल प्राप्त कय शिवक निकट जाइत अछि ॥४७२॥

[विद्यापति]

बृहती कण्टकारिकां अर्थात् भटकटैया थिक।

दस हजार गायक दानक फल थीक इन्द्रक संग नित्य आमोद-प्रमोद।

आइ हम दस हजार गोदानजन्य फलक सदृश फलप्राप्तिक हेतु तथा शिवलोकमे पूजित होयबाक इच्छासँ एहि कण्टकारी फूल सभसँ भगवान शिवक लिंगक पूजा करब।

शमीक फूलमे सेहो यैह फल होइत अछि; कारण, शमी फूल तथा कण्टकारीक फूल फलादेशसँ समान थीक।

शैवामृतमे अशोकादि फूलक विषयमे भविष्यपुराणक कथन—

अशोक, श्वेतमन्दार, कनैल, वक, करवीर, आक, मन्दार, शमी, तगर तथा केशर एहि फूल सभसँ जे मानव शिवक पूजा करैत अछि, ओकरा जे फल प्राप्त होइत छैक से एकाग्रचित्त भय सुनू ॥४७३-४७४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सूर्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः　सार्वकामिकैः　।
दोधूयमानश्चमरैः　शिवलोके　महीयते　॥४७५॥

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशसमप्रभसार्वकामिकबहुविमानकरणकबहुचामरवीज्यमानात्मकशिवलोकमहितत्वकाम एभिरशोकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपुराणे अर्ककरवीरकुशोन्मत्तकानामन्यतमपूजायाः—

अर्कश्च　करवीरश्च　कुशमुन्मत्तमेव　च　।
यो मे प्रयच्छते देवि लभते गणनाथताम्　॥४७६॥

अद्य गाणपत्यप्राप्तिकाम एभिरर्कपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

करवीरकुशधत्तूरकान्यतमपुष्पपूजनेपीयमेव कामना—

शिवपुराणीयपुष्पदानस्य—

एकपुष्पप्रदानेन लिङ्गेषु　प्रतिमासु　वा[1]　।
अशीति कल्पकोटीनां　दुर्गति न नरो व्रजेत्　॥४७७॥

अद्याशीतिकल्पकोट्यवच्छिन्नदुर्गत्यनवाप्तिकाम इदं पुष्पं भगवतः शिवस्य लिङ्गे प्रतिमायां वाऽहं दास्ये ।

शिवधर्मे मुक्तपुष्पपूजायाम्—

प्रत्येकं　मुक्तपुष्पेषु　दशसौवर्णिकं　फलम्　।
स्रङ्निबद्धेषु[2]　तेष्वेव　द्विगुणं फलमिष्यते　॥४७८॥

[विद्यापति]

मुक्तपुष्पेषु अग्रथितपुष्पेषु ।

एतत्फलं　विशेषतोऽकथितफलेषु विहितपुष्पेषु द्रष्टव्यम् ।

१　ने० पा०, च ।
२　तत्रैव, मूर्द्धिनबद्धेषु ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करोड़ सूर्यक सदृश चमकयवला तथा सभ मनोरथकें पूर्ण करयवला विमान सभमे चामर सभसँ दोधूयमान होइत ओ लोक शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।४७५।।

आइ हम कोटि सूयंक समान चमकैत, सभ कामनाकें पूर्ण करयवला विमान द्वारा चामरसँ वीजित होइत शिवलोकमे पूजित होयवाक कामनासँ एहि अशोकक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव ।

शिदपुराणमे आक, करवीर, आ उन्मत्तकमेसँ कोनहुसँ पूजा करवाक विषयमे कहल गेल अछि :—

आक, करवीर, आ कुशक तथा धथूर फूलमेसँ कोनो एक फूल जे हमरा दैत अछि, हे देवि ! ओ गाणपत्य लाभ करैत अछि ।।४७६।।

आइ हम गाणपत्य प्राप्त करवाक कामनासँ एहि आकक बहुतरास फूल सँ भगवान शिवक पूजा करव ।

करवीर, कुश, धथूरमेसँ कोनो फूलसँ पूजनमे यैह कामना कर्त्तव्य थीक ।

शिवपुराणमे फूल-दानक फल—

लिंग सभ पर अथवा प्रतिमा सभ पर एक फूल चढौलासँ अस्सी करोड़ कल्प धरि मानव दुर्गति कें नहि प्राप्त करैत अछि ।।४७७

आइ हम अस्सी करोड़ कल्प धरि लगातार दुर्गति नहि प्राप्त करवाक इच्छासँ ई फूल भगवान शिवक लिंग अथवा प्रतिमा पर चढ़ायब ।

शिवधर्म में छुट्टा फूलसँ पूजाक फल:—

छुट्टा फूलमे एक-एक फूलक (अर्पण में) दस सुवर्ण दानक फल अछि । ओहि फूलक माला गाँथि के चढ़ौने द्विगुण फल कहल गेल अछि ।।४७८।।

[विद्यापति]

'मुक्तपुष्पेषु' सँ विनु गाथल फूल वूझक चाही ।

एकर फल खास कय जकर फल नहि कहल गेल अछि एहन विहित फूलक सन्दभ मे देखबाक चाही ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणेप्युक्तम्—

दशसौवर्णिकं सुगन्धि यदि दद्याद् भामिनि[1] ।
शतसाहस्रिकी[2] मालाजन्यं दशगुणं भवेत् ॥४७६॥

अद्य प्रतिपुष्पं दशसुवर्णदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिरमुक्तपुष्पै-र्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति ।

एकपुष्पपूजने तु प्रतिपुष्पमित्यपहाय इदं पुष्पमिति योज्यमिति विशेषः ।

संग्रथितपुष्पेषु—

अद्य प्रतिपुष्पं संग्रथितप्रतिपुष्पदानफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया एतानि सग्रन्थितपुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ॥

पुष्पमालायाः—

अद्य शतवर्षसहस्रसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽनया पुष्पमालया भगवतः शिवस्य लिङ्गपूजामहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सुगन्धिमुक्तपुष्पेषु—

यः सुग[3]न्धैर्मुक्तपुष्पैर्लिङ्गं सम्यक् प्रपूजयेत् ।
मालाभिर्वा सुगन्धिभिः सोऽनन्तफलमाप्नुमात् ॥४७६ख॥

अद्यानन्तफलप्राप्तिकामनया एभिः सुगन्धिमुक्तपुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

सुगन्धिमालात्रयदानेपीयमेव कामना ।

शिवधर्म्मे पुष्पमालाभिर्वेदिवेष्टनस्य—

मालाभिर्वेष्टयेद्वेदीं लिङ्गं सम्पूज्य यत्नतः ।
यस्तु देव्याः स पुत्रः स्यात्तदभ्यासे च मोदते ॥४८०॥
लिङ्गवेदी भवेद्देवी लिङ्गं साक्षान्महेश्वरः ।
तयोः संपूजनात् स्यातां देवीदेवश्व पूजितौ ॥४८१॥

[विद्यापति]

अत्र मालाभिरेव लिङ्गपूजा[4] अभ्यासे सन्निधाने ।

---

१ ने० पा०, भाविनि ।
२ तत्रैव, शतसहस्रिकी ।
३ तत्रैव, सुगन्धीभिः
४ तत्रैव, नित्यंपूजा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे कहल गेल अछिः—

प्रिये ! सुगन्धित फूल चढ़ौने दस सुवर्ण दानक फल हइत छैक। एक लाख माला समर्पणक फल दशगुणा भेटेत छैक ॥४७९।

आइ हम प्रति फूल पर दस स्वर्ण दानक समान फल प्राप्त करवाक इच्छासँ एतेकरास बिना गाँथल फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करव ।

[विद्यापति]

एकटा फूलसँ पूजा करबाक काल 'प्रतिपुष्पम्' एहि शब्दक स्थान पर 'इदं पुष्पम्' (ई फूल) एकर प्रयोग करक चाही ।

संग्रथित फूलक द्वारा पूजाक फल–

आइ हम प्रत्येक पुष्प संग्रथित प्रतिपुष्प दानक फलक प्राप्तिक कामनासँ ई संग्रथित फूल सभ भगवान शिव केँ देलियनि ।

फूलक माला द्वारा पूजनक फल :—

आइ हम शतवर्ष धरि सहस्र स्वर्ण दानजन्य फलसदृश फल प्राप्तिक कामनासँ एहि फूलक माला द्वारा भगवान शिवक लिंगक पूजा करव ।

नन्दिकेश्वर मे सुगन्धित मुक्त (छुट्टा) पुष्पक विषयमे —

जे सुगन्धित मुक्त फूल सभसँ अथवा सुगन्धित माला सभसँ शिवलिंगक विधिवत् पूजा करैत अछि, अ अनन्त फल प्राप्ति करैत अछि ॥४७९ख॥

आइ हम अनन्त फल प्राप्तिक कामनासँ एहि सुगन्धित मुक्त फूल सभसँ भगवान शंकरक लिंगक पूजा करव ।

सुगन्धित पुष्पक तीन मालाक दानमे सेहो यैह फल बुझवाक चाही ।

शिवधर्ममे पुष्पमालासँ वेदीकेँ वेष्टित करवाक फल—

जे माला सभसँ वेदी[1]केँ वेष्टित कय आ यत्नपूर्वक लिंगक पूजा करैत अछि ओ' देवीक पुत्र भय हुनक निकटमे हर्षित रहैत अछि। लिंगवेदी देवी (पार्वती) थिकीहि आ' लिंग साक्षात् महेश्वर थिकाह तेँ जे वेदी आ' लिंगक पूजन करैत अछि, ओ' साक्षात् शिव आ पार्वतीक पूजा करैत अछि ॥४८०-४८१॥

[विद्यापति]

एतय ,बहुतरास मालहिसँ पूजा अभिप्रेत अछि। अभ्यासक अर्थ किट थीक ।

---

१ यज्ञ इत्यादिक हेतु तैयार कयल स्थान। मन्दिर अथवा प्रासादमे बनल चतुष्कोण स्थान अथवा मंडप ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य देवीपुत्रत्व-तत्सन्नधानहर्षयुतत्वकामनया एताभिः पुष्पमालाभर्भगवतः शिवस्य लिङ्गं सम्पूज्य वेदीं वेष्टयिष्ये ।

शिवरहस्ये पुष्पपञ्चकमात्रेणापि पूजायाम्—

पुष्पैः पञ्चभिरप्यत्र पूजयित्वा महेश्वरम् ।
दशानामश्वमेधानां फलमाप्नोति मानवः ॥४८२॥

अद्य दशाश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकाम एभिः पञ्चभिः पुष्पैस्तदधिकैर्वा भगवन्तं महेश्वमहं पूजयिष्ये ।

पुष्पमालायाः—

स्रङ्[1]निबद्धेषु तेष्वेव द्विगुणं फलमिष्यते ॥४८३॥

अद्य दशाश्वमेधफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनयाऽनया पुष्पपञ्चकमालया भगवन्तं महेश्वरमहंपूजयिष्ये ।

बिल्वपत्रपञ्चकमात्रेपि—

बिल्वपत्रादिभिश्चैव सम्पूज्य लभते फलम् ॥४८४॥

अद्य दशाश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिः पञ्चभिर्बिल्वपत्रैस्तदधिकैर्वा भगवन्तं महेश्वरमहं पूजयिष्ये ।

बिल्वपत्रमालायाः—

अद्य दशाश्वमेधफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया बिल्वपत्रमालया भगवन्तं महेश्वरंमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

विहितपत्रान्तरेप्येतदेवफलम् ।

शक्त्यपेक्षया फलभूमापेक्षया वा व्यवस्था ।

पुष्पसहस्रस्य :—

अष्टभिर्वा शिवं पुष्पैरभ्यर्च्य विधिना नृप ।
प्रयाति शङ्करं धाम किं पुनर्यः सहस्रशः ॥४८५॥

अद्य शङ्करधामप्राप्तिकामनया एभिः सहस्रकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

बिल्वपत्रसहस्रपूजनेपीयमेवकामना ।

अशक्तौ त्वष्टपत्रादिपूजने तदधिकपूजने वापीयमेव कामना ।

---

१ ने० पा०, मूर्द्धिन् वद्धेषु ।

२ तत्रैव इष्टपुष्पपत्रादि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम देवीक पुत्रत्व आ' हुनक सन्निधानमे आनन्दप्राप्तिक कामनासँ एहि फूलक माला सभसँ भगवान शिवक लिंगक पूजन कय वेदीक वेष्टन करब।

शिवरहस्यमे मात्र पाँच फूलक द्वारा शंकरक पूजाक फल—

जे व्यक्ति मात्र पाँच फूलसँ महेश्वरक पूजा करैत अछि, ओ दस अश्वमेध यज्ञ करबाक फल प्राप्त करैत अछि ॥४८२॥

आइ हम दस अश्वमेध यज्ञक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ एहि पाँच फूलक द्वारा भगवान महेश्वरक पूजा करब।

पुष्पकमाला द्वारा पूजाक फल -

एहि पाँचो फूल सभसँ माला बनाय अथवा गूँथि पूजा कयल जाय तँ फल द्विगुणित भ' जाइत अछि ॥४८३॥

आइ हम दस अश्वमेध यज्ञक फलसँ द्विगुणित फल प्राप्तिक कामनासँ एहि पाँच फूलक मालासँ भगवान महेश्वरक पूजा करब।

मात्र पाँच बिल्वपत्रसँ शिवपूजनक फल—

पाँच बेलपत्रसँ (शिवक) पूजन कयलासँ वैह अर्थात् पूर्वोक्त फल प्राप्त होइत अछि ॥४८४॥

आइ हम दस अश्वमेध यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ एहि पाँच बेलपत्रसँ अथवा ओहिसँ बेसी बेलपत्रसँ भगवान महेश्वरक पूजा करब।

बिल्वपत्रक माला द्वारा पूजनक फल—

आइ हम दस अश्वमेध यज्ञ जन्य फलसँ द्विगुणिन फल प्राप्तिक कामनासँ बेलपत्रक एहि मालासँ भगवान महेश्वरक पूजा करब।

[विद्यापति]

अन्य विहित पत्र सभक पूजनक सेहो यैह फल अछि।

शक्तिक अनुसार वा फलक अनुसार व्यवस्था अछि।

एक सहस्र फूल द्वारा पूजनक फल—

हे राजन्। जे आठ फूलसँ विधिपूर्वक शिनक पूजा करैत अछि, ओ' शंकर-धामकेँ प्राप्त करैत अछि। पुनश्च, जे हजार फूलसँ हुनकर पूजा करैत अछि, ओकरा विषयमे की कहल जाय? ॥४८५॥

आइ हम शंकर-धामक प्राप्तिक कामनासँ एहि हजार फूलक द्वारा भगवान शिवक पूजा करब।

[विद्यापति]

सहस्र बेलपत्रसँ सेहो पूजन करबाक यैह कामना कर्तव्य थिक।

असमर्थताक स्थितिमे आठ बेलपत्रक द्वारा पूजनक अथवा अधिक बेलपातसँ पूजनक वैह अर्थात् उपर्युक्त फल अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे नीलोत्पलसहस्रमालायाः—

नीलोत्पलसहस्रेण यो मे मालां प्रयच्छति ।
शिवाय विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥४८६॥

कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
वसेच्छिवपुरे श्रीमान् शिवतुल्यपराक्रमः ॥४८७॥

अद्य श्रीमत्त्वशिवतुल्यपराक्रमत्वकल्पकोटिसहस्रकल्पकोटिशतावच्छिन्नशिवपुरवासकामनया इयं नीलोत्पलहस्रमाला भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

पुष्पान्तरसहस्रमालायाः—

शेषाणां पुष्पजातीनां यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
स तत्फलानुसारेण शिवलोके महीयते ॥४८८॥

[विद्यापति]

नीलोत्पलेतरपुष्पाणां यत्फलमुक्तं तत्फलभोगकालगणनया शिवलोके महीयते । यत्पुष्पान्तरसहस्रेण मालां प्रयच्छतीत्यर्थः ।

अद्य सहस्रगुणितामुकपुष्पदानफलभोगकालावच्छिन्नशिवलोकमहितत्त्वकाम इमाममुकपुष्पमालां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

नीलोत्पलव्यतिरिक्तपुष्पाणां यावत्फलमुक्तं तत्फलं यावत्कालेन भुज्यते तावत्कालं शिवलोकमहितत्वमधिकं नीलोत्पलसहस्रमालादानस्यैव फलं तत्कर्त्तुरेव प्रतीयतरेव[1] वाक्यतार्यं बोधादन्यथाध्याहारादिदोषप्रसङ्गादिदोषप्रसङ्गादिभिर[2]स्वरसः ।

स्कन्दपुराणे पुष्पादीनां लिङ्ग[3]पुराणे—

लिङ्गपूरणन्तु यः कुर्य्यान्मुमुदे विदृढव्रतः ।
शतं वर्षसहस्राणि दिव्यानि दिवि मोदते ॥४८९॥

अद्य स्वर्गाधिकरणकदिव्यवर्षशतसहस्रावच्छिन्नहर्षकाम एभिः पुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गपूरणमहं करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, प्रतीयते एकवाक्यतानुरोधत् ।

२ तत्रैव, रत्नाकर ।

३ लिपिकारक भ्रमसँ मूलमे लिङ्गपुराणे 'लिपिवद्ध भय गेल अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे एक हजार नीलकमलक मालासँ पूजा करबाक फल—

एक सहस्र नीलकमलक माला जे (शिवकेँ) विधिपूर्वक भक्तिसँ प्रदान करैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनू ॥४८६॥

हजार करोड़ कल्प वा सौ करोड़ कल्प धरि ऐश्वर्य तथा शिवक तुल्य पराक्रम वाला भय ओ व्यक्ति शिवपुरमे वास करैत अछि ॥४८७॥

आइ हम सम्पत्तिशालिता तथा शिवतुल्य पराक्रमक कामनासँ सहस्रकाटि कल्प वा सय कोटि कल्प धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे वासक कामनासँ ई सहस्र नीलकमलक माला भगवान शिवकेँ समर्पित करैत छियनि ।

विभिन्न प्रकारक सहस्र अन्य पुष्पक मालाक फल—

शेष (जतेक ऊपर कहल गेल अछि, ताहिसँ भिन्न) फूल सभसँ बनाओल मालाक अर्पणक फल ओहि विभिन्न प्रकारक फूलक फलसँ जे भोगकाल प्राप्त होइत छैक ततेक भोगकाल धरि ओ' शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥४८८॥

[विद्यापति]

नीलकमलक अतिरिक्त जाहि-जाहि फूल सभसँ पूजनक जे-जे फल कहल गेल अछि, ओहि फलक भोग-कालक गणनाक अनुसार ओ' शिवलोकमे महितत्त्व प्राप्त करैत अछि ।

अनुक्त एक हजार प्रकारक अन्य पुष्पसँ बनल माला अर्पित करैत अछि यैह तात्पर्य भेल ।

आइ हम सहस्रगुणित अमुक पुण्यदान जन्य फलक भोगकालक बराबरि शिवलोकमे महितत्त्व प्राप्त करबाक इच्छासँ एहि अमुक पुष्पमालाकेँ भगवान शिवक हेतु दैत छियनि ।

नीलकमलसँ अतिरिक्त पुष्प सभक जे फल कहल गेल अछि, ओ' फल ओतेक काल धरि भोगल जा सकैत अछि । मुदा नीलकमलक सहस्रमाला-दानक फल शिवलोकमे महितत्व प्रदान करैत अछि । एहि प्रकारक पुष्पमाला अर्पित कयनिहारकेँ नीलकमलक मालार्पण तुल्य फल प्राप्त होइत छैक । उपर्युक्त वाक्यक इएह अर्थ अछि । अन्यथा विपरीत अध्याहारादिक प्रसंग उपस्थित भय जायत ।

स्कन्दपुराणमे फूल सभक द्वारा शिवलिंगकेँ पूर्ण आच्छादित करबाक फल—

हे देवि ! जे दृढ़व्रती फूलसँ लिंगकेँ पूर्णतः आच्छादित कय दैत अछि, ओ' सए हजार दिव्य वर्ष पर्यन्त स्वर्गमे सुख भोग करैत अछि ॥४८९॥

आइ हम दिव्य शत-सहस्रवर्ष धरि स्वर्ग मे हर्षप्राप्तिक कामनासँ फूल सभसँ भगवान शिवक लिंगकेँ आच्छादित करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवीपुराणे पुष्पाद्यन्यतमपूरणे—

पूरणं फलगन्धाद्यैः पुष्पाद्यैश्च सुशोभनैः ।
कार्य्यं वित्तानुसारेण सर्वकामफलार्थिभिः ॥४६०॥

[विद्यापति]

पूरणं लिङ्गस्यैव प्रथमाद्यपदेन पूरणसाधकः पुष्पान्यतिरिक्तपरग्रहः । पुष्पाद्यैरित्याद्यपदेन पत्रादिपरिग्रहः । वित्तानुसारेण वित्तशाठ्येन ।

अद्य सर्वकामावाप्तिकाम एभिः पुष्पैः फलैर्वा गन्धैर्वा भगवतः शिवस्य लिङ्ग-पूरणमहं करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे पुष्पमण्डपस्य—

शिवस्योपरि यः कुर्यादध्व[1]नं पुष्पमण्डपम् ।
शोभितं पुष्पमालाभिरापठान्तप्रलम्बिभिः ॥४६१॥

अत्याश्चर्य्यैर्महायानैर्दिव्यपुष्पोपशोभितैः ।
सर्वोपरिचरः श्रीमान् गच्छेच्छिवपुरं सुखी ॥४६२॥

अद्य दिव्यपुष्पोपशोभिताश्चर्य्यहेतुबहुमहायानकरणकसर्वोपरिचरत्व-श्रीमत्व-सुखित्व-शिवपुरगमनकामोऽमुम् अध्व[2]नमापीठप्रलम्बिपुष्पमालाशोभितंपुष्पमण्डपं भगवतः शिवस्योपर्यहङ्करिष्ये ।

अथ सुवर्णपूजनस्य

स्कन्दपुराणे—

यो जातरूपैरूप्यैश्च अर्च्चयेत् सुरेश्वरम् ।
लिङ्गपूजाञ्च यो देवि करोति मम शोभने ॥
गाणपत्यमवाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति ॥४६३॥

अद्य गाणपत्यप्राप्ति-शिवलोकगमनकाम एभिः सुवर्णैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

रजतपूजायामपीदं फलम्

---

१ ने० पा०, सुघनं ।
२ तत्रैव, सुघन ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवीपुराणमे फूल आदिसँ आच्छादनक फल :—

हे सुन्दरि ! सभ कामनाक पूर्तिक इच्छावलाकेँ पुष्प, फल, गन्ध आदिसँ अपन वित्तक अनुसार (शिवलिंगकेँ) आच्छादित करबाक चाही ॥४९०॥

पूरण लिंगहिक कर्त्तव्य थिक। प्रथम 'आद्य' पदसँ पूरणक साधन रूपमे पुष्पसँ भिन्न वस्तु ग्रहण करबाक चाही। 'पुष्पाद्य'मे प्रयुक्त 'आद्य' पदसँ पात आदिक ग्रहण होइछ। 'वित्तानुसारेण'क अर्थ वित्तशाठ्य अर्थात् वित्तमे शठता नहि करबाक चाही।

आइ हम सब कामनाक पूर्त्तिक कामनासँ एहि फूल, फल अथवा गन्ध सभक द्वारा भगवान शिवक लिंगकेँ आच्छादित करब।

नन्दिकेश्वरमे पुष्प-मण्डप बनेबाक फल :—

जे मानव शिवक ऊपर वेदी धरि लटकैत फूलक मालासँ सुशोभित घनगर फूलक मण्डप बनबैत अछि, अ स्वर्गीय फूल सभसँ सुशोभित अत्यन्त आश्चर्यित महायान सभक द्वारा अनेक सेवकसँ युक्त आ ऐश्वर्यसँ सम्पन्न भय सुखपूर्वक शिव-लोक जाइत अछि ॥४९१-४९२॥

आइ हम दिव्य फूल सभसँ सुशोभित अद्‌भुत अनेक महायानक द्वारा अनेक भृत्यसँ युक्त एवं श्रीसम्पन्न भय सुखपूर्वक शिवलोक प्राप्त करबाक हेतु वेदीपर्यन्त लटकैत फूलक माला सभसँ सुशोभित घनगर पुष्प-मण्डप भगवान शिवक ऊपर बनायब।

आब सुवर्णसँ पूजा करबाक फल

स्कन्दपुराणमे—

हे देवि ! जे लोक सोना तथा चानीक खंड सभक द्वारा सुरेश्वर तथा शिवलिंक पूजा करैत अछि, ओ गणपति-पदकेँ प्राप्त कय शिवलोककेँ जाइत अछि ॥४९३॥

आइ हम गणपति-पद प्राप्तिपूर्वक शिवलक-गमनक कामनासँ एहि स्वर्ण सँ भगवान शिवलिंगक पूजन करब।

चानीक द्वारा पूजनक सेहो यैह फल अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुवर्णकुसुमैरर्च्चनस्य—

निवसन्ति शिवे लोके सदा यज्ञैर्यजन्ति च ।
सर्वदा न भयंतेषां जायते नात्र संशयः ॥४६४॥

व्रियन्ते परितः पुष्पैः[१] पौद्रैश्चैव[२] समन्ततः ।
श्रिया सदैव पूज्यन्ते हेमपुष्पैः शिवार्चनात् ॥४६५॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकवाससार्वकालिक-बहुयज्ञयाजित्व-सदाभयशून्यत्व सार्वत्रिकबहुपुत्रपौत्रपरिवृतत्व-सदाश्रीयुक्तत्वकाम एभिर्हिरण्यकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

सुवर्णरजतान्यतरकुसुमेषु—

हिरण्यस्यैव कुसुमैं राजतैः कुसुमैस्तथा ।
अर्च्चयित्वा शिवं देवं रुद्रलोके महीयते ॥४९६॥

अद्य रुद्रलोकमहितत्वकाम एभिर्हिरण्यकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

रजतपुष्पैरपि पूजायामिदमेव फलम् ।

शिवरहस्ये मणिविद्रुमरचितोत्कृष्टसुवर्णबहुकुसुमपूजने—

सुवर्णकुसुमैर्दिव्यैर्म्मणिविद्रुमचित्रितैः ।
येऽर्च्चयन्ति शिवं भक्त्या नरास्ते स्युर्महेश्वराः ॥४९७॥

अद्य महेश्वरत्वभवनकाम एभिर्मणिविद्रुमविचित्रितोत्कृष्टसुवर्णकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

माषाधिकसुवर्णकुसुमस्य—

हेम्नां[३] कृत्वा च यः पुष्पमपि माषकमात्रकम् ।
भोगैः शिवपुरे दिव्यैः कल्पकोटिं वसेन्नरः ॥४९८॥

---

१ मूले, पुष्पैः ।
२ तत्रैव, पौद्रैश्चैव ।
३ ने० पा०, हेम्ना ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वर्णपुष्प द्वारा पूजनक फल :—

जे व्यक्ति स्वर्णक फल सभसँ सदिखन शिवार्चन करैत अछि, ओ सर्वदा शिवलोकमे निवास करैत अछि, नित्य यज्ञक अनुष्ठान करैत अछि। सर्वदा निःसन्देह-निर्भय रहैत पुत्र एवं पौत्रसभसँ सर्वथा घेरल तथा लक्ष्मीसँ युक्त रहैत अछि ॥४९४-४९५॥

आइ हम शिवलोकमे वास करबाक, सदिखन बहुत यज्ञ सभक अनुष्ठान करबाक, सदा निर्भय रहबाक, सदिखन अनेक पुत्र-पौत्र सभसँ समन्वित तथा श्रीयुक्त रहबाक कामनासँ एहि सोनाक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

सोना अथवा रजतक फूल सभसँ पूजा करबाक फल :—

जे व्यक्ति स्वर्ण अथवा रजतक फूलसँ शिवक अर्चना करैत अछि, ओ रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥४९६॥

आइ हम रुद्रलोकमे महितत्त्व प्राप्त करबाक कामनासँ एहि हिरण्यपुष्प सभसँ भगवान शिवक पूजन करब।

रजतपुष्प द्वारा पूजनक सेहो यैह फल होइत अछि।

शिवरहस्यमे मणि आ' विद्रुमसँ[१] रचित उत्कृष्ट सोनाक बहुत फूलसँ पूजनक फल—

जे व्यक्ति दिव्य मणि आ' विद्रुमसँ खचित स्वर्णक फूल सभसँ भगवान शिवक भक्तिपूर्वक पूजा करैत अछि, ओ साक्षात् महेश्वर भय जाइत छथि ॥४९७॥

आइ हम महेश्वरत्व प्राप्तिक कामनासँ एहि मणि आ' विद्रुमसँ खचित अद्भुत आ' उत्कृष्ट सोनाक फूल सभसँ भगवान शिवक अर्चना करब।

माषपरिमणसँ अधिक अर्थात् माषाधिक स्वर्णपुष्पसँ पूजाक फल—

जे माष बराबरि सोनाक निर्मित फूलसँ पूजन करैत अछि, ओ दिव्य भोग केँ भोगैत शिवपुरमे कोटि कल्प धरि वास करैत अछि ॥४९८॥

---

१ विशिष्टो द्रुमः अर्थात् विशिष्ट वृक्ष; मूँगाक वृक्ष (लाल रंगक मूल्यवान मूँगा (मणिकेँ जन्म देमयबाला); रघुवंश, १३/१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

पुष्पं दद्यादित्यनुषज्यते—

अद्य शिवपुराधिकरणककल्पकोट्यवच्छिन्नदिव्यबहुभोगहेतुकवासकामनया इदं माषाधिकसुवर्णकुसुमं भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तम् ।

अथ मासविशेषे पुष्पफलविशेषफलानि

तत्र वैशाखे पाटलापुष्पस्य—

वैशाखे मासि कर्त्तव्या पूजा पाटलया सदा ।
सर्वान् कामानवाप्नोति ज्येष्ठे पद्माच्चर्नैः सदा ।।४९९।।

सदा मासं व्याप्य प्रतिदिनम् ।

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामनयाऽस्मिन् वैशाखे प्रत्यहं पाटलपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

ज्येष्ठमासे पद्मपुष्पपूजस्य—

अद्यादि प्रत्यहं सर्वकामावाप्तिकामनयाऽस्मिन् ज्येष्ठे मासि पद्मैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

आषाढ़मासे बल्वपत्रकल्हारपूजनस्य—

आषाढ़े बिल्वकल्हारैरीहितं लभते फलम्[1] ।।५००।।

सदेति सर्वत्रान्वेति तेन मासं व्याप्त प्रतिदिनपूजा लभ्यते ।

अद्यादि प्रत्यहमीप्सितफलप्राप्तिकामनयाऽस्मिन्नाषाढे बिल्वपत्रैः कल्हारैर्बा भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कल्हारं सौगन्धिकम् ।

श्रावणे नवमल्लिकापूजनस्य—

नवमल्लिकया पूजा नभोमासि महाफला ।।५०१।।

विद्यापति]

नभो मासि श्रावणे ।

अद्यादि महःफलप्राप्तिकामनयाऽस्मिन्नभोमासि प्रत्यहं नवमल्लिकापुष्पैः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि, सम्पादक, डॉ० जयमन्त मिश्र पृष्ठ ३०—
आषाढे बिल्वकह्लारविहितं लभते फलम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

श्लोकमे 'पुष्पम्'क संग 'दद्यात्'क सम्बन्ध होइत अछि। अर्थात् ऊपरक श्लोकमे फूल 'चढ़ाबी' ई जोड़ि लेबाक चाही।

आइ हम शिवपुरमे कोटि कल्प धरि अविच्छिन्न दिव्य बहुभोगहेतुक रहबाक कामनासँ ई माषाधिक सोनाक फूल भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छियनि।

आब मास विशेषमे पुष्प-फल-विशेषसँ पूजनक फल

ओतहि वैशाख मासमे पाटल पुष्पक फल—

वैशाखमे प्रतिदिन पाटल (गुलाब)सँ आ जेठ मासमे सर्वदा (प्रतिदिन) पद्मसँ पूजा कयलासँ सभ कामनाक प्राप्ति होइत अछि ॥४९९॥

सदाक अर्थ मासभरि प्रत्येक दिनसँ अछि।

आइ हम सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ एहि वैशाख मासमे प्रतिदिन गुलाबक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

जेठ मासमे पद्म-पुष्पसँ पूजनक संकल्प—

आइसँ हम प्रतिदिन सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ एहि जेठ मासमे कमलक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

आषाढ़ मासमे बेलपत्र आ' कल्हार (एक प्रकारक कमल)सँ पूजनक फल—

आषाढ़ मासमे बेलपत्न आ' कल्हारसँ पूजा कयलासँ अभीष्ट फल प्राप्त होइत अछि ॥५००॥

[विद्यापति]

'सदा'क अन्वय सर्वत्न होइछ, तेँ प्रतिदिन मास भरि पूजा कर्तव्य थिक।

आइसँ हम प्रतिदिन मासभरि ईप्सित फलप्राप्तिक कामनासँ बेलपत्न आ' कल्हारसँ भगवान शिवक पूजा करब।

[विद्यापति]

कल्हारक तात्पर्य सौगन्धिक अर्थात् श्वेत कमल थिक।

साओन मासमे नवमल्लिकासँ पूजनक फल—

साओन मासमे नवमल्लिका द्वारा पूजा कयलासँ महाफल प्राप्त होइत अछि ॥५०१॥

[विद्यापति]

'नभ' मास साओन मासकेँ कहल जाइछ।

आइसँ हम महाफल प्राप्तिक कामनासँ एहि साओन मास भरि प्रतिदिन नवमल्लिका फूल सभसँ भगवान शिवलिंगक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भाद्रे कदम्बचम्पकपुष्पयोरन्यतरपूजनस्य—

कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा ॥५०२॥

नभस्ये भाद्रे ।

अद्यादि प्रत्यहं सर्वकामावाप्तिकामः कदम्बपुष्पैश्चम्पकपुष्पैर्वाऽस्मिन्नभस्ये भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

आश्विने पंकजमालतीपुष्पयोरन्यतरपूजनस्य—

पूजा पङ्कजमालत्योरिषेऽभ्युदयदायिनी ॥५०३॥

इषे आश्विने ।

अद्यादि प्रत्यहमभ्युदयप्राप्तिकामनया पङ्कजेन मालतीपुष्पेण वाऽस्मिन्निषे मासि भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कार्त्तिके शतपत्रिकापूजनस्य—

शतपत्रिकया पूजा कार्त्तिके सार्वकामिकी ॥५०४॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् कार्त्तिके सर्वकामावाप्तिकामनया शतपत्रिकापुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

मार्गे नीलोत्पलपूजनस्य—

मार्गे नीलोत्पलैः पूजा ॥५०५॥

[विद्यापति]

सार्वकामिकीत्यनुषज्यते ।

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् मार्गे मासि सर्वकामावाप्तिकामो नीलोत्पलैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पौषे कुब्जकपूजनस्य ।

पौषे[1] तु कुब्जकैः [पूजां] सदा ॥५०६॥

[विद्यापति]

यः कुर्यादित्यादि वक्ष्यमाणेनान्वयः ।

पुष्ये पौषे ।

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् पौषे सर्वयज्ञसर्वदानफलसमफलकामनया कुब्जकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ ने० पा०, पुष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भादवमास मे कदम्ब अथवा चम्पक फूलसँ पूजनक फल—

भादव मासमे कदम्ब अथवा चम्पक द्वारा पूजन कयलासँ सभ कामना पूर्ण होइत अछि ॥५०२॥

'नभस्य'क अर्थ भादव मास अछि।

आइसँ हम सभ कामनाक पूर्ण होयबाक कामनासँ कदम्ब अथवा चम्पक फूल सभसँ एहि भादव मासमे प्रतिदिन भगवान शिवक पूजन करब।

आश्विन मासमे पंकज अथवा मालती द्वारा पूजनक फल—

आसिन मासमे पंकज अथवा मालतीसँ प्रतिदिन पूजा कयलासँ अभ्युदय होइत अछि ॥५०३॥

'इष'क तात्पर्य आश्विनसँ अछि।

आइसँ हम प्रतिदिन अभ्युदय-प्राप्तिक कामनासँ पंकज अथवा मालती फूलसँ एहि आश्विन मासभरि प्रतिदिन भगवान शिवक पूजा करब।

कार्तिक मासमे शतपत्रिकासँ पूजनक फल—

कार्तिक मासमे शतपत्रिकासँ प्रतिदिन पूजा कयलापर सभ कामनाक पूर्त्ति होइत अछि ॥५०४॥

आइसँ हम प्रतिदिन एहि कार्तिक मासमे सभ कामनाक पूर्त्तिक कामनासँ शतपत्रिका फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

अगहन मासमे नीलोत्पलसँ पूजाक फल—

अगहन मासमे नीलकमलसँ पूजा कयलापर सभ कामनाक पूर्त्ति होइछ ॥५०५॥

[विद्यापति]

सभ कामनाकेँ पूर्ण करैं अछि—ई अर्थ प्रसंगसँ ज्ञात होइत अछि।

आइसँ हम प्रत्यह एहि अगहन मासमे सभ कामनाक पूर्त्तिक कामनाक हेतु नीलकमलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

पूस मासमे कुब्जक[1] (पुष्प)सँ पूजनक फल—

जे व्यक्ति पूसमे प्रतिदिन कुब्जकसँ पूजा करैत अछि, से सर्वयज्ञ तथा सर्वदानक फलकेँ प्राप्त करैत अछि ॥५०६॥

[विद्यापति]

एतय 'यः कुर्यात्' अर्थात् जे करयसँ अग्रिम श्लोकसँ सम्बन्ध स्थापित कय लेल जाइत अछि।

पुष्यक तात्पर्य पूस (मास) होइछ।

आइसँ हम प्रतिदिन एहि पूस मासमे सर्वयज्ञ तथा सर्वदानक फलप्राप्तिक कामनाक हेतु कुब्जक फूलसँ भगवान शंकरक पूजा करब।

---

१ वृन्त पुष्प।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माघादौ कुन्दकुसुमादिपूजनस्य—

माघे तु कुन्दकुसुमैर्मरुवकेण च फाल्गुने ।
शतपत्रैस्तथा चैत्रे यः कुर्य्यादर्च्चनं शिवे ॥
लभते सर्वयज्ञानां सर्वदानफलं तथा ॥५०७॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् माघे सर्वदानफलप्राप्तिकामनया कुन्दकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

फल्गुने मरुवकस्य—

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् फाल्गुने सर्वयशज्ञर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनया मरुवकैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

चैत्रे शतपत्रिकापूजनस्य—

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् चैत्रे मासि सर्वयसर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनया शतपत्रिकापुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

लिङ्गपुराणे चैत्रे दमनकपूजायाम्—

दमनस्य च पत्रैश्च मञ्जर्य्या च विशेषतः ।
मधुमासे तु सम्पूज्य माञ्चैव सुरसुन्दरि ॥
सर्वदेवपदं भुक्त्वा प्राप्नोति शिवरूपताम् ॥५०८॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् मधुमासे सर्वदेवपदभुक्तिपूर्वकशिवरूपत्वप्राप्तिकामनया दमनकपत्रैर्दमनकमञ्जरीभिर्वा भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे श्रावणमासीयैकाहारपूजायाम्—

श्रावणस्य [च] मासस्य एकाहारेण यो नरः ।
अर्चयेत् करवीरेण गोसहस्रफलं लभेत्[1] ॥५०९॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् श्रावणे मासि गोसहस्रदानजन्यफलसमफलं-प्राप्तिकामः करवीरपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भाद्रमासीयापामार्गपूजायाम्—

भाद्रपदस्य मासस्य अपामार्गेण योऽर्च्चयेत् ।
हंसध्वजसमायुक्तविमानेन स गच्छति[2] ॥५१०॥

अद्यादि अस्मिन् भाद्रपदे मासि प्रत्यहं हंसध्वजसमायुक्तविमानकरणकगति-प्राप्तिकामोऽपामार्गेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ५ ।
२ तत्रैव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माघ आदि मासमे कुन्द आदि फूलसँ पूजनक फल—

माघ मासमे कुन्द पुष्प, फागुनमे मरुवक, चैतमे शतपत्र सभक द्वारा जे शिवार्चन करैत अछि, ओ सभ यज्ञ तथा सभ दानक फल प्राप्त करैत अछि ॥५०७॥

आइसँ हम प्रतिदिन एहि माघ मासमे सर्वयज्ञ, सर्वदानक फल प्राप्तिक कामनासँ कुन्द कुसुम सभसँ भगवान शिवक पूजन करब।

फागुन मासमे मरुवक (मरुवा)क संकल्प—

आइसँ हम प्रतिदिन एहि फागुन मासमे सर्वयज्ञ, सर्वदानक फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ एहि मरुवक सभसँ भगवान शिवक पूजन करब।

चैतमे शतपत्रिका पूजनक संकल्प—

आइसँ हम प्रतिदिन एहि चैत मासमे सभ यज्ञ तथा सभ दानक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ शतपत्रिका फूल सभसँ भगवान शंकरक पूजा करब।

लिंगपुराणमे चैत मासमे दमनक कुन्द पुष्प (Many flowered Jasmine)सँ पूजाक फल—

हे सुरसुन्दरि। जे व्यक्ति दमनकक पातसँ आ' विशेष कय ओकर मज्जरसँ चैत मासमे हमर (शिवक) अर्चना करैत अछि, ओ सभ देवताक पदकेँ भोगि शिवस्वरूप भय जाइत अछि ॥५०८॥

आइसँ हम प्रतिदिन एहि मधुमासमे सभ देवताक पदकेँ भोगि क' आ शिवस्वरूपक प्राप्तिक कामनासँ दमनकक पात आ मज्जर सभसँ भगवान शिवक अर्चना करब।

शिवधर्ममे साओन मासमे एकाहार रहि पूजनक फल—

जे व्यक्ति साओन मासमे एकाहारपूर्वक करवीर पुष्पसँ (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ सहस्र गो-दानक फल प्राप्त करैत अछि ॥५०९॥

आइसँ हम एकाहार रहि प्रतिदिन श्रावण मासमे सहस्र गो दानजन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ करवीर फूल द्वारा भगवान शिवक पूजा करब।

भादव मासमे अपामार्ग[1] (चिरचिरी)सँ पूजनक फल—

भादव मासमे अपामार्ग चिरचिरी)सँ जे (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ हंसध्वजसँ युक्त विमान द्वारा (स्वर्ग) जाइत अछि ॥५१०॥

आइसँ हम एहि भादवमासमे प्रतिदिन हंसध्वजसँ युक्त विमान द्वारा गमन प्राप्तिक कामना हेतु अपामार्ग (फूल)सँ भगवान शिवक पूजा करब।

---

१ [अप+मृज्+घञ् कुत्वदीर्घौ] चिचिड़ा, एक बूटी।, चिरचिरी; Chyranthesas pera.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आश्विनमासीयार्कपूजायाम्—

आश्विनस्य तु मासस्य अवर्कपुष्पेण योऽर्च्चयेत् ।
मयूरध्वजयुक्तेन विमानेन स गच्छति[1] ॥५११॥

अद्याद्यस्मिन्नाश्विने मयूरध्वजयुक्तविमानकरणकगतिप्राप्तिकामोऽर्क्कपुष्पै-रहरहर्भगवतः शिवस्य पूजामहंकरिष्ये ।

कार्त्तिकमासीयक्षीरस्नानोत्तरजातीपुष्पपूजनस्य—

कार्त्तिकस्य तु मासस्य यो मां क्षीरेण स्नापयेत् ।
अर्च्चयेज्जातिपुष्पैः शिवं पश्येन्निरञ्जनम्[2] ॥५११क॥

अद्याद्यस्मिन् कार्त्तिके प्रत्यहं निरञ्जनशिवदर्शनकामः क्षीरस्नानोत्तरं जातीपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

मार्गशीर्षमासीयबकपुष्पपूजायाम्—

मार्गशीर्षस्य मासस्य बकपुष्पेण योऽर्च्चयेत् ।
स त्रैलोक्यमतिक्रम्य यत्राहं तत्र गच्छति[3] ॥५१२॥

अद्याद्यस्मिन् मार्गशीर्षे त्रैलोक्यातिक्रमणोत्तरशिवाधिष्ठितदेशगमनकामो बकपुष्पैरहरहर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पौषमासीयधुस्तूरकबकपुष्पार्च्चनस्य—

पौषमासे तु सम्प्राप्ते धत्तूरेण तु योऽर्च्चयेत् ।
स तुष्टेन मया देवि लभते परमं पदम्[4] ॥५१३॥

अद्याद्यस्मिन् पौषे मासि शिवतुष्टिहेतुकपरमपदप्राप्तिकामो धुस्तूरकपुष्पै-रहरहर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

माघमासीयबिल्वपत्रपूजायाम्—

माघस्य तु मासस्य स्नापयेद् गन्धवारिणा ।
अर्च्चयेद्बिल्वपत्रेण इन्द्रस्यार्द्धासनं लभेत्[5] ॥५१४॥

अद्यादि अस्मिन् माघे मासि इन्द्रस्यार्द्धासनप्राप्तिकामो गन्धतोयस्नपनोत्तर-महरहर्बिल्वपत्रैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तमणि पृ० ५ ।
२ तत्रैव ।
३ तत्रैव १०६ ।
४ तत्रैव ।
५ तत्रैव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आश्विन मासमे अर्क (आक) पुष्पसँ पूजाक फल—

आश्विन मासमे आक पुष्पसँ जे (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ मयूरध्वजसँ युक्त विमान द्वारा जाइत अछि ॥५११॥

आइसँ हम एहि आसिन मासमे प्रतिदिन मयूरध्वजसँ युक्त विमान पर चढ़ि कय चलबाक इच्छासँ आकक पुष्पसँ भगवान शिवक पूजन करब।

कार्तिक मासमे दूधसँ स्नानोत्तर जाती पुष्पसँ पूजनक फल—

जे व्यक्ति कार्त्तिक मासभरि दूधसँ हमरा स्नान कराय जाती फूलसँ पूजा करैत अछि, ओ निरंजन शिवक दर्शन करैत अछि ॥५११क॥

आइसँ हम एहि कार्त्तिक मासमे प्रतिदिन निरंजन शिवक दर्शनक कामनासँ दूधसँ स्नान कराय जाती फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

भरि अगहन मास बक पुष्पसँ पूजनक फल—

अगहन मास भरि वक पुष्पसँ जे शिवक पूजा करैत अछि, ओ तीनू लोकक अतिक्रमण कय जतय हम छी अर्थात् शिवस्थान प्राप्त करैत अछि ॥५१२॥

आइसँ हम एहि मार्गशीर्ष मासमे अर्थात् अगहन मासमे त्रैलोक्यक अतिक्रमण-पूर्वक शिवसँ अधिष्ठित देश अर्थात् शिवलोक-गमनक कामनासँ बक पुष्पसँ प्रतिदिन भगवान शिवक पूजा करब।

पूस मासमे धथूर पुष्पसँ पूजनक फल—

हे देवि, पूस मास अयलापर धथूर फूलसँ जे (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ हमर प्रसन्नता द्वारा परम पद प्राप्त करैत अछि ॥५१३॥

आइसँ हम एहि पूस मासमे प्रतिदिन शिवक तुष्टिक हेतु परमपद-प्राप्तिक कामनासँ धथूर फूलसँ प्रतिदिन भगवान महादेवक पूजा करब।

माघ मासमे बिल्वपत्र (बेलपात) द्वारा पूजनक फल—

माघ मासमे सुगन्धित जलसँ स्नान कराय वेलपत्रसँ जे (शिवक) पूजा करैत अछि, ओ इन्द्रासनक अर्द्धभाग प्राप्त करैत अछि ॥५१४॥

आइसँ हम एहि माघ मासमे प्रतिदिन इन्द्रासनक अर्द्ध भाग प्राप्तिक कामनासँ सुगन्धित जलसँ स्नान कराय वेलपत्रसँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फाल्गुनमासीयद्रोणपुष्पार्च्चनस्य—

फाल्गुनस्य तु मासस्य द्रोणपुष्पैश्च योऽर्च्चयेत् ।
कृष्णागुरुं दहेद्धूपं सघृतं वापि गुग्गुलुम् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो वाजपेयफलं लभेत् ॥५१५॥

अद्याद्यस्मिन् फाल्गुने मासि प्रत्यहं सर्वपापविनिर्मुक्तत्ववाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया कृष्णागुरुधूपदानोत्तरं सघृतगुग्गुलुधूपदानोत्तरं वा द्रोणपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये—

चैत्रमासीयनृत्यगीताभ्यां गन्धपुष्पपूजने ।

चैत्रिकस्य तु मासस्य गन्धपुष्पैः प्रपूजयेत् । ।
आराध्य नृत्यगीताभ्यां लभते स्वर्णकानि सः[1] ॥५१६॥

अद्याद्यस्मिन् चैत्रमासि बहुस्वर्णप्राप्तिकामो नृत्यगीताभ्यामाराध्य गन्धपुष्पैर्भगवतः शङ्करस्यारहरहः पूजामहङ्करिष्ये ।

वैशाखमासीयघृतस्नानान्तरशुक्लमन्दारपूजनस्य—

वैशाखस्य तु मासस्य घृतेन स्नापयेत्सदा ।
अर्च्चयेच्छुक्लमन्दारैरश्वमेधफलं लभेत् ॥५१७॥

अद्याद्यस्मिन् वैशाखमासि अश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽहरहर्घृतस्नानोत्तरं शुक्लमन्दारकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

ज्यैष्ठमासीयदधिस्नानान्तरपद्मपुष्पार्च्चनस्य—

ज्यैष्ठस्याप्यथ मासस्य यो दध्ना स्नापयेच्छिवम् ।
अर्च्चयेत् पद्मपुष्पैस्तु स गच्छेत् परमां गतिम् ॥५१८

अद्यास्मिन् ज्यैष्ठे मासि परमगतिप्राप्तिकामोऽहरहर्दधिस्नपनोत्तरं पद्मपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजनमहङ्करिष्ये ।

भविष्ये—

स्वयमुत्पाद्य[2] पुष्पाणि यः स्वयं पूजयेच्छिवम् ।
तानि साक्षात् प्रगृह्णाति तद्भक्त्या सततं शिवः ॥५१९॥

---

१ पुष्पचिन्तामणि, पृष्ठ ६ ।
२ ने० पा० स्वय उत्पाद्य ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फागुन मासमे द्रोणक फूलसँ पूजनक फल—

जे व्यक्ति फागुन मासमे द्रोणक फूल सभसँ पूजा करैत अछि आ' कारी अगुरु आ' घृत सहित गुग्गुल जराय धूप दैत अछि ओ सभ पापसँ मुक्ति पावि वाजपेय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥५१५॥

आइसँ हम सभ पापसँ मुक्ति तथा वाजपेययज्ञजन्य फलक समान फल प्राप्तिक हेतु फागुन मासमे प्रत्येक दिन कारी अगुरु तथा घृतयुक्त गुग्गुलक धूप दय द्रोण फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

चैत मासमे नृत्य एवं गीतक संग गन्ध तथा पुष्पसँ पूजनक फल :—

चैत मासमे नृत्य एवं गीतसँ आराधना कय गन्ध तथा पुष्पसँ जे पूजा करैत अछि ओ प्रचुर स्वर्ण प्राप्त करैत अछि ॥५१६॥

आइ हम एहि चैत मासमे पर्याप्त स्वर्ण प्राप्तिक कामनासँ नृत्य-गीतादिसँ आराधना कय गन्ध तथा पुष्प सभसँ भगवान शंकरक प्रतिदिन पूजा करब ।

वैशाख मासमे घृत-स्नपनक उपरान्त शुक्ल मन्दारक फूलसँ पूजनक फल—

जे वैशाख मासमे प्रतिदिन घृतसँ (शिवकेँ) स्नान कराय शुक्ल मन्दारक फूलसँ पूजा करैत अछि, ओ अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥५१७॥

आइ हम एहि वैशाख मासमे प्रतिदिन अश्वमेध यज्ञसँ उत्पन्न फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ घृतस्नानोत्तर शुक्ल मन्दार फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

जेठ मासमे दधि-स्नपनपूर्वक पद्म पुष्पसँ पूजनक फल :—

जेठ मासमे जे दहीसँ स्नान करओलाक बाद कमलक फूलसँ पूजा करैत अछि ओ परमगति प्राप्त करैत अछि ॥५१८॥

आइ हम एहि जेठ मासमे परमगति प्राप्तिक कामनासँ दहीसँ स्नान करओलाक बाद पद्मपुष्प सभसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

भविष्यपुराणमे—

जे व्यक्ति स्वयं तोड़ल फूलसँ शिवक पूजा करैत अछि ओकरा भक्तिसँ भगवान शिव अत्यधिक प्रसन्न भय ओकर ओहि फूल सभकेँ सदा साक्षात् ग्रहण करैत छथिन ॥५१९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

उत्पाद्य[1] त्रोटयित्वा । साक्षात्प्रगृह्णाति अतिप्रीतया [2]गृह्णाति ।

अथ कामनाविशेषे

वुकार्च्चने—

वुकेन वरदो देवः ॥५२०॥

अद्य वरप्राप्तिकामो वुकेन शिवमहं पूजयिष्ये ।

करवीरपूजनस्य—

करवीरैर्धनप्रदः ॥५२१॥

अद्य धनप्राप्तिकामनया एभिः करवीरपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

अर्कपुष्पस्य—

अर्केण श्रियमन्विच्छेत् ॥५२२॥

अद्य श्रीप्राप्तिकामनया एभिरर्कपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

धुस्तूरकपुष्पस्य—

मोक्षं धुस्तूरकेण च ॥५२३॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामनयाऽनेन धत्तूरकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

रक्ताब्जपुष्पाणाम्—

रक्ताब्जैः प्राप्नुयाद्राज्यम् ॥५२४॥

अद्य राज्यप्राप्तिकामनया एतै रक्ताब्जपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

नीलोत्पलपुष्पाणाम्—

नीलोत्पलैर्भवेद्भोगो योऽर्च्चयेल्लिङ्गमुत्तमम्[3] ॥५२५॥

अद्य भोगप्राप्तिकाम एभिर्नीलोत्पलपुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

चम्पकपुष्पाणाम्—

चम्पकैः सकलान् कामान्[4] ॥५२६॥

अद्य सकलकामनावाप्तिकाम एभिश्चम्पकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ ने० पा०, उत्पाट्य ।
२ तत्रैव, अभिप्रीत्या ।
३ पुष्पचिन्तामणि पृष्ठ ११ ।
४ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ११ चम्पकैः सर्वकामानि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[विद्यापति]

'उत्पाद्य'क अर्थ थिक तोड़िक'। अपनहि तोड़िक' अनैत छथि आ' प्रीति-पूर्वक अनैत छथि।

आब कामना विशेषसँ फूल चढयबाक फल

वुकक फूलसँ पूजा करबाक फल—

वुकक फूलसँ पूजा कयला पर शिव (अभीष्ट) वर दैत छथिन ॥५२०॥

आइ हम वरप्राप्तिक कामनासँ वुकक फूलसँ शिवक पूजा करब।

करवीरसँ पूजा करवाक फल—

करवीर सभसँ पूजा कयला उत्तर शिव धन दैत छथिन ॥५२१॥

आइ धन-प्राप्तिक कामनासँ हम एहि करवीरक फूलसँ भगवान शंकरक पूजा करब।

आकसँ पूजा करबाक फल—

आकसँ पूजा कयलापर लक्ष्मीक प्राप्ति होइत अछि ॥५२२॥

आइ हम लक्ष्मीक प्राप्तिक हेतु एहि आकक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

धथूरक फूलसँ पूजाक फल—

धथूरसँ पूजा कयलापर मोक्ष प्राप्त होइत अछि ॥५२३॥

आइ हम मोक्ष-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक पूजा धथूरक फूलसँ करब।

लाल कमलसँ पूजाक फल—

लाल कमलसँ पूजन कयला उत्तर राज्य प्राप्त होइत अछि ॥५२४॥

आइ हम राज्य-प्राप्तिक कामनासँ एहि लाल कमल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

नील कमलसँ पूजाक फल—

नील कमलसँ लिंगक पूजा कयलासँ भोगक प्राप्ति होइत अछि ॥५२५॥

आइ हम भोग-प्राप्तिक कामनासँ एहि नील कमलक फूल सभसँ भगवान शिवक लिंगक पूजा करब।

चम्पक फूलसँ पूजाक फल—

चम्पक (फूलसँ पूजा कयला)सँ सकल कामनाक पूर्त्ति होइत अछि ॥५२६॥

आइ हम सभ मनोरथक प्राप्तिक कामनासँ एहि चम्पक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुन्नागपुष्पाणाम्—

पुन्नागैर्नागकेसरैः ।
ईप्सितं लभते कामं तथा केसरदामभिः[१] ॥५२७॥

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकाम एभिः पुन्नागपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

पुन्नागः पुनाल इतिप्रसिद्धः ।

एवं नागकेसर-वकुलमालार्च्चनेप्येतदेव फलम् ।

स्थू[२]लचम्पकपुष्पाणाम्—

चम्पकैः स्थूल[३]जैर्लभम् ॥५२७क॥

अद्य लाभकामः स्थूल[४]चम्पकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

वारुणीपुष्पे—

सौभाग्याय च वारुणी[५] ॥५२८॥

अद्य सौभाग्यप्राप्तिकाम एभिर्वारुणीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

जातीपुष्पाणाम्—

कन्याकामश्च जातीभिर्योर्च्चयेत् परमेश्वरम् ।
स लभेदुत्तमां कन्यां षड्भिर्मासैर्न संशयः[६] ॥५२९॥

अद्य षण्मासाभ्यन्तरे उत्तमकन्याप्राप्तिकाम एभिर्जातीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहमर्चयिष्ये ।

मल्लिकापुष्पेषु—

मल्लिकाभिर्ज्ञानकामा येऽर्च्चयन्ति महेश्वरम् ।
लभते परमं ज्ञानं संसारभयनाशनम्[७] ॥५३०॥

अद्य संसारभयाभावहेतुपरमज्ञानकामो मल्लिकापुष्पैर्भगवन्तं महेश्वरमहमर्च्चयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि पृ० ११, ईप्सिताँल्लभते कामान् तथा केसरदामकैः ॥८९॥
२ ने० पा० स्थल ।
३ तत्रैव, स्थल ।
४ तत्रैव, स्थल ।
५ तत्रैव, पृ० ११ ।
६ तत्रैव ।
७ तत्रैव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुन्नाग फूलसँ पूजाक फल—

पुन्नाग पुष्पसँ वा तकर मालासँ पूजा कयलापर ईप्सित फलक प्राप्ति होइत अछि ॥५२७॥

आइ हम ईप्सित अर्थक प्राप्तिक कामनासँ एहि पुन्नाग पुष्प सभ भगवान शिवक पूजा करब ।

[विद्यापति]

पुन्नाग पुनाल नामसँ प्रसिद्ध अछि ।

एहि तरहेँ नागकेसर एवं वकुल मालासँ पूजनक सेहो यैह फल अछि ।

स्थूल चम्पक (उज्जर चम्पा) फूलसँ पूजाक फल—

स्थूल चम्पकसँ पूजन कयलासँ लाभ होइत अछि ॥५२७क॥

आइ हम लाभक कामनासँ स्थूल चम्पकक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

वारुणी पुष्पसँ पूजाक फल—

वारुणी फूलसँ पूजा कयलासँ सौभाग्य प्राप्त होइत अछि ।५।२८॥

आइ हम सौभाग्य-प्राप्तिक कामनासँ एहि वारुणी फूल (दूबि) सभसँ भगवान शिवक पूजा करब ।

चमेलीक फूलसँ पूजनक फल—

कन्याक कामनासँ जे जाती पुष्पसँ परमेश्वर (शिव)क अर्चना करैत अछि ओ ६ मासक अभ्यन्तर उत्तम कन्या प्राप्त करैत अछि । एहिमे संशय नहि ॥५२९॥

आइ हम छओ मासक अभ्यन्तर उत्तम कन्या प्राप्तिक कामनासँ एहि जाती फूल सभसँ शिवक पूजा करब ।

मल्लिका पुष्पसँ पूजनक फल—

जे लोकनि ज्ञानक कामनासँ मल्लिका पुष्पसँ महेश्वरक अर्चना करैत छथि ओ लोकनि संसारक भयक नाश कय परम ज्ञानकेँ प्राप्त करैत छथि ॥५३०॥

आइ हम संसारक भयक अभावक हेतु आ' परम ज्ञानक कामनासँ भगवान महेश्वरक पूजा मल्लिका फूलसँ करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुन्दपुष्पे—

पुत्रकामैस्तु कुन्दैर्यः पूजयेत शुचिर्न्नरः ।
स लभेत बहून् पुत्रान् बलयुक्तांश्चिरायुषः[1] ॥५३१॥

अद्य बलवच्चिरजीविबहुपुत्रप्राप्तिकाम एभिः कुन्दकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कुशपुष्पेषु—

आरोग्यं कुशपुष्पैस्तु[2] ॥५३२॥

अद्यारोग्यप्राप्तिकाम एभिः कुशपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कर्णिकारपुष्पेषु—

कर्णिकारैर्द्धनं विद्यात[3] ॥५३३॥

अद्य धनलाभकाम एभिः कर्णिकारकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

द्रोणपुष्पिकायाम्—

सस्यार्थं द्रोणपुष्पिका[4] ॥५३४॥

अद्य सस्यप्राप्तिकामनया द्रोणपुष्पिकया भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कदम्बपुष्पेषु—

कदम्बैः शत्रुनाशाय[5] ॥५३५॥

अद्य शत्रुनाशकाम एभिः कदम्बपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

माधवीपुष्पेषु—

व्याधिनाशोऽतिमुक्तकैः ॥५३६॥

अद्य व्याधिनाशकाम एभिरतिमुक्तकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

सिन्धुवारपुष्पेषु—

सिन्धुवारस्य पुष्पेण बद्धो मुच्येत बन्धनात्[6] ॥५३७॥

अद्य बन्धनमोक्षप्राप्तिकामोऽनेन सिन्धुवारपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ११—लभते बहुपुत्रन्तु धनवन्तंचिरायुषम् ।
२ तत्रैव ।
३ तत्रैव ।
४ तत्रैव वश्यार्थे द्रोणपुष्पकम् ।
५ तत्रैव ।
६ तत्रैव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुन्द पुष्पसँ पूजाक फल—

जे व्यक्ति पुत्रक कामनासँ पवित्र भय कुन्दक फूल सभसँ महेश्वरक पूजा करैत अछि, ओ बलवान तथा दीर्घजीवी बहुत पुत्रकें प्राप्त करैत अछि ॥५३१॥

आइ हम बलवान आ' दीर्घजीवी अनेक पुत्रक प्राप्तिक कामनासँ एहि कुन्दक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

कुशक फूलसँ पूजनक फल—

कुशक फूलसँ पूजा कयला उत्तर आरोग्य प्राप्त होइत अछि ॥५३२॥

आइ हम आरोग्य प्राप्तिक कामनासँ एहि कुशक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

कर्णिकार (कनैल) फूलसँ पूजाक फल—

कर्णिकार (कनैल) पुष्प द्वारा पूजनसँ धनलाभ होइत अछि ॥५३३॥

आइ हम धन-लाभक कामनासँ कर्णिकार (कनैल) फूल सभक द्वारा भगवान शंकरक पूजा करब।

द्रोणपुष्पसँ पूजनक फल—

द्रोण फूलस पूजा कयला पर धान्यक लाभ होइत अछि ॥५३४॥

आइ हम शस्य-प्राप्तिक कामनासँ एहि द्रोण पुष्प सभसँ भगवान शंकरक पूजा करब।

कदम्बक फूलसँ पूजनक फलः—

कदम्बक फूलसँ पूजा कयला उत्तर शत्रुक नाश होइत अछि ॥५३५॥

आइ हम शत्रु-नाशक कामनासँ एहि कदम्बक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

माधवी पुष्पसँ पूजनक फलः—

माधवी पुष्पसँ व्याधिक नाश होइत अछि ॥५३६॥

आइ हम व्याधि-नाशक कामनासँ एहि माधवी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

सिन्धुवार फूलसँ पूजनक फलः—

सिन्धुवार पुष्प द्वारा पूजन कयलासँ बान्हल लोक बन्धनसँ मुक्त भय जाइत अछि ॥५३७॥

आइ हम बन्धनसँ मोक्ष-प्राप्तिक कामनासँ एहि सिन्धुवार फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अङ्कोठपुष्पेषु—

अङ्कोठसितवर्णानि[1] निर्गन्ध[2]कुसुमानि च ।
एतानि शत्रुनाशाय देवदेवाय कल्पयेत् ॥५३८॥

अद्य शत्रुविनाशकाम एभिरंकोठपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पीतिकापुष्पेषु—

पीतिकानि तु पुष्ट्यर्थं पुष्पाणि विजयाय च ।
नित्यमेव तु यो दद्यात् सर्वकामानवाप्नुयात् ॥५३९॥

अद्य पुष्टिविजयकाम एभिः पीतिकापुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

एभिरेव नित्यपूजायाम् ।

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकाम एभिः पीतिकापुष्पैर्यावज्जीवं प्रत्यहं भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

जलपुष्पकेषु—

जलजानि तु पुष्पाणि वश्यार्थं संप्रयोजयेत् ।
नीलरक्तानि यान्येव तानि वश्यकराणि च ॥५४०॥

अद्यामुकस्यात्मीयवशीकरणकाम एभिर्जलपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

एवं नीलपुष्परक्तपुष्पान्यतमपुष्पेऽप्ययमेव कामना ।

बिल्वपत्रे—

सर्वकामप्रदं बिल्वं दारिद्र्यस्य विनाशनम् ।
बिल्वपत्रात्परं नास्ति येन तुष्यति शङ्करः ॥५४१॥

अद्य सर्वकामावाप्तिदारिद्र्याभावस्वविषयकशङ्करप्रीतिकाम एभिर्बिल्वपत्रैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

दमनके—

विजयार्थं दमनकं योजयेद्द्विजयेच्छया ॥५४२॥

अद्य विजयप्राप्तिकाम एभिर्दमनकैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि पृ० ११ अंकटासितपर्णानि ।
२ ने० पा०, सुगन्धि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अङ्कोठ पुष्पसँ पूजनक फलः—

अङ्कोठ सित (श्वेत, उज्जर) वर्णक निर्गन्ध अर्थात् विना गन्धक फूल थिक। ई फूल शत्रुनाशक हेतु महादेव केँ अर्पित करी ॥५३८॥

आइ हम शत्रु-विनाशक कामनासँ अंकोठ फूल सभसँ भगवान शिवक अर्चना करब।

पीतिका पुष्पसँ पूजनक फलः —

पीतिका पुष्पसँ पुष्टि आ' विजय प्राप्त होइत अछि। ई फूल जे प्रत्येक दिन (शिवकेँ) दैत अछि, ओ सभ कामनाकेँ प्राप्त करैत अछि ॥५३९॥

आइ हम पुष्टि आ' विजय प्राप्तिक कामनासँ एहि पीतिका पुष्प सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

एही फूलसँ नित्य पूजाक संकल्प—

आइ हम सभ मनोरथक प्राप्तिक कामनासँ एहि पीतिका फूल सभसँ आजीवन प्रतिदिन भगवान शिवक पूजा करब।

जलमे होमयवाला पुष्पक फल--

वशीकरणक हेतु जल में उत्पन्न फूलक प्रयोग करक चाही। नील एवं रक्त वर्णक जे फूल अछि, ओ वशीकरणमे उपयोज्य थिक ॥५४०॥

आइ हम आत्मीय व्यक्तिक वशीकरणक कामना हेतु एहि जलपुष्प सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

एहिना नीलोत्पल, नील अथवा रक्त फूल सभमेसँ कोनो एकसँ पूजा करबामे यैह फल होइत अछि।

बेलपातसँ पूजाक फल—

बेलपात सभ कामनाके देयवला तथा दरिद्रता के नाश करयवला अछि। बेलपत्र छोड़ि दोसर ओहन कोनो वस्तु नहि अछि, जाहिसँ शंकर संतुष्ट होथि ॥५४१॥

आइ हम सभ कामनाक प्राप्ति, दरिद्रताक नाशक हेतु आ शंकरक प्रीतिक कामनासँ एहि बेलपात सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

दमनक फूलसँ पूजाक फल –

जे विजयक इच्छासँ दमनक फूलसँ पूजा करैत अछि, ओकरा विजय प्राप्त होइत छैक ॥५४२॥

आइ हम विजय प्राप्तिक इच्छासँ एहि दमनक फूल सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गाङ्गेयीपुष्पेषु—

गाङ्गेयी सुखदा नित्यम् ॥५४३॥

अद्य नित्यसुखप्राप्तिकामोगाङ्गेयीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये[1]।

जम्बुक्याम्—

जम्बुकी सर्वकामदा ॥५४४॥

अद्य सर्वकामावाप्तिकामनयाऽनया जम्बुक्या भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

तिल[2] पुष्पेषु—

तिलको धनकामाय ॥५४५॥

अद्य धनप्राप्तिकामनयाऽनेन तिलपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

बन्धुल्याम्[3]—

गोकामाय च बन्धुली[4] ॥५४६॥

अद्य गोप्राप्तिकामनयाऽनया बन्धुल्या भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

तगरपुष्पेषु—

सौख्यदस्तगरोज्ञेयः ॥५४७॥

अद्य सौख्यप्राप्तिकामनयाऽनेन तगरपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

किङ्किरातपुष्पस्य—

किङ्किरातश्च कामदः ॥५४८॥

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन किङ्किरातपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

फलिनीपुष्पस्य।

आरोग्यञ्च धनञ्चैव फलिनी कामदा स्मृता ॥५४९॥

अद्यारोग्यधनेप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन फलिनीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

---

१ ने० पा० सँ प्राप्त।

२ तत्रैव, तिलकपुष्पेषु।

३ तत्रैव, वङ्कुल्याम्, पुष्पचिन्तामणि पृ० १२, वंकुली।

४ तत्रैव, वंङ्कुली।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गांगेयीक फूलसँ पूजाक फल—

गांगेयी फूल नित्य सुख देमयवला होइत अछि।।५४३।।

आइ हम नित्य सुख प्राप्त करबाक हेतु गांगेयीक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

जम्वुकी फूलसँ पूजाक फल —

जम्बुकी (पुष्प)सँ पूजा सभ काज के देयवाली होइत अछि ।।५४४।।

आइ हम सभ उद्देश्यक प्राप्तिक इच्छासँ एहि जम्बुकी फूलसँ पूजा करव।

तिलक फूलसँ पूजाक फल—

धनक कामनासँ तिलक फूलसँ पूजा करी ।।५४५।।

आइ हम धन-प्राप्तिक हेतु एहि तिलक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

बन्धुली फूलसँ पूजाक फल—

गोधन-प्राप्तिक लेल बन्धुली फूलसँ पूजा करी ।।५४६।।

आइ हम गाय-प्राप्तिक कामनासँ एहि बन्धुली फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

तगर पुष्पसँ पूजाक फल —

सौख्य (सुख, आनन्द, कल्याण) देयवला तगर पुष्प होइत अछि ।।५४७।।

आइ हम सौख्य (सुख) प्राप्तिक कामनासँ एहि तगर फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

किंकरात[1] (अशोक) फूलसँ पूजाक फल—

कामनाकेँ देवयवला किंकिरात फूल अछि ।।५४८।।

आइ हम ईप्सित फल प्राप्तिक कामनासँ एहि किंकिरात (अशोक) फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

फलिनीक[2] फूलसँ पूजाक फल—

फलिनीक फूलसँ पूजा कयने आरोग्य, धन तथा ईप्सित फलक प्राप्ति होइत अछि ।।५४९ ।।

आइ हम आरोग्य, धन तथा ईप्सित फल प्राप्तिक हेतु एहि फलिनी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

---

१ कटसरैया।

२ [फलिन्+ङीप, फल्+अच+ङीप्] प्रियंगुलता; अग्निशिखा वृक्ष; इलाइची; कविलोकनिक द्वारा एकरो आमक पत्नी कहल गेल अछि। रघुवंश, ८,६१।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फलिनीप्रियङ्गुः[1]।

शालपुष्पे —

शालः[2] प्रियङ्करश्चैव ।।५५०:।

अद्य प्रियप्राप्तिकामनयाऽनेन शालपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

शालः शङ्कुतरुपुनष्वम्

किंशुकपुष्पेषु—

किंशुकादायुराप्नुयात् ।।५५१।।

अद्यायुःप्राप्तिकामनयाऽनेन किंशुकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

कुटजपुष्पेषु—

हस्त्यश्वपशुकामस्तु कुटजैरर्च्चयेच्छिवम् ।।५५२।।

अद्य हस्त्यश्वपशुप्राप्तिकामनया एभिः कुटजपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

कर्पूरदमनकेषु।

कर्पूरदमनं दद्याच्छत्रूणाञ्च विनाशने ।।५५३।।

अद्य बहुशत्रुविनाशकामनयाऽनेन कर्पूरदमनकेन भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

श्यामापुष्पे—

श्यामा चारोग्यदा नित्यं जवापुष्पं तथैव च ।।५५४।।

उद्य नित्यमारोग्यप्राप्तिकामोऽनेन श्यामापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

जवापुष्पेष्वेतदेव फलम्।

---

१. [प्रिय+गम्+कु] एक लताक नाम कहल जाइत अछि जे ई लता स्त्रीगणक स्पर्श मात्रसँ मुकुलित भय जाइत अछि। मातंग-लीला, ३,९]

२ [शल्+घञ्] रघुवंश, १,१३ एवं १,६८, शिशुपालवध, ३,४०।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फलिनीक तात्पर्य प्रियङ्गु होइत अछि।

शाल फूलसँ पूजाक फल—

शाल फूलसँ पूजा कयलाक उपरान्त प्रिय वस्तुक प्राप्ति होइत अछि ॥५५०॥

आइ हम प्रिय प्राप्तिक कामनासँ एहि शाल पुष्पसँ भगवान शिवक पूजा करब।

शालक पुष्पक तात्पर्य शंकु वृक्षक फूल होइछ।

किंशुक पुष्पसँ पूजाक फल—

किंशुक फूलसँ आयु प्राप्त करी ॥५५१॥

आइ हम आयु प्राप्तिक कामनासँ एहि किंशुक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

कुटज फूलसँ पूजाक फल—

हाथी, घोड़ा आ पशुक कामना राखयवला व्यक्ति कुटज फूलसँ शिवक पूजा करय। ॥५५२॥

आइ हम हाथी, घोड़ा आ' पशु-प्राप्तिक कामनासँ एहि कुटज फूल सभक द्वारा भगवान शिवक अर्चना करब।

कर्पूरदमनकसँ पूजाक फल—

कर्पूरदमनक फूल शत्रुक विनाशक हेतु समर्पित करय ॥५५३॥

आइ हम बहुत शत्रुक विनाशक कामनासँ एहि कर्पूरदमनक सभसँ भगवान शिवक पूजा करब।

श्यामा पुष्पक विषयमे।

श्यामा फूल, नित्य (सदा) आरोग्यकेँ देयवाला अछि आ' जवा फूलक सेहो यैह फल अछि ॥५५४॥

आइ हम नित्य आरोग्य प्राप्तिक कामनासँ एहि श्यामा फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

जवा फूलसँ पूजाक सेहो वैह फल होइत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुरुण्टकपुष्पे—

कुरुण्टकञ्च वश्यार्थे नित्यं लिङ्गस्य पूजनात् ।। ५५५ ।।

अद्यामुकस्यात्मीयनित्यवशीकरणप्राप्तिकामनयाऽनेन कुरुण्टकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कुरुण्टकं पीतझिण्टी[1]रण्टीपुष्पम् ।

यूथिका[2]पुष्पे—

विद्वेषे[3] यूथिका योज्या ।।५५६।।

अद्यामुकामुकयोः परस्परविद्वेषकामनया अनेन यूथिकापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

केतकीपुष्पे—

केतकी शत्रुमारणी ।।५५७।।

अद्य शत्रुमारणकामनयाऽनेन केतकीकुसुमेन भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

व्याघ्रीपुष्पे—

व्याघ्री च कामदा प्रोक्ता ।।५५८।।

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन व्याघ्रीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

बालकपुष्पे—

बालकेनार्चयेद्देवं बालकायुश्च वर्द्धते ।।५५९।।

अद्य बालायुर्वृद्धिकामनयाऽनेन बालकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

ग्रन्थिकापुष्पेण—

ग्रन्थिका सुखदा नित्यम् ।।५६०।।

अद्य नित्यवत् सुखप्राप्तिकामनयाऽनेन ग्रन्थिकापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ ने० पा०, पीतसिण्ठीपुष्पम् ।

२ [यूथं पुष्पवृन्दमस्ति अस्याः— यूथ + ठन् + टाप्, यूथ + अच् + ङीप्] एक प्रकारक चमेली ।

३ मूले—विद्योषा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुरुण्टक पुष्पक विषयमे—

वशीकरणक हेतु कुरुण्टक फूलक प्रयोग नित्य लिंगक पूजामे करबाक थिक ॥५५५॥

आइ हम अमुक आत्मीयक नित्य वशीकरण हेतु एहि कुरुण्टक फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

कुरुण्टकक अर्थ पीतझिरण्टी पुष्प अछि।

यूथिका (जूही) फूलक विषयमे—

परस्पर विद्वेषक हेतु यूथिकासँ पूजन करय ॥५५६॥

आइ हम अमुक-अमुकमे परस्पर विद्वेषक कामना हेतु एहि यूथिका (जूही फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

केतकी फूलक विषय मे—

केतकी फूल शत्रुकेँ मारयवला होइछ ॥५५७॥

आइ हम शत्रुमारणक कामनासँ एहि केतकी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

व्याघ्री फूलक विषय मे—

व्याघ्री (कंटकारी फूल)केँ कामदा कहल गेल अछि ॥५५८॥

आइ हम ईप्सित कामनाक प्राप्तिक हेतु एहि व्याघ्री फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

बालक फूलक विषयमे—

बालक सभक आयुकेँ बढ़यवाक हेतु बालक फूलसँ शिवक पूजा करय ॥५५९॥

आइ हम बालकक आयु-वृद्धिक कामनासँ बालक फूलक द्वारा भगवान शिवक पूजा करब।

ग्रन्थिका फूलक विषयमे—

ग्रन्थिका (फूल) नित्य सुख देयवला होइत अछि ॥५६०॥

आइ हम नित्य सुख प्राप्तिक कामनासँ एहि ग्रन्थिका फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डिम्बाक्षीपुष्पे—

डिम्बाक्षी व्याधिनाशार्थमश्वकर्णस्तथैव च ॥५६१॥

अद्य व्याधिनाशकामनयाऽनेन डिम्बाक्षीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

जयन्तीपुष्पे—

जयन्ती जयकामाय श्वेता च गिरिकर्णिका ॥५६२॥

अद्य जयप्राप्तिकामनयाऽनेन जयन्तीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

श्वेतापराजितापुष्पेप्येतदेव फलम्।

निम्बपुष्पेषु—

विद्वेषोच्चाटनार्थेषु निम्बपुष्पाणि योजयेत् ॥५६३॥

अद्यामुककर्त्तृकामुकविषयकविद्वेषकामनयाऽमुकोच्चाटनकामनया वा एभिर्निम्बपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

भण्टी[1]पुष्पे—

भण्टिकाकर्षणे योज्या मदयन्ती पुनः पुनः ॥५६४॥

अद्यामुकदेशादमुकस्याकर्षणकामनयाऽनेन भण्टीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये।

मदयन्तिकापुष्पेपीयमेव कामना।

हस्तीपुष्पीपुष्पे—

हस्तिपुष्पीरुद्रजटी[2] हन्ति सर्वमुपद्रवम् ।
शतपुष्पञ्च यत् पुष्पं कोकिलाक्षं तथैव च ॥५६५॥

अद्य सर्वोपद्रवाभावकामोऽनेन हस्तिपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

एवमितरेष्वपीदमेव फलम्।

१ ने० पाठ, भण्टिका।
२ तत्रैव, वज्रजटी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डिम्बाक्षी फूलक विषयमे—

डिम्बाक्षी आ' अश्वकर्णक फूल व्याधिक नाश करवाक हेतु होइत अछि ॥५६१॥

आइ हम व्याधि-नाशक कामनासँ एहि डिम्बाक्षी (वा अश्वकर्णक) फूलसँ भगवान शिवक पूजाक करव।

जयन्ती फूलक विषयमे—

जयन्ती तथा श्वेत अपराजिता फूल जय प्राप्तिक हेतु (उपयोगमे अनबाक चाही।) ॥५६२॥

आइ हम जय-प्राप्तिक कामनासँ एहि जयन्ती फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

श्वेत अपराजितक चढ़ौने यैह फल होइत छैक।

निम्ब फूलक विषयमे—

विद्वेष (शत्रुता) ओ उच्चाटनक हेतु नीम फूलक प्रयोग करी ॥५६३॥

आइ हम अमुक-अमुक व्यक्तिक द्वारा अमुक विषयक विद्वेषक कामनासँ अथवा अमुक व्यक्तिक उच्चाटनक कामनासँ एहि नीम फूलसँ पूजा करव।

भण्टी फूलक विषयमे—

ककरो आकर्षण करवामे भण्टी वा जयन्ती फूलक प्रयोग बारम्बार करवाक चाही ॥५६४॥

आइ हम अमुक स्थानसँ अमुक व्यक्तिकेँ आकृष्ट करवाक कामनासँ एहि भण्टी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

मदयन्तिका फूलमे सेहो यैह कामना कर्त्तव्य थिक।

हस्तीपुष्पीसँ पूजाक फल—

हस्तीपुष्पी, रुद्रजटी, शतपुष्प तथा कोकिलाक्षसँ शिवक पूजा कयलासँ सभ उपद्रव शान्त होइत अछि ॥५६५॥

आइ हम सभ उपद्रवकेँ शान्तिक हेतु एहि हस्तीपुष्पी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करव।

एहि तरहेँ आनो पुष्प अर्थात् रुद्रजटी, शतपुष्प आ कोकिलाक्षमे सेहो यैह कामना कर्त्तव्य थिक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्वेतपुष्पे—

सर्वं श्वेतञ्च शान्त्यर्थं सर्वं पीतञ्च पौष्टिके ।
कृष्णञ्चैवाभिचारे च देवदेवाय कल्पयेत् ॥५६६॥

तत्र प्रत्येकं चित्तवृत्तिविशेषानाह—

शान्तिके शोभनं भावं सुखभावन्तु पौष्टिके ।
अभिचारे महाक्रोधं त्रिविधं भावमाचरेत् ॥५६७॥

अद्यामुकस्य शरीराविरोधेन प्रत्युत्पन्नरोगोपशमकामनया ग्रहदौःस्थ्यसूचितदुरितोपशमकामनया वा एभिः श्वेतपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कृष्णपुष्पे—

अद्यामुकध्वंसकामोऽनेन कृष्णपुष्पेण भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

पीतपुष्पे—

अद्य पुष्टिकाम एभिः पीतपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भविष्यपुराणे—

अलाभेन तु पुष्पाणां पत्राण्यपि निवेदयेत् ।
पत्राणामप्यलाभे तु फलान्यपि निवेदयेत् ॥५६८
फलानामप्यलाभेतु तृणगुल्मौषधीरपि ।
औषधीनामप्यलाभे भक्त्या भवति पूजितः ॥५६९॥

पत्रं पुष्पं फलं तोयं तृणञ्चैव तथा परम् ।
प्रत्यहं यो भवे दद्यान्न स दुर्गतिमाप्नुयात् ॥५७०॥

अद्यादि प्रत्यहं दुर्गत्यनवाप्तिकामः पत्रं पुष्पं फलं तोयं तृणं वा भगवते शिवायाहं दास्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्वेतपुष्पसँ पूजाक फल—

शान्तिक हेतु श्वेत पुष्पसँ, पुष्टिक हेतु पीयर फूलसँ तथा अभिचार[1] (तंत्रोक्त मारण, मोहन उच्चाटन आदि अनुष्ठानक हेतु कृष्ण फूल महादेवकें समर्पित करी ॥५६६॥

ओतहि प्रत्येकक मनोवृत्तिक विषयमे कहल गेल अछि--

शान्तिक लेल सुन्दर भाव, पौष्टिक[2]क हेतु सुख भाव आ' अभिचारक हेतु महाक्रोध—एहि तीन प्रकारक भावक आचरण करबाक चाही ॥५६७॥

आइ हम अमुक व्यक्तिक उत्पन्न रोगक शमन (शान्ति)क कामना आ' ग्रह-दु:स्थितिसँ सूचित अनिष्टक शमनक कामनासँ एहि श्वेत (उज्जर) पुष्पसँ भगवान शिवक पूजा करब।

कृष्णपुष्पक संकल्प—

आइ हम अमुक व्यक्तिक विनाशक कामनासँ एहि कारी फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

पीत (पीयर) फूलक संकल्प—

आइ हम पुष्टिक कामनासँ एहि पीयर फूलसँ भगवान शिवक पूजा करब।

भविष्यपुराणमे--

फूल नहि भेटला पर पातसँ सेहो पूजा करी, पात नहि भेटला पर फल सेहो निवेदित करी। फलो नहि प्राप्त भेला उत्तर खर, गुल्म, औषधि आदिसँ पूजा करी। औषधियो नहि उपलब्ध भेला सन्ता मात्र भक्तिसँ पूजा करबाक चाही।

पत्र, फूल, फल, जल तथा दोसरो तृण जे प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शिवकें समर्पित करैत अछि, ओ कहियो दुर्गतिकें नहि प्राप्त करैत अछि ॥१६८-१७०॥

आइसँ प्रतिदिन हम दुर्गति नहि प्राप्ति करबाक कामनासँ पत्र, पुष्प, फल, जल, अथवा खर (तृण) भगवान शिवकें समर्पित करब।

---

१ [अभि + चर् + ठञ् + घञ्] मंत्रादि (द्वारा) झाड़-फूक करब, मंत्र मुग्ध करब, जादूक मंत्र सभकें खराब काजक हेतु प्रयोग करब; जादू करब; हत्या करब।

२ [पुष्टि + ठञ्] वृद्धि करयवला, कल्याणकारक, पोषण करयवाला, पोषक; पुष्टिकारक; वर्धक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ धूपदानफलम्

भविष्यपुराणे सकर्पूरकृष्णागुरुधूपस्य—

कृष्णागुरुं सकर्पूरं धूपं दद्यान्महेश्वरे ।
नैरन्तर्य्येण मासार्द्धं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥५७१॥
कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
भुङ्क्ते शिवपुरे भोगान् तस्यान्ते स महीपतिः ॥५७२॥

अद्यादि मासार्द्धं यावत् प्रत्यहं कल्पकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवपुराधिकरणक-बहुभोगभुक्तितदुत्तरमहीपतित्वभवनकामनया कर्प्पूरकृष्णागुरुधूपं भगवते शिवायाहं दास्ये ।

अगुरुधूपस्य—

अगुरुं दशसाहस्रं द्विगुणञ्चासितागुरुम् ॥५७३॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरबहुभोगभुक्तिकामनयाऽयमगुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

कृष्णागुरुधूपे—

अद्य विंशतिवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरबहुभोगभुक्तिकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

गुग्गुलुं घृतसंयुक्तं साक्षाद्गृह्णाति शङ्करः ।
मासार्द्धमस्य दानेन शिवलोके महीयते ॥५७४॥

अद्यादि मासार्द्धं यावत्प्रत्यहं शिवलोकमहितत्वकामनया घृतयुक्तगुग्गुलु-धूपं भगवते शिवाय तुभ्यमहं दास्ये ।

स्कन्दपुराणे देवदारुधूपस्य—

देवदारुं नमेरु[1]ञ्च स[2]र्ज्जश्रीवासकुन्दुरुम् ।
श्रीफलञ्चाज्यसम्मिश्रं दग्ध्वाप्नोति परां गतिम् ॥५७५॥

सर्जः सारसः, श्रीवासः सरलद्रवः । कुन्दुरुशैलेयं मूलइति प्रसिद्धम् । श्रीफलं बिल्वफलम् ।

अद्य परमगतिप्राप्तिकामनयाऽयं देवदारुधूपो भगवते शिवाय मया दत्तः ।

एवं साज्यश्रीफलादिधूपेष्वपि ।

---

१ नमेरु; [नम्+एरु] एक गाछक नाम; रुद्राक्ष—रघुवंश, ४/७ ।
२ सर्जः [सृज्+अच्] सालक वृक्ष; साल वृक्षक चूनवला रस ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब धूप-दानक फलक विषयमे

भविष्यपुराण मे कर्पूरक संग कृष्ण अगुरु धूपक फल—

कर्पूर सहित कृष्णागुरु, धूप जे व्यक्ति मासार्द्ध अर्थात् १५ दिन धरि निरन्तर महेश्वरकें समर्पित करैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनू ।।५७१।।

ओ हजार कोटि कल्प अथवा सय कोटि वर्ष धरि शिवपुरक भोग भोगैत आ ओकर अन्तमे ओ' महीपति होइत अछि ।।५७२।।

आइसँ हम मासार्द्ध (१५ दिन) धरि प्रत्येक दिन सहस्र कोटि कल्प पर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे निवास कय बहुत भोगकें उपभोग कय राजत्व-प्राप्तिक कामनासँ कर्पूर सहित कृष्णागुरुक धूप भगवान शिवकें समर्पित करब ।

अगुरु धूपक फल—

अगुरु(धूप) दानक फल दस हजार वर्ष धरि तथा वासित अगुरुक फल ओइसँ द्वगुणा अधिक अर्थात् २० हजार वर्ष धरि होइत अछि ।।५७३।।

आइ दससहस्र वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे बहुत भोग करबाक कामनासँ ई अगुरुक धूप भगवान महेश्वरकें हमरा द्वारा देल गेल ।

कृष्ण अगुरू घूपक संकल्प अछि—

आइ बीस हजार वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे बहुभोग भुक्तिक कामनासँ ई कारी अगुरु धूप भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल ।

घृतसँ युक्त गुग्गुल धूपक फल—

घृतयुक्त गुग्गुलकें साक्षात् शंकर ग्रहण करैत छथि । (एकर) आधा मास (अर्द्ध मास)क दानसँ शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।५७४।।

आइसँ हम मासार्द्ध यावत प्रत्यह शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ घृतयुक्त गुग्गुल धूप भगवान शिवक हेतु देव ।

स्कन्दपुराणमे देवदारु धूपक फल—

देवदारु, नमेरु, सर्ज, श्रीवास, कुन्दुरू आ श्रीफल (बेल)कें घीसंयुक्त कय जे (भगवान शंकरक समीप) जरबैत अछि, ओ सर्वोत्तम गति प्राप्त करैत अछि ।।५७५।।

सर्जक अर्थ सारस । श्रीवासक अर्थ सरल द्रव्य । कुन्दरूक अर्थ शैलेय अर्थात् मूलक नामसँ प्रसिद्ध । श्रीफलक अर्थ बेल ।

आइ हम परम गति प्राप्तिक कामनासँ ई देवदारुक धूप भगवान शिवक हेतु अर्पित कयल ।

एहिना श्रीफल (बेल) आदिहुक अर्पणमे वाक्य बनेबाक चाही ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्मे सौगन्धिकधूपस्य—

एभ्यः सौगन्धिकं धूपं षट्सहस्रगुणोत्तरम् ।
अगुरु दशसाहस्रं द्विगुणञ्चासितागुरुम् ॥
गुग्गुलुं शतसाहस्रं सघृतं द्विगुणं भवेत् ॥५७६॥

सौगन्धिकं सौधेट[1] इति प्रसिद्धम् । षट्सहस्रगुणोत्तरं पूर्वोक्तदेवदार्वादि-फलापेक्षया ।

अद्य देवदार्वादिधूपषट्कफलसहस्रगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनयाऽयं सौगन्धिक-धूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

अगुरुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलदशसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयमगुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

कृष्णागुरुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलविंशतिसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

गुग्गुलुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलशतसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं गुग्गुलुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलविंशतिसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं सघृतगुग्गुलु-धूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतविल्वधूपस्य—

स[2]विल्वं घृतसंयुक्तं दग्ध्वा[3] विल्वमथापि वा ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥५७७॥

अद्य अग्निष्टोमयज्ञफलप्राप्तिकामनया घृतसंयुक्तविल्वफलधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

---

१ ने० पा०, सौन्धेन ।

२ द्रुविल्वं मूले

३ देत्वा मूले;

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्ममे सौगन्धिक धूपक फल:—

(उपर्युक्त धूपसँ) एहि सौगन्धिक धूपमे ६ हजार गुना अधिक फल होइत अछि। अगुरु धूपक फल दस हजार गुना, कारी अगुरुक बीस हजार गुना, गुग्गुलमे सए सहस्र गुना आ' घृत सहितसँ ओकर द्विगुण फल होइत अछि ॥५७६।

सौगन्धिक सौघेटसँ प्रसिद्ध अछि। 'षट्सहस्र'सँ पूर्वोक्त देवदारु आदिक फलक अपेक्षा ६ हजार गुना अधिक फल होइत अछि।

आइ हम देवदारु आदि धूपक फलसँ छ हजार गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई सौगन्धिक धूप भगवान महेश्वर केँ देलियनि।

अगुरु धूपक संकल्पक फल: —

आइ देवदारु आदि धूपदानसँ दस हजार गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई अगुरु धूप भगवान महेश्वरक हेतु समर्पित कयलियनि।

कृष्ण अगुरु धूपक संकल्प—

आइ हम देवदारु आदि धूपदान जन्य फलसँ बीस हजार गुना फल प्राप्तिक कामनासँ ई कृष्ण अगुरु धूप भगवान महेश्वरक हेतु समर्पित कयलियनि।

गुग्गुलधूपक संकल्प—

आइ हम देवदारु आदि धूपक फलसँ सए हजार गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई गुग्गुल धूप भगवान महेश्वरक हेतु समर्पित कयलियनि।

सघृत (घृतयुक्त) गुग्गुल धूपक संकल्प: —

आइ देवदारु आदि धूप जन्य फलसँ बीस हजार गुणित फल प्राप्तिक कामनासँ ई घृतसँ युक्त गुग्गुल धूप भगवान महेश्वरक हेतु हम समर्पित कयल।

घृतसँ युक्त बिल्व (बेल) धूपक फल:—

बिल्व सहित घृत संयुक्त अथवा केवल बिल्व (बेल) के जराय के (शंकरक हेतु) समर्पित करयवला व्यक्ति अग्निष्टोम यज्ञक फल केँ प्राप्त करैत अछि ॥५७७॥

आइ अग्निष्टोम यज्ञ फलक सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ घृत-संयुक्त बिल्व फल(बेल)क धूप भगवान शिवक हेतु हम समर्पित कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृष्णागुरुधूपस्य—

शोधयेत् पापसंयुक्तं पुरुषं नात्र संशयः ।
कृष्णागुरु···वोधूपस्तुषाग्निरिव काञ्चनम् ॥५७८॥

अद्य निष्पापत्वकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवपुराणे सरलदेवदारुधूपयोरन्यतरस्य—

सरलं देवदारुं वा भक्त्या धूपं प्रदापयेत् ।
सदृशं देवि लिङ्गानां तस्य पुण्यफलं शृणु ॥५७९॥
द्वात्रिंशतः सहस्राणि स···तित्तथा पुनः ।
षष्टिवर्षसहस्राणि मोदते स ममालये ॥५८०॥

अद्य द्वात्रिंशत्सहस्रद्व्यशीतिषष्टिवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवालयाधिकरणकहर्षकामनया एषसरलधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

एवं देवदारुधूपेऽपि ।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

सघृतं गुग्गुलुञ्चापि अगुरुञ्चैव यो दहेत् ।
युगकोटिसहस्राणि मम लोके महीयते ॥५८१॥

अद्य युगकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एषसघृतगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

एतदेवागुरुधूपेऽपि फलम् ।

सघृतपुष्पादिधूपस्य—

नैवेद्यं सघृतं युक्तं धूपं यदि निवेदयेत् ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥५८२॥

अद्य अग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया एष घृतसहितपुष्पादिधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

सुरभिद्रव्यधूपस्य—

गन्धञ्च कुसुमञ्चैव धूपं पापप्रणाशनम् ।
ईश्वरस्य तु यो दद्यात् स्वर्गलोके महीयते ॥५८३॥

गन्धं गन्धद्रव्यम् ।

अद्य पापक्षयस्वर्गलोकमहितत्वकामनया एष सुरभिद्रव्यधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कारी अगुरु धूप देबाक फल:—

जहिना तुषाग्नि सोनाकेँ विशुद्ध कय दैत अछि, ओहिना शिवकेँ देल गेल कृष्ण अगुरु पाप-युक्त मानवकेँ निःसन्देह विशुद्ध कय दैत अछि ॥५७८॥

आइ हम निष्पापत्व अर्थात् पाप-मुक्तिक कामनासँ ई कृष्ण अगुरु धूप भगवान शिवक हेतु समर्पित कयल ।

शिवपुराणमे सरल आ देवदारु धूपमेसँ कोनो एकक फल:—

सरल अथवा देवदारुक धूप जे भक्तिसँ लिंगक समक्ष प्रदान करैत अछि, हे देवि ! ओकर पुण्य-फल सुनू ॥५७९॥

बत्तीस हजार वर्ष सरल धूप देलासँ आ' ६० हजार वर्ष देवदारुक धूप देलासँ हमरा पुरमे ओ व्यक्ति आनन्द पबैत अछि ।।५८०॥

आइ हम ३२ हजार वर्ष आ' ६० हजार वर्षधरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे हर्षयुक्त वास करबाक कामनासँ ई सरल धूप एवं देवदारु धूप भगवान शिवक हेतु समर्पित कयल ।

एहिना देवदारुक धूप देबामे सेहो फल होइत अछि ।

घृतसहित गुग्गुल धूपक फल:—

घृतसँ युक्त गुग्गुल आ अगुरु जे (हमरा प्रीतिक लेल) जरबैत अछि, ओ दू करोड़ हजार वर्ष धरि हमरा लोक (शिवलोक)मे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥५८१॥

आइ दू कोटि सहस्र (वर्ष) धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई घृत सहित गुग्गुल धूप भगवान शिवकेँ हम समर्पित कयल ।

इयैह फल अगुरु धूपक सेहो अछि ।

घृतसँ युक्त पुष्प आदि धूपक फल –

यदि घृतसँ युक्त (पुष्पादि)क धूप तथा नैवेद्य शिवकेँ निवेदित करैत अछि तँ मानव अग्निष्टोम यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥५८२॥

आइ हम अग्निष्टोम यज्ञ फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई घृत-सहित पुष्पादिक धूप भगवान शिवकेँ देलियनि ।

सुगन्धित द्रव्यक धूप देबाक फल:—

जे व्यक्ति सुगन्धित द्रव्य तथा पुष्पक धूप जे पापकेँ नाश करैत अछि, ईश्वर (शिव)केँ दैत अछि, ओ स्वर्गलोकमे पूजित होइत अछि । ॥५८३॥

'गन्ध'क अर्थ गन्ध द्रव्य अछि ।

आइ हम पापक्षयपूर्वक स्वर्गलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई सुरभित द्रव्य-धूप भगवान शिवकेँ देलियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

गुग्गुलुं घृतसंयुक्तं यः शिवाय निवेदयेत् ।
रुद्रलोकमवाप्नोति गाणपत्यं स विन्दति ॥५८४॥

अद्य रुद्रलोकप्राप्तिपूर्वकगाणपत्यप्राप्तिकामनयाऽयं सघृतगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शैवे धूपदानस्य—

धूपस्य तु प्रदानेन यत्फलं तद्विभीषण ।
दास्यामि च गतिं पुण्यां गाणपत्यञ्च दुर्ल्लभम् ॥५८५॥

अद्य पुण्यगतिलाभदुर्ल्लभगाणपत्यप्राप्तिकामनया एष धूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मोतरे—

तुरु[1]ष्कान् गुरुकर्पूरसितचन्दनगुग्गुलुम्[2] ।
एतानि धूपद्रव्याणि कथितानि मयानघे[3] ॥५८६॥

अथ दीपदानफलम्

भविष्यपुराणे—

यस्तु दीपं प्रयच्छेत वित्तशाठ्येन कौशिकि ।
रुद्राणां सदृशो भूत्वा वृषेण विचरेद्भुवि ॥५८७॥

अद्य रुद्रसदृशत्वभवनपूर्वकवृषकरणकभूतलाधिकरणकविचरणकामनयाऽयं घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

घृताभावे तिलतैलेन दीपस्य—

तैलेनापि हि यो दद्याद् घृताभावेन मानवः ।
तेन दीपप्रदानेन शिववद्राजते भुवि ॥५८८॥

अद्य शिवदीप्तिसमदीप्तिकामनयाऽयं तिलतैलदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्त।

---

१ ने० पा०, गुरुष्कांगुरु ।
२ तत्रैव गुग्गुलुः
३ तत्रैव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घृत सहित गुग्गुल-धूपक फल—

घृतसँ युक्त गुग्गुल-धूप जे शिवकेँ निवेदन करैत अछि, ओ रुद्रलोककेँ प्राप्त कय गाणपत्य प्राप्त करैत अछि ॥५८४॥

आइ हम रुद्रलोक प्राप्तिपूर्वक गाणपत्यपद-प्राप्तिक कामनासँ ई सघृत गुग्गुल-धूप भगवान शिवकेँ समर्पित करैत छी।

शिवपुराणमे धूपदानक फल—

हे विभीषण ! धूपक प्रदानसँ हम जे फल पवित्र गति तथा दुर्लभ गणपतिपद देबैक (से अहाँ सुनू) ॥५८५॥

आइ हम पुण्य गति-लाभ तथा दुर्लभ गाणपत्य प्राप्तिक कामनासँ ई धूप भगवान शिवकेँ देलियनि।

शिवधर्मोत्तरमे :—

तुरुष्क[1], अगुरु, कर्पूर, श्वेत चन्दन, गुग्गुल—ई सभ धूप द्रव्यक रूपमे कहल गेल अछि ॥५८६॥

आब दीपदानक फल

भविष्यपुराणमे—

हे कौशिकी[2] ! जे (हमरा प्रीत्यर्थ) दीप प्रदान करैत अछि, ओ रुद्रक सदृश भय वृषभ (बरदकक वाहन पर)सँ पृथ्वी पर विचरण करैत अछि ॥५८७॥

आइ हम रुद्रक सदृश भवनपूर्वक वृषभ वाहनसँ पृथ्वीतल पर विचरण करबाक कामनासँ ई घृतक दीप भगवान शिवकेँ देलियनि।

घृतक अभावमे तिलक तेलसँ दीपदानक फल—

जे मानव घृतक अभावमे तिलक तेलसँ सेहो दीपदान करैत अछि, ओहि दीपकेँ प्रदान कयलासँ ओ पृथ्वी पर शिवक सदृश सुशोभित होइत अछि ॥५८८॥

आइ शिवक छटा सदृश छटा अथवा शिवक कान्ति सदृश कान्तिक प्राप्तिक कामनासँ ई तिलक तेलक दीप भगवान शिवकेँ देलियनि।

---

१ एक गन्ध द्रव्य।

२ दुर्गाक नाम।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे घृतदीपस्य—

शतयोजनविस्तीर्णं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ।
दिव्यं विमानमाप्नोति घृतदीपप्रदानतः ॥५८९॥

अद्य शतयोजनविस्तीर्णसूर्य्यकोटिसमप्रभदिव्यविमानप्राप्तिकामनया एषघृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

शिवधर्म्मे घृतदीपस्य--

घृतदीपप्रदाननेन शिवाय शतयोजनम् ।
प्रयास्यति तमो भित्वा विमानैः सूर्य्यसप्रभैः ॥
स गत्वा दिवि देवेभ्यो गाणपत्यं लभेन्नरः ॥५९०॥

अद्य सूर्य्यसमप्रभबहुविमानकरणकतमोविभेदपूर्वकशतयोजनगमनानन्तरस्वर्गाधिकरणकबहुदेवहेतुकगाणपत्यप्राप्तिकामनया एष घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

घृतदीपदानस्य—

घृतदीपप्रदानेन अक्षय्यां मार्गदीपिकाम् ।
रुचिं प्राप्य सदा देवि अक्षय्यां गतिमाप्नुयात् ॥५९१॥

अद्याक्षय्यमार्गप्रकाशकरुचिप्राप्तिपूर्वकाक्षय्यगतिप्राप्तिकामनयाऽयं घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यंमया दत्तः ।

घृतपूर्णदीपदानस्य—

शतयोजनविस्तीर्णं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ।
दिव्यं विमानमाप्नोति घृतदीपप्रदानतः ॥५९२॥
शतयोजनविस्तीर्णैः सूर्य्यकोटिसमप्रभैः ।
तमोविमानैर्बहुभिर्लंघयित्वा तु मानवः ॥५९३
देवानां तद्गणानाञ्च आधिपत्यं त्रिविष्टपे ।
शिवाय भक्तितो दत्वा लभते नात्र संशयः ॥५९४॥

अद्य शतयोजनविस्तीर्णसूर्य्यकोटिसमप्रभदिव्यविमानप्राप्त्येत[1]द्बहुविमानकरणकतमोलङ्घनपूर्वकत्रिविष्टपदाधिकरणकबहुदेवगणाधिपत्यकामनयाऽयं घृतदीपो- भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

(श्लोकत्रयैकवाक्यतया वाक्यमिदम्)[2]

---

१ ने० पा०, तत्त्वज्ञविमानकरणक ।
२ ने० पा० से प्राप्त ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे घृतक दीप देबाक फल—

घृतक दीप (शिवके॑) देलासँ एक सय योजन विस्तीर्ण तथा करोड़ सूर्यक सदृश चमकयवला दिव्य (अलौकिक) विमान प्राप्त होइत अछि ।।५८९।।

आइ हम सय योजन विस्तीर्ण तथा कोटि सूर्य सदृश प्रभावला दिव्य विमान-प्राप्तिक कामनासँ ई घृतक दीप भगवान शिवके॑ देलियनि ।

शिवधर्ममे घृत-दीपक फल—

शिवके॑ घृतक दीप प्रदान कयलासँ मानव सूर्यक सदृश चमकवला विमानसँ सय योजन अन्धकारक भेदन कय स्वर्गलोकमे जाय गणपति पद प्राप्त करैत अछि ।।५९०।।

आइ हम सूर्यक समान प्रकाशवला विमानसँ अन्धकारके॑ दूर करैत सय योजन जाय स्वर्गलोकमे बहुत देवता द्वारा गणपतित्व प्राप्त करबाक हेतु ई घृतक दीप भगवान शिवके॑ देलियनि ।

घीक दीपदानक फल—

हे देवि, घीक दीप प्रदान कयलासँ मानव अक्षय मार्गके॑ विद्योतित कयनिहार प्रकाशक दीपके॑ पाबि अक्षय गतिके॑ प्राप्त करैत अछि ।।५९१।।

आइ हम अक्षय मार्ग-प्रकाशक रुचि (किरण)क प्राप्तिसहित अक्षय गति प्राप्तिक कामनासँ ई घृतक दीप भगवान शिवके॑ देलियनि ।

घृतसँ पूर्ण दीपदानक फल—

जे व्यक्ति शिवक समीप घृतपूर्ण दीप भक्तिपूर्वक प्रदान करैत अछि, ओ कोटि सूर्यक सदृश प्रभावला शतयोजन विस्तीर्ण दिव्य विमान प्राप्त करैत अछि ।।५९२।।

एकर अतरिक्त जे व्यक्ति भक्तिपूर्वक शिवके॑ घृतसँ पूर्ण दीप दैत अछि, ओ सय योजन विस्तृत कोटि सूर्यक सदृश प्रभावला अलौकिक बहुत विमानसँ अन्हारके॑ दूर कय स्वर्गलोकमे देवता सभ आ' हुनकर गण सभक स्वामित्वके॑ नि.सन्देह प्राप्त करैत अछि ।।५९३-५९४।।

आइ हम सय योजन विस्तीर्ण करोड़ सूर्यक प्रकाशक तुल्य प्रकाशसँ युक्त दिव्य विमान प्राप्ति तथा एहि प्रकारक अनेक विमान द्वारा अन्धकारके॑ पार कऽ कऽ स्वर्गमे अनेक देवगण पर आधिपत्य प्राप्तिक कामनासँ ई घृतदीप भगवान शिवके॑ अर्पित कयल ।

उपर्युक्त तीन गोट वाक्यके॑ मिला क' ई वाक्य कहल गेल अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दीपवृक्षस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] शर्वस्यायतने शुभम् ।
पुण्यं सुमहदाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति ॥५९५॥

समुद्बोध्य[2] प्रज्वाल्य ।

अद्यावि अतिशयितपुण्यप्राप्तिशिवलोकगमनकामोऽमुं दीपवृक्षं समुद्बोध्य शर्वस्यायतनेऽहं दास्ये ।

नन्दिपुराणे शिवाग्रतो दीपदानस्य—

शिरसा धारयेद्दीपं सर्वां रात्रिं शिवाग्रतः ।
ललाटे वाऽथ हस्ताभ्यां समुद्युक्तस्तथोरसि ॥५९६॥

सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः ।
कल्पायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥५९७॥

सर्वां सम[3] स्ताम्शिरसा ललाटे, उरसि हस्ताभ्यामितिप्रयोगचतुष्टयम् ।

अद्यास्यां समस्तरात्रौ सार्वकामिकसूर्य्यकोटिप्रतीकाशबहु विमानकरणक-बहुकल्पायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया शिवस्याग्रे शिरःकरणक-दीपधारणमहं करिष्ये ।

एवं ललाटेनोरसा हस्तद्वयेन वा दीपधारणेऽपीयमेव कामना ।

लिङ्गपुराणे—

यावदक्षिनिमेषांस्तु दीपः प्रज्वलितस्तथा ।
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥५९८॥

अद्यास्यां रात्रौ दीपज्वालावच्छिन्नयावन्निमेषसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्न-शिवलोकमहितत्वकामनया शिवायतने दीपदानमहं करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, सुसम्बोध्य ।

२ तत्रैव, सम्बोध्य ।

३ समस्ताम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दीपवृक्ष (दान)क फल—

जे शिवक शुभ मन्दिरमे दीपवृक्षकें प्रज्वलित करैत अछि, ओ सुमहत् पुण्य प्राप्त कय शिवलोक जाइत अछि ॥५९५॥

समुद्बोध्यक तात्पर्य प्रज्वलित करब अर्थात् जरायब अछि।

आइ हम अतिशय पुण्य-प्राप्ति आ' शिवलोक-गमनक कामनासँ एहि दीप-वृक्षकें प्रज्वलित कय शिवालयमे देब।

नन्दिपुराणमे शिवक आगू दीपदानक फल—

जे व्यक्ति सम्पूर्ण राति भरि शिवक आगू अपन मस्तकसँ अथवा ललाटसँ अथवा दुनू हाथसँ अथवा हृदयसँ दीपकें धारण करैत अछि, ओ कोटि सूर्यक सदृश प्रकाशवला आ' सभ कामनाकें देमयवला अनेक विमानसँ जाय दस हजार कल्प पर्यन्त शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥५९६-५९७॥

एतय 'सर्वाम्'क अर्थ समस्त अछि। शिर, ललाट, हृदय आ' दुनू हाथसँ दीप धारणक— ई चारि गोट प्रयोग अछि।

आइ सम्पूर्ण राति भरि सभ कामनासँ पूर्ण होयवाक कामनासँ करोड़ सूर्य-सदृश चमकयवला अनेक विमान द्वारा पहुँचि कय दस सहस्र कल्प धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे महितत्वक प्राप्तिक कामनासँ हम शिवक आगू माथसँ दीप धारण करव।

आओर ललाट, हृदय एवं दुनू हाथसँ दीप धारण करवाक सेहो यैह फल अछि।

लिङ्गपुराणमे —

दीप जरैत काल कोनो व्यक्तिक आँखिक जतेक निमेष खसैत अछि ओतेक सहस्र वर्ष धरि ओ स्वर्गलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥५९८॥

आइ हम एहि रातिमे दीपक जरबाक कालमे निमेष-पतनक संख्याक समान सहस्र संख्यक वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ शिवालयम दीपदान करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवालयाधिकरणकलौहदीपवृक्षदानस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] लौहमुच्चं शिवालये।
दत्वा कल्पायुतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥५९९॥

अद्य साग्रकल्पायुतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनयाऽमुं लौहवृक्षमुद्बोध्य[2] शिवस्यायतनेऽहं दास्ये।

शिवपुराणे दीपदानस्य—

दीपप्रदानं यो दद्याच्छुचिः प्रयतमानसः।
तेन दीपप्रदानेन मत्प्रख्यां याति चैव सः ॥६००॥

अद्य शिवप्रख्यत्वप्राप्तिकामनयाऽयं दीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

अथ कार्त्तिकमासीयप्रत्यहदीपदानस्य

स्कन्दपुराणे शिववाक्यम्—

कार्त्तिके मासि यो दद्याद्दीपं वै प्रत्यहं मम।
ब्राह्मणान् भोजयित्वान्ते गाणपत्यं लभेद्ध्रुवम् ॥६०१॥

अद्यास्मिन् कार्त्तिके प्रत्यहं गाणपत्यप्राप्तिकामनया घृतदीपं भगवते महादेवाय दत्वा मासान्ते ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये।

कार्त्तिकमासे दीपमालायाः—

प्रदीपमालां यः कुर्य्यात् कार्त्तिके मासि वै मम।
अवसाने तु मालायाः[3] ब्राह्मणांस्तर्प्पयेच्छुचिः॥
गाणपत्यं स लभते दीप्यते च रविर्य्यथा ॥६०२॥

मासव्यापकोऽयं प्रयोगः विशेषश्रुतेः[4]।

अद्यास्मिन् कार्त्तिके मासि गाणपत्यप्राप्तिरवितुल्यतेजस्कत्वकामः प्रत्यहं दीपमालां भगवते महादेवाय दत्वा तदवसाने ब्राह्मणानहं पूजयिष्ये।

---

१. ने० पा०, सुसम्बोध्य।
२. तत्रैव, सम्बोध्य।
३. तत्रैव, दीपानां।
४. तत्रैव, विशेषश्रुतेः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवालयमे लोहाक दीप-वृक्षदानक फल—

शिवालयमे लोहाक ऊँच दीप-वृक्षमे दीपकेँ जराय जे व्यक्ति शिवक आगूमे दैत अछि, ओ दस हजार वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥५९९॥

आइ हम अयुत (दसहजार) कल्पसँ अधिक अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई लौह दीप-वृक्ष प्रज्वलित कय शिवालयमे देब ।

शिवपुराणमे दीपदानक फल—

पवित्र एवं जितेन्द्रिय जे व्यक्ति (शिवक समीप) दीप प्रदान करैत अछि ओ हमर ख्यातिकेँ प्राप्त करैत अछि ॥६००॥

आइ शिवक (सदृश) ख्याति-प्राप्तिक कामनासँ ई दीप भगवान शिवकेँ हम समर्पित कयल ।

आब कार्तिक मासमे प्रतिदिन दीपदानक फल

स्कन्दपुराणमे शिवक वाक्य—

जे व्यक्ति कार्तिक मासमे प्रत्यह हमरा दीप दैत अछि आ' ब्राह्मण-भोजन करबैत अछि' ओ गाणपत्यकेँ प्राप्त करैत अछि ॥६०१॥

आइ हम एहि कार्तिकमासमे गाणपत्य-प्राप्तिक कामनासँ प्रतिदिन घृतदीप भगवान महादेवकेँ समर्पित कय मासक अन्तमे ब्राह्मणकेँ भोजन करायब ।

कार्तिकमासमे दीपमाला-दानक फल—

कार्तिक मासमे जे व्यक्ति प्रत्यह हमरा निमित्त दीपमाला प्रदान करैत अछि आ दीपमाला-प्रदानक बाद ब्राह्मणकेँ तृप्त करैत अछि ओ गणपति-पद प्राप्त कय सूर्यक सदृश चमकैत अछि ॥६०२॥

विशेष श्रुतिक अनुसार ई प्रयोग मासपर्यन्त करबाक चाही ।

आइ हम एहि कार्तिक मासमे गाणपत्य पद-प्राप्ति आ' सूर्यक तुल्य तेजस्वी होयबाक कामनासँ प्रत्यह (प्रतिदिन) दीपमाला भगवान महादेवकेँ अर्पित कयलाक बाद ब्राह्मणक पूजा करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे कार्त्तिकमासीयकृष्णचतुर्द्दश्यां घृतपूर्णदीपमालायाः—

य: कुर्य्यात् कार्त्तिके मासि शोभनां दीपमालिकाम् ।
घृतेन च चतुर्द्दश्याममावास्यां विशेषतः ॥६०३॥

सूर्य्यायुतप्रतीकाशतेजोभिर्भासयन् दिशः ।
तेजोराशिविमानस्थः कुलं प्रद्योत्य सर्वशः ॥६०४॥

यावत्प्रदीपसंख्या तु घृतेनापूर्य्य बोधिता ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६०५॥

कार्त्तिके चतुर्द्दश्याममावास्यायामिति सम्बन्धः । अमावास्यासमभिव्याहाराच्चतुर्द्दश्यपि कृष्णैव । शिवायेत्यनुषज्यते । दीपमालिकां कुर्य्यादित्यत्र ।

अद्य कार्त्तिककृष्णचतुर्द्दश्यां कार्त्तिकामावास्यायां वा सूर्य्यायुततेजस्तुल्यतेजस्कत्वसकलदिग्भासकतेजोमयविमानस्थत्वसर्वशःकुलोद्योतनपूर्वकैतद्घृतपूर्णदीपसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया इयं घृतपूर्णदीपमाला भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

शिवधर्म्मे कार्त्तिकमासीयकृष्णचतुर्द्दश्यां घृतपूर्णदीपवृक्षस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] शर्वस्यायतने शुभम् ।
पूर्वस्माद्द्विगुणं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥६०६॥

पूर्वस्माद्दीपमालादानफलात् ।

अद्य कार्त्तिककृष्णचतुर्द्दश्यां सूर्य्यायुतसमप्रभत्वसकलदिग्भासकत्वतेजोमयविमानस्थत्वसर्वशः कुलोद्योतनपूर्वकैतद्दीपवृक्षवर्त्तिघृतपूर्णदीपद्विगुणसंख्यब्रह्मगुणावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामोऽमुं दीपवृक्षं समुद्बोध्य शर्वस्यायतनेऽहं दास्ये ।

१. ने॰ पा॰, सुसंबोध्य ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे कार्तिक मासक कृष्ण चतुर्दशीकें घृतपूर्ण दीपमाला देबाक फल—

जे कार्तिक मासक कृष्ण चतुर्दशी अथवा अमावस्याकें विशेषतः घृतपूर्ण दीपमालिका शिवकें दैत अछि ओ दस हजार सूर्यक तेजसँ दिशा सभकें प्रकाशित करैत तेजपूर्ण विमानमे स्थित भय अपन सम्पूर्ण कुलकें नीक जकाँ प्रकाशित करैत जतेक दीपक संख्या रहैछ ओतेक युग सहस्र धरि शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६०३-६०५॥

कार्तिकक सम्बन्ध चतुर्दशी आ अमावास्यासँ अछि। अमावास्याक प्रयोगसँ चतुर्दशींयो कृष्ण पक्षैक बुझक चाही। एहिमे शिवक हेतु (एकर अध्याहार होइत अछि) दीपमाला सजयबाक विषयमे।

आइ हम कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी अथवा अमावास्या तिथिमे अयुत (दस हजार) सूर्यक तेजक तुल्य तेजस्विता आ' सभ दिशाकें प्रकाशित करयवला तेजोमय विमान पर स्थित भय सभ कुलकें प्रकाशित करैत घृतपूर्ण दीपक सदृश संख्याक समान युगसहस्र धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई घृतपूर्ण दीपमाला भगवान शंकरक हेतु समर्पित कयल।

शिवधर्ममे कार्तिक मासक कृष्ण चतुर्दशीमे घृतपूर्ण दीप-वृक्ष प्रदान करबाक फल—

शिवक मन्दिरमे सुन्दर दीपवृक्ष जराय पूर्वोक्त फलसँ द्विगुणित पुण्य प्राप्त होइत अछि। एहिमे संशय नहि अछि ॥६०६॥

पूर्वस्मात्क तात्पर्य दीपमाला दानक फलसँ अछि।

आइ हम कार्तिक कृष्ण चतुर्दशीमे अयुत सूर्यक समान प्रभावला सम्पूर्ण दिशाकें प्रकाशक तेजोमय विमान पर स्थित भय सभ कुलकें प्रकाशनपूर्वक एहि दीप-वृक्षमे जरयवला आ घृतसँ पूर्ण दीपसँ दू गुना संख्यावला वहुत गुणयुक्त भय शिवलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई दीपवृक्ष शिवक मन्दिरमे जरायकें देब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ नैवेद्यप्रकरणम् ।

नन्दिकेश्वरे—

अथ भक्त्या शिवं पूज्य नैवेद्यमुपकल्पयेत् ।
यद्यद्वात्मनः[1] प्रेयस्तत्तदीशाय कल्पयेत् ॥६०७॥
दत्त्वा नैवेद्यवस्त्रादि नाददीत कथञ्चन ।
त्यक्तव्यं शिवमुद्दिश्य तदा दानेन तत्फलम् ॥६०८॥
यद्यन्निवेदनीयं स्याद्दानं देयञ्च यद्भवेत् ।
तत्पुष्पाक्षततोयेन शिवाय[2] च समुत्सृजेत् ॥६०९॥

स्कन्दपुराणे पक्वश्रीफलनिवेदनस्य ।

यः पक्वं श्रीफलं भक्त्या शिवाय विनिवेदयेत् ।
गुरोर्वा होमयेद्वापि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१०॥
श्रीमद्भिः समहायानैर्भोगान् भुङ्क्ते शिवे पुरे ।
वर्षाणां नियुतं साग्रं तदन्ते श्रीपतिर्भवेत् ॥६११॥

अद्य श्रीमद्बहुमहायानकरणकशिवपुराधिकरणकसाग्रवर्षनियुतावच्छिन्नबहुभोगभुक्तितदनन्तरश्रीपतिभवनकामनया इदं पक्वश्रीफलं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

पक्वकपित्थफलनिवेदनस्य—

कपित्थमेकं पक्वं यः शिवाय विनिवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैः[3] क्रीडते स शिवे पुरे ॥६१२॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमहाभोगसहितक्रीडनकामनया इदं कपित्थफलं पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१. मूले, यद्यदेवात्वनः ।
२. ने० पा०, देवाय ।
३. तत्रैव, महाभागैः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब नैवेद्यप्रकरण

नन्दिकेश्वरमे—

आब भक्तिपूर्वक शिवक पूजा कय नैवेद्य उपकल्पित करबाक चाही। जे-जे वस्तु अपना प्रिय हो वैह-वैह वस्तु शिवकें समर्पित करबाक चाही। ॥६०७॥

शिवकें उद्देश्य कय समर्पित नैवेद्य—वस्त्रादि कखनहु स्वयं ग्रहण नहि करबाक चाही। शिवक उद्देश्यसँ त्याग कयला पर दानक फल होइछ ॥६०८॥

जे किछु शिवक हेतु निवेदन करबाक योग्य अछि, अथवा दान देबा योग्य अछि, ओ पुष्प, अक्षत आ जलक द्वारा शिवक निमित्त उत्सर्ग करबाक चाही ॥६०९॥

स्कन्दपुराणमे पाकल श्रीफल (बेल) निवेदनक फलः—

जे भक्तिपूर्वक शिवक हेतु पाकल बेल समर्पित करैत अछि अथवा गुरुकें दैत अछि अथवा होम करैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनू ॥६१०॥

ओ सुन्दर महायानसभसँ शिवपुरमे जाय दस लाख वर्षसँ अधिक समय धरि अनेक भोगकें भोगैत अन्ततः श्रीपति भय जाइत अछि ॥६११॥

आइ हम शोभापूर्ण बहुत महायान द्वारा शिवपुर गमनपूर्वक दस सहस्र वर्षसँ अधिक समय धरि अविच्छिन्न रूपसँ बहुत भोग भोगलाक अनन्तर श्रीपतित्व प्राप्त करबाक कामनासँ ई पाकल बेल भगवान शिवक हेतु निवेदित करैत छी।

पाकल कपित्थ (कथ) फल निवेदनमे फलः—

जे एको गोट पाकल कपित्थ (कथ) शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ लक्ष वर्ष धरि शिवपुरमे बहुत महाभोगकें भोगैत क्रीड़ा करैत रहैत अछि ॥६१२॥

आइ हम लाख वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे महाभोग सहित क्रीडन करबाक कामनासँ ई पाकल कपित्थ (कथ) फल भगवान शिवक हेतु देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पक्वाम्रफलदानस्य—

एकमाम्रफलं पक्वं यः शम्भौ विनिवेदयेत् ।
वर्षाणामयुतं भोगैः क्रीडते स शिवे पुरे ॥६१३॥

अद्य वर्षायुतावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगक्रीडनकामनया इदमाम्रफलं पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

पक्वकदलीफलदाने—

एकं मोचाफलं पक्वं यः शिवाय निवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६१४॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगोभोगपर्सहितमहितत्वकामनया इदं पक्वं मोचाफलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

पक्वदाडिमफलस्य—

यः पक्वं दाडिमञ्चैव हृद्यं विकसितं नवम्[१] ।
शिवाय गुरवे वापि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१५॥
यावत्तद्बीजसंख्यान[२]मुभयोर्विनिवेदितम् ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६१६॥

अद्य तद्दाडिमबीजसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इदं पक्वदाडिमफलं नवं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

द्राक्षाफलस्य—

द्राक्षाफलानि पक्वानि यः शिवाय निवेदयेत् ।
भक्त्या वा शिवयोगिभ्यस्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१७॥
यावत्तत्फलसंख्यानमुभयोर्विनिवेदितम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६१८॥

अद्य तद्द्राक्षाफलसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि पक्वद्राक्षाफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

---

१ ने० पा०, फलम् ।
२ तत्रैव, संख्यात ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाकल आमक फल देवाक फलः—

जे एको गोट पाकल आमक फल शंभुक हेतु निवेदन करैत अछि, ओ दस हजार वर्ष धरि अनेक महाभोगक संग शिवपुरमे क्रीड़ा करैत अछि ॥६१३॥

आइ हम दस हजार वर्ष धरि अविचिछन्न रूपसँ शिवपुरमे बहुत भोग भोगवाक संग सुखक प्राप्तिक कामनासँ ई पाकल आमक फल भगवान शिवक हेतु निवेदन कय रहल छी।

पाकल केरा देवाक फलः—

जे एक गोट पाकल मोचा फल शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ लाख वर्ष धरि महाभोग सभसँ संयुक्त भय शिवपुरमे पूजित होइत अछि ॥६१४॥

आइ हम लाख वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे वहुत भोग सहित महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई पाकल मोचा फल भगवान शिवक हेतु निवेदन कय रहल छी।

पाकल दाड़िम फलक फलः—

जे व्यक्ति ई नव विकसित पाकल दाड़िम शिव अथवा गुरुकें समर्पित करैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनू ॥६१५॥

जतेक बीजक संख्या समर्पित दाड़िम फलमे होइत अछि, ओतेक सहस्र युग धरि ओ व्यक्ति शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥६१६॥

आइ हम एहि दाड़िमक बीजक संख्याक बराबरि सहस्र युग धरि अविच्छिन्न रूपसँ रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई नव पाकल दाड़िम फल भगवान शिवक हेतु निवेदित करैत छी।

द्राक्षा (दाख) फल देवाक फलः—

शिव अथवा शिवोपासक योगीकें पाकल द्राक्षा (दाख) फल जे निवेदन करैत अछि, ओकर पुण्यफल सुनू ॥६१७॥

जतेक संख्यामे फल दुनूक हेतु समर्पित कयल जाइत अछि, ओतेक युग सहस्र धरि रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्त करैत अछि ॥६१८॥

आइ हम एहि द्राक्षाफलक संख्याक बराबरि युगसहस्र युग धरि अविच्छिन्न रूपसँ रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई सभ पाकल दाख शिवकें निवेदन करैत छी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खर्ज्जुरफलेष्वप्येतदेव फलम् ।

यदाह—

द्राक्षाफलेषु यत्पुण्यं तत् खर्ज्जुरफलेष्वपि ।
तदेव राजवृक्षेषु पारावतफलेषु च ॥६१९॥

नागरङ्गफलस्य—

नागरङ्गफलं पक्वं विनिवेद्य महेश्वरे ।
अब्दलक्षं महाभोगैः क्रीडते स शिवपुरे ॥६२०॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुमहाभोगसहितक्रीडनकाम इदं नागरङ्गफलं पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

जम्बीरफले—

जम्बीरेषु तदर्द्धञ्च पुण्यं स्याल्लकुचेषु[1] च ।
आक्षोडपीलुनीपेषु तत्पुण्यं तिन्दुकेषु[2] च ॥६२१॥

अद्य पञ्चाशद्वर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुमहाभोगक्रीडनकाम एतानि जम्बीरफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

लकुचाक्षोडपीलुनीपतिन्दुकफलान्यतमफलदानेऽपीदृशमेव फलम् ।

नारिकेलफलस्य—

पुन्नागं नारिकेलञ्च शिवाय विनिवेदयेत् ।
अब्दलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६२२॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नमहाभोगसहितशिवलोकमहितत्वकामनया इदं नारिकेलफलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

पुन्नागफलेष्येतदेव फलम् ।

पक्वपरु[3]षकादिफले—

परुषकं प्रियालञ्च मधूककुसुमानि च ।
जम्बूफलानि पक्वानि वैकैकं तत्फलानि च ॥६२३॥
निवेद्य भक्ष्यं शर्वाय प्रत्येकन्तु फले फले ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६२४॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतत् परुषफलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, स्यान्नकुचेषु ।
२ तिन्दुः तिन्दुकः, तिन्दुलः [तिम्+कुनि, तिन्दु+कन् पक्षे कस्य लः] तेन्दूक गाछ ।
३ ने० पा०, वालुकि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इऐह पुण्य खजूरकं फलेंमे सेहो होइत अछि ।

जेना कि कहल अछि—

द्राक्षा फलकें चढ़ओलासँ जे फल होइत अछि, सैह फल खजूर, राजवृक्ष एवं पारावत फल चढ़ओलासँ होइत अछि ॥६१९॥

नागरंग फल चढ़यबाक फलः—

जे पाकल नागरंग फल महेश्वरक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ लाख वर्ष धरि शिवपुरमे, अनेक महाभोग सभक संग क्रीडा करैत अछि ॥६२०॥

आइ लाख वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे बहुत महाभोग सहित क्रीडा करबाक कामनासँ ई पाकल नागरंग फल भगवान शिवकें निवेदित करैत छी ।

जम्बीर चढ़यबाक फल—

जम्बीरकें चढ़यबामे (नारंगीक फलक) आधा फल होइत अछि आ' ओऐह फल लकुच, अखरोट, पीलु, नीप तथा कदम्बकें चढ़यलामे सेहो होइत अछि ॥६२१॥

आइ हम पचास हजार वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे महाभोग पूर्वक क्रीड़ाक कामनासँ ई जम्बीर फल भगवान शिवकें अर्पित करैत छी ।

लकुच, अखरोट, पीलु, नीप, तिन्दुक ईहोसभ चढ़ओने इऐह फल होइत छैक ।

नारिकेल फल द्वारा पूजनक फल—

कोनो व्यक्ति नारिकेल आ पुन्नाग शिवक हेतु निवेदन क' लक्ष वर्ष धरि अनेक महाभोगक संग शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि । ॥६२२॥

आइ हम लक्ष वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ महाभोग सहित शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ ई नारिकेल फल शिवक हेतु दैत छी ।

इएह पुण्य पुन्नाग फलक सेहो अछि ।

पाकल परूष आदि फलसँ पूजनक फलः—

परूष, प्रियाल, मधूक, कुसुम, पाकल जम्बुक फल वातकर एक-एक फल शिवकें अर्पित कय प्रत्येक फलक अर्पणमे दस हजार वर्ष रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्त करैछ ॥६२३-६२४॥

आइ दस सहस्र वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ रुद्रलोकमे महितत्वक कामनासँ ई परूष फल भगवान शिवकें हमरा द्वारा देल गेल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं प्रियालफलेष्वपि[1]।

क्षीरिकावकुलयोरन्यतरस्मिन्—

क्षीरिकां बकुलञ्चैव यः शिवाय निवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैर्मोदते स शिवे पुरे ॥६२५॥

अद्य शिवपुराधिकरणकलक्षवर्षावच्छिन्नबहुभोगहेतुकमुदितत्वकामनया एतत् क्षीरिकाफलं बकुलफलं वा शिवाय तुभ्यमहं ददे।

बिल्वाम्रादिफलेषु क्षीरकाबकुलपर्य्यन्तेषु बहुषु दातव्येषु अद्य प्रतिफलमिति प्रयोज्यम्। इदं पदस्थाने एतानीति पदमिति विशेषः।

कर्कटीत्रपुषयोरन्यतरदाने—

वालुङ्कि[2]त्रपुषीणाञ्च यः फलानि निवेदयेत् ।
शिवाय गुरवे वापि तस्य पुण्यं वदाम्यहम् ॥६२६॥

एकैकस्मिन् फले भोगानयुताब्दं शिवे पुरे ।
प्राप्नुयाद्द्विगुणं पुण्यं यः पक्वं विनिवेदयेत् ॥६२७॥

वालुङ्किः कर्कटी।

अद्य प्रतिफलं शिवपुराधिकरणकायुतवर्षावच्छिन्नबहुभोगभुक्तिकामनया एतानि वालुङ्किफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

त्रपुषफलेप्येतदेव फलम्। एतयोरेव पक्वयोर्न्निवेदने।

अद्य प्रतिफलं वर्षायुतावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगभुक्तिकामनया पएतानि क्ववालुङ्किफलानि पक्वत्रपुषफलानि वा भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

एकफलदाने तु प्रतिफलमित्यपहाय इदं फलमिति योज्यम्।

---

१ ने० पा० प्रियालादि:।
२ तत्रैव, वालुकी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इएह फल प्रियाल आदिक चढ़ओलासँ सेहो जनबाक चाही।

क्षीरिका तथा वकुल एहि दुनूमेसँ कोनो एकमे फल।

जे क्षीरिका तथा वकुलक फल शिवकें निवेदित करैत अछि, ओ लक्ष वर्ष धरि अनेक महाभोग सभसँ संयुक्त भ' शिवपुरमे आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥६२५॥

आइ हम शिवपुरमे लाख वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ वहुत भोग तथा हर्ष प्राप्तिक कामनासँ ई क्षीरिका फल वा वकुल फल शिवक हेतु दैत छी।

बेल तथा आमसँ ल' क' क्षीरिका बकुल पर्यन्त अनेक दातव्य हो तँ—

उक्त संकल्प वाक्यमे 'अद्य प्रतिफलम्' ई जोड़बाक चाही। आ' 'इदम्'क स्थानमे 'एतानि' कहवाक चाही।

कर्कटी अथवा त्रपुषमेसँ एक फल-दानक फल :—

जे व्यक्ति वालुङ्कि (ककड़ी) अथवा त्रपुष (खीरा) फल शिवक हेतु अथवा गुरुक हेतु निवेदन करैत अछि ओकर पुण्य हम कहैत छी ॥६२६॥

ओ व्यक्ति एहिमेसँ एक फलक समर्पणसँ दस हजार वर्ष धरि अनेक भोग भोगैत अछि। मुदा जे पाकल फल समर्पित करैत अछि, ओ द्विगुणित पुण्य प्राप्त करैत अछि ॥६२७॥

बालुङ्किक तात्पर्य कर्कटी अछि।

हम आइ शिवपुरमे प्रतिफल दस हजार वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ बहुत भोग भुक्तिक कामनासँ ई वालुङ्कि फल भगवान शिवकें अर्पित कयल।

इएह फल त्रपुष फलक सेहो होइत अछि।

पाकल वालुङ्कि आ त्रपुष चढ़मबाक फल:—

आइ प्रति फल दस हजार वर्षपर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे रहि अनेक भोग भोगबाक कामनासँ ई पाकल वालुङ्कि फल. अथवा त्रपुषफल भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

एक फल दान करबामे 'प्रतिफलम्' शब्दकें हटाक' 'इदं फलम्'क प्रयोग करवाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पक्वकरमर्द्दकदाने—

निवेदयेत शर्वाय यः पक्वं करमर्द्दकम् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६२८॥

अद्य प्रतिफलं दशवर्ष सहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि पक्व-करमर्द्दकफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

सुपक्वबदरीफलदाने—

बदराणि सुपक्वानि तिन्तिडीकफलानि च ।
दर्शनीयानि पक्वानि आमलक्याः फलानि च ॥६२८॥

एवमादीनि चान्यानि शाकमूलफलानि च ।
निवेदयेत शर्वाय श्रृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६२९॥

एकैकस्मिन् फले भोगान् प्राप्नुयादानुपूर्वशः ।
पंचवर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६३०॥

अद्य प्रतिफलं पञ्चवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगभुक्तिमहि-तत्वकामनया एतानि सुपक्वबदरफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

एवं तिन्तिडीफलामलकीफलयोरुक्तान्यफलेषु शाकमूलेष्वेतदेव फलम् ।
एकफलदाने तु प्रतिफलमित्यपहाय इदमिति योज्यम् ।

भृष्टगोधूमादिदाने—

गोधूमचणकान्यान्[1] यः सुकृतान् सक्तुभर्जितान् ।
निवेदयेत शर्वाय शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६३१॥

यावत्तद्बीजसंख्यानां[2] स्विन्नं भृष्टं निवदयेत् ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६३२॥

सुकृतान् सुस्विन्नान् ।

अद्यैतद्गोधूमबीजसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि भृष्टगोधूमान्नानि सुस्विन्नगोधूमान्नानि वा भगवते शर्वाय तुभ्यमहं ददे ।

एवं चणककलायादौ ।

---

१ ने० पा०, गोधूमचणका न्यन् ।
२ तत्रैव, संख्यातं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाकल करमर्द्दक फल दानक पुण्यः—

जे पाकल करमर्द्दक शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ दस सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६२८॥

आइ प्रतिफलक अनुसार दस सहस्र वर्ष धरि अविच्छिन्न रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई पाकल करमर्द्दक फल भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

सुपक्व बैर फल दानक फलः—

सुन्दर पाकल बदरी (बैर) आ तिन्तिडीक फल, पाकल आमलकी फल आ' एहि प्रकारक अन्यान्य शाक, मूल तथा फल शिवक हेतु निवेदित कय जेहन फल प्राप्त होइत अछि, से सुनू ॥६२८क-६२९॥

उपर्युक्त फल सममे सँ एक-एक फल समर्पण कयलासँ पाँच हजार वर्ष धरि शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६३०॥

आइ हम प्रति फलक मुताबिक पाँच सहस्र वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे बहुत भोगपूर्वक महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई सुन्दर पाकल बैरक फल भगवान शिवक हेतु निवेदित करैत छी।

ओएह फल तिन्तिडी, आमलकी आदि उपर्युक्त फल तथा अन्य शाक फल, मूल देबामे सेहो होइछ। एक फल दान करबामे 'प्रतिफलम्'क स्थानमे 'इदं फलम्' पदक योजना करी।

भूजल गोधूमादिदानक फल :—

जे भूजल गोधूम अथवा नीक जकाँ पीसल सातु भगवान शिवकें अर्पित करैछ ओकर जे फल प्राप्त होइछ से सुनू। एहि भूजल तथा पीसल वस्तुक जतेक बीज-संख्या निवेदित होइत अछि, ओतबे सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६३१-६३२॥

सुक्तान् नीक जकाँ पीसल।

आइ गोधूमक एहि बीजक समानसंख्यक सहस्र वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ भूजल गोधूम तथा पीसल वा सुस्विन्न गोधूमान्न भगवान शिवक हेतु हम समर्पित करैत छी।

एहने फल बूट-केराओक सेहो जानबाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इक्षुदाने—

य: पर्वणीक्षुदण्डानां शिवाय विनिवेदयेत् ।
गुरवे वापि चैकैकवर्षलक्षं प्रमोदते ॥
साग्रं शिवपुरे भोगैः पौण्ड्रं[1] पञ्चगुणं भवेत् ॥६३३॥

अद्य प्रतिपर्वणि साग्रलक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगप्रमुदितत्व-कामनया इमानिक्षुदण्डान् भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ॥

पौण्ड्रकेक्षुदण्डनिवेदने —

अद्य प्रतिपर्वसाग्रपञ्चलक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगप्रमुदित-त्वकामनया एते पुण्ड्रकेक्षुदण्डाः भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

एकेक्षुदण्डदाने त्वेकवचनं प्रयोज्यमिति विशेषः ।

शिवयोगिसम्प्रदानकदानेप्येतदेव फलम् ।

इक्षुरसनिवेदने—

निवेद्य परमेशाय शुक्ति[2]मात्रं रसस्य तु ।
वर्षकोटिं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६३४॥

अद्य वर्षकोट्यवच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुमहाभोगमहितत्वकाम इममिक्षुरसं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

फाणित[3] दाने—

निवेद्य फाणितं शुद्धं शिवाय गुरवेऽपि वा ।
रसात् सहस्रगुणितं फलं प्राप्नोति मानवः ॥६३५॥

रसादिक्षुरसात् ।

अद्यरसदानफलसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनया इदं फाणितं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदितम् ।

फाणितञ्चापि विज्ञेयं खण्डवद्वाग्रभागकम् ।

गुडपलदाने—

गुडस्य पलमेकन्तु यः शिवाय निवदयेत् ।
अब्दकोटिं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६३६॥

अद्य वर्षकोट्यवच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगमहितत्वकामनया इदं गुडपलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्[4] ।

---

१ मूले प्रौण्डं ।
२ सितुआ ।
३ मूले फालितं ।
४. ने० पा०, निवेदितम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुसियार दानक फलः—

जे जतेक पर्व (पोर) बाला कुसियारक छड़ शिवक हेतु अथवा गुरुक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ एक-एक पर्व (पोर)क अनुसार लाख वर्ष धरि शिवपुरक समस्त भोगसँ आनन्द करैत अछि।

(एकर अतिरिक्त)क पौण्ड्रक (गन्नाक एक प्रभेद) देलासँ पाँच गुना अधिक फल होइत अछि ।।६३३।।

आइ प्रति पर्व (पोर) लाख वर्षसँ बेसी धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे बहुत भोग आ प्रमुदित्वक कामनासँ ई कुसियारक दंड (छड़) भगवान शिवक हेतु हम दैत छी।

पौण्ड्रक कुसियार दण्ड (छड़)निवेदनक फलः—

आइ प्रति पर्व (पोर वा गाँठ) समस्त पाँच लाख वर्ष धरि निरवच्छिन्नरूपें शिवपुरमे अनेक भोगपूर्वक महितत्वक कामनासँ ई पौण्ड्रक दंड भगवान शिवकें हमरा द्वारा देल गेल।

कुसियारक एक छड़क दानमे एकवचनक प्रयोग करक चाही।

शिवयोगीक दानमे सेहो इएह फल होइत अछि।

इक्षुरस निवेदनमे फलः—

शुक्ति अर्थात् सितुआ भरि कुसियारक रस शिवक हेतु निवेदन कय कोटि वर्ष धरि महाभोगक संग शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ।।६३४।।

आइ कोटि वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे अनेक महाभोग लाभ-पूर्वक महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई इक्षुरस भगवान शिवक हेतु हम समर्पित करैत छी।

फाणित दानक फलः—

शिव अथवा गुरुक हेतु शद्ध फाणित (राब) निवेदित क इक्षुरससँ सहस्र गुना फल मानव प्राप्त करैत अछि ।।६३५।।

रसादिक तात्पर्य इक्षुरस अछि।

आइ इक्षुरसदानजन्य फलसँ सहस्र गुना बेसी फल प्राप्तिक कामनासँ ई राव भगवान शिवक हेतु हम निवेदित करैत छी।

फाणितक तात्पर्य खण्डक सदृशे अग्रभाग वाला होइत अछि।

एक पल गुड़-दानक फलः—

जे एक पलक बरावरि गुड़ शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ करोड़ वर्ष पर्यन्त महाभोगक संग पूजित होइत अछि ।।६३६।।

आइ कोटि वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपें शिवलोकमे बहुत भोगसँ युक्त महितत्वक प्राप्तिक कामनासँ ई एक पल गुड़ भगवान शिवकें हमरा द्वारा देल गेलनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खण्डपलनिवेदने—

खण्डस्य पलनैवेद्यं गुडाच्चतुर्गुणं स्मृतम् ।
खण्डात्सहस्रगुणितं शर्कराविनिवेदने ॥६३७॥

अद्य गुडपलशतदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं खण्डपलं भगवते शिवाय तुभ्यं दत्तम् ।

शर्करापलनिवेदने—

अद्य खण्डपलसहस्रदानफलप्राप्तिकामनया इदं शर्करापलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

मत्स्य[1]ण्डिकादाने—

मत्स्यण्डिकां महाशुद्धां शङ्कराय निवेदयेत् ।
कल्पकोटिं नरः साग्रां शिवलोके महीयते ॥६३८॥

अद्य साग्रकल्पकोट्यवच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम इमां मत्स्यण्डिकां महाशुद्धां भगवते शिवाय तुभ्यं मया निवेद्यते ।

मत्स्यण्डिका तु विज्ञेया खण्डशालुकिका हि सा ।

मांसनिवेदने—

परिपक्वं सुसंमृष्टमाज्यसिद्धं सुसंस्कृतम् ।
शिवाय मांसं दत्वा तु शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६३९॥

अशेषफलदानेन यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
तत्फलं प्राप्नुयान्नित्यं सर्वं मांसनिवेदनात् ॥६४०॥

अद्याशेषफलदानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकाम इदं मांसं परिपक्वं सुसंमृष्टमाज्यसंस्कृतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

पानकनिवेदने—

यः पानकानि दिव्यानि स्वादूनि सुरभीणि च ।
निवेदयेत शर्वाय तस्य पुण्यफलं शृणु ।
कल्पकोटिं नरः साग्रां शिवलोके महीयते ॥६४१॥

---

1 मालविकाग्निमित्र, ३ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पल भरि खाँड़ निवेदनक फल:—

एक पल खाँड़ नैवेद्यमे निवेदन कयलासँ गुड़सँ चतुर्गुण फल प्राप्त होइत अछि। खाँड़सँ सहस्र गुना फल शर्कराक निवेदनमे अछि ॥६३७॥

आइ हम सय पल गुड़दानजन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई एक पल खण्ड भगवान शिवकें देलियनि।

पल भरि शर्करा चढ़यबामे फल—

आइ सहस्र पल भरि खाँड़ दानफलसभफल प्राप्तिक कामनासँ ई पल भरि शर्करा भगवान शिवक हेतु हम अर्पित करैत छी।

मत्स्यण्डिका दानमे फल—

अत्यन्त शुद्ध मत्स्यण्डिका (मोट वा बिना साफ कयल चीनी) शंकरक हेतु निवेदन क' मानव कोटि कल्प पर्यन्त शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥६३८॥

आइ हम समग्र कल्प कोटि (वर्ष) पर्यन्त अविच्छिन्नरूपें शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ महाशुद्ध मत्स्यण्डिका भगवान शिवकें समर्पित करैत छी।

मत्स्यण्डिकाक अर्थ थिक खण्डशालुकिका।

मांस-निवेदनक फल:—

जे आज्य (घी)मे सिद्ध परिपक्व आ सुसंस्कृत मांस शिवक हेतु दैत अछि, ओकर फल सुनू ।।६३९॥

अशेष (बिना शेषक) अर्थात् सभ फलदानसँ जे फल कहल गेल अछि, ओ सम्पूर्ण फल सदा मांस निवेदनसँ होइत अछि ।।६४०॥

आइ अशेष फल दान जन्य पुण्यक सदृश पुण्य-प्राप्तिक कामनासँ हम ई घीसँ पकाओल संस्कृत, सुपक्व आ सुसिद्ध मांस भगवान शिवकें दैत छी।

पानक (पेय) निवेदनक फल:—

जे दिव्य, सुस्वादु तथा सुगन्धित पानक (सरवत) शिवक हेतु समर्पित करैत अछि ओकर फल सुनू—मानव कोटि कल्पसँ अधिक शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६४१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य साग्रकल्पकोट्यवच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एतानि हृद्यस्वादुसुरभिपानकानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

आत्मेष्टान्नपानफलाद्यन्यतमनिवेदनस्य –

यदिष्टमात्मनः किञ्चिदन्नपानफलादिकम् ।
तच्छिवाय प्रदेयं स्यादुत्तमं भोगमिच्छता ॥६४२॥

अद्य उत्तमभोगप्राप्तिकामनया इदमात्मेष्टमन्नं पेयं फलं वा भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पलाशादिपत्रदाने—

पलाशकदलीपत्रं पद्मपत्राणि चैवहि ।
दत्त्वा शिवाय गुरवे शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६४३॥

यावत्तत्पत्रसंख्यानमीश्वराय निवेदितम् ।
तावदब्दायुतान्यैशे लोके स च महीयते ॥६४४॥

अद्यं तत् कदलीपत्रसमसंख्यवर्षायुतावच्छिन्नैशलोकमहितत्वकामनया एतानि कदलीपत्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवं पलाशपद्मपत्रयोरन्यतरदाने ।

शिवयोगिसंप्रदानकदानेप्येतदेव फलम् ।

पर्णपूगनिवेदने—

यावत्ताम्बूलपत्राणि पूगांश्च निवेदयेत् ।
तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके[1] महीयते ॥६४५॥

अद्यं तत्ताम्बूलपत्रपूगसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि पूगताम्बूलपत्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवमन्यदपि क्षुद्रवस्तुप्रदानमक्षयफलम् ।

---

१ ने० पा० रुद्रलोके ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम करोड़ कल्पसँ अधिक काल धरि अविच्छिन्न रूपें शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ ई सुरुचिपूर्ण सुगन्धित आ स्वादिष्ठ पानक (पेय) भगवान शिवकें देलियनि।

अपन रुचिक अन्न, पानक आ फल मेसँ किछु निवेदनक फल:—

जे उत्तम भोगक इच्छा रखैत अछि, ओ अपन पसन्दक अन्न, पान, भल आदि शिवक हेतु समर्पित करय ॥६४ ॥

आइ उत्तम भोग-प्राप्तिक कामनासँ ई अपन पसन्दक अन्न, पेय अथवा फल भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

पलाश आदि पत्र देबाक फल—

जे व्यक्ति पलाश, कदली (केरा) तथा कमलक पत्र शिव अथवा गुरुकें निवेदित करैत अछि, ओ जे फल प्राप्त करैत अछि से सुनू ॥६४३॥

ओ जतेक पत्रक संख्या ईश्वरक हेतु निवेदित करैत अछि ओतेक दस हजार वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥६४४॥

आइ हम कदलीपत्र संख्याक बरावरि अयुत वर्षधरि अविच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे श्रेष्ठताक कामनासँ ई कदली (केरा)क पत्र भगवान शिवकें देलियनि।

इएह वाक्य पलाश एवं पद्मपत्रक दानमे सेहो होइछ।
शिवयोगीकें दान देबामे सेहो इएह फल होइत अछि।

पान-सुपारी निवेदनक फल—

जतेक संख्यामे ताम्बूलपत्र ओ सुपारी शिवक हेतु निवेदित कयल जाइत अछि, ओतेक सहस्र वर्ष धरि शिवलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६४५॥

आइ एहि ताम्बूल-पत्र आ पूगक समान संख्यावला सहस्र वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ रुद्रलोकमे महितत्वक कामनासँ एतेक सुपारी आ' पानक पात भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा समर्पित कयल गेलनि।

एहि प्रकारसँ छोट-छोट वस्तु सभक समर्पणसँ अक्षय फल प्राप्त होइत अछि।

4982

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यदाह—

सुक्षेत्रे च यथा बीजमुप्तं बहुफलं भवेत् ।
अत्यल्पमक्षयं तद्वत्पुण्यं तस्य शिवाश्रयात् ॥६४६॥

न शिवः परिपूर्णत्वात् किञ्चदश्नाति कस्यचित् ।
किन्त्वीश्वरनिभं[1] कृत्वा सर्वस्यात्मनि दीयते ॥६४७॥

तस्मादीश्वरमुद्दिश्य यद्ययदात्मनि रोचते ।
तत्तदीश्वरभक्तेभ्यः प्रदातव्यं फलार्थिभिः ॥६४८॥

अद्यैतद्द्रव्यदानजन्याक्षयपुण्यप्राप्तिकामनया इदममुकं वस्तु भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अथ नन्दिपुराणे सिद्धान्नदाने

देवतानां तु यो दद्यादन्नं श्रद्धासमन्वितः ।
सिक्थात्[2] सिक्थाद्वसेल्लक्षं समा नाकेऽमरैःसह ॥६४९॥

एतद्दशगुणं पुण्यमन्ने व्यञ्जनसंयुते ।
तथैष्टदैवते दत्वा पुण्यमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥६५०॥

यो दद्याद्ब्राह्मणेऽन्नानि तस्य द्विगुणित फलम् ।
तस्माद्विष्णौ तु दत्वान्नं द्विगुणं फलमश्नुते ॥६५१॥

रुद्रायान्नप्रदानेन फलमेतच्चतुर्गुणम् ।
एतत्काले समायोगाद्व्यञ्जनानाञ्च योऽगतः ॥
शतसंख्यं भवेत्पुण्यं सम्यगन्नप्रदायिनाम् ॥६५२॥

अद्य प्रतिसिक्थं विष्णुसम्प्रदानकान्नदानफलचतुर्गुणफलप्राप्तिकामनया एतानि सिद्धान्नानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

पुण्यकालीनसव्यञ्जनान्नदाने—

अद्योत्तरायणादिरविसंक्रान्तौ प्रतिसिक्थं विष्णुसम्प्रदानकान्नदानफलप्राप्तिकामनया एतानि सव्यञ्जनानि भक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ मूले ईश्वरांनिभे ।
२ भात ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहल गेल अछि जे—

जाहि प्रकारसँ नीक (उपजाउ) खेतमे छीटल बीज कालान्तरमे बहुत फल देवयवला होइत अछि, ओही प्रकारसँ शिवक आश्रयमे समर्पित अत्यल्प वस्तु सेहो अक्षय पुण्य दैत अछि ॥६४६॥

पूर्णताक कारणे शिव ककरो कोनो वस्तु नहि भोजन करैत छथि, परन्तु ओ वस्तु ईश्वरार्पित बूझि आत्मामे देल जाइत अछि। तेँ फलक कामना करयवला अपना रुचिक वस्तु सभ ईश्वरक उद्देश्य कय शिवभक्तकेँ समर्पित करथि ॥६४७-६४८॥

अक्षय पुण्य प्राप्तिक कामनासँ ई अमुक वस्तु भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

आब नन्दिपुराणमे सिद्धान्नदानक फल--

जे देवताकेँ उद्देश्य कय श्रद्धा-समन्वित सिद्ध अन्न दान करैत अछि ओ प्रत्येक भातक अनुसार लक्ष वर्ष धरि देवता लोकनिक संग स्वर्गवास करैत अछि ॥६४९॥

अपन इष्ट देवताकेँ व्यंजनक संग सिद्ध अन्न देवामे एहि प्रकारक पुण्य कहल गेल अछि ॥६५०॥

जे व्यक्ति ब्राह्मणकेँ सिद्ध अन्न दैत अछि, ओ दुगुना फल प्राप्त करैत अछि। अतएव, विष्णुकेँ अन्न दय दुगुना फल प्राप्त होइत अछि ॥६५१॥

ओएह अन्न रुद्रकेँ देलासँ फल चौगुना भय जाइत अछि। ओहि कालक पुण्यकालमे व्यंजन आदिसँ संयुक्त विधिपुरस्सर अन्न देमयवालाकेँ सय गुना अधिक फल होइत अछि ॥६५२॥

आइ प्रति सिक्थ विष्णुक हेतु देल गेल अन्नसँ चारि गुना फल प्राप्तिक कामनासँ ई सिद्धान्न भगवान रुद्रक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

पुण्यकालमे व्यंजन (तरकारी) सहित अन्नदानक फल—

आइ उत्तरायणादि सूर्य-संक्रान्तिक अवसर पर विष्णुक हेतु अन्नदानसँ चतुर्गुण फल प्राप्तिक कामनासँ ई व्यंजन सहित भात भगवान रुद्रक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणे सघृतनैवेद्यदाने—

नैवेद्यं घृतसंयुक्तं धूपञ्चैव दिवेदयेत् ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥६५३॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं सघृतनैवेद्यं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सघृतपायसदाने—

पायसं घृतसंयुक्तं यो हराय प्रयच्छति ।
न दुर्गतिमवाप्नोति स्वर्गलोकं प्रयच्छति[1] ॥६५४॥

अद्य दुर्गत्यनवाप्तिस्वर्गलोकगमनकाम इदं सघृतपायसं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सव्यञ्जनशालिभक्तदाने—

सव्यञ्जनानि भक्तानि शिवाय प्रतिसिक्थकम् ।
वर्षलक्षाणि पूर्णानि चत्वारिंशत्तथैव च ॥
प्रदाय चामरैः सार्द्धं स्वर्गलोके महीयते ॥६५५॥

अद्य प्रतिसिक्थं[2] चत्वारिंशद्वर्षलक्षावच्छिन्नामरसहितस्वर्गलोकमहितत्वकामनया एतानि सव्यञ्जनशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

अन्नदाने—

रुद्रायान्नप्रदानेन सिक्थे सिक्थेऽमरैः सह ।
षोडशैवाब्दलक्षाणि वसेच्छ्रद्धान्वितो नरः ॥६५६॥

अद्य प्रतिसिक्थं षोडशाब्दलक्षावच्छिन्नामरसहितस्वर्गवासकामनया एतानि भक्तान्नानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, गच्छति ।

२ ने० पा०, सिक्त ।

३ तत्रैव, कोट्य षोडश ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे घृतसहित नैवेद्यदानक फल—

घृतसँ संयुक्त नैवेद्य आ' धूपक निवेदनसँ मानव अग्निष्टोम यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥६५३।

आइ अग्निष्टोम यज्ञ फल सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ ई घृतसहित नैवेद्य भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

घृतसहित खीरदानक फल—

जे घृत-संयुक्त पायस शिवक हेतु दैत अछि, ओ दुर्गति नहि प्राप्त करैत अछि आ' स्वर्गलोक गमन करैत अछि ॥६५४॥

आइ दुर्गति नहि प्राप्तिक कामना आ' स्वर्गलोक गमनक कामनासँ ई घृतसहित पायस भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

व्यंजनसँ संयुक्त चाउरक भात देबाक फल—

व्यंजनसँ संयुक्त शालिभक्त शिवक हेतु सर्मपित कय प्रति सिक्थक अनुसार चालीस लाख वर्ष धरि देवताक संग स्वर्गलोकमे महितत्व प्राप्त करैत अछि ॥६५५॥

आइ प्रति सिक्थ चालीस लाख वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ देवता सहित स्वर्गलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई व्यंजन सहित शालिभक्त (चाउरक भात) भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

अन्नदानक फल—

रुद्रक हेतु अन्न प्रदान कय प्रतिसिक्थ १६ लाख वर्ष धरि अवच्छिन्न रूपसँ मानव देवताक संग रहैत अछि ॥६५६॥

आइ प्रतिसिक्थ १६ लाख वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ देवता सभक संग स्वर्गवासक कामनासँ ई भक्तान्न भगवान रुद्रक लेल हमरा द्वारा देल गेल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सव्यञ्जनान्नदाने —

सव्यञ्जनान्नदानेन कोटिञ्च प्रतिसिक्थकम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि[1] वसेच्छ्रद्धान्वितोऽमरैः ॥६५७॥

अद्य प्रतिसिक्थं षष्टि[2] वर्षसहस्रावच्छिन्नाधिकवर्षकोट्यवच्छिन्नसहामरस्वर्गवासकामनया एतानि सव्यञ्जनशालिभक्तानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

बहुव्यञ्जनसहितान्नदाने —

बहुव्यञ्जनं प्रदायान्नं शिवायप्रतिसिक्थकम् ।
कोट्यः षोडशवर्षाणां वसेच्छ्रद्धान्वितोऽमरैः ॥६५७॥

अद्य प्रतिसिक्थं षोडशवर्षकोट्यवच्छिन्नसहामरवासकामनया एतानि बहुव्यञ्जनशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

सघृतान्नदाने—

रुद्राय तत्सघृतं दत्वा तथा चान्नादिकं शुभम् ।
अग्निष्टोमादिकं पूर्वं फलमुक्तं लभेन्नरः ॥६५८॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि सघृतान्नानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

शिवधर्मोत्तरे भक्तदानस्य—

शिवाग्निगुरुनैवेद्ये यावत्सिक्थानि संख्यया ।
तावद्वर्षसहस्राणि दाता शिवपुरे वसेत् ॥६५९॥

अद्य तद्दातव्यसिक्थसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरवासकामनया एतानि भक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

शिवयोगिसम्प्रदानकैतद्दानेऽप्येतदेव फलम् ।

घृतसूपयुक्तभक्तदाने ।

घृतसूपयुतैः[3] सिक्थैः पुण्यं दशगुणोत्तरम् ।
अवदंशयुतैर्ज्ञेयं पुण्यं दशगुणाधिकम् ॥६६०॥

अवदंशो मूलकादिः ।

अद्य प्रतिसिक्थं दशवर्षसहस्राधिकावच्छिन्नशिवपुरवासकामनया एतानि घृतसूपयुतभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवमवदंशयुतान्नदानेऽपि ।

---

१ ने० पा०, कोट्यः षोडश········।
२ तत्रैव षोडश वर्षः········।
३ तत्रैव, युक्तैः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्यंजनसंयुक्त अन्नदानक फल—

व्यंजनक संग अन्न दान कयलासँ एक करोड़ साठि हजार वर्ष धरि देवता सभक संग श्रद्धान्वित भय वास करैत अछि ।।६५७।।

आइ प्रति सिक्थ ६० हजार वर्ष अविच्छिन्नसँ अधिक कोटि वर्ष धरि देवताक संग स्वर्गवासक कामनासँ ई सव्यंजन शालिभक्त भगवान रुद्रकेँ हमरा द्वारा देल गेल ।

वहुत प्रकारक व्यंजनक संग अन्न दानक फल—

बहुत प्रकारक व्यंजन (तरकारी)क संग अन्न जे शिवकेँ श्रद्धापूर्वक प्रदान करैत अछि, प्रत्येक सिद्धान्नक मुताबिक सोलह करोड़ वर्ष धरि देवता सभक संग वास करैत अछि ।।६५७क।।

आइ प्रति सिक्थ १६ कोटि वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ अमर (देवता) सभक संग वासक कामनासँ ई बहुत प्रकारक व्यंजनसँ युक्त शालिभक्त भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल ।

घृतक संग अन्नदानक फल—

सघृत अर्थात् घृत सहित अन्न रुद्रक हेतु दान कयलासँ मानव अग्निष्टोम आदि पूर्वोक्त फल लाभ करैत अछि ।।६५८।।

आइ अग्निष्टोम यज्ञ सदृश फल-प्राप्तिक कामनासँ ई घृतसहित अन्न भगवान रुद्रक हेतु हमरा द्वारा देल गेल ।

शिवधर्मोत्तरमे भात दानक फल—

शिव, अग्नि आ गुरुक हेतु जतेक संख्या सिक्थ नैवेद्य देल जाइछ ओतेक सहस्र वर्ष शिवपुरमे बसैत अछि । ६५९।।

आइ देल गेल सिक्थक समान संख्याक बराबरि सहस्र वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरमे वासक कामनासँ ई भात भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल ।

शिवयोगीकेँ सेहो सिद्धान्न दान देलासँ इएह फल होइत अछि ।

घी-दालिक संग भात दान करबाक फल—

घी-दालिक संग भात दान करबामे दस गुना अधिक फल होइत अछि । जँ अवदंशक संग देल जाय तँ आरो दस गुना अधिक फल होइत अछि ।।६६०।।

अवदंशक अर्थ मूलक आदि अछि ।

आइ प्रति सिक्थ दस सहस्र वर्ष अधिक अविच्छिन्न रूपसँ शिवपुरवासक कामनासँ ई घृतसूपयुक्त भात भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल ।

आ इएह फल अवदंशसँ युक्त अन्नदानक सेहो अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

षष्टिकौदने—

षष्टिकोदननैवेद्यैः सहस्रगुणितं फलम् ॥६६१॥

अद्य ओदनदानफलसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनया एतानि षष्टिकौदनानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

सुगन्धिशालिभक्तदाने—

सुगन्धिशालिनैवेद्यं विज्ञेयमयुताधिकम् ॥६६२॥

अद्य भक्तदानफलायुताधिकफलप्राप्तिकामनया एतानि सुगन्धिशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

रक्तशालिभक्ते—

रक्तशालिकनैवेद्यैः फलं स्यान्नियुताधिकम् ॥६६३॥

अद्य नियुताधिकभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि रक्तशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

कलमशालिभक्ते—

कलमशालिनैवेद्यैर्दशलक्षाधिकं फलम् ॥६६४॥

अद्य दशलक्षाधिकौदनफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि कलमशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

एवं शालिविशेषेण फलं स्यादुत्तरोत्तरम्।
शुभव्यञ्जनसंयुक्तैर्भूयः पुण्यं प्रवर्द्धते ॥६६४क॥

विचित्रस्वादुसुरभिबहुव्यञ्जनदाने—

व्यञ्जनानि विचित्राणि स्वादूनि सुरभीणि च।
तानि कोटिशतान्याहुः स्निग्धानि मधुराणि च ॥६६५॥

अद्य कोटिशताधिकौदनदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि स्वादुविचित्र-सुरभिस्निग्धमधुरबहुव्यञ्जनान्नानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

षष्टिकौदन देबाक फल—

साठीक भात नैवेद्य देलासँ हजार गुना अधिक फल होइत अछि ॥६६१॥

आइ (सामान्य) भातदानक फलसँ सहस्र गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई साठीक चाउरक भात भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

सुगन्धित चाउर (बासमती चाउर)क भात दानक फलः—

सुगन्धित शालिसँ बनल भातक नैवेद्यसँ दस हजार गुना अधिक फल होइत अछि ॥६६२॥

आइ साधारण भक्त दान जन्य फलसँ दस हजार गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई सुगन्धित शालिभक्त भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

लाल शालिसँ बनल भात दानक फलः—

लाल चाउरक नैवेद्यसँ लाख गुना अधिक फल होइत अछि ॥६६३॥

आइ हम साधारण भातक दानसँ लाख गुना अधिक फल प्राप्तिक कामना सँ लाल चाउरक एतेक भात भगवान शिवके देलियनि।

कमलशालि (कमलदान चाउर)क भात देबाक फल—

कमलदान शालिक नैवेद्यसँ दस लाख अधिक फल होइत अछि ॥६६४॥

आइ दस लाखसँ अधिक ओदन दान फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ ई कलमशालिभक्त भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा देल गेल।

एहिना शालि (चाउर) विशेषक फल उत्तरोत्तर होइत अछि। शुभ (बढ़ियाँ) व्यंजनक संग अधिक पुण्य बढ़ैत अछि। ॥६६४क॥

विलक्षण स्वाद आ सुरभित विविध तरकारी दानक फलः—

विलक्षण स्वादिष्ट, सुगन्धित, स्निग्ध तथा मधुर विविध तरकारीक दानसँ करोड़ गुना अधिक फल भेटैत अछि ॥६६५॥

आइ साधारण ओदनक दानसँ शत कोटि अधिक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई सब स्वादिष्ट, विचित्र, सुगन्धित, स्निग्ध आ मधुर बहुत व्यंजन भगवान शिवक हेतु हमरा द्वारा प्रदान कयल गेल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षीरभक्तदानस्य—

क्षीरभक्तेन नैवेद्यं दशकोटिगुणाधिकम् ॥६६६॥

अद्य दशकोटिगुणाधिकौदनदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि क्षीरभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

शर्करायुतदधिदाने—

दधिशर्करायुक्तं तत्पुण्यं स्याद्दशाधिकम् ॥६६७॥

अद्य दशगुणाधिकक्षीरभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं दधिशर्करायुक्तं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्।

साधितमांसदाने—

मांसेनैव तु नैवेद्यं पुण्यं तस्य दशाधिकम् ॥६६८॥

अद्य दशगुणाधिकशर्करायुक्तदधिदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि साधितमांसानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

रसालादाने—

रसालां सुघनां स्फीतां कर्पूरसुरभीकृताम् ।
निवेद्य पुण्यमाप्नोति दशकोटिगुणाधिकम् ॥६६९॥

अद्य दशकोटि····धिकमांसदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इमां रसालां भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये।

वैद्यके—

अर्द्धाढकंत्वचिरपुय्युंषित (तस्य) सदध्नः ।
खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभवस्य ।
सर्पिप्पलं मधुपलं मरिचद्विकर्षं ।
शुण्ठीपलार्द्धमपिचार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥३७०॥
श्लक्ष्णे[1]पाटललनया मृदुपाणिघृष्टा ।
कर्पूरधूपसुरभीकृतभाण्डसंस्था ।
एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला ।
यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥६७१॥

---

१ श्लक्ष्णोपले (शुद्ध पाठ)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूध-भात दानक फलः—

दूध-भातक नैवेद्यसँ दस कोटि गुना अधिक फल होइत अछि ॥६६६॥

आइ दस कोटि गुना अधिक ओदन दान जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई सभ दूध भात भगवान शिवक हेतु हम दैत छी।

शक्करसँ युक्त दही देबाक फल—

शक्करसँ युक्त दही देबामे दूध-भात देबाक फलसँ दस गुना अधिक फल भेटैत अछि ॥६६७॥

आइ क्षीरभक्त दान जन्य फलसँ दसगुना अधिक फलक समान फल प्राप्तिक कामना हेतु ई शक्कर युक्त दही भात भगवान शिवकेँ हमरा द्वारा देल जाइत अछि।

साधित (सिद्ध) मांस दानक फलः—

सिद्ध मांसक नैवेद्यमे ओहिसँ अर्थात् शक्कर-मिश्रित दही देलासँ दस गुना अधिक फल प्राप्त होइत अचि ॥६६८॥

आइ शक्कर-युक्त दही दानसँ दसगुना अधिक फलक समान फल प्राप्तिक कामना हेतु ई साधित (सिद्ध) मांस भगवान शिवकेँ हम देलियनि।

रसालादानक फलः—

गढ़गर आ स्निग्ध कपूरसँ सुगन्धित रसाला नैवेद्यमे देलासँ (साधित मांसक अपेक्षा) दस कोटि गुना अधिक फल होइत अछि ॥६६९॥

आइ मांस दान जन्य फलसँ दस कोटिसँ अधिक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ हम ई रसाला भगवान शिवक हेतु निवेदित करैत छी।

वैद्यकमे कहल अछि—

आधा आढ़क शीघ्र जमाओल दही अर्थात् टटका दही, सोलह पल ताल मिश्री एक-एक पल घी आ मधु, बत्तीस मासा कारी मरीच, आधापल सोंठि, आधा पल इलाइची पत्रक, (इलापत्र) आधा पल गुड़ आधा पल वच अर्थात् दालचीनी, आधा पल नागकेशर—ई सभ कोमल हाथसँ घोटि दहीमे मिलाय कर्पूर आ धूपसँ सुवासित कयला पर स्वादिष्ट रसाला तैयार होइत अछि। वृकोदरक द्वारा तैयार कयल गेल एहन रसालाक आस्वादन भगवान मधुसूदन कयने छलाह ॥६७०-७१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्णाम् एलापत्रकगुडत्वचानागकेशराणाम् ।

सुगन्धिपानकदानस्य—

पानकानां सुगन्धानां फलं तुल्यं रसालया ।
तथा फलविशेषैश्च स्वादुभिः सदृशं फलम् ॥६७१क॥

सुगन्धानां कर्पूरादिक्षोदसुरभीकृतानाम् ।

अद्य रसालादानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं सुगन्धिपानकं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं[1] स्वादुफलविशेषेष्वपि ।

गुडखण्डाक्षतयुतघृतपाचितभक्ष्येषु—

गुडखण्डाक्षतैर्भक्ष्यैर्घृतेन परिपाचितैः ।
सहस्रकोटिगुणितं ज्ञेयं सुगन्धिभिः ॥६७२॥

अद्य सहस्रकोटिगुणितपानकदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि सुरभीणि-खण्डघृताक्षतपाचितभक्ष्याणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

गुड़घृताक्षतपाचितेष्वेतदेव फलम् ।

घृतपाचितमधुरविविधपिष्टप्रकारेषु—

पिष्टप्रकारैर्विविधैर्मधुरैर्घृतपाचितैः ।
कोटिकोटिगुणं पुण्यं शिवाग्निगुरुपाचितैः ॥६७३॥

अद्य कोटिकोटिगुणाधिकघृतखण्डाक्षतपाचितभक्ष्यदानफलप्राप्तिकामनया एते घृतपाचितमधुरपिष्टकप्रकारा भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

घृतपात्रदानस्य—

घृतपात्रेण विज्ञेयं पिष्टतुल्यं फलं बुधैः ।
शर्कराखण्डयुक्तेन[2] पिष्टादप्यधिकं फलम् ॥६७४॥

अद्य घृतपाचितमधुरपिष्टकदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं घृतपात्रं भगवते शिवायं तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, एवामितर ।
२ तत्रैव, शर्कराखण्डकेनापि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'चतुर्णाम्'क संबंध एलापत्रक, गुड़, वचा आ नागकेशरक संग अछि।

सुगन्धित पानक दानक फलः—

सुगन्धित पानक दानक फल रसाला दानक तुल्य अछि। आ' फल विशेषमे स्वादक सदृश फल प्रप्त होइत अछि। अर्थात् जेना-जेना स्वाद बदलैत जाइत अछि तेना-तेन फल बदलैत जाइत अछि॥६७१क॥

कर्पूर आ' अक्षोदसँ सुरभित कयल गेल वस्तुकेँ सुगन्ध कहल जाइत अछि।

आइ रसालादान फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई सुगन्धित पानक भगवान शिवकेँ हमरा द्वारा देल गेलनि।

एहिना आरो स्वादिष्ट फल विशेषकेँ चढ़ेबाक पुण्य होइत अछि।

गुड़, खाँड़, अक्षत (चाउर) एवं घीसँ पकाओल भक्ष्यपदार्थ दानक फलः—

गुड़, खाँड़ अक्षत एवं घीसँ पकाओल भक्ष्य पदार्थकेँ निवेदन कयलासँ सुगन्धित पेय पदार्थ दान जन्य फलसँ सहस्र कोटि गुना अधिक फल होइत अछि॥६७२॥

आइ पेय पदार्थक दान जन्य फलसँ सहस्र कोटि गुना अधिक फल प्राप्त करबाक कामना हेतु हम ई खाँड़, घी आ' अक्षतसँ पकाएल गेल सुगन्धित भक्ष्य पदार्थ भगवान शिवकेँ देलियनि।

गुड़, घी, अक्षतसँ पकाओल खाद्यक इएह फल होइत छैक।

घृतमे पकाओल अनेक प्रकारक मधुर ओ पिष्टक नैवेद्यक फल—

घृतमे पकाओल अनेक प्रकारक मधुर ओं पिष्टक नैवेद्य शिव अथवा अग्नि अथवा गुरुकेँ समर्पित कयलासँ (घृतखण्डसँ पकाओल भक्ष्यक अपेक्षा) कोटि-कोटि गुणा अधिक फल कहल गेल अछि॥६७३॥

आइ घृत, खंड आ अक्षतसँ पकाओल भक्ष्य दान जन्य फलसँ कोटि-कोटि गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई सब घीमे पकाओल मधुर पिष्टक भगवान शिवकेँ हमरा द्वारा प्रदान कयल गेल।

घृत-पात्र दानक फल—

घृत-पात्र दानक फल पिष्टक दान फलक सदृश विद्वान लोकनिकेँ बूझक चाहियनि। शर्करा युक्त पिष्टक दानक फलहुसँ अधिक फल होइत छैक॥६७४॥

आइ घृतसँ पकाओल मधुर पिष्टक दान जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई घृत-पात्र भगवान शिवकेँ हम अर्पित कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शर्कराखण्डयुतघृतपात्रदाने—

अद्य खण्डाज्यपाचितमधुरपिष्टदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं शर्करा-खण्डयुतघृतपात्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं स्वासुरभिमधुरान्तरनिवेदनेऽपि ।

स्वादुमधुरविवेदनपूर्वकभोजनेन तु यद्यन्निवेदने तत्फलमक्षयं भवति ।

यदाह—

यथातथा स्वादूनि शुभानि सुरभीणि च ।
निवेद्य पिष्टपानानि तत्फलानि तथातथा ॥
भक्त्या निवेद्य भुञ्जानः फलमक्षयमाप्नुयात् ॥६७५॥

स्कन्दपुराणे दक्षिणामूर्त्तौ घृतपायसनिवेदने—

दक्षिणायान्तु यो मूर्त्तौ पायसं घृतसंयुतम् ।
निवेदयेद्वर्षमेकं स च नन्दिसमो भवेत् ॥६७६॥

वर्षमेक वर्षंप्रतिदिनमित्यर्थः ।

अद्यावि वर्षमेकं यावत्प्रत्यहं नन्दिसमत्वभवनकामो घृतसंयुक्तपायस दक्षिणा-मूर्त्तौ भगवतः शिवस्य निवदेयिष्ये ।

शालितण्डुलप्रस्थसाधितचरौ—

चरवो दशसाहस्रा यावकाश्च चतुर्गुणाः ।
शेषाश्च चरवः सर्वे यावकार्द्धेन सम्मिताः ॥६७७॥

अद्य दशसहस्रगुणभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एष शालितण्डुल[१]-प्रस्थप्रकृतिकचरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

यवप्रस्थप्रकृतिकचरौ—

अद्य भक्तदानफलचतुर्गुणफलप्राप्तिकामनया एष यवप्रस्थप्रकृतिकचरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शालियवान्यतरचरौ—

अद्य यवप्रस्थप्रकृतिकचरुदानफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया एष चरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

---

१ ने० पा०, मूले यवप्रस्थ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शक्कर आ खाँ युक्त (खाँर भरल) घृत-पात्र दानक फल—

आइ खाँड आ' घृतमे पकाओल मधुर पिष्टक दान जन्य फल सम फल प्राप्तिक कामन'सँ ई शर्करा-खण्ड युक्त घृत-पात्र भगवान शिवकेँ हम अर्पित कयल।

एहिना स्वादिष्ट सुगन्धित एवं मधुर अन्य वस्तुक निवेदनमे सेहो फल अछि।

स्वादिष्ट एवं मधुर निवेदन पूर्वक जे भोजन दैत अछि ओकर फल अक्षय होइत अछि।

जेनाकि कहल गेल अछि—

जेना-जेना स्वादिष्ट, सुन्दर, सुगन्धित पिष्टक पानक आदि पदार्थ सभकेँ निवेदित करैत अछि, ओहिना ओकरा फलो भेटैत अछि। जे पहिने भक्ति-पुरस्सर निवेदित कय भोजन करैत अछि, ओकरा अक्षय फल प्राप्त होइत छैक ॥६७५॥

स्कन्दपुराणमे दक्षिणा मूर्त्तिक समीप घृतमिश्रित पायस निवेदनक फल—

जे शिवक दक्षिणामूर्त्तिक समीप घृतसँ युक्त पायस एक वर्ष धरि प्रतिदिन निवेदित करैत अछि, ओ नन्दीक सदृश भय जाइत अछि ॥६७६॥

'वर्षमेकम्'क तात्पर्य एक वर्षक प्रत्येक दिन थिक।

आइ नन्दीक सदृश होयबाक कामनासँ हम वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन भगवान शिवक दक्षिणामूर्तिकेँ घीमिश्रित खीर निवेदित करब।

एक प्रस्थ शालि-तण्डुलसँ सिद्ध चरु[1] दानक फल—

उक्त चरुसँ दस सहस्र गुणा आ' यावक (जौक) चरुसँ चारि गुना फल होइछ। शेष सभ पक्व पदार्थ यावकक आधा फलक प्रदाता होइछ ॥६७७॥

आइ भात निवेदन जन्य पुण्यसँ दस हजार गुना अधिक पुण्य प्राप्त करबाक हेतु ई शालि तण्डुलसँ बनल चरु भगवान शिवकेँ हम अर्पित कयल।

प्रस्थपरिमित यवक चरुदानमे फल—

आइ भातक दानक फलसँ चतुर्गुण अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ ई प्रस्थ-परिमित जौसँ निर्मित चरु भगवान शिवक हेतु हम अर्पित कयल।

शालि[2] अथवा जौसँ निर्मित चरु दानक संकल्प—

आइ हम प्रस्थ-परिमित जौ प्रकृतिक (रूपक) चरु दान जन्य फलसँ अर्द्ध फल प्राप्तिक कामनासँ ई हविष्य भगवान शिवक हेतु अर्पित कयल।

---

१ [चर्+उन्] देवता तथा पितर सभक सेवामे प्रस्तुत करबाक हेतु तैयार कयल गेल आहुति।; रघुवंश १०/५२, ५४, ५६।; हव्यान्न।

२ [शाल्+णिनि] चाउर, मुद्राराक्षस, १/१३, न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते।; मृच्छकटिक, ४/१६।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शालितण्डुलप्रस्थसाधितचरौ –

शालितण्डुलप्रस्थेन कुर्यादन्नं सुसंस्कृतम् ।
शिवाय तं चरुं दद्याच्चतुर्द्दश्यां विशेषतः ॥६७८॥

हरिद्रां कृसरं[1] शुक्लं पायसं यावकं तथा ।
गुडखण्डाज्यसंमिश्रमेवमन्नं प्रकल्पयेत् ॥६७८क॥

यावन्तस्तण्डुलास्तस्मिन्नैवेद्ये परिसंख्यया ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६७९॥

चतुर्द्दश्यां विशेषत इतिवचनादधिकं फलम् ।

अद्य एतच्चरुप्रकृतितण्डुलसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकाम इमं शालितण्डुलप्रस्थसुसंस्कृतचरुं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

प्रस्थः षोडशपलानि ।

तदुक्तम्—

षोडशपलिकं प्रस्थमाढकं तैश्चतुर्गुणैः ।
द्वाभ्यामर्द्धाढकञ्चैव मुनिभिः समुदाहृतम् ॥६८०॥

एवं दरिद्रासंस्कृतकृसरशुक्लपायसयावकगुडखण्डाज्यसम्मिश्रान्नानामन्यतम-दानेऽपीदमेव फलम् ।

गुडखंडान्यतरघृतपाचितभक्ष्यदाने—

गुडखण्डतानाञ्च भक्ष्याणां विनिवेदने ।
घृतेन पाचितानां स्यादन्नाच्छतगुणं फलम् ॥६८१॥

अद्य शतगुणफलभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि खंडघृतान्नपाचित-भक्ष्याणि घृतगुडान्नपाचितभक्ष्याणि वा भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

---

१ ने० पा०, कृसरा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्थ भरि शालितण्डुलसँ[1] साधित चरु दानक फल—

एक प्रस्थ शालि तण्डुल सुसंस्कृत कय ओकर चरु बनाय विशेषतः चतुर्दशी तिथिमे शिव केँ समर्पित करबाक चाही। हरिद्रा (हरदि) कृसर (खिच्चड़ि), शुक्ल पायस (खीर) यावक[2] तथा गुड-खण्ड आ आज्य (घी) सँ सम्मिश्रित कोनो एक प्रकारक अन्नक नैवेद्य बनाबी। ओहि नैवेद्यमे सँ जतेक संख्या चाउरक रहैछ, नैवेद्य देनिहार व्यक्ति ओतेक सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥६७८—७९॥

'विशेषत: चतुर्दशीमे' एहि कथनसँ चतुर्दशी तिथिमे नैवेद्य देने अधिक फल होइछ।

आइ हम एहि चरु रूप चाउरक संख्याक समान सहस्र वर्ष पर्यन्त रुद्रलोकमे महानताक कामनासँ एहि एक प्रस्थ शालि तण्डुलसँ सुसंस्कृत चरु भगवान शिवक हेतु समर्पित करैत छी।

प्रस्थ सोलह पलक होइत अछि।

जेनाकि कहल गेल अछि—

सोहल पलक बरोवरि एक प्रस्थ, चारि प्रस्थक एक आढ़क आ' दू प्रस्थक बरोवरि अर्द्धाढक होइत अछि ॥६८०॥

एही तरहेँ हरदि मिलायकेँ निर्मित खिचड़ी, दूधमे बनल खीर, यावक, गुड़, खाँड एवं घीमे सम्मिश्रित अन्य चरु—एहिमे सँ कोनो अन्न दानक इएह फल होइत अछि।

गुड़ अथवा खाण्डमेसँ कोनो एक पदार्थ धृतमे पाचित भक्ष्य दानक फल—

गुड़ अथवा खाँड मिलाय घीमे पकाओल भक्ष्य निवेदन करबामे सामान्य भात दानसँ शत गुणित अधिक फल होइत अछि ॥६८१॥

आइ हम सामान्य भात दान जन्य फलसँ सए गुणा अधिक फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ ई खण्ड, घृत आ' अन्नसँ पाचित भक्ष्य, अथवा घृत, गुड़ एवं अन्न सँ पकाओल भक्ष्य भगवान शिवक हेतु निवेदन करैत छी।

---

१ [तण्ड्+उलच्] चाउर; शस्य, धान्य, तण्डुल आ अन्न—ई चारू प्रकार एक दोसरसँ भिन्न अछि :—
शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तं सतुषं धान्यमुच्यते।
निस्तुषः तण्डुलः प्रोक्तः शेषमन्नमुदाहृतम्।

२ जौसँ बनल आहार।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातुलिङ्गादि[1] फलस्य—

मातु[1]लिङ्गफलाद्यानि पक्वानि विनिवेदयेत् ।
शिवाय तत्फलं तस्य यद्भक्ष्याणां निवेदने ॥६८२॥

अद्य गुडखंडान्यतरघृतपाचितभक्ष्यदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि मातु[1]लिङ्गफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

एवं फलान्तरेऽपि ।

पानकसलिलयोः—

मार्जिता पानकान्यानां भक्ष्यार्द्धफलमिष्यते ।
तदर्द्धं सलिलस्यापि वासितस्य निवेदने ॥६८३॥

अद्य गुडखंडान्यतरपाचितभक्ष्यदानफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया इदं पानकं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

मार्जिता रसालातद्दानेऽपीदं फलम् ।

वासितजलस्य—

अद्य पानकदानजन्यफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया इदं वासितजलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

प्रात्याहिकवस्त्रपूततोयस्य—

दिने दिने तु यस्तोयं वस्त्रपूतं निवेयदेत् ।
शिवाय शिवभक्तेभ्यो रमते स शिवालये ॥६८४॥

अद्यादि शिवालयाधिकरणकक्रीडनकामनया वस्त्रपूततोयं वरुणदैवतमहरहर्भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

शिवभक्तसंप्रदानकैतद्दानेऽप्येतदेव फलम् ।

घृतपात्रे—

घृतपात्रमसंख्येयमिह प्रेत्य च शाश्वतम् ॥६८५॥

अद्यैहिकामुष्मिकासंख्येयशाश्वतफलप्राप्तिकामनया इदं घृतपात्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, मातुलुङ्ग ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातुलिङ्ग[1] (बिजौरा नेबो अथवा टाभ नेबो) आदिक फल—

पाकल मातुलिङ्ग आदि फल शिवकेँ निवेदित करबामे भक्ष्य अन्न निवेदनैक फल होइत अछि ॥६८२॥

आइ हम गुड़ तथा खाण्ड एहिमे सँ कोनो एक आ' घृत द्वारा परिपक्व भक्ष्य दान-फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ई मातुलिङ्ग फल भगवान शिवक हेतु निवेदन करैत छी।

एहिना दोसरो फलक अर्पणसँ फल होइत अछि।

पानक[2] आ शुद्ध जलक निवेदनमे फल—

भक्ष्य पदार्थक निवेदनसँ प्राप्त फलक आधा फल पानक निवदनमे ओ ओकर आधा सुगन्धित जलक निवेदनमे फल होइत अछि ॥६८३॥

आइ हम गुड़ आ खाँण्ड एहिमेसँ कोनो एकमे पकाओल भक्ष्य-दानक फलसँ आधा फल प्राप्तिक कामनासँ ई पानक भगवान शिवक हेतु अर्पित कयल।

मार्जित रसालाक सेहो इएह फल होइछ।

वासित जलक दानमे फल—

आइ हम पानक दान जन्य फलक अर्ध फल प्राप्तिक कामनासँ ई वासित जल भगवान शिवकेँ अर्पित कयल।

प्रतिदिन वस्त्रसँ छानल जल देबामे फल—

जे प्रत्यह वस्त्रपूत जल शिव अथवा शिवभक्तकेँ निवेदित करैत अछि, ओ शिवक आलयमे रमण करैत अछि ॥६८४॥

आइसँ प्रतिदिन हम शिवपुरमे क्रीड़ा करवाक कामनासँ वरुणदैवत वस्त्रपूत जल भगवान शिवकेँ निवेदन करब।

शिवभक्तकेँ एहि प्रकारसँ पानि पियेबामे सेहो इएह फल होइत अछि।

घृत-पात्रक दानमे फल—

घृतपात्रकेँ दान कयलासँ इहलोक तथा परलोकमे असंख्य आ चिरस्थायी फल भेटैत अछि ॥६८५॥

आइ हम ऐहिक आ आमुष्मिक असंख्य आ शाश्वत फल प्राप्तिक कामनासँ ई घृतपात्र भगवान शिवकेँ निवेदित कयल।

---

१ देशी शब्द थिक। एकर संस्कृत शब्द मातुलिङ्ग; आ मातुलुङ्ग अछि।

२ पानीय, पेय, एक प्रकारक पेय जे पकाओल आम, इमली आदिक गूदामे पानि, नोन, मिर्च आदि मिलाय तैयार करैत अछि; पन्ना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुडार्द्रकपलद्वये—

दत्वा लभेन्महाभोगान् गुडार्द्रकपलद्वयम् ॥६८६॥

अद्य बहुमहाभोगप्राप्तिकामनया इदं गुडार्द्रकपलद्वयं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

गुडशुण्ठीनिवेदने—

वर्षकोटिद्वयं युग्मं गुडशुण्ठीनिवेदने ॥६८७॥

अद्य वर्षकोटिद्वयावच्छिन्नगुडार्द्रकदानजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया एते गुडशु[1]ण्ठी भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ते ।

सलवणगुडार्द्रकनिवेदने—

गुडार्द्रकं सलवणमाम्रं मरिचसंयुतम् ।
निवेद्य शम्भवे भक्त्या सौभाग्यं परमं लभेत् ॥६८८॥

अद्य परमसौभाग्यप्राप्तिकामनया इदं सलवणं गुडार्द्रकं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदितम् ।

मरिचसंयुताम्रनिवेदने—

अद्य परमसौभाग्यप्राप्तिकामनया इदं मरिचसंयुताम्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

भक्ष्यभोज्यनिवेदने—

यः कृत्वा भक्ष्यभोज्यानि यत्नेन विनिवेदयेत् ।
शिवाय शिवलोके स कल्पकोटिं प्रमोदते ॥६८९॥

भक्ष्यं खरविशदं लाजपृथुकादि भोज्यं मृदुविशदमोहनादि ।

अद्य शिवलोकाधिकरणककल्पकोटिप्रमुदितत्वकामनया एतानि भक्ष्यभोज्यानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ एते गुडशुण्ठ्यौ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूपल गुड़ आ' आर्द्रक (आदी) निवेदनक फल—

दू पल गुड़ आ आदी देलासँ महाभोगक लाभ होइत अछि ॥६८६॥

आइ बहुत महाभोग प्राप्तिक कामना हेतु हम ई दू पल गुड़ आ आर्द्रक भगवान शिवकेँ अर्पित कयल।

गुड़ आ शुण्ठी[1] (सोंइठ) निवेदनमे फल—

दू करोड़ वर्ष धरि गुड़ आ आदी निवेदन जन्य पुण्यसँ द्विगुणित फल गुड़ आ सोंइठक निवेदनमे होइत अछि ॥६८७॥

आइ दू कोटि वर्ष धरि अविच्छिन्न गुड़ आ आर्द्रक दान जन्य फलसँ द्विगुणित फल प्राप्तिक कामनासँ हम ई गुड़ आ सोंइठ भगवान शंकरकेँ अर्पित कयल।

नोन सहित गुड़ आ आर्द्रक निवेदनमे फल—

गुड़, आदी, नोन आ' मरीचसँ युक्त आम भक्तिपूर्वक शिवके निवेदन कयलासँ परम सौभाग्यक प्राप्ति होइत अछि ॥६८८॥

आइ परम सौभाग्य प्राप्त करबाक कामनासँ हम ई लवणयुक्त गुड़ आ आदी भगवान शिवकेँ निवेदित कयल।

मरीचक संग आम्रक निवेदन्मे फल—

आइ परम सौभाग्य प्राप्तिक कामनासँ ई मरीचसँ युक्त आम भगवान शिवकेँ हमरा द्वारा देल गेल।

भक्ष्य तथा भोज्यक निवेदनमे फल—

जे यत्नपूर्वक भक्ष्य एवं भोज्य शिवक हेतु निवेदन करैत अछि, ओ शिवलोकमे कोटि कल्प धरि आनन्द करैत अछि ॥६८९॥

भक्ष्यसँ एहिठाम लावा, फरही आदि कठोर पदार्थ बोध्य थिक। भोज्यसँ कोमल द्रव्य पदार्थ खीर आदि बूझक चाही।

आइ शिवलोकमे कोटि कल्प धरि आनन्द प्राप्तिक कामनासँ ई भक्ष्य आ' भोज्य पदार्थ भगवान शिवकेँ अर्पित कयल

---

१ शुण्ठ्यम [शुण्ठ + इन्, शुण्ठि + ङीप् शुण्ठ् + यत्] सुखायल आदी (सोंठि)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालिकापुराणे—

सुपक्कं शीर्णवृन्तञ्च दाडिमं कदलं तथा ।
मात्तुलङ्गानि पक्वानि शिवाय विनिवेदयेत् ॥६९०॥
पनसं सहकारं च नारिकेलफलानि च ।
लवलि क्षीरिकां धात्रीं बिल्वञ्चापि तथा शुभम् ॥६९१॥
भव्यं वै नागरंगञ्च प्राचीनामलकं तथा ।
जम्बीरं कर्कटीञ्चैव तथाऽन्यानि फलानि च ॥६९२॥
यान्येतानि सुपक्वानि फलानि विनिवेदयेत् ।
शिवाय गणपैः सार्द्धं शिवलोके महीयते ॥६९३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकबहुगणसहितमहितत्वकामनया एतानि कदलाद्यन्यतमफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

नैवेद्यञ्च यथा यथा यद्यद्रूपं भुज्यते तत्तथा कृत्वा दातव्यम् अन्यथा बहुतरपापश्रुतेः।

तथा च लिङ्गपुराणे—

पाचितुं[1] पिष्टकं धान्यैरष्टादशैर्घृतेन च ।
तलैश्च तिलसम्भूतैः फलं पक्वं सुशोभनम् ॥६९४॥
यद्यथा च हविर्भक्ष्यं भक्षयेच्च स्वयं नरः ।
कृत्वा देवे तथा दद्यान्नैवेद्यं तदनुत्तमम् ॥६९५॥
नारिकेलफल नीरं कोषञ्चोद्धृत्य दापयेत् ।
कण्टी[2]फलन्तु पनसं कोषमुद्धृत्य दीयते ॥६९६॥
पाटयित्वा तथा दद्याद्यथाशक्ति नियोगतः ।
रम्भायाश्च फलं रम्यं त्वचमुत्सार्य[3]दापयेत् ॥६९७॥
दध्ना मिश्रीकृतं चान्नं घृतैनाप्लुत्य दापयेत् ।
नैवेद्यं योऽन्यथा दद्यान्नूनमुक्तक्रमादवहिः ॥
ब्रह्महत्यासमं पापं कृतं तेन न संशयः ॥६९८॥

अष्टादशधान्यानि वायुपुराणे—

व्रीह्यश्च यवाश्चेव गोधूमा अणवस्तिलाः ।
प्रियङ्ग्वोद्युदाराश्च[4] कोरदूषाः सतीलकाः ॥६९९॥
माषा मुग्द मसूराश्च निष्पावश्च कुल थ्वकाः[5] ।
आढकाश्चणकाश्चैव गणाः सप्तदशस्मृताः ॥७००॥

---

१ ने० पा०, पाचितं।
२ तत्रैव, करनाफलम्।
३ तत्रैव, अशुद्ध पाठ अछि।
४ प्रयङ्ग्वोद्युदारश्च
५ कुलत्थका।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालिका पुराणमे—

पाकल तरबूज, दाड़िम, केरा, टाभ नेबो, सुन्दर पनस (कटहर), जामु, नारिकेल, लवली[1], क्षीरिका, धात्री (अओरा), वेल, नागरंग, पुरान आमलक (औरा) जम्बीर, कर्कटी तथा अन्यान्य सुन्दर पाकल फल जे शिवकें समर्पित करैत अछि ओ शिवगणक संग शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥६९०—६९३॥

आइ हम शिवलोकक आश्रयमे बहुत गणक संग पूजित होयबाक कामनासँ ई कदली आ अन्यान्य फलादि भगवान शिवकें देल ।

जे वस्तु जाहि-जाहि रूपमे खायल जाइत अछि ओ ओही प्रकारसँ नैवेद्य मे देबाक चाही । अन्यथा ओ बहुत पापक भागी होइत अछि ।

से लिङ्गपुराणमे कहल अछि –

घी, तिल अथवा तिलक तेलमे अठारह धान्य सभसँ पकायल पिष्टक सुन्दर सुपक्व फल ।

आदि भक्तकें जे-जे फल प्रिय हो ओ सभ वस्तु शिवकें नैवेद्यक रूपमे देबाक चाही अन्यथा बहुत पापक भागी होइत अछि। जेना नारिकेल फलक कोषा आ जल निकालि क' देबाक चाही। कण्टी आ' पनस फलक कोषा निकालि क' देबाक चाही तथा ओकरा फाड़ि क' यथाशक्ति देबाक चाही। रमणीक रम्भाफलक छिलका निकालि कय देबाक चाही। अन्न घृतमे पकाय दहीसँ मिश्रित कय देबाक चाही। जे नैवेद्य जेना कहल गेल अछि, ओहिसँ न्यून आ' विपरीत रीतिसँ समर्पित करयवलाकें ब्रह्महत्याक सदृश पाप लगैत अछि, एहिमे संदेह नहि ॥६९४-९९॥

वायुपुराणमे अठारह धान्यक नाम:—

ब्रीहि, जौ, गहूम, अणु, तिल, प्रियंगु, उदार (जन्गोगर), कोरदूष, कलाय, उरोद, मूँग, मसुरी, श्वेत शिम्बि, कुर्थी, राहड़ि, बूट, श्यामक अर्थात् सामा ई सतरह टा मुख्य धान्यक समूह कहल गेल अछि ॥७००-७०१॥

---

१ हरफा फल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुख्यधान्येन सहाष्टादशधान्यत्वम् ।

प्रियङ्गुः कङ्गुः; उदारो देवधान्यं—जञोगर[1] इतिप्रसिद्धम्; कोरदूषः कोद्रव; सतीलकः कलायः; निष्पावः श्वेतशिम्बिः; आढ़की राहलिः; चणको रहिला ।

सिद्धान्ननैवेद्यं त्रैवर्णिकेन दातव्यम् । शूद्रेण तु द्विजशुश्रूषाभिरतेन ।

तदुक्तं वाराहपुराणे—

त्रिषु वर्णेषु कर्त्तव्यं पाकभोजनमेव च ।
शुश्रूषामभिपन्नानां शूद्राणाञ्च वरानने ॥७०२॥

सिद्धान्ननैवेद्यं घृतपक्वं वर्ज्यम् । पर्य्युषितन्न दातव्यम् ।

तदुक्तं कालोत्तरे—

अपर्य्युषितपक्वानि दातव्यानि प्रयत्नतः ।
खण्डाज्यादिकृतं पक्वं नैव पर्य्युषितम्भवेत् ॥७०३॥

सर्वञ्चैव नैवेद्यादि पुष्पाक्षततोयेन समुत्सृजेत् ।

अथ ताम्बूलदाने

शिवधर्म्मे—

ताम्बूलस्य प्रदानेन श्रियमाप्नोत्यनुत्तमाम् ॥७०४॥

अद्यानुत्तमलक्ष्मीप्राप्तिकामनया एतानि ताम्बूलानि गन्धर्वदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तानि ।

एकताम्बूलदाने त्वेकवचनं योज्यम् ।

पञ्चसुगन्धिद्रव्योपेतताम्बूलदाने—

पञ्चसौगन्धिकोपेतं यस्ताम्बूलं निवेदयेत् ।
शिवाय गुरवे चैव तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७०५॥

---

१ ने० पा०, जजेगव (?) ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुख्य धान्यक संग अष्टादश धान्य कहबैत अछि।

प्रियंगुक तात्पर्य कङ्गु। उदारक अर्थ देवधान्य जन्गोगर नामसँ प्रसिद्ध अछि। कोरदूष थिक कोद्रव। सतीलकक तात्पर्य कलाय। निष्पाव श्वेत शिम्बि थिक। आढ़की=राहड़ि। चणक बूटकें कहल जाइछ।

सिद्धान्नक नैवेद्य ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य वर्णकें देवाक चाही। द्विजक सेवामे रत शूद्रो सिद्धान्नक नैवेद्य दय सकैछ।

वाराहपुराणमे कहल गेल अछि—

तीन वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यक द्वारा पकाओल भोजन अर्पित करक चाही; हे वरानने, द्विजक सेवामे रत शूद्रहुकें सिद्धान्न नैवेद्यमे अधिकार छैक ।।७०२।।

सिद्धान्नक तात्पर्य अछि घीमे पकाओल पदार्थसँ भिन्न सिद्धान्न। वासि नहि देवाक चाही।

जेना कालोत्तरमे कहल गेल अछि—

अपर्युषित पक्वान्न (पकवान) यत्नपूर्वक देवाक चाही। खाँड आदि मिलाय घीमे पकाओल पक्वान्न पर्युषित अर्थात् बासि नहि होइछ ।।७०३।।

सभ नैवेद्य पुष्प, अक्षत आ' जलसँ उत्सर्ग कय समर्पित करबाक चाही।

आब ताम्बूल (पान) दानक फल

शिवधर्मंमे —

ताम्बूल प्रदान कयलासँ अनुत्तम श्री प्राप्त करैत अछि ।।७०४।।

आइ हम अनुत्तम लक्ष्मी प्राप्तिक कामनासँ गन्धर्व देवता-सम्बन्धी ई ताम्बूल सभ भगवान् शिवक हेतु समर्पित कयल।

एक ताम्बूल दानमे एकवचनक प्रयोग करबाक चाही।

पाँच सुगन्धित द्रव्यसँ युक्त ताम्बूल दानमे फल :—

पाँच सुगन्धिसँ युक्त ताम्बूल शिव अथवा गुरुकें समर्पित कयलासँ जे फल होइत अछि से सुनू ।।७०५।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुगन्धिदेहस्तेजस्वी सर्वावयवसुन्दरः ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ॥७०६॥

कर्पूरपूगकक्कोल[1]जातीफललवङ्गकैः ।
सुगन्धिः पञ्चभिर्द्रव्यैः पञ्चसौगन्धिकं मतम् ॥७०७॥

अद्य सुगन्धिदेहत्वतेजस्वित्वसर्वावयवसुन्दरत्वदिव्यवर्षकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया इदं कर्पूरपूगकक्कोलजातीफललवङ्गवृन्तमयपञ्चसौगन्धिकोपेतं ताम्बूलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

बहुषु प्रतिताम्बूलमेतानीति च योज्यम् ।

स्कन्दपुराणे पञ्चसौगन्धिकोपेतताम्बूलस्य—

ताम्बूलञ्चापि ये दद्युः पञ्चसौगन्धिकान्वितम् ।
स याति परमं धाम धन्यं त्रिपुरविद्विषः ॥७०८॥

अद्य परमधन्यत्रिपुरारिधामप्राप्तिकामनया इदं कर्पूरपूगकक्कोलजातीफललवङ्गवृन्त[2]मयपञ्चसौगन्धिकान्वितताम्बूलं भगवते शिवाय तुभ्यमहन्ददे ।

कक्कोललताकस्तूरिकोत्पलान्वितजातीफलदाने—

जातीफलं सकक्कोलं लताकस्तूरिकोत्पलम् ।
यान्येतानि सुगन्धीनि फलानि विनिवेदयेत् ॥७०९॥

फले फले महाभोगैर्वर्षलक्षत्रयन्नरः ।
कामिकेन विमानेन क्रीडते स शिवालये ॥७१०॥

अद्य प्रतिफलं वर्षलक्षत्रयावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमहाभोगकामिकविमानकरणक्रीडनकामनया एतानि कक्कोललताकस्तूरिकोत्पलान्वितजातीफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, कंक्कोल ।
२ तत्रैव, चूर्णमय ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओ सुगन्धित देह आ तेजसँ संयुक्त सभ अवयवसँ सुन्दर भय कोटि वर्ष धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि। ७०६॥

कर्पूर, सुपारी, कक्कोल, जातीफल एवं लौंग -- एहि पाँच सुगन्धित द्रव्यकेँ पञ्चसौगन्धिक कहल जाइत अछि॥७०७॥

आइ सुगन्धित शरीर प्राप्त करबाक, तेजस्वी होयवाक, सम्पूर्ण अवयवक सुन्दरत्वक संग सय कोटि दिव्य वर्ष धरे निरवच्छिन्न रूपसँ शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ एहि कर्पूर, पूग, जातीफल, लौंग आ' कक्कोल वृतमय – पाँचों सुगन्धिसँ युक्त ई ताम्बूल भगवान शिवक हेतु हम निवेदित करैत छी।

वहुत ताम्बूलक प्रति (खिल्ली) क योजना एहिना करवा चाही।

दूसँ अधिक ताम्बूल रहलासँ संकल्प वाक्यमे वहुवचनक प्रयोग करवाक चाही।

स्कन्दपुराणमे पांचो सौगन्धिकसँ उपेत (युक्त) ताम्बूल देबाक फल—

जे पंचसौगन्धिकसँ युक्त ताम्बूल समर्पित करैत अछि, ओ त्रिपुरारि शिवक परम धन्य धाम जाइत अछि॥७०८॥

आइ हम परम धन्य त्रिपुरारिलोक प्राप्तिक कामनासँ ई कर्पूर, पूग, कक्कोल, जातीफल तथा लौंग वृन्तमय पाँचो सौगन्धिकसँ समन्वित ताम्बूल भगवान शिवक हेतु अर्पित करैत छी।

कक्कोललता आ' कस्तूरीसँ संयुक्त जातीफल दानमे फल—

जे मनुष्य कक्कोललता तथा कस्तूरिकाक संग जातीफल आदि सुगन्धित फलक निवेदन करैत अछि, ओ प्रत्येक फलक समर्पणक अनुसार महाभोग सभसँ युक्त भय तीन लाख वर्ष धरि कामिकविमानसँ शिवलोकमे आनन्द प्राप्त करैत अछि॥७०९-७१०॥

आइ हम प्रत्येक फलक मुताविक तीन लाख वर्ष धरि शिवपुरमे आश्रय आ' महाभोगक संग कामिक विमान द्वारा क्रीडनक कामनासँ एहि कक्कोललता, कस्तूरिका, उत्पलसँ युक्त जातीफल भगवान शिवकेँ अर्पित कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्पूरदाने—

त्रुटिमात्रप्रदानेन कर्पूरस्य शिवे गुरौ ।
वर्षलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥७११॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणक बहुमहाभोगमहितत्वकामनया इदं कर्पूरं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पूगताम्बूलपत्राधारदाने—

पूगताम्बूलपत्राणामाधारं यो निवेदयेत् ।
वर्षकोट्यष्टकं भोगैः शिवलोके महीयते ॥७१२॥

अद्य वर्षकोट्यष्टतयावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुमहाभोगमहितत्वकामोऽमुं पूगताम्बूपलत्राणामाधारं भगवते शिवाय तुभ्यनहं निवेदयिष्ये ।

चूर्णाधारश्रेष्ठकांस्यपात्रनिवेदने—

यश्चूर्णाधारसत्पात्रं कांस्याढ्यं विनिवेदयेत् ।
मोदते स शिवलोके वर्षकोटीश्चतुर्दश ॥७१३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकचतुर्दशकोट्यवच्छिन्नहर्षकाम इदं चूर्णाधार-सत्पात्रं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

मृत्काष्ठवस्त्रखण्डानां शिवाश्रमाधिकरणकनिवेदने—

मृत्काष्ठवस्त्रखण्डानि यः प्रदद्याच्छिवाश्रमे ।
प्राप्नुयाद्विपुलान् भोगान् दिव्यान् शिवपुरे नरः ॥७१४॥

अद्य शिवपुराधिकरणकदिव्यविपुलभोगप्राप्तिकामनया एतानि मृत्काष्ठवस्त्र-खण्डानि भगवतः शिवस्याश्रमे मया निवेदितानि ।

मृत्कुम्भपीठकानां दाने—

मृत्कुम्भपीठकान्दद्याद् भोगान् शिवपुरे लभेत् ॥७१५॥

अद्य शिवपुराधिकरणकदिव्यबहुभोगप्राप्तिकामनया एतानि मृत्कुम्भपीठकानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्पूरदानमे फल —

जे त्रुटि मात्र कर्पूर शिव अथवा गुरुकें प्रदान करैत अछि से लाख वर्ष धरि महाभोगक संग शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।७११।।

आइ हम लाख वर्ष धरि शिवलोकमे अनेक महाभोग सहित पूजित होयबाक कामनासँ ई कर्पूर भगवान शिवकें देल ।

पान-सुपारी रखबाक पात्रक दानमे फल—

जे व्यक्ति सुपारी आ पानक पात रखबाक पात्र शिवकें समर्पित करैत अछि, ओ आठ करोड़ वर्ष धरि शिवलोकक भोगक संग पूजित होइत अछि ।।७१२।।

आइ आठ करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे अनेक महाभोगक संग पूजित होयबाक कामनासँ हम ई सुपारी पान रखबाक पात्र भगवान शिवकें समर्पित करैत छी ।

चूर्ण[1] रखबाक नीक काँसाक पात्रक समर्पण फल—

जे सुन्दर काँसाक चूर्णाधार पात्र समर्पित करैत अछि, ओ चौदह करोड़ वर्ष धरि शिवलोकमे आनन्द प्राप्त करैत अछि ।।७१३।।

आइ हम शिवलोकने चौदह करोड़ वर्ष धरि हर्षक कामनासँ ई चून रखबाक सुन्दर पात्र भगवान शिवकें निवेदित करब ।

शिवालयमे माटिक एवं काठक बर्तन तथा वस्त्रखण्ड निवेदित करबाक फल—

जे माटिक वा काठक बर्तन एवं वस्त्रक खण्ड शिवाश्रममे समर्पित करैत अछि, ओ मानव शिवलोकमे विपुल दिव्य भोगकें प्राप्त करैत अछि ।।७१४।।

आइ हम शिवरपुमे दिव्य अनेक भोगक प्राप्तिक कामनासँ .एहि माटिक वा काठक वर्तन आ वस्त्र-खण्ड भगवान शिवक आश्रममे समर्पित कयल ।

माटिक घैलक पीठक[2] दानमे फल—

माटिक घैलक पीठक देलासँ शिवपुरमे अनेक भोगकें प्राप्त करैत अछि ।।७१५।।

आइ हम शिवपुरमे दिव्य बहुत भोग प्राप्तिक कामनासँ ई माटिक घैलक पीठक भगवान शिवकें देल ।

---

१ पीसल चानन, कपूर आदि ।

२ आसन, चौकी, पीढ़ी आदि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पधूपगन्धदधिक्षीरघृताम्भसामाधारपात्रदाने—

यः पुष्पधूपगन्धानां दधिक्षीरघृताम्भसाम् ।
दद्यादाधारपात्राणि शिवलोकं स गच्छति ॥७१६॥

अद्य शिवलोकगमनकामनया एतानि गन्धपुष्पधूपदधिक्षीरघृताम्भसामाधारपात्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

वंशतालादिसम्भवपुष्पाधारकरण्डकदाने—

वंशतालादिसम्भूतपुष्पाधारकरण्डकम् ।
एवमादीनि दत्त्वा तु शिवलोके महीयते ॥७१६॥

अद्य शिवलोकमहितत्वकाम इदं वंशतालाद्यन्यतमनिर्म्मितपुष्पाधारकरण्डकं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

तोयाधारपिधानदाने—

तोयाधारपिधानानि मृद्वस्त्रतरुजानि च ।
वंशालाबूसमुत्थानि दत्वाप्नोति शिवं पुरम् ॥७१८॥

अद्य शिवपुरप्राप्तिकामनया इदं मृन्निर्मितं पात्रं शिवालये तोयाधारपिधानार्थं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं वस्त्रतरुजादावपि फलम् ।

अथ शिवसंप्रदानकदानानि

शिवपुराणे हेममात्रस्य—

यो मे प्रयच्छते देवि त्रुटिमात्रन्तु काञ्चनम् ।
तस्मै हैमवते शृङ्गे गृहं बालार्कसन्निभम् ॥
तुष्टो देवि प्रयच्छामि सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥७१९॥

त्रुटिस्त्रसरेणुः । तु शब्दोऽप्यर्थः ।

अद्य हिमवच्छृङ्गाधिकरणकबालार्कसन्निभशिवप्रसादहेतुकगृहप्राप्तिकामनया इदं हेम वह्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्प, धूप, गन्ध, दही, क्षीर, घृत आ जलक आधारपात्र दानमे फल—

जे फूल, धूप, गन्ध, दही, दूध, घी आ जलक आधारपात्र दैत अछि, ओ शिवलोक जाइत अछि ॥७१६॥

आइ शिवलोक-गमनक कामनासँ एहि गन्ध, कुसुम, धूप, दही, घृत, आ' जलक आधारपात्र भगवान शिवकेँ हम देल ।

बाँस आ' ताड़ आदिसँ बनाओल पुष्पाधार करण्डक अर्थात् फुलडाली अथवा फुल-तोड़ा दानमे फल—

जे बाँस, ताड़ आदिसँ सम्भूत (बनल) पुष्पक आधार करण्डक तथा एहि प्रकारक फूल रखवाक कोनो आने वस्तु शिवकेँ दैत अछि, ओ शिवलोकमे महानता प्राप्त करैत अछि ॥७१७॥

आइ हम शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई वंश (बाँस) आ' तार सभमे सँ कोनो एकसँ बनल पुष्पाधार (फुलतोडा) भगवान शिवकेँ दैत छी ।

तोयाधार अर्थात् जलपात्रक ढक्कन देवामे फल—

जलपात्रक ढक्कन माटि, वस्त्र तथा काठसँ बनल अथवा बाँस वा कद्दूसँ बनल ढक्कन सभकेँ प्रदान कयलासँ शिवलोक प्राप्त होइत अछि ॥७१८॥

आइ हम शिवपुर प्राप्तिक कामनासँ ई माटिक निर्मित पात्र शिवालयमे तोयाधारकेँ झँपवाक हेतु भगवान शिवकेँ देलियनि ।

वस्त्र आ' काठक ढक्कनक निवेदनोमे इएह फल होइत अछि ।

आब शिवसम्प्रदानक दान

शिवपुराणमे सोना दानक फल—

हे देवि, जे त्रुटिमात्र सोना हमरा दैत अछि, ओकरा पर प्रसन्न भय हम हिमालयक शृंग पर प्रातःकालीन सूर्यक समान दीप्त घर दैत छियैक । ई हम सत्य बजैत छी ॥७१९॥

त्रुटिक अर्थ सरेणु अछि त्र तु शब्दक अर्थ अपि अर्थात् त्रुटि मात्र सेहो ।

आइ हम हिमवानक शृंग पर शिवक प्रसन्नतासँ बाल र्क सदृश दीप्त प्रासाद प्राप्तिक कामनासँ अग्निदेवतासम्बन्धी ई स्वर्ण भगवान शिवकेँ अर्पित करैत छियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणे केयूरकटकदाने—

केयूरकटकदानेनाधिपत्यं महेच्छताम्[1] ।
प्राप्नुवन्ति नरा लोके शिवभक्तिपरायणाः ॥७२५॥

अद्य लोकाधिपत्यमहेच्छत्वप्राप्तिकामनया इमे केयूरकटके वह्निदैवते भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ते ।

सुवर्णदानस्य—

सुवर्णदानं यो दद्याद्गाणपत्यं ददाम्यहम्[2] ॥७२६॥

अद्य गाणपत्यप्राप्तिकामनया इमं सुवर्णमग्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

सुवर्णपलदानस्य —

हेम्नां कोटिं प्रदद्याद्यो ब्राह्मणे वेदपारगे ।
पलानां तच्छिवे दत्वा पलेनैकेन चाप्नुयात् ॥७२७॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकसुवर्णपलकोटिदानफलप्राप्तिकामनया इदं पलपरिमितं सुवर्णं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्कन्दपुराणीयबहुवस्त्रदाने—

वासांसि सुपवित्राणि सारवन्ति मृदूनि च ।
धूपितानि शिवे दत्वा विकेशानि[3] नवानि च ॥७२८॥
यावत्तद्वस्त्रतन्तूनां परिमाणं विधीयते ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७२९॥

परिमाणं संख्या ।

अद्य एतद्वस्त्रत्रयतन्तुसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि सुपवित्राणि सारवन्ति मृदूनि विकेशानि सुधूपितानि नवानि वासांसि बृहस्पतिदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, सहेच्छताम् ।

२ तत्रैव, नमाम्यहम् ।

३ तत्रैव, विकशानि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे केयूर कटक-दानमे फल—

शिवभक्तिमे लीन मानव केयूर तथा कटक दानसँ लोकमे आधिपत्य तथा महत्त्वाकांक्षाकें प्राप्त करैत अछि ॥७२५॥

आइ हम लोकाधिपत्य आ महत्त्वाकांक्षाक पूर्त्तिक कामनासँ अग्निदेवता-सम्बन्धी ई केयूर तथा कटक भगवान शिवकें देलियनि।

स्वर्णदानक फल—

जे स्वर्ण दान करैत अछि, ओकरा (हम) गणपति बनबैत छियैक। ॥

आइ हम गाणपत्य-प्राप्तिक कामनासँ ई अग्निदेवता-सम्बन्धी स्वर्ण भगवान शिवकें दैत छियनि।

पलमात्र स्वर्णदानक फल—

वेद-पारंगत ब्राह्मणकें करोड़ पल हेमदान कयलासँ जे फल प्राप्त होइत अछि, से फल शिवक हेतु एक पल स्वर्ण दानसँ होइत अछि ॥७२७॥

आइ हम वेदपराग ब्राह्मणकें दान कयल करोड़ पल स्वर्णदान जन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ ई एक पल-परिमित स्वर्ण भगवान शिवकें देलियनि।

स्कन्दपुराणमे बहुत वस्त्रदानक फल—

जे सुपवित्र सारवान कोमल धूपित केशरहित नव वस्त्र शिवक हेतु दैत अछि, ओ ओहि वस्त्रक तन्तुक संख्याक अनुसार ओतेक सहस्र युग धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥७२८॥

एतय परिमाणक अर्थ संख्या अछि।

आइ हम एहि तीन वस्त्रक तन्तुक संख्याक बराबरि सहस्र युग पर्यन्त रुद्रलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ एहि पवित्र, मजबूत, कोमल, ऊर्णारहित सुन्दर धूपित ई नव वस्त्र बृहस्पतिदेवतासम्बन्धी भगवान शिवकें देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्ये यज्ञोपवीतदानस्य—

त्रिवृच्छुल्कं सुपीतं वा पट्टसूत्रादिनिर्मितम् ।
दत्वोपवीतं रुद्राय भवेद्वेदान्तग: सुधी:[1] ॥७३०॥

अद्य वेदपारगत्वसुधीत्व[2]प्राप्तिकामनया इदं त्रिवृत्त श्वेतं पीतं वा पट्टसूत्रादिनिर्म्मितमुपवीतं प्रजापतिदैवतं भगवते तुभ्यं मया दत्तम् ।

भविष्ये दर्पणदानस्य—

शिवस्य पुरतो दत्वा दर्प्पणञ्च सुनिर्म्मितम् ।
पर्य्यन्तशोभितं कृत्वा श्वेतैर्म्माल्यै: सचन्दनै: ॥७३१॥
चन्द्रांशुनिर्म्मल: श्रीमान् सुभग: कामरूपधृक् ।
कल्पायुतसहस्रन्तु शिवलोके महीयते ॥७३२॥

अद्य श्रीमत्त्व[3]चन्द्रांशुनिर्म्मलत्वसुभगत्वैच्छिकरूपधारित्वकल्पायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एष सुनिर्म्मल: पर्य्यन्तानुयुक्तचन्दन: श्वेतमाल्योपशोभितो दर्प्पणो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्त: ।

अयन्तु शिवपुरतो देय: ।

मायूरव्यजनदाने—

मायूरव्यजनं दत्वा शिवायातीवशोभनम् ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं रुद्रलोके महीयते ॥ ३३॥

अद्य दिव्यवर्ष (कोटि) शतावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इदं मायूरव्यजनमतिशोभनं वायुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवधर्म्मे तालवृन्तदाने—

भक्त्या निवेद्य रुद्राय तालवृन्तं सुशोभनम् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७३४॥

तालवृन्तनं व्यजनम् ।

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इदं तालवृन्तं सुशोभनं वायुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, सुखी ।
२ तत्रैव, सुखीत्व ।
३ तत्रैव, सुभगत्व ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे यज्ञोपवीतदानक फल—

जे तीन प्रवरबला सुन्दर पीयर वा पट्ट सूत आदिसँ निर्मित जनेउ रुद्रक हेतु अर्पित करैत अछि, ओ वेदपारग पंडित होइत अछि ॥७३०॥

आइ हम वेदपारगत्व आ सुधीत्व प्राप्तिक कामनासँ ई त्रिवृत (तीन प्रवर-वला) पीयर अथवा पट्ट सूत्रादिसँ बनल ई बृहस्पतिसम्वन्धी जनेउ भगवान शिवकेँ अर्पित कयलियनि ।

भविष्यपुराणमे दर्पणदानक फल—

चाननयुक्त उज्जर माला सभसँ (शिवलिंगकेँ) चारू दिशसँ सुशोभित कय जे व्यक्ति शिवक समक्ष सुनिर्मित अयना देखाबैत अछि, ओ चन्द्रकिरणक सदृश सुनिर्मल, लक्ष्मीवान् सुभग तथा अपन इच्छाक अनुरूप रूप धारण करयवला दस हजार कल्प धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥७३१-७३२॥

आइ हम श्रीमत्व, चन्द्रमाक किरण सदृश निर्मलत्व, सुन्दर ऐच्छिक रूप धारण तथा दस हजार कल्प धरि शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ सुन्दर निर्मल चतुर्दिक् चन्दन आ श्वेत माला आदिसँ सुशोभित विष्णुसम्वन्धी ई दर्पण भगवान शिवकँ देलियनि ।

दर्पण शिवक सम्मुख देखयवाक चाही ।

मयूरपंखा दानक फल

अतीव सुन्दर मयूरक पंखक बनल पंखा शिवक हेतु देलासँ दिव्य सय कोटि वर्ष पर्यन्त रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥७३३॥

आइ हम दिव्य शत वर्ष धरि रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई वायु देवतासम्वन्धी अति शोभनीय मयूरक पंखा भगवान शिवकेँ अर्पित कयल ।

शिवधर्ममे ताड़क बीमनि दानक फल—

सुन्दर तालवृन्त भक्तिपूर्वक रुद्रक हेतु निवेदित कय दस सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ॥७३४॥

तालवृन्तक अर्थ अछि ताड़क पंखा ।

आइ हम दस सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे महितत्व-प्राप्तिक कामनासँ ई वायुदेवता-सम्बन्धी सुन्दर तालवृन्त भगवान शिवकेँ देल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे चामरदानस्य—

चामरं यः शिवे दद्यान्मणिदण्डविभूषितम् ।
हेमरूप्यादिदण्डं वा तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७३५॥
चामरासक्तहस्ताग्रदिव्यस्त्रीपरिवारितः ।
महाभोगविमानस्थश्चिरं शिवपुरे वसेत् ॥७३६॥

आदिपदेन ताम्रकांस्यरैत्यादीनां[1] ग्रहणम् ।

अद्य चामरासक्तहस्ताग्रदिव्यस्त्रीपरिवारितमहाभोगविमानस्थात्मीयचिर-समयशिवपुरवासकामनया इदं चामरं मणिदण्डविभूषितं हेमादिदण्डविभूषितं वा वायुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवरहस्ये दीपिकादिदानस्य—

दीपिका धूपदहनं घण्टापात्र्यथ यष्टिका ।
गडूकान्यथ कुम्भांश्च ब्रह्मन् वंशमयानि च ॥
सप्तलोकेश्वरास्ते स्युर्ये प्रयच्छन्ति शङ्करे ॥७३७॥

अद्य सप्तलोकेश्वरत्वभवनकामनया एतानि दीपिकाधूपदहनघण्टापात्री-यष्टिकागडूकबहुकुम्भबहुवंशमयपात्राणि विष्णुदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

शिवधर्म्मे शङ्खद्वयदानस्य—

महन्महास्वनं दत्वा शङ्खयुग्मं शिवालये ।
युगकोटिशतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥७३८॥

अद्य साग्रयुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया शिवालये स्वनार्थं महन्महास्वनं शङ्खयुग्मं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

भेरीमृदङ्गादिदानस्य—

भेरीमृदङ्गमुरजतिमिलापटहानि च ।
वंशकांस्यादिवादित्रं यः शिवाय निवेदयेत् ॥७३९॥
स विमानैर्म्महाभोगैर्वंशवीणाकृतस्वनैः ।
युगायुतशतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥७४०॥

---

1 रौप्यादिना ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे चामरदानक फल—

जे मणिदंड अथवा सोना-चानी आदिक दण्डसँ विभूषित चामर शिवक हेतु दैत अछि **ओकर फल सुनू—**

ओ चामर डोलबैत दिव्य स्त्रीसँ परिवृत भय महाभोगबला विमानमे स्थिर भय चिरकाल धरि शिवपुरमे बसैत अछि ।।७३५-७३६।।

एतय आदि पदक तात्पर्य ताम, काँसा आदि ग्रहण करबासँ अछि ।

आइ हम चामर डोलबैत दिव्य स्त्रीसँ परिवृत महागोगबला विमानमे स्थिर भय अनन्तकाल धरि शिवपुर बास करबाक कामनासँ ई वायुदेवतासम्बन्धी मणिदण्ड अथवा स्वर्णादिसँ बनल दंडसँ विभूषित चामर भगवान शिवकेँ देल ।

शिवरहस्यमे दीपक आदि दानक फल—

जे दीपिका, धूपदहन-पात्र (धूपदानी) घंटा, यष्टिका, गडूक कुम्भ तथा बाँसक बनल अन्य पात्र शंकरक हेतु दैत अछि, ओ सात लोकक स्वामी (सप्तलोकेश्वर) होइत अछि ।।७३७।।

आइ हम सप्तलोकेश्वरक कामनासँ विष्णुदेवता-सम्बन्धी ई दीपिका, धूपदहन पात्र (धूपदानी), घंटा, यष्टिका, बहुत गडुक (जलपात्र), बहुत कुम्भ तथा अनेक बाँसक पात्र शिवक हेतु अर्पित कयल ।

शिवधर्ममे दू शंख दानक फल—

महान उद्घोष करयबला दू शंख शिवालयमे अर्पित कयनिहार व्यक्ति दू सय करोड़ वर्षसँ अधिक शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।७३८।।

एतय 'दत्वा'सँ शिवकेँ दय कय अर्थ बुझबाक चाही ।

आइ सए करोड़ युगसँ अधिक युगपर्यन्त शिवलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ शिवमन्दिरमे फूँकबाक हेतु हम महाध्वनिबला विष्णुदेवतासम्बन्धी दू गोट बड़का-बड़का शंख भगवान शिवकेँ देलियनि ।

भेरी[1] ताशा (पैघ ढोल), मृदंग आदि दानक फल—

जे भेरी, मृदंग, मुरज (पखाओज) तिमिल, पटह तथा बाँस, काँस्य आदि निर्मित वाद्य (यंत्र) आदि शिवक हेतु दैत अछि ओ वंशी, वीणा आदि वाद्य (यंत्र) स्वरकेँ सुनैत महाभोगसँ परिपूर्ण बड़का विमानसँ जाय शिवलोकमे दस लाखसँ अधिक युग धरि पूजित होइत अछि ।। ७३९-७४०।।

---

१ [भी+क्रिन्, वा० गुण, भरि+डीष्] भगवद्गीता ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य वंशवीणाकृतस्वनमहाभोगविमानकरणकसाग्रयुगायुतशतावच्छिन्नशिव-लोकमहितत्वकामनया इदं भेरीमृदङ्गादिवादित्रं गन्धर्वदैवतं शिवालये वादनार्थं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्त्रीसङ्गीतकदाने—

स्त्रीसङ्गीतकदानेन सनाट्येन विशेषतः ।
यथेष्टमैश्वरे लोके मोदते कालमक्षयम् ॥७४१॥

अद्य यथेष्टाक्षयकालिकेश्वरलोकमोदनकामनया इदं स्त्रीसङ्गीतकं सनाट्यं गन्धर्वदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

नाट्याशक्तौ सङ्गीतकमात्रदानेऽप्येतदेव फलम् ।

दासीदासान्यतरदाने —

सुविनीतां स्त्रियं दासीं भृत्यं यो वा निवेदयेत् ।
नरमेधस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं लभेत् ॥७४२॥

अद्य नरमेधयज्ञफलाष्टगुणफलप्राप्तिकामनया इयं दासी सुविनीता विष्णु-दैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

विनीतदासदानेऽप्येतदेव फलम् ।

उभयतोमुखीदाने—

दत्वोभयमुखीं गान्तु शिवायातीव शोभनाम् ।
सप्तद्वीपां क्षितिं दत्वा यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥७४३॥

अद्य सप्तद्वीपावच्छिन्नपृथ्वीदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं प्रसूयमानो-भयतोमुखीगौरतिशोभनारुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

पयस्विन्याः कपिलायाः दाने—

स्नानादिकार्य्यमुद्दिश्य स्वरूपाञ्च पयस्विनीम् ।
कुलीनां कपिलां दत्वा दत्तं भवति गोशतम् ॥६४४॥

कुलीनां जीवापत्यपयस्विगोपरम्परासम्भवाम् ।

अद्य गोशतदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया शिवक्षीरस्नानाद्यर्थमियं स्वरूपा कपिला पयस्विनी कुलीना गौरुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम वंशी एवं वीणा आदिसँ सुशोभित महाभोग परिपूर्ण विमान द्वारा जाय दस लाख युगसँ अधिक युग धरि शिवलोकमे पूजित होयवाक कामनासँ ई गंधर्वदेवता सम्वन्धी भेरी एवं मृदंग आदि वाद्य यंत्र शिवालयमे वादनार्थ वगवान शिवकें अर्पित कयल।

स्त्रीक संगीतदानक फल—

जे व्यक्ति गायिका द्वारा विशेषतः नृत्यक संग शिवकें गीत सुनवाबैत अछि, ओ शिवलोकमे स्वेच्छापूर्वक अनन्तकाल धरि आनन्दित रहैत अछि ॥७४१॥

आइ हम स्वेच्छा पूर्वक कालिकेश्वरलोकमे अनन्त कालपर्यन्त आनन्दित रहवाक कामनामँ गन्धर्वदेवताक ई नाट्यसहित स्त्री-संगीत भगवान शिवकें अर्पित कयल।

नाट्यक अभावमे संगीतदानक सेहो इएह फल होइत अछि।

दासी ओ दासमेसँ कोनो एक दानमे फल—

जे सुविनीत दासी अथवा सुविनीत दासक शिवकें दैत अछि, ओ नरमेघ यज्ञक फलसँ आठ गुना अधिक फल प्राप्त करैत अछि ॥७४२॥

आइ हम नरमेघ यज्ञफलसँ आठ गुणा अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ विष्णु-देवतासम्वन्धी ई सुविनीत दासी शिवक हेतु अर्पित कयल।

विनीत दास-दानक सेहो इएह फल होइत अछि।

उभयतोमुखी गाय दानक करबाक फल —

अतीव सुन्दरी उभयतोमुखी गाय शिवक हेतु दय कय सप्तद्वीपा पृथ्वीक दानक फल प्राप्त होइत अछि ॥७४३॥

आइ हम सप्तद्वीपा पृथ्वी दान जन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ रुद्रदेवता सम्बन्धी अतीव सुन्दरी ई प्रसूयमान उभयतोमुखी गौ शिवकें अर्पित कयलियनि।

दुधगरि कपिला गाय दानक फल—

शिवकें स्नानादि आदि काज सभक उद्देश्यसँ दुधगरि एवं कुलीन कपिला गायके दान कयलासँ सए गाय-दान जन्य फल भेटैत अछि ॥७४४॥

ओहि गायकें कुलीना गाय कहल जाइत अछि, जकरा वंश परम्परामे दुधगरि दीर्घजीवी गाय होइत अछि।

आइ हम सए गोदान जन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ शिवकें दूग्ध स्नपन आदिक हेतु रुद्रदेवतासम्बन्धी ई सुन्दर रूप वाली पयस्विनी कुलीन कपिला गाय भगवान शिवकें अर्पित कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोत्रयदाने—

यो मे गां वा[1] हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
तस्य कामदुघां पृथ्वीं ददामि निरुपद्रवाम्[2] ॥७४५॥

अद्य[3] निरुपद्रवकामदुधपृथ्वीप्राप्तिकामनया एता गावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

शैवे गोदानस्य—

यो मे गान्तु हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
लोकान्ददाम्यहं तस्मै सर्वकामसमन्वितान् ॥७४६॥

अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकप्राप्तिकामनया इमां गां रुद्रदैवतां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

सवृषपयस्वितरुणगवीदाने—

यो गां पयस्विनीं दद्यात्तरुणां वृषसंयुताम् ।
शिवाय तेन दत्तं स्याज्जगत्सर्वं चराचरम् ॥७४७॥

अद्य चराचरसर्वजगद्दानफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं पयस्विनी तरुणी वृषसंयुता गो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

सवृषभदशगवीदाने—

दशगावः सवृषभावृषभैकादशी स्मृता ।
शिवाय विनिवेद्यैतां विशुद्धेनान्तरात्मना ॥७४८॥
रुद्रैकादशतुल्यात्मा बलभोगादिभिर्गुणैः ।
शिवादिसर्वलोकेषु यथेष्टं मोदते वशी ॥७४९॥
कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोट्ययुतानि च ।
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानशेषकुलजैः सह ॥७५०॥
तदन्ते ज्ञानमासाद्य प्रसादात् परमेष्ठिनः ।
विमुच्य मोहकलिलं स्वात्मन्येवावतिष्ठते ॥७५१॥

स्वात्मन्येवावतिष्ठते इति भुक्तो भवतीत्यर्थः ।

---

१ गाश्च (ई हस्तलेखमे देल अछि) ।
२ ने० पा०, लोकान् ददाम्यहं तस्मै सर्वकामसमन्वितान् ।
३ ने० पा०, अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकप्राप्तिकामनया इमां गां रुद्र ।...

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीन गायक दान फल :—

हे प्रिये, जे हमरा गाय अथवा हिरण्य प्रसन्न मनसँ दैत अछि, ओकरा हम सभ कामनाकेँ पूर्ण करयवाली निरुपद्रव पृथ्वी दैत छियैक ॥७४५॥

आइ हम निरुपद्रव जा सभ कामनाकेँ पूर्त्ति करयवाली पृथ्वी प्राप्तिक कामनासँ रुद्रदेवता सम्बन्धी ई सब गाय भगवान शिवकेँ देलियनि ।

शैवमे गोदानक फल —

हे प्रिये ! जे हमरा मनसँ गाय वा हिरण्य दैत अछि, ओकरा सभ कामनाकेँ पूर्ण करयवला लोक दैत छियैक ॥७४६॥

आइ हम सर्वकामनासमन्वित अनेक लोकप्राप्तिक कामनासँ रुद्रदेवता-सम्वन्धी ई गाय सभ भगवान शिवक हेतु देलियनि ।

शिवपुराणमे वृषभसँ युक्त पयस्विनी तरुणी गाय दानक फल :—

जे वृषमसँ युक्त पयस्विनी तरुणी गाय शिवक निमित्त दैत अछि, ओ सम्पूर्ण चराचर जगत दान कय दैत अछि ॥७४७॥

आइ हम सम्पूर्ण चराचर जगत दान जन्य फलक सदृश फल प्राप्तिक कामनासँ ई रुद्रदेवतासम्वन्धी पयस्विनी तरुणी आ बाछा तरे गाय भगवान शिवक हेतु देल ।

साँढ़ (वृषभ) सहित दस गायदानक फल :—

जे विशुद्ध अन्तरात्मासँ साँढ सहित दस गाय शिवक हेतु निवेदित करैत अछि, ओ एकादश रुद्रक तुल्य बल आ' भोग आदि गुणसँ युक्त भय शिवलोकादि सभ स्थान स्वेच्छासार आनन्द प्राप्त करैत अछि आ' सहस्र कोटि कल्प तथा दस हजार करोड़ कल्प धरि अपन समस्त वंशजक संग विपुल भोगकेँ भोगि अन्तमे प्रजापतिक प्रसादसँ ज्ञानकेँ प्राप्त कय मोहान्धकारकेँ छोड़ि मुक्त भय जाइत अछि ॥७४८-७५१॥

'स्वात्मन्येवावतिष्ठते'क अर्थ अछि आत्मामे स्थित भय जाइत अछि अर्थात् मुक्त भय जाइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य रुद्रैकादशबलभोगादिबहुगुणतुल्यबलभोगादिबहुगुणवत्वशिवादिगुणत्व शिवादिसकललोकाधिकरणकयथेष्टहर्षबहुशिवत्वकल्पकोटिसहस्रकल्पकोट्ययुतावच्छिन्नाशेषबहुफल जसहितात्मविपुलभोगभुक्तितदुत्तरपरमेष्ठिप्रसादलब्धज्ञानहेतुकमोहकलिलपरित्यागपूर्वकात्मस्वरूपावस्थानकामनया एताः सवृषभा दशगावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

सवृषभगोशतदाने—

सवृषं गोशतं दद्याच्छिवायातीव शोभनम् ।
त्रिसप्तकुलजैः सार्द्धं शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥७५२॥
सूर्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः[1] ।
महायानैरसंख्यातैरमरासुरपूजितैः ॥७५३॥
शतरुद्रबलोपेतो वीरभद्र इवापरः ।
गत्वा शिवपुरं दिव्यमशेषाधिपतिर्भवेत् ॥७५४॥
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगान् प्रलये सर्वदेहिनाम् ।
मोहकञ्चुकमुत्सृज्य ज्ञानं कैवल्यमाप्नुयात् ॥७५५॥
सर्वज्ञः परमः शुद्धः स्वात्मन्ये[2]वव्यवस्थितः ।
सर्वज्ञः परिपूर्णश्च शिववत्पतिरव्ययः ॥७५६।

अद्य सूर्यकोटिसमप्रभसर्वकामसमन्वित[3]सुरासुरपूजितासंख्येयविमानकरणकत्रिसप्तकुलसहितशतरुद्रबलोपेतवीरभद्रतुल्यात्मश्रीमच्छिवपुरगमनाशेषतत्पुरमर्त्याधिपत्यतत्रत्यविपुलभोगभुक्तितदुत्तरसर्वदेहिप्रवलयानान्तरमोहकञ्चुकपरित्यागपूर्वकज्ञानकैवल्यावाप्तिसर्वज्ञपरमशुद्धत्वात्मव्यवस्थितिसर्वत्वपरिपूर्णास्वत्वशिवतुल्यैश्वर्याव्ययत्वकामनया एताः शतं गावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ॥

वृषचदाने—

वृषभं परिपूर्णाङ्गमुदारञ्च शशिप्रभम् ।
गोपतिं नीलवर्णं वा यथेष्टं विनिवेदयेत् ॥७५७॥
यावन्ति देहरोमाणि सप्रसूतिकुलेषु वै ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७५८॥

---

१ ने० पा०, सर्वकामदैः
२ तत्रैव, शुद्धात्मनि ।
३ तत्रैव, सर्वकामदैः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ एकादश रुद्रक समान बल एवं भोग आदि अनेक गुण तुल्य बल एवं भोगादि, अनेक गुणवत्ता, शिवलोक आदि सभ लोकमे यथेष्ट आनन्द प्राप्ति तथा कल्याण प्राप्तिपूर्वक दस हजार कल्प धरि तथा दस हजार करोड़ कल्प धरि समस्त वंशज सहित विपुल भोग प्राप्त करबाक तदनन्दर ब्रह्माक कृपासँ ज्ञान प्राप्त कय मोहान्धकारकेँ दूर कहैत आत्मस्वरूपमे अवस्थित होयबाक कामनासँ हम रुद्रदेवतासम्बन्धी साँढ़ सहित ई दस टा गाय शिवकेँ देलियनि ।

वृषभक संग सए गोदानक फल—

जे व्यक्ति वृषभ युक्त अतीव सुन्दर सए गाय शिवक निमित्त दान करैत अछि तकर भावी एक्कैस पीढ़ीक संग प्राप्य फलक विषयमे सुनू ।।७५२।।

ओ करोड़ सूर्यक समान प्रकाशमान सभ कामनासँ परिपूर्ण सुर आ' असुर सभसँ पूजित असंख्य महायानक द्वारा अलौकिक शिवलोक जाय सए रुद्रक सदृश बलशाली, द्वितीय वीरभद्रक समान एवं सर्वाधिपति भय जाइत अछि आ' प्रचुर भोगकेँ भोगि सभ प्राणीक प्रलय भय गेला उत्तर मोहात्मक देहकेँ त्यागि ज्ञानकैवल्य (संशय-विपर्य-रहित ज्ञान) प्राप्त करैत अछि तथा सर्वज्ञ, अत्यधिक शुद्ध, अपन आत्मस्वरूपमे व्यवस्थित सभ ठाम संचरणशील एवं परिपूर्ण भय शिवक सदृश ईश्वर, निरञ्जन आ निर्विकार भय जाइत अछि ।'७५३-७५६।।

आइ हम कोटि सूर्यक समान प्रभापूर्ण सभ कामनासँ परिपूर्ण तथा देवता आ असुर द्वारा पूजित असंख्य विमान द्वारा शिवलोक जाय अपन एक्कैस वंशज सहित सए रुद्रक समान बलशाली वीरभद्रक तुल्यता, सर्वाधिपति भय ओतयक विपुल भोगकेँ भोगि कलान्तरमे सभ प्राणीक प्रलय भय गेला उत्तर मोहात्मक शरीरकेँ परित्याग कय ज्ञानमुक्ति प्राप्ति करब, सर्वज्ञ, परमशुद्ध अपन आत्मस्वरूपमे अवस्थित होयब एवं परिपूर्ण, सर्वज्ञ स्वरूप बनबाक तथा शिवतुल्य ऐश्वर्यशाली अविनाशित्वक कामनासँ रुद्रदेवतासम्बन्धी ई सए गाय भगवान शिवकेँ देलियनि ।

वृषभदानक फल—

जे मनुष्य परिपूर्णाङ्ग, विशाल, तरुण, चन्द्रमाक सदृश उज्ज्वल वा नीलवर्ण अथवा दोसर रंगसँ युक्तो वृषभक दान शिवक हेतु करैत अछि, जो सन्तति सहित ओहि वृषभक देहमे जतेक रोइयाँ रहैत अछि, ओतेक हजार युग धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि ।।७५७-७५८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोपतिं तरुणं यथेष्टं वर्णान्तरयुक्तमपि ।

अद्य सप्रसूत्येतत्कुलसम्बद्धरोमसहितैतद्देहरोमसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एष वृषभः सुपरिपूर्णाङ्ग उदारः शशिप्रभो गोपतिरन्यवर्णोवा रुद्रदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

श्वेतनीलान्यतरवृषभदाने—

शिवाय वृषभं दत्वा श्वेतं नीलमथापि वा ।
रथेन वृषयुक्तेन न च्यवेतैश्वरात् पदात् ॥७५९॥

अद्य वृषभयुक्तरथकरणकेश्वरपदाप्रच्यवकामनया एष श्वेतवृषभो नीलवृषभो रुद्रदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

स्कन्दपुराणेभूमिदानस्य—

गोचर्म्मद्वयमात्रं वा यो मे दद्याद्वसुन्धराम् ।
समे पूरं समासाद्य गणेशैः सह मोदते ॥७६०॥

अद्य शिवपुरप्राप्तिपूर्वकबहुगणेशसहहर्षप्राप्तिकामनया गोचर्म्मद्वयपरिमिता भूमि. प्रियदत्ता विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

ग्रामदानस्य—

सर्वसस्यफलोपेतं सर्वबाधाविवर्जितम् ।
ग्रामं शिवाय यो दद्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७६१॥
सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
सर्वदानेषु यत्पुण्यं ग्रामदानेन तत्फलम् ॥७६२॥

अद्य सर्वतीर्थसर्वयज्ञसर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽयं ग्रामः सर्वसस्यफलोपेतः सर्वबाधाविवर्जितो विष्णुदैवतः प्रियदत्तो भगवते शिवाय तुभ्यं मयादत्तः ।

ग्रामदानस्य —

सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्दिव्यस्त्रीकोटिसंयुतैः ।
संयुक्तः कोटिशोऽनेकैः सर्वकामसमन्वितैः ॥७६३॥
विमानैर्ग्रामदानेन त्रिसप्तकुलसंयुतैः ।
यथेष्टमैश्वरे लोके क्रीडते कालमक्षयम् ॥७६४॥

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशदिव्यस्त्रीकोटियुतसर्वकामसमन्वितबहुकोटिसंख्याकविमानकरणकाक्षयकालिकैकविंशतिकुलयुतात्मीयेश्वरलोकक्रीडनकामनयाऽयं ग्रामः प्रियदत्तो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपर्युक्त श्लोकमे 'गोपति' क अर्थ अछि तरुण। 'यथेष्ट'क अर्थ अछि कोनो अन्य वर्णसँ युक्त सेहो।

आइ हम वृषभ तथा एहि वृषभक वंशमे उत्पन्न सन्तानक देहमे स्थित रोइयाँक संख्याक बराबरि हजार युग धरि रुद्रलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ हम ई रुद्रदेवतासम्बन्धी हृष्ट-पुष्ट, विशाल, तरुण चन्द्रमाक सदृश शुभ वा अन्यवर्णवला वृषभ भगवान शिवकेँ देलियनि।

उज्जर वा नीलवर्णक वृषम दानक फल—

श्वेत अथवा नील वर्णक वृषभ शिवक निमित्त दान दय कय दानी व्यक्ति वृषभयुक्त रथसँ ईश्वरक पद पर पहुँच कय ओ ओतयसँ आपस नहि होइत अछि ॥७५९॥

आइ हम वृषभ युक्त रथ द्वारा ईश्वरक पद प्राप्ति तथा ओतयसँ आपस नहि होयबाक कामनासँ शंकरदेवतासम्बन्धी ई श्वेत अथवा नील वर्णक वृषभ भगवान शिवकेँ देलिय।

स्कन्दपुराणमे भूमिदानक फल—

जे दू गोचर्म मात्र पृथ्वी हमरा निमित्त दैत अछि ओ हमरा पुर (शिवपुर)मे पहुँच कय अनेक गणपतिक संग आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥६६०॥

आइ हम शिवपुर प्राप्ति पूर्वक अनेक गणेशक संग हर्षप्राप्तिक कामनासँ दू गोचर्म परिमित भूमि विष्णु देवताक प्रिय भगवान शिवकेँ अर्पित कयल।

ग्रामदानक फल—

जे सभ बाधासँ विवर्जित, आ सभ शस्य एवं फलसँ युक्त ग्राम शिवक हेतु दैत अछि, ओकर सभ तीर्थक जे पुण्य, सभ यज्ञक जे पुण्य तथा सभ दानक जे पुण्य अछि, ओ पुण्य सभ ओहि ग्रामदानसँ होइत अछि ॥७६१-७६२॥

आइ हम सभ तीर्थ, सभ यज्ञ एवं सर्वदान जन्य पुण्यक सदृश पुण्य प्राप्तिक कामनासँ सभ प्रकाअक सस्य आ फलसँ युक्त तथा सभ प्रकारक बाधासँ विमुक्त प्रेम-पूर्वक देल गेल विष्णु देवताक ई ग्राम भगवान शिवकेँ देलियनि।

ग्रामदानक फल—

करोड़ सूर्यक सदृश प्रकाशमान आ करोड़ दिव्य स्त्रीसँ युक्त, सभ कामनासँ युक्त करोड़ो विमान द्वारा गाँव दान कयनिहार अपन एक्कैस कुलक संग शिवलोकमे अनन्तकाल धरि आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥७६३-७६४॥

आइ हम कोटि सूर्य सदृश प्रकाशमान् कोटि दिव्य स्त्रीसंयुक्त, सभ कामनासँ समन्वित अनेक करोड़ संख्याक विमान द्वारा एक्कैस कुलक संग अक्षयकाल धरि महेश्वरलोकमे क्रीड़नक कामनासँ प्रेमपूर्वक विष्णुदेवताक ई ग्राम शिवक निमित्त अर्पित कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नगरदानस्य—

पुण्यं नगरदानस्य ग्रामदानशताधिकम् ।
देशदानस्य चानन्तं नशक्यं तत्प्रकीर्त्तितुम् ॥७६५॥

अद्य ग्रामदानशतफलाधिकफलप्राप्तिकामनया इदं नगरं प्रियदत्तं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

देशदानस्य—

अद्य परकीर्त्तिनाशक्यानन्तफलप्राप्तिकामनयाऽयं देशः प्रियदत्तो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

खट्वादानस्य—

पञ्चतुलीसमायुक्तां मृद्वी खट्वां स्वलंकृताम् ।
सर्वोपकरणोपेतां शिवशय्यां प्रकल्पयेत् ॥७६६॥
सम्पूज्यगन्धपुष्पाद्यैर्वस्त्रालङ्कारचामरैः ।
भक्ष्यभोज्यैरशेषैस्तु तथा शय्यां निवेदयेत ॥७६७॥
तन्तूनां तूलवस्त्राणां परिसंख्या तु यावती ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७६८॥
क्रमादागत्य लोकेऽस्मिन् सिंहासनपतिर्भवेत् ॥७६९॥

अद्य तत्खट्वास्यतूलीतूलवस्त्रतन्तुसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वपूर्वकैहलौकिकसिंहासनपतित्वभवनकामनया इयं पञ्चतूलीसमायुक्ता मृद्वी स्वलङ्कृता-सर्वोपकरणोपेता खट्वा विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

इयं च खट्वा गन्धपुष्पवस्त्रालङ्कारचामराद्यैर्भक्ष्यभोज्यैश्च भगवन्तं शिवं सम्पूज्य दातव्या ।

भविष्यपुराणे शिवालये घण्टाबन्धनस्य—

शृङ्खलादामसयुक्तां महाघण्टां महास्वनाम् ।
कांस्यलौहमयीं वापि निबध्नीयाच्छिवालये ॥७७०॥
घण्टाकर्णोगणः श्रीमान् शिवस्यातीव वल्लभः ।
तस्य तुल्यबलो भूत्वा शिवलोके महीयते ॥७७१॥

'वापि' शब्दस्वरसाद्द्रव्यान्तरमयीमपि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नगरदानक फल—

ग्राम-दान जन्य पुण्यसँ सए गुना अधिक नगरदानमे होइत अछि। देश-दानक अनन्त फलक वर्णन करब संभव नहि अछि ॥७६५॥

आइ हम ग्राम-दान जन्य फलसँ सए गुना अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ विष्णु देवताक ई नगर प्रेमपूर्वक शिवक निमित्त देल।

देशदानक संकल्प —

आइ हम परकीर्ति (?) दोसरसँ अशक्य अनन्त फल प्राप्तिक कामनासँ विष्णु देवता सम्बन्धी ई देश भगवान शिवक निमित्त देल।

खट्वा (खाट) दानक फल—

जे पंचतूलीसँ युक्त कोमल सुन्दर ढंगसँ अलंकृत, सभ उपकरणसँ उपेत (युक्त) शिवशय्याकेँ बनाय गन्ध-पुष्पादिसँ ओजर पूजा कय वस्त्र, अलंकार, चामर, भक्ष्य आ भोज्य पदार्थसँ संयुक्त शय्या दान करैत अछि, ओ तूलवस्त्रमे सूतक जतेक संख्या होइत अछि, ओतेक सहस्र वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि आ बादमे एहि लोकमे (क्रमसँ) आबि सिंहासनपति अर्थात् राजा होइत अछि ॥७६६-७६७। ७६८-७६९॥

आइ हम एहि खाट पर अवस्थित तूली वस्त्रादिमे तन्तु सभक संख्याक बराबरि हजार वर्ष धरि रुद्रलोकमे पूजित भय एहि लोकमे सिंहासनाधिपति होयबाक ई पंचतूलीसँ युक्त कोमल सुन्दर ढंगसँ अलंकृत सभ उपकरणसँ युक्त विष्णु देवताक ई खाट शिवकेँ अर्पित कयल।

गन्ध, पुष्प, वस्त्र, अलंकार, चामर आदि तथा भक्ष्य एवं भोज्य पदार्थसँ भगवान शिवक पूजाक अनन्तर एहि खाटकेँ दान करबाक चाही।

भविष्यपुराणमे शिवालयमे घंटा बान्हबाक फल :—

जे काँसा, लोहा वा अन्य द्रव्यकेँ निर्मित महाध्वनि करयबला बड़का घंटाकेँ कड़ी अथवा मजबूत डोरीमे बान्हि शिवालयमे लटकाबथि से घांटकर्ण नामक समर्थ गण जे शिवक अत्यन्त प्रिय छथि हुनके सदृश बलबला भय शिवलोकमे पूजित होहत अछि ॥७७०-७७१॥

'वाऽपि' शब्दक प्रयोगसँ दोसरो द्रव्यक बनल सेहो अर्थ अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्य श्रीमद् घण्टाकर्णनामकातिवल्लभशिवगणसमानवलत्वभवनपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया इमां शृङ्खलादामसंयुक्तां महास्वनां कांस्यमयीं महाघण्टां भगवतः शिवस्यायतने बध्नामि ।

घण्टाशङ्खयोरन्यतरदानस्य—

यो घण्टामथवा शंखं प्रदद्याच्छङ्कराय वै[1] ।
सोऽक्षयं समवाप्नोति स्वर्गलोकं न संशयः ॥७७२॥

अद्याक्षयस्वर्गप्राप्तिकामनया इयं घण्टा विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

शंखदानेप्येतदेवफलम् ।

स्कन्दपुराणेछत्रदानस्य—

छत्रं पताकानिचयं शोभां कृत्वा ददाति या ।
सोपि दीप्यते भूयो रविवत्तेजसा दिवि ॥७७३॥

अद्य स्वर्गाधिकरणकरविदीप्तिकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

बहुपताकायामप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्म्मे वितानकदाने—

वितानं सितपद्माभमंके कमलभूषितम् ।
विचित्रमेकवर्णं वा नववस्त्रोपकल्पितम् ॥७७४॥
किंकिणीरवकोपेतं कन्दुकैश्चोपशोभितम् ।
लम्बकैः सूत्रदामैश्च घण्टाचामरभूषितम ॥७७५॥
शिवस्योपरि यो दद्यात् पुरतोवापि कल्पयेत् ।
रुद्रवत्सर्वलोकेषु युगकोटि स मोदते ॥७७६॥

मध्ये कमलभूषितं मध्ये वस्त्रकृतपद्मसंस्थानम् ।

अद्य रुद्रहर्षवत्सर्वलोकाधिकरणकयुगकोट्यवच्छिन्नहर्षकाम इदं सितपद्माभं मध्ये कमलभूषितं विचित्रमेकवर्णं वा नववस्त्रोपकल्पितं किंकिणीरवकोपेतं लम्बकबहुकन्दुकबहुसूत्रदानघण्टाचामरोपशोभितं वितानकं बृहस्पतिदैवतं भगवतः शिवस्योपर्य्यहंदास्ये ।

---

1 ने० पा०, प्रदघ्याच्छङ्करालये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आइ हम श्रीमान् घंटाकर्ण नामक शिवक अतीव प्रिय शिवगणक समान बलशालित्वपूर्वक शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ ई काँस्य-निर्मित महाध्वनि-बला बड़का घंटा कड़ी अथवा डोरींमे बान्हि भगवान शिवक मन्दिरमे लटकायब ।

घंटा वा शंख दानक फल—

जे शिवक निमित्त घंटा अथवा शंख दैत अछि, ओ स्वर्गलोकमे अक्षय फल निःसन्देह प्राप्त करैत अछि ।।७७२।।

आइ हम अक्षय स्वर्ग प्राप्तिक कामनासँ विष्णुदेवताक ई घंटा भगवान् शिवक निमित्त देल ।

शंख दानमे सेहो इएह फल होइत अछि ।

स्कन्दपुराणमे छत्रदानक फल :—

जे व्यक्ति छाता वा सुन्दर अनेक पताका शिवक हेतु दैत अछि, ओहो सूर्यक तेजक समान तेजस्वी भय स्वर्गलोकमे सुशोभित होइत अछि ।।७७३।।

आइ हम स्वर्गमे सूर्यक दीप्ति प्राप्तिक कामनासँ उत्तानाङ्गिरा देवता-सम्बन्धी ई छत्र भगवान शिवकेँ देलियनि ।

वहुत पताका दानक सेहो इएह फल होइत अछि ।

शिवधर्ममे वितानक दानक फल—

जे श्वत कमलक समान शुभ्र बीचमे वस्त्रसँ वनल कमलसँ विभूषित एक अथवा अनेक रंगक नव वस्त्रसँ बनल, लटकैत किंकिणी सभक मधुर ध्वनिसँ युक्त, झुलैत अनेक कन्दुक, अनेक सुन्दर सूत्रसँ बान्हल घंटा, चामरसँ विभूषित वितानक रुद्रक ऊपर अथवा रुद्रक सामनेमे दैत अछि, ओ रुद्रक समान सभ लोकमे आनन्दित रहैत अछि ।।७७४-७७६।।

'मध्ये कमलभूषितम्'क तात्पर्य अछि जे वितानकक मध्यमे वस्त्रसँ कमलक सुन्दर आकार बनल हो ।

आइ करोड़ युग धरि सभ लोकमे रुद्रक हर्षक सदृश हर्ष प्राप्त करबाक लेल श्वेतकमलक समान शुभ्र बिचमे वस्त्र, निर्मित कमलसँ विभूषित, एक अथवा अनेक रंगक नव वस्त्रसँ निर्मित, लटकैत किंकिणी सभक मधुर आवाजसँ युक्त, झुलैत अनेक गेन्द, अनेक सुन्दर सूत्र तथा घंटा एवं चामर सभसँ सुशोभित वृहस्पतिदेवताक ई वितानक भगवान शिवकेँ उपर देल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवस्य[१] पुरतः करणेप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्म्मे महाध्वजदानस्य—

श्वेतं महाध्वजं दिव्यं दत्वा वा पञ्चरङ्गकम् ।
किंकिणीरवकोपेतं मायूरछत्रभूषितम् ॥७७७॥
स श्वेतेन विमानेन सर्वदेवोपरि स्थितः ।
मन्वन्तरसहस्रैकं मोदते दिवि रुद्रवत् ॥७७८॥

अद्य श्वेतविमानकरणकसर्वदेवोपरिस्थितात्मीयमवन्तरसहस्रैकावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकरुद्रहुर्षतुल्यहर्षप्राप्तिकामनयाऽयं किंकिणीरवकोपेतो मयूरछत्रोपशोभितः श्वेतः पञ्चराङ्गकोवा महाध्वजो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मे मौक्तिकमण्डपदानस्य—

शिवस्योपरि यो दद्यात् सर्वरत्नोपशोभितम ।
मण्डपं मौक्तिकं श्रीमान् तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७७९॥
कोटिकोटिविमानैश्च सर्वकामसमन्वितः ।
आभूतसंवयात्वद्वसेच्छिवपुरे सुखी ॥७८०॥

मौक्तिकं मुक्तामयम् ।

अद्य कोटिकोटिविमानकरणकसर्वकामसमन्वितात्मीययावदाहूतसंप्लवसुखित्वशिवपुरवासकामनयाऽमुं सर्वरत्नोपेतं मौक्तिकमण्डपं वरुणदैवतं भगवतः शिवस्योपर्य्यहं दास्ये ।

वितानदने——

वितानकन्तु यो दद्याच्छिवे पद्मोपशोभितम् ।
स वै युगसहस्रन्तु मोदते रुद्रवत्प्रिये ॥७८१॥

अद्य युगसहस्रावच्छिन्नरुद्रहर्षतुल्यहर्षकामनया इदं पद्मोपशोभितं वितानकं बृहस्पतिदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, शिव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवक आगांमे सेहो (वितानक) देबाक इएह फल होइत अछि।

शिवधर्ममे महाध्वज दानक फल—

जे व्यक्ति श्वेत अथवा पाँच रंगबला दिव्य महाध्वज किंकिणीक ध्वनिसँ युक्त तथा मयूरक पाँखिसँ निर्मित छत्रसँ विभूषित शिवकेँ अर्पित करैत अछि ओ श्वेत विमानसँ सभ देवताक उपरिवर्ती लोकमे स्थित भय कए एक सहस्र मन्वन्तर पर्यन्त स्वर्गमे रुद्रक सदृश आनन्दित रहैत अछि ।।७७७-७७८।।

आइ हम श्वेत विमान द्वारा जाय सभ देवताक स्थानसँ उच्च स्थान पर अवस्थित भय एक हजार मन्वन्तर धरि स्वर्गमे रुद्रक प्रसन्नताक तुल्य प्रसन्नता प्राप्तिक कामनासँ किंकिणीक मधुर ध्वनिसँ युक्त, मयूरक छत्रसँ सुशोभित ई श्वेत अथवा पाँच रंगबला विष्णुदेवताक (सम्बन्धी) महाध्वज भगवान शिवकेँ देलियनि।

शिवधर्ममे मुक्तामय मंडप दानक फल—

जे व्यक्ति सभ रत्नसँ सुशोभित मुक्तामय मण्डप शिवक उपर दैत अछि, ओकर फल सुनू—ओ ऐश्वर्य-सम्पन्न भय सभ कामनासँ युक्त कोटि-कोटि विमान द्वारा शिवलोक पहुँचि कय अभूतपूर्व प्रलय पर्यन्त ओतय सुखी रहैत अछि ।।७७९-७८०।।

मौक्तिकम्‌क अर्थ अछि मुक्तामय।

आइ हम कोटि-कोटि विमान द्वारा जाय महाप्रलय धरि सभ कामनासँ युक्त भय सुखपूर्वक शिवपुरमे वास करबाक कामनासँ सभ रत्नसँ सुशोभित वरुणदेवताक ई मुक्तामय मण्डप भगवान शिवक उपर देव।

वितानक दानक फल—

जे पद्मसँ सुशोभित वितानक शिवक उपर दैत अछि, ओ सहस्र युग पर्यन्त रुद्रक समान प्रसन्न रहैत अछि ।।७८१।।

आइ हम सहस्रयुग पर्यन्त रुद्रक समान हर्षक सदृश हर्ष प्राप्तिक कामनासँ पद्म (कमल)सँ सुशोभित वृहस्पति देवताक ई वितानक भगवान शिवकेँ देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्म्मे वस्त्रदाने—

वस्त्रं ध्वजं वितानञ्च यो दद्याल्लिङ्गसन्निधौ ।
लभते परमैश्वर्य्यं जायते विमले कुले ॥७८२॥

अद्य परमैश्वर्य्यविमलकुलजन्मप्राप्तिकामनया इदं वस्त्रं बृहस्पतिदैवतं लिङ्गसन्निधौ भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ध्वजवितानकान्यतरदानेत्येतदेव फलम् ।

वस्त्रदाने—

वस्त्रस्य तु प्रदानेन अग्निष्टोमफलं भवेत् ॥७८३॥

अद्याग्निष्टोमफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं वस्त्रं बृहस्पतिदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

धान्यदाने—

धान्यानि यस्तु मे दद्याद्धिरण्यं गामथापि वा ।
बहुलोकमवाप्नोति सर्वकामसमन्वितम् ॥७८४॥

अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकावाप्तिकामनया एतानि धान्यानि प्रजापतिदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

गोहिरण्यदानयोरपीदमेव फलम् ।

अजावृषभखरमेषाणामन्यतमदाने—

अजां वा वृषभं वापि खरं मेषं शिवाय च ।
दत्वा प्रमोदते तावद्यावद्रोमाब्दसंख्यकम् ॥७८५॥

अद्य तदजादेहस्थलोमसमसंख्यवत्सरावच्छिन्नहर्षकामनया इयमजा विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

वृषभखरमेषाणामन्यतमदानेपीदमेव फलम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवधर्ममे वस्त्रदानक फल—

जे व्यक्ति शिवलिंगक निकट वस्त्र, ध्वज वा वितानक दान करत अछि, ओ परम ऐश्वर्य प्राप्त करैत अछि तथा निर्मल कुल मे जन्म लैत अछि ।।७८२।।

आइ हम परम ऐश्वर्य तथा निर्मल वंशमे जन्म लेबाक कामनासँ बृहस्पतिदेवताक ई वस्त्र लिंगक निकटमे भगवान शिवकें अर्पित कयल ।

ध्वज अथवा वितानमेसँ कोनो एकक दानमे सेहो इएह फल होइछ ।

वस्त्रदानक फल—

वस्त्रक दान कयलासँ अग्निष्टोम यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ।। ७८३।।

आइ हम अग्निष्टोम यज्ञक फल समान फल प्राप्तिक कामनासँ बृहस्पति-देवता-सम्बन्धी ई वस्त्र भगवान शिवक निमित्त देलियनि ।

धान्यदानक फल—

जे व्यक्ति हमरा धान्य, अथवा हिरण्य अथवा गाय दैत अछि, ओ सभ कामनासँ समन्वित अनेक लोककेँ प्राप्त करैत अछि ।।७८४.।

आइ हम सभ कामनासँ समन्वित अनेक लोक-प्राप्तिक कामनासँ प्रजापति देवताक ई धान्य भगवान शिवकें देलियनि ।

गाय अथवा हिरण्यदानक सेहो इएह फल होइत अछि ।

बकरी, साँढ़, गदहा तथा भेंड़ा मेसँ कोनो एक दानक फल—

जे अजा अथवा वृषभ खर अथवा भेड़ा शिवक हेतु दान करैत अछि ओ ओहि पशुक शरीरमे विद्यमान रोमक संख्यापरिमित वर्ष धरि आनन्दित रहैत अछि ।।७८५।।

आइ हम ई देल गेल बकरीक देहस्थ रोइयाँक संख्याक समान वर्ष धरि हर्ष प्राप्तिक कामनासँ विष्णुदेवताक ई बकरी भगवान शिवकें देलियनि ।

वृषभ, गदहा तथा भेड़ामेसँ कोनो एक दान करबाक सेहो इएह फल होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ताम्रपात्रताम्रकुम्भकटाहादीनामन्यतमदाने—

ताम्रपात्रताम्रकुम्भकटाहाद्यं निवेदने ।
पले पले वर्षकोटिं मोदते स शिवे पुरे ॥७८६॥

अद्य तत्ताम्रपात्रीयताम्रपलसमसंख्यवर्षकोट्यवच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमोदन-कामनया एतत्ताम्रपात्रं प्रजापतिदैवतम् भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ताम्रकुम्भादीनामन्यतमदानेप्येतदेव फलम् ।

बहुरत्नदाने—

बहुरत्नानि दिव्यानि यो ददाति शिवाय वै ।
पुनः पुनश्च यो दद्याद्रत्नाभरणभूषणम् ।
गाणपत्यमवाप्नोति अक्षयं परमं ध्रुवम् ॥७८७॥

अद्यात्मीयपरमगाणपत्यप्राप्तिकामनया एतानि रत्नानि वरुणदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

इन्द्रनीलवैडूर्य्ययोरन्यतरदाने—

इन्द्रनीलप्रदानेन सद्वैदूर्य्यप्रदानतः ।
मोदते विविधैर्भोगैः कल्पकोटिं शिवे पुरे ॥७८८॥

अद्य शिवपुराधिरणकविविधबहुभोगहेतुककल्पकोट्यवच्छिन्नहर्षकामनया इदमिन्द्रमीलं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सद्वैडूर्य्यप्रदानेप्येतदेव फलम् ।

पद्मरागदाने——

मसूरमात्रमपि यः पद्मरागं सुशोभनम् ।
निवेदयति शर्वाय मोदते कालमक्षयम् ॥७८९॥

अद्याक्षयकालिकहर्षकामनया इदं पद्मरागरत्नं सुशोभनं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तामक पात्र, तामक कुम्भ (तमघैल), तथा कराह आदिमेसँ कोनो एक दानक फल—

जे तामक पात्र, तामक कुम्भ वा कराह आदिक निवेदन करैत अछि से पात्रक एक-एक पलक परिमाणक मुताबिक शिवपुरमे करोड़ो वर्ष धरि आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥७८६॥

आइ हम एहि तामक पात्रक तामक पल (परिमाण)क संख्याक समान कोटि वर्ष धरि शिवपुरमे आनन्द-प्राप्तिक कामनासँ प्रजापति देवताक ई तामक पात्र भगवान शिवकेँ देलियनि।

तामक कुम्भ आदि दानमेसँ कोनो एक दानक सेहो इएह फल होइत अछि।

अनेक रत्नदानक फल—

बहुत सुन्दर रत्नकेँ जे शिवक निमित्त दैत अछि आ पुनः-पुनः रत्न, आ भूषण दैत अछि, ओ गणपति लोक निश्चित रूपसँ अनन्त काल धरि पबैत अछि।

आइ हम आत्मीय परम गाणपत्य प्राप्तिक कामनासँ वरुण देवताक ई रत्न सभ शिवकेँ अर्पित कयल।

इन्द्रनीलमणि आ वैडूर्यमेसँ कोनो एक दानक फल—

इन्द्रनील तथा बढ़िया वैडूर्य दान करयवला (मानव) अनेक भोगक संग कोटि कल्प धरि शिवलोकमे आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥४८७॥

आइ हम शिवलोकमे अनेक भोगक संग कोटि कल्प धरि आनन्द-प्राप्तिक कामनासँ वरुण देवताक ई इन्द्रनील भगवान शिवकेँ देलियनि।

उत्तम वैडूर्यक दानमे सेहो इएह फल होइत अछि।

पद्मराग दानक फल—

मसुरीक बरोबरियो जे सुन्दर पद्मराग शिवकेँ निवेदन करैत अछि, ओ अनन्त काल धरि प्रसन्न रहैत अछि ॥७८९॥

आइ हम अक्षयकाल धरि हर्ष प्राप्तिक कामनासँ वरुण देवताक ई सुशोभन पद्मराग भगवान शिवकेँ देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कीटपक्षदाने——

कीटपक्षं महाशुद्धं निवेद्य यवमात्रकम् ।
शिवाय स पुरे शैवे मोदते कालमक्षयम् ॥७९०॥

अद्य शिवपुराधिकरणकाक्षयकालिकहर्षकामनया इदं कीटपक्षरत्नं महाशुद्धं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

वज्रदाने——

गोधूममात्रंमणि यो दद्याद्वज्रं शिवाय वै ।
आभूतसंप्लवं यावच्छिवलोके वसेत् सुखी ॥७९१॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकप्रलयकालावच्छिन्नवाससुखित्वकामनया इदं हीरकं शुद्धं गोधूमनात्रं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

हेमनिबद्धक्षुद्रबहुरत्नदाने--

क्षुद्ररत्नानि यो दद्याद्धेमबद्धानि शम्भवे ।
मोदते स शिवलोके कल्पकोट्ययुतं नरः ॥७९२॥

अद्य शिवलोकाधिकरणककल्पकोट्ययुतावच्छिन्नहर्षकामनया एतानि क्षुद्ररत्नानि हेमबद्धानि वरुणदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

बहुरत्नदाने—

रत्नानि चैव यो दद्याद्ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
स्त्री वा शूद्रो वा महत्सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥७९३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकमहासौख्यप्राप्तिकामनया एतानि रत्नानि वरुण-दैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

रत्नावलीदाने--

रत्नावलीञ्च यो दद्याद्ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
स्त्री शूद्रो महत्सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥७९४॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकमहासौख्यप्राप्तिकामनया इयं रत्नावली वरुण-दैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

रत्नदाने यथोत्कर्षं फलोत्कर्षः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कीटपक्ष रत्न दानक फल —

जे जौ मानक अत्यन्त शुद्ध कीटपक्ष शिवक हेतु निवेदन करैत अछि, ओ अक्षय काल धरि शिवलोकमे आनन्दित रहैत अछि ॥७९०॥

आइ हम शिवपुरमे अक्षय काल धरि हर्ष प्राप्तिक कामनासँ अत्यन्त शुद्ध ई कीटपक्ष रत्न वरुण देवताक भगवान शिवकेँ देलियनि ।

वज्रदानक फल—

जे गहुमक बरोबरि हीरा शिवकेँ दैत अछि, ओ प्रलयपर्यन्त सुखपूर्वक शिवलोकमे निवास करैत अछि ॥

आइ हम शिवलोकमे प्रलयकाल पर्यन्त सुखसँ वास करबाक कामनासँ गहुमक परिमाणक वरुण देवताक ई शुद्ध हीरक भगवान शिवकेँ देलियनि । ,

सोनासँ मढ़ल अर्थात् बान्हल छोट रत्न दानक फल—

जे सोनामे मढ़ल छोट रत्न सभ शिवकेँ प्रदान करैत अछि, ओ मानव दस हजार करोड़ कल्प धरि शिवलोकमे आनन्द प्राप्त करैत अछि ॥७९२॥

आइ हम शिवलोकमे दस हजार कोटि कल्प धरि हर्ष प्राप्तिक कामनासँ सोनामे निबद्ध वरुण देवताक अनेक छोट रत्न भगवान शिवकेँ देलियनि ।

अनेक रत्न दानक फल—

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री अथवा शूद्र जे केयो रत्न प्रदान करैत अछि, ओ हमरा लोक अर्थात् शिवलोकमे महत्सौख्य प्राप्ति करैत अछि ॥७९३॥

आइ हम शिवलोकमे महासौख्य प्राप्ति कामनासँ वरुण देवताक ई रत्न भगवान शिवकेँ देलियनि ।

रत्नावली दानक फल—

जे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री अथवा शूद्र (शिवकेँ) रत्नावली दैत अछि ओ हमरा लोकमे महासौख्य प्राप्त करैत अछि ॥७९४॥

आइ शिवलोकमे महासौख्य प्राप्तिक कामनासँ हम वरुण देवताक ई रत्नावली भगवान शिवकेँ देलियनि ।

रत्नक दानमे रत्नक उत्कृष्टताक मुताबिक फलोमे उत्कर्ष होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यदाह–

यथा यथा महारत्नं शोभनञ्च यथा यथा ।
तथा तथा महापुण्यं ज्ञेयं तच्छिवदानत: ॥७९५॥

सुवर्णरजतान्यतरमयरचितमहारत्नमहीदाने—

हेम्ना रूप्येण वा कृत्वा महारत्नचितां महीम् ।
निवेदयित्वा शर्वाय शिवतुल्य: प्रजायते ॥७९६॥

अद्य शिवतुल्यत्वभवनकामनया इयं सुवर्णमयी रचितमहारत्नमही विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

रजतमयरचितमहारत्नमहीदानेप्येतदेवफलम् ।

वज्रेन्द्रनीलवैदूर्य्यपद्मरागं समौक्तिकम् ।
कीटपक्षं सुवर्णञ्च महारत्नानि सप्त वै[1] ॥७९७॥

मौक्तिकदाने—

निवेद्य मौक्तिकन्त्वेकं यत्किञ्चिल्लवमात्रकम् ।
भोगै: शिवपुरे दिव्यै: कल्पकोटिं प्रमोदते ॥७९८॥

अद्य शिवपुराधिकरणककल्पकोट्यवच्छिन्नदिव्यवहुभोगहेतुकहर्षकामनया इदं मौक्तिकं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवधर्म्मे छत्रदानस्य—

शरच्चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितम् ।
मणिदण्डमयं छत्रं दद्याद्वै काञ्चनान्वितम् ॥७९९॥
छत्रेण सविचित्रेण धार्य्यमात्रेन शोभित: ।
विमानशतसम्भोगैश्चिरं शिवपुरे वसेत् ॥८००॥
अथवा राज्यमाकाङ्क्षेद्देही कालस्य पर्य्ययात् ।
भुङ्क्ते समुद्रपर्य्यन्तामेकच्छत्रां वसुन्धराम् ॥८०१॥

अथवेति फलान्तरद्योतनार्थम् ।

अद्य विचित्रछत्रशोभितत्व[2] विमानशतभोगहेतुक शिवपुराधिकरणकचिरवास-[illegible]त्तरैकछत्रवसुन्धराधिपत्यप्राप्तिकामनया इदं चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितं मणिदण्डमयं सकाञ्चनं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, सम्भवे ।
२ तत्रैव, शोभितात्म ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जेना कहल गेल अछि—

जतेक-जतेक महारत्न आ जतेक-जतेक शोभनगर रत्न हो शिवक हेतु दान कयलासँ तेहने-तेहने महापुण्य होइत अछि ।।७९५।।

सोना वा चानीसँ रचित महारत्नक संग पृथ्वी-दानक फल—

स्वर्णसँ अथवा चानीसँ निबद्ध महारत्न सभक संग पृथ्वी शिवकेँ निवेदित कय शिवक तुल्य भय जाइत अछि ।।७९३।।

आइ हम शिवक तुल्य होयबाक कामनासँ ई सोनासँ निर्मित महारत्नसँ रचित विष्णुदेवताक पृथ्वी भगवान शिवकेँ देलियनि ।

रजतयुक्त महारत्नक संग पृथ्वीक दानमे सेहो इएह फल होइत अछि ।

वज्र (हीरा), इन्द्रनील, वैदूर्य, पद्मराग, मुक्ता, कीटपक्ष तथा सोना—ई सात महारत्न कहबैत अछि ।।७९७।।

मोतीदानक फल—

जे एक छोटो मोती शिवकेँ निवेदित करैत अछि, ओ अनेक भोगक संग दिव्य कोटि कल्प धरि शिवलोकमे सुखी रहैत अछि ।।७९८।।

आइ हम शिवपुरमे कोटि कल्प धरि दिव्य भोगक संग हर्षक कामनासँ वरुणदेवताक ई मुक्ता भगवान शिवकेँ देलियनि ।

शिवधर्मने छत्रदानक फल—

शरत्कालीन चन्द्रमाक सदृश स्वच्छ, मुक्ताक मालासँ सुशोभित, मणिमय दंडसँ युक्त सोनाक मढ़ल छत्र जे शिवकेँ दैत अछि, ओ धारण कयल गेल अत्यन्त सुन्दर छत्रसँ सुशोभित भय साइयो विमान तथा ऐश्वर्यसँ युक्त भय चिर अवधि धरि शिवलोकमे वास करैत अछि ।।७९९-८००-८०१।।

अथवा छत्र-दान कयनिहार पुरुष चिरकाल धरि शिवलोकमे वासकय ओकर बाद राज्य प्राप्त करैत अछि और आसमुद्र एकच्छत्र पृथ्वीक भोग करैत अछि ।।८०२।।

अथवा शब्दक प्रयोग दोसर फलक द्योतन करबाक हेतु अछि ।

आइ हम विचित्र (रंग-बिरंगक) छत्रसँ शोभित भय सय विमान द्वारा जाय भोगक संग शिवपुरमे चिरकाल धरि निवास तथा ओकर उपरान्त एहि लोकमे एकच्छत्र पृथ्वीक आधिपत्य प्राप्त करबाक कामनासँ ई चन्द्रांशु (चन्द्रकिरण)क समान स्वच्छ, मुक्ताक मालासँ शोभित, मणिमय दंडसँ युक्त, कांचन सहित छत्र जकर उत्तानाङ्गिरा देवता छथि, भगवान शिवकेँ देलियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथवा

अद्य विचित्रछत्रशोभितास्व[1]विमानशतभोगहेतुकशिवपुराधिकरणकचिरवासकामनया इदं शरच्चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितं मणिदण्डमयं सकाञ्चनं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्कन्दपुराणीयछत्रदानस्य—

छत्रं दद्याच्च यः सोपि[2] दीप्यते तेजसा दिवि ॥८०२॥

अद्य स्वर्गाधिकरणक तेजो(देह)हेतुकदीप्तिमत्वकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्य मया दत्तम् ।

शिवपुराणीयछत्रदानस्य—

यस्तु छत्रं प्रयच्छेत मम तेजोधिपोपमम् ।
तेजोमण्डलसङ्काशो दिवि व्रजति शुक्रवत् ॥८०३॥

अद्य स्वर्गाधिकरणक तेजोमण्डलवत्प्रकाशमानात्मीयशूक्रतुल्यगतिमत्वप्राप्तिकामनया इदं सितछत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

तत्रैव छत्रदानस्य—

छत्रं दद्यात्तु यः कश्चिच्छिवोपरि च धार्य्यते ।
स वै भृत्यसहस्रस्य आधिपत्यं करिष्यते ॥८०४॥

अद्य भृत्यसहस्राधिपत्यभवनकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

उपरिधारणमत्राङ्गम् ।

---

१ ने० पा०, शोभितात्म ।
२ तत्रैव, कोऽपि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथवा

आइ हम विचित्र (रंग-बिरंगक) छत्रसँ शोभित सय विमान भोग हेतुक शिवपुरमे चिरवासक कामनासँ ई शरचन्दांशुक सदृश उज्ज्वल, मुक्ताक मालासँ शोभित, मणिमय दण्डयुक्त सोना सहित उत्तानांगिरा देवताक ई छत्र भगवान शिवकेँ देलियनि ।

स्कन्दपुराणक मुताबिक छत्रदानक फल—

जे (शिवकेँ) छत्र दैत अछि, जो स्वर्गलोकमे तेजसँ जाज्वल्यमान होइत अछि ॥८०२॥

आइ हम स्वर्गमे तेजसँ दैहिक ई कांति प्राप्तिक कामनासँ उत्तानांगिरा देवताक छत्र भगवान् शिवकेँ देलियनि ।

शिवपुराणक अनुसार छत्र-दानक फल—

जे शिवक हेतु चमकैत छत्र दान करैत अछि, ओ प्रकाशमण्डलक सदृश तेजस्वी भय स्वर्गमे शुक्रक समान गतिशील होइत अछि ॥८०३॥

आइ हम स्वर्गमे तेजमण्डल सदृश प्रकाशमान होयबाक तथा शुक्रतुल्य गति प्राप्त करबाक कामनासँ उत्तानांगिरादेवताक ई सित (श्वेत रंगक) छत्र भगवान शिवकेँ देलियनि ।

ओतहि छत्र-दानक फल—

जे शिवकेँ छत्र दैत अछि आ ओकर उपर ओ धारण करैत अछि, ओ हजार भृत्य (नोकर)क आधिपत्य प्राप्त करैत अछि ॥८०४॥

आइ हम एक सहस्र अनुचरक आधिपत्यक कामनासँ उत्तानांगिरादेवताक ई छत्र भगवान् शिवकेँ देलियनि ।

उपर धारण करब अर्पणक अंग भेल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवालये ध्वजमालाधारणे—

ध्वजमालाकुलं कुर्याद्यश्च प्रान्तं[1] शिवालये ।
महाध्वजाष्टकं वापि दिग्विदिक्षु दिवेदयेत् ॥८०५॥

सविमानसहस्रेण दिव्यध्वजविशोभिना ।
कल्पायुतशतं साग्रं मोदते दिवि रुद्रवत् ॥८०६॥

अद्य दिव्यध्वजशोभिविमानसहस्रकरणकसाग्रकल्पायुतशतावच्छिन्नरुद्रहर्षप्राप्तिकामः शिवालयप्रान्ते ध्वजमालानिवेशनमहं कुर्वीय ।

महाध्वजाष्टकदाने—

अद्य दिव्यध्वज्वजोपशोभिविमानसहस्रकरणकसाग्रकल्पायुतशतावच्छिन्नरुद्रहर्षतुल्यहर्षकामनया इद महाध्वजाष्टकं वायुदैवतं भगवतः शिवस्यायतने दिग्विदिक्षु निवेदयिष्ये ।

शिवायतने वस्त्रकरणकशोभायाम्—

शर्वस्यायतने कुर्याद्वस्त्रशोभान्तु यो नरः ।
दुकूलपट्टववस्त्राद्यैर्वस्त्रैर्वा गैरिका[2]न्वितैः ॥८०७॥

वस्त्रादिपट्टवतन्तूनां यावत्संख्या विधीयते ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥८०८॥

दुकूलपट्टववस्त्राद्यैरिति सर्वपट्टववस्त्रोपलक्षणम्; वस्त्रैर्वेति कार्प्पासिकैः; वर्णिकान्वितैर्गैरिकादिवर्णान्वितैः ।

अद्यैतद्वस्त्रतन्तुसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एभिर्दुकूलपट्टववस्त्राद्यैर्भगवतः शिवस्यायतने शोभामहङ्करिष्ये ।

वर्णिकान्वितबहुवस्त्रभूषणेप्यायतनस्यैतदेवफलम् ।

शक्त्यपेक्षयाफलभूमापेक्षया वा व्यवस्था ।

---

१ ने० पा०, यश्च प्रातः ।
२ तत्रैव, वर्णिकान्वितैः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवालयमे ध्वज-माला धारण करबाक फल—

जे व्यक्ति शिवालयक प्रान्तमे ध्वज-मालाकेँ लगबैत अछि अथवा शिवालयक आठो दिशामे महाध्वजा सभकेँ लगबैत अछि ओ दिव्य ध्वजा सभसँ सुशोभित सहस्र विमान द्वारा स्वर्ग जाय कय दस लाख कल्प धरि रुद्रक सदृश आनन्दित रहैत अछि ॥८०५-८०६॥

आइ हम दिव्य ध्वजा सभसँ सुशोभित सहस्र विमान द्वारा दस लाख कल्पसँ अधिक काल धरि रुद्रक समान हर्ष प्राप्तिक कामनासँ शिवालयक प्रान्तमे ध्वज-मालाक निवेशन करब।

आठ महाध्वजा दानक फल—

आइ हम दिव्य ध्वजासँ सुशोभित सहस्र विमानसँ दस लाख कल्पसँ अधिक काल धरि रुद्रक हर्षक तुल्य हर्षक कामनासँ ई वायुदेवतासम्बन्धी आठो ध्वजा भगवान शिवक मन्दिरमे तथा ओकर आठो दिशा में निवेदन करब।

शिवालयमे वस्त्र द्वारा शोभा उत्पन्न करबाक फल—

जे व्यक्ति सूती, रेशमी, पटुआ आदि वस्त्र सभकेँ गैरिक वर्णमे रँगि कय शिवमन्दिरकेँ सजबैत अछि, ओ ओहि वस्त्रक सूतक संख्याक अनुसार ओतेक सहस्र युग धरि पूजित होइत अछि ॥८०७-८०८॥

'दुकूलपट्टवस्त्राद्यैः' एहि पदसँ सभ प्रकारक पट्ट वस्त्रक बोध होइत अछि। 'वस्त्रैर्वा'सँ कपासक वस्त्र आ' 'वर्णिकान्वितैः' पदसँ गेरुआ आदि रंगीन वस्त्र बुझबाक चाही।

आइ एहि वस्त्र सभक तन्तु सभक संख्याक बरोबरि हजार युग धरि रुद्रलोकमे पूजित होयबाक कामनासँ एहि दुकूल, पट्टवस्त्र, सूती वस्त्र आदिसँ भगवान शिवक मन्दिर शोभा करब।

गेरुआ आदि रंगसँ रंगीन विविध वस्त्रसँ अलंकृत करबामे सेहो इएह फल होइत अछि।

शक्तिक अनुसार तथा अधिक फल प्राप्त करबाक अनुसार व्यवस्था करबाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ पताकालक्षणम्

चतुरङ्गुलविस्तारा दीर्घहस्तद्वयापरा ।
पताका लोकपालानां दशानां परिकीर्त्तिता ॥८१२॥

पञ्चहस्तास्तु वै दण्डाः पताकार्थं प्रकीर्त्तिताः ।
हस्तद्वयप्रमाणन्तु वितानं स्नानवासने ॥८१३॥

पीतरक्तकृष्णनीलधूम्रपीतरजोऽरुणाः ।
दीर्घाहस्तद्वयमात्रा व्यायामाश्चतुरङ्गुलाः ॥८१४॥

आसां दण्डाः पञ्चहस्ता मुनिभिः परिकीर्त्तिताः ।
देवेभ्यश्च ध्वजं दद्याद्वाहनैरुपशोभितम् ॥८१५॥

तुरङ्गमेण सूर्य्यस्य हरस्य-वृषचिह्नितम् ।
विष्णवे गरुडाङ्कन्तु दुर्गायै सिंहचिह्नितम् ॥८१६॥

कार्य्यं ध्वजपताकाद्यमन्यथा न कथञ्चन ॥८१७॥

घण्टापुष्करशङ्खाद्यैःशिवभक्तौ—

घण्टापुष्कर शब्देन शङ्खाद्यैस्तु मनोहरैः ।
यः कुर्य्याच्छिवभक्तिं तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८१८॥

रुद्रलोके वसित्वा तु पुनर्मर्त्त्यमुपागतः ।
राजस्कन्धेन यात्येष महशब्देन पूजितः ॥८१९॥

एवं ददाति यः कश्चिच्छिवाय सुमहायशाः ।
तस्य तच्चाक्षयं देवि जन्मान्तरशतेष्वपि ॥८२०॥

अद्य रुद्रलोकवासनान्तरमर्त्यलोकीयराजस्कन्ध करणकमहाशब्दपूजितगतिमक्षयैतज्जातीयवाद्यशब्दलाभकामो घण्टापुष्करशङ्खादिमनोहरस्वनैर्भगवतः शिवस्याराधनमहङ्करिष्ये ।

अमीषांनिवेदनेप्येततेव फलम् ।

शिवधर्म्मेमृन्मयार्घपात्रदानस्य—

अर्घपात्रन्तु यो दद्यान्मृन्मयन्तु शिवे गुरौ ।
दिवः पातेनच ागत्य सोपि कोटिपतिर्भवेत् ॥८२१॥

अद्य स्वर्गभुक्त्यनन्तरकोटिपतित्वभवनकामनया इदं मृन्मयमर्घपात्रं विष्णुदैवतं शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब पताकाक लक्षण कहल जाइत अछि

इन्द्रादि दस लोकपाल (दिक्पाल)क हेतु पताका चारि आँगुर चाकर आ' दू हाथ नाम होइत अछि। साधारणतः पताकाक हेतु पाँच हाथक दण्ड तथा दू हाथ परिमाणक वितान होयवाक चाही। वितानक वस्त्रक पीयर, लाल, कारी, नील, धूम्रपीत, नारङ्गी एवं गुलावी रंग होयवाक चाही। पताका दू हाथ नाम आ चारि आँगुर चाकर होइत अछि। एहिमे पाँच हाथ नाम दण्ड हो—एहन बात मुनि लोकनिक द्वारा निर्धारित कयल गेल अछि। देवता विशेषक हेतु जे पताका बनैत अछि, ओहिमे हुनक वाहनक चेन्ह सुशोभित होयवाक चाही।

सूर्यक पताका घोड़ासँ, शिवक वृषसँ, विष्णुक गरुडसँ एवं दुर्गाक सिंहसँ चिह्नित कय पताका सुन्दर बनायकेँ देवाक चाही। एहि चिह्नक विना ध्वज आ' पताका कखनहुने चढ़ावी ।।८१२-८१७।।

घंटा, मृदंग, शंख आदि बजाय भक्तिपूर्वक शिवक पूजा करबाक फल—

जे व्यक्ति घंटा, ताशा एवं शंख आदिक मनोहर ध्वनिक संग भक्तिपूर्वक पूजा करैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनूः—

ओ रुद्रलोकमे निवास कय पुनश्च मर्त्यलोकमे आबि कय राजा सभक कान्ह पर सवार होयवला महान शब्दसँ पूजित होइत अछि ।।८१८-८१९।।

एहि प्रकारेँ जे सुन्दर महायशवला शिवक हेतु किछु दैत अछि, हे देवि ! साइयो जन्म धरि ओकर ओ दान अक्षय रहैत छैक ।।८२०।।

आइ हम रुद्रलोकमे वासक अनन्तर मर्त्यलोकमे राजाक कान्ह पर चढ़ि महाशब्दसँ पूजित होयवाक, अक्षय पुण्य प्राप्त करवाक तथा घंटा, शंख आदि वाद्य यंत्रक शब्द लाभक कामनासँ घंटा, मृदंग, शंख आदिक मनोहर ध्वनिसँ भगवान शिवक पूजा करव।

अहू सभक निवेदनमे सेहो इएह फल होइत अछि।

शिवधर्ममे माटिक अर्घपात्र देवाक फल—

जे व्यक्ति माटिक अर्घ-पात्र शिवकेँ अथवा गुरुकेँ दैत अछि, ओ स्वर्गलोकमे निवास कयलाक उपरान्त मर्त्यलोकमे आबि कय कोटिपति होइत अछि ।।८२१।।

आइ हम स्वर्गक भोगक उपरान्त कोटिपति होयवाक कामनासँ विष्णुदैवत ई माटिसँ निर्मित अर्घपात्र भगवान शिवकेँ देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मृन्मयपात्रदानस्य—

रौप्यपात्रप्रदानेन यत्फलं वेदपारगे ।
तस्माच्छतगुणं पुण्यं शिवे मृत्पात्रदानतः ॥८२२॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकरौप्यपात्रशतदानफल समफलप्राप्तिकामनया इदं मृन्मयपात्रं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ताम्रपात्रदानस्य—

हेमपात्रेण दत्तेन यत्फलं वेदपारगे ।
ताम्रपात्रप्रदानेन तस्माच्छतगुणं स्मृतम् ॥८२३॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकहेमपात्रशतदानफलसमफल प्राप्तिकामनया इदं ताम्रपात्रमादित्यदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

रौप्यपात्रदानस्य—

पलकोटिसुवर्णस्य यो दद्याद्वेदपारगे ।
शिवाय रौप्यपात्रेण तस्य पुण्यं ततोधिकम् ॥८२४॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकसुवर्णपलकोटिदानफलाधिकफलप्राप्तिकामनया इदं रजतपात्रं चन्द्रदैवत भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

हेमपात्रदानस्य——

हेमपात्रन्तु यो दद्यःच्छिवाय विधिपूर्वकम् ।
न शक्यं तत्फलं वक्तुं पुण्यानन्त्याद्विशेषतः ॥८२५॥

अद्य विशिष्याशक्याख्यानानन्तपुण्यफलप्राप्तिकामनया इदं हेमपत्रं वह्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ताम्रकांस्यान्यतरभोजनाधारपात्रदानस्य—

यस्ताम्रकांस्ययोर्दद्याद्भोजनाधारमुत्तमम् ।
शिवाय शिवयोगिभ्यः कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥८२६॥

अद्य कल्पकोट्यवच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकवासकामनया इदं ताम्रमयभोजनाधारपात्रं कांस्यमयमाधारपापात्रं वा विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवयगसिम्प्रदानकदानेप्येतदेव फलम्

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माटिक पात्र दानमे फल—

वेद-पारंगत विद्वान्कें चानीक पात्र देबाक जे फल अछि, ओहिसँ सय गुना अधिक फल शिवकें माटिक पात्र देलासँ होइत अछि ॥८२२॥

आइ हम वेदपारग ब्राह्मणकें सय रजतपात्रक दानक जन्य फलक समान फल प्राप्त करबाक कामनासँ ई विष्णुदेवताक माटिक निर्मित पात्र भगवान् शिवकें देलियनि।

तामक पात्र दानक फल—

वेद-पारग ब्राह्मणकें स्वर्ण पात्र देबाक जे फल होइत अछि, ओहिसँ सय गुना अधिक फल शिवकें तामक पात्र देलासँ होइत अछि ॥८२३॥

आइ वेदमे निष्णात ब्राह्मणकें सय सोनाक पात्रक दान जन्य फलक समान फल प्राप्त करबाक लेल हम ई वरुणदेवताक ताम्रपात्र भगवान शिवकें देलियनि।

चानीक पात्र दानक फल—

वेदपारगकें कोटि पल सोना देलासँ जे फल भेटैत अछि, ओहिसँ सय गुना अधिक फल शिवकें चानीक पात्र देलासँ होइत अछि ॥८२४॥

आइ हम वेदपारगकें सय कोटि पल सोना दान जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ चन्द्रदैवत रजतपात्र शिवकें देलियनि।

सोनाक पात्र दानक फल—

जे व्यक्ति विधिपूर्वक सोनाक पात्र शिवकें दैत अछि ओकर फलक अनन्तताक कारण विशेष रूपसँ ओकर फलक वर्णन करब संभव नहि अछि ॥८२५॥

आइ विशेषकय जाहि पुण्य-फलक कथन संभव नहि होइत अछि—एहन अनन्त पुण्य-फल प्राप्त करबाक हेतु हम वह्निदैवत ई सोनाक पात्र भगवान् शिवकें देलियनि।

ताम अथवा काँसाक भोजनक बर्तन दान करबाक फल—

जे ताम अथवा काँसाक उत्तम भोजनाधार वर्तन शिव अथवा शिवयोगीकें दैत अछि, ओ कोटि कल्प धरि स्वर्गमे निवास करैत अछि ॥८२६॥

आइ हम कोटि कल्प धरि स्वर्गमे निवास करबाक कामनासँ तामक वा काँसाक ई विष्णुदैवत भोजनाधारपात्र भगवान् शिवकें देलियनि।

शिवयोगीकें सेहो ई दान देबामे इएह फल होइत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैवे अलंकृताश्वदाने—

योऽलंकृत्य शिवायाश्वमुत्तमं विनिवेदयेत् ।
सोऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं लभेत्[1] ॥८२७॥

अद्याश्वमेधयज्ञफलाष्टगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयमुत्तमालंकृताश्वो यमदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

पर्वकालिकोत्तमालंकृतगजदाने—

निवेदयेत यो नागं भक्त्या भद्रमलंकृतम् ।
शिवाय पर्वदिवसे तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८२८॥

मत्तैरैरावतप्रख्यैर्गजैर्युक्तैः सुशोभनैः ।
क्रीड़ते सुमहायानैः शतसंख्यैरनेकधा ॥८२९॥

कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
रुद्रलोके ततश्चान्ते भवेदिन्द्रः सुराधिपः ॥८३०॥

चतुर्युगसहस्रान्ते स गां प्राप्य नराधिपः ।
भवेदिन्द्रसमः श्रीमान्रूपवीर्य्यसमन्वितः ॥८३१॥

अद्यामुकपर्वणि मत्तैरावतप्रख्यशोभनवहुगजयुक्तशतसंख्यकमहायानकरणक-रुद्रलोकाधिकरणककल्पकोटिसहस्रकल्पकोटिशतावच्छिन्नानेकधाक्रीडनोत्तरचतुर्य्युगसह-स्रावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकसुराधिपत्वभवनोत्तरश्रीमत्ववीर्य्यवदेन्द्रसमनराधिपतित्वभव-नकामोऽमुमुत्तमालंकृतगजं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

शैवामृते दोलादानस्य—

गजाश्वरथदोलादि शिवाय विनिवेदयेत् ।
तनदन्तफलं वक्तुं देवैरपि न शक्यते ॥८३२॥

अद्य बहुदेवाशक्यनिर्वचनानन्तफलप्राप्तिकामनया इयं दोला विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

एवं गजाश्वादौ ।

---

१ मूले, भवेत् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवपुराणमे अलंकृत घोड़ादानक फल—

जे व्यक्ति उत्तम अलंकृत घोड़ा शिवकेँ निवेदित करैत अछि, ओ अश्वमेध यज्ञक फलसँ आठ गुना अधिक फल प्राप्त करैत अछि ।।८२७।।

आइ हम अश्वमेधयज्ञक फलसँ आठ गुना अधिक फल प्राप्त करबाक हेतु यमदैवत ई उत्तम अलंकृत घोड़ा भगवान् शिवके देलियनि ।

पर्वक अवसर पर उत्तम अलंकृत हाथी दानक फल—

जे व्यक्ति पर्वक दिनमे भद्र अलंकृत हाथी भक्तिपूर्वक शिवकेँ दैत अछि, ओकर पुण्य-फल सुनू—

(एहन व्यक्ति) ऐरावतक सदृश मतवाला अलंकृत हाथी सभसँ तथा सय संख्यक महायान सभसँ युक्त कोटि कल्प धरि रुद्रलोकमे क्रीड़ा कयलाक उपरान्त देवाधिप इन्द्र भय जाइत अछि ।।८२८-८३०।।

चारि हजार युगक बाद पुनः पृथ्वी पर आबि इन्द्रक सदृश रूप, वीर्य आदिसँ समन्वित ऐश्वर्यशाली राजा होइत अछि ।।८३१।।

आइ अमुक पर्वमे मतवाला ऐरावतक समान सुशोभित अनेक हाथीसँ युक्त भय सय संख्यक महायान द्वारा सय कोटि कल्प वा सहस्र कोटि कल्प धरि रुद्रलोकमे बहुत क्रीड़ा करबाक बाद चारि हजार युग पर्यन्त स्वर्गलोकमे सुराधिप इन्द्र भय अन्तमे इन्द्रक सदृश ऐश्वर्यशाली तथा वीर्यवान राजा होयबाक कामनासँ हम ई उतम अलंकृत विष्णुदैवत हाथी भगवान शिवकेँ दैत छियनि ।

शैवामृतमे दोलादानक फल—

हाथी, घोड़ा, रथ, दोला (पालकी) आदि शिवकेँ निवेदित कयलासँ जे अनन्त फल होइत अछि, ओकरा देवता सेहो नहि कहि सकैत छथि ।।८३२।।

आइ हम अनेक देवतोसँ कहबामे अशक्य अनिर्वचनीय अनन्तफल प्राप्त करबाक कामनासँ विष्णुदेवताक ई दोला भगवान् शिवकेँ देलियनि ।

एही प्रकारसँ हाथी घोड़ा आदिक दानमे फल होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणे—

सर्वेषामेव पात्राणां परं पात्रं महेश्वरः ।
पतन्तं त्रायते यस्मादतीवनरकार्णवात् ॥८३३॥

शिवमुद्दिश्य यद्दत्तं सर्वकारणकारणम् ।
तदनन्तफलं दातुर्भवतीति किमद्भुतम् ॥८३४॥

शिवे दत्तं हुतं जप्तं बलिपूजानिवेदनम् ।
एकान्ततोऽनन्तफलं तद्भावे नात्र संशयः ॥८३५॥

यद्यदिष्टं विशिष्टञ्च न्यायेन समुपार्ज्जितम् ।
तच्छिवाय निवेद्यं स्याद्भक्त्यानन्तफलार्थिना ॥८३६॥

सर्वस्वमपि यो दद्याच्छिवेऽभक्तिसमन्वितः ।
न तेन फलभाक् स स्याद्भक्तिरेवात्र कारणम् ॥८३७॥

विभवे सति यो मोहान्न कुर्य्याद्विधिविस्तरम् ।
नैव तत्फलमाप्नोति प्रलोभाक्रान्तमानसः ॥८३८॥

तुल्यमेव फलं प्रोक्तं शिवे चाढ्यदरिद्रयोः ।
तयोरप्यधिकं तस्य यः शिवे भावनाधिकः ॥८३९॥

तस्मात्पत्रैः फलैस्तोयैरेवमाद्यैश्च यत्कृतम् ।
तदनन्तफलं ज्ञेयं भक्तिरेवात्रकारणम् ॥८४०॥

अथानन्तफलप्राप्तिकामनया इदं वस्तु भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे—

सभ पात्रमे महेश्वर सर्वोत्कृष्ट पात्र छथि, किएकतँ ओ घोर नरक रूपी समुद्रमे खसैत व्यक्तिकेँ उद्धार करैत छथि ।।८३३।।

एहि हेतु सभ कारणक आदि कारण शिवक उद्देश्यसँ जे किछु देल जाइत अछि, ओ दाताक हेतु अनन्तफल देमयवला होइत अछि ।।८३४।।

शिवक निमित देल गेल दान आ' हवन, जप, वलि तथा पूजाक निवेदन कयला पर निश्चितरूपसँ अनन्त फल होइत अछि। एकर अस्तित्वमे कोनो सन्देह नहि ।।८३५।।

न्यायसँ उपार्जित जे-जे इष्ट वा विशिष्ट वस्तु हो, ओकरा अनन्तफल चाहयवला व्यक्ति भक्तिपूर्वक शिवकेँ निवेदित करय ।।८३६।।

जे व्यक्ति शिवक भक्तिक बिना सर्वस्वो शिवकेँ अर्पित कय दैत अछि, ओ ओहि दानक फलक भागी नहि होइत अछि—एहिमे भक्तिये कारण अछि ।।८३७।।

सम्पत्ति रहलो उतर जे व्यक्ति धनक मोहसँ दानादि विधि सभमे विस्तार नहि करैत अछि, प्रलोभाक्रान्त ओ व्यक्ति ओकर फल नहि प्राप्त करैत अछि ।।८३८।।

शिवक निमित्त देल दानक फल धनीक आ' गरीब दुनूक हेतु समान कहल गेल अछि। मुदा जकरामे शिवक अधिक भावना अछि अर्थात् भक्ति अछि, ओकरा ओहि दूनूसँ सेहो अधिक फल भेटैत अछि ।।८३९।।

एहि हेतु पत्र, फूल, फल, जल आदि वस्तुसँ भक्तिपूर्वक शिवक उद्देश्यसँ जे किछु कयल जाइत अछि, ओकर जे अनन्त फल होइत अछि ओहिमे भक्तिये टा एक कारण अछि ।।८४०।।

आइ हम अनन्त फल प्राप्त करवाक कामनासँ ई वस्तु भगवान् शिवकेँ दैत छियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घृतमयशिवमूर्त्तिदाने—

शिवमूर्त्तिं घृतमयीं प्रदद्याद्यः शिवालये ।
मन्वन्तरशतं साग्रं रुद्रलोके महीयते ॥८४१॥

अद्य साग्रमन्वन्तरशतावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इयं घृतमयी शिवमूर्तिर्विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

अत्र च दानान्तरम्—

शिवभक्तेषु भोजनं कार्यम् ब्राह्मणानां तर्पणं प्रीयतां मे शिवो नित्यमिति ब्राह्मणोत्थापनं । द्विजेन्द्रैःसह तद्रूपस्य शिवलिङ्गसमीपतो नीत्वा वेद्यां समर्पणमङ्गम् ।

अथात्मप्रतिकृतिदानस्य

स्कन्दपुराणे—

दद्याद्धिरण्मयीं यो मे कृत्वा प्रतिकृतिं स्वकाम् ।
सर्वगन्धरसैर्युक्तां निर्य्यासैश्चैव संस्कृताम् ॥८४२॥
भक्ष्यभोज्यैश्च विविधैः कृष्णपक्षे चतुर्द्दशीम् ।
पूर्वदक्षिणयोश्चास्य पश्चिमोत्तरयोस्तथा ॥८४३॥
पार्श्वे तु हरितालञ्च कृष्णागुरुमनःशिलाम् ।
चन्दनञ्चैव दद्याद्वै यथासंख्येन पूजितम् ॥८४४॥
तस्य पुण्यफलं देवि शृणु यन्मत्तकाशिनि ।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तस्तथा निष्कल्मषश्च ह ॥८४५॥
वर्षकोटिशतान्यष्टौ दिवि भुक्त्वा महासुखम् ।
इहलोके सुखी जातो मामेव प्रतिपद्यते ॥८४६॥

प्रतिकृतिं सर्वगन्धरसैर्युक्तां कृत्वेत्यर्थः । निर्यासैर्गन्धवद्वृक्षरसैः । चतुर्द्दशीमिति सप्तम्यर्थे द्वितीया । सर्वगन्धाः कुंकुमागुरुकर्पूरजातीफलश्रीखण्डकस्तूरिकाः । सर्वरसाः कटुतिक्तकषायाम्ललवणमधुराः ।

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां सर्वव्याधिविनिर्मुक्तनिष्पापत्ववर्षाष्टकोटिशतावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकमहासुखभोगपूर्वकैहिकजन्मसुखप्राप्त्युत्तरशिवप्रतिपत्तिकामनया इयं सर्वगन्धरससंयुक्ता बहुनिर्य्यासुसंस्कृता विविधभक्ष्यभोज्यसहिता पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरपार्श्वदत्तहरितालकृष्णागुरुमनःशिलाचन्दनात्मप्रतिकृतिर्हिरण्मयी वह्निदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता । हिरण्मयाशक्तौ पिष्टमयी प्रजापतिदैवतात्मप्रतिकृतिरनयैव कामनया भगवते शिवाय दातव्या । दद्यात् पिष्टमयीं यो मे कृत्वा प्रतिकृतिं स्वकामित्यादिवचनन्तरात् । शक्त्यपेक्षया व्यवस्था ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घृतमय शिवक मूर्त्ति-दानक फल—

जे व्यक्ति शिवालयमे घृतमय शिवमूर्ति दान करैत अछि, ओ एक सए मन्वन्तरसँ अधिक काल धरि रुद्रलोकमे पूजित होइत अछि।

आइ एक सए मन्वन्तरसँ अधिक काल धरि रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ हम ई विष्णु अधिष्ठित घृतमय शिवमूर्ति भगवान शिवक निमित्त अहाँकेँ देलहुँ।

एहि ठाम दानक पश्चात् शिवभक्त लोकनिकेँ भोजन करयबाक चाही। ब्राह्मण लोकनिकेँ भोजनसँ तृप्त करयबाक चाही आ' "शिव प्रतिदिन हमरा पर प्रसन्न होथि" एना कहि कय तृप्त ब्राह्मण लोकनिकेँ उठयवाक चाही। विप्र लोकनिक संग ओहि रूपकेँ उठाय कय शिवलिङ्गक निकट लय जाय कय वेदी पर समर्पित कय देवाक चाही।

आब आत्मप्रतिमादानक फल

स्कन्दपुराणमे—

स्त्री सभमे श्रेष्ठ पार्वतीसँ महादेव कहैत छथिन जे व्यक्ति सभ प्रकारक गन्धसँ युक्त, सभ प्रकारक रससँ युक्त गन्धवला वृक्ष सभक रससँ सुसंस्कृत तथा अनेक प्रकारक भक्ष्य आ' भोज्य पदार्थसँ युक्त अपन स्वर्णमय मूर्ति—जकर पूजा पूर्व भागमे हरितालसँ, दक्षिण भागमे कृष्णागुरुसँ, पश्चिममे मन शिलासँ आ उत्तार भागमे चानन सँ कयल गेल हो कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे हमरा (शिवकेँ) दैत अछि, ओ सभ प्रकारक व्याधि आ' पापसँ मुक्त भय आठसय कोटि वर्ष धरि स्वर्गमे महत् सुखकेँ भोगि कय एहि लोकमे (जन्म लय कय) सुखी रहैत अछि, आ अन्तमे हमरे प्राप्त करैत अछि॥८४२-८४६॥

प्रतिकृतिक सम्बन्ध सर्वगन्ध एवं सर्वरसादि युक्तसँ अछि। निर्यासिसँ अर्थ अछि वृक्षक सुगन्धित रससँ। चतुर्दशीम् एतय सप्तमीक अर्थमे द्वितीया विभक्ति अछि। सर्वगन्धादि—सभ गन्धसँ युक्त-कुङ्कुम, अगुरु, कर्पूर, जातीफल, श्रीखण्ड आ कस्तूरिका। सर्वरस एहिसँ कटु, तीत, कषाय, खट्टा, लवण आ मधुररस बोध होइत अछि।

आइ हम कृष्ण चतुर्दशीमे सभ रोगसँ विनिर्मुक्त आ पापरहित भय एक सय आठ करोड़ वर्ष धरि स्वर्गमे परम सुखक भोग कय एहिलोकमे जन्म लय सुख प्राप्ति कयलाक वाद शिवक शरणमे जयवाक कामनासँ ई सभ गन्ध, तथा सभ रससँ युक्त सभ निर्याससँ सुसंस्कृत अनेक भक्ष्य आ' भोज्य पदार्थसँ युक्त पूबमे हरितालसँ, दक्षिणमे कृष्णागुरुसँ, पश्चिममे मेनशिलासँ आ' उत्तरमे चाननसँ पूजित अपन वह्निदेवताक स्वर्णमयमूर्ति भगवान शिवकेँ देलियनि।

जँ सोनाक प्रतिकृति देवाक शक्ति नहि हो तँ पिष्टकमय अपन मूर्ति जकर देवता प्रजापति छथि, उपर्युक्त कामनासँ भगवान शिवकेँ देवाक चाही।

दद्यान् पिष्टमयी -' आदि वचनक अनुसार

ई व्यवस्था (आर्थिक) शक्तिक अनुसार अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्ये पिष्टकमयलिङ्गदानस्य—

योहि पिष्टमयं लिङ्गं सर्वगन्धोपशोभितम् ।
कुसुमैश्च सुगन्धैश्च फलैश्च विविधैस्तथा ॥८४७॥

भक्ष्यभोज्यैरशेषैश्च घृतदीपैश्च संयुतम् ।
तस्य दक्षिणपार्श्वे तु विन्यसेदगुरुं बुधः ॥८४८॥

दद्यात् पश्चिमभागे तु शोभनाञ्च मनःशिलाम् ।
उत्तरे चन्दनं दद्याद्धरितालञ्च पूर्वतः ॥८४९॥

एवं वित्तानुसारेण कृत्वा विभवविस्तरम् ।
कृष्णपक्षे चतुर्द्दश्यां शिवाय विनिवेदयेत् ॥८५०॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वोपद्रववर्जितः ।
निष्फलः सर्वगो भूत्वा प्रविशेच्छिवमव्ययम् ॥८५१॥

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां सर्वपापविनिर्मुक्तत्वसर्वोपद्रववर्जितत्वनिष्कलत्व-सर्वगत्वपूर्वकाव्ययशिवप्रवेशकामनया इदं सर्वगन्धोपशोभितं सुगन्धिबहुकुसुमविविध-बहुफलयथाविभवविस्तरोपात्तानेकभक्ष्यभोज्यबहुघृतदीपसंयुक्तं दक्षिणपार्श्व-विन्यस्तकृष्णागुरुकं पश्चिमपार्श्वदत्तशोभनमनःशिलम् उत्तरपार्श्वदत्तचन्दनं पूर्व-पार्श्वधृतहरितालं पिष्टकमयशोभनवेदिकलिङ्गं प्रजापतिदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सर्वगन्धास्तु—कुङ्कुमकर्पूरकस्तूरिकाजातीफलागुरुश्रीखण्डाः ।
रसाः—लवणादयः षट् । पौर्णमास्यां पूजानन्तरसागुरुकृष्णतिलप्रस्थदानस्य—

दद्यात् कृष्णतिलानान्तु प्रस्थमेकञ्च सागुरुम् ।
अर्च्चयित्वा प्रयत्नेन पौर्णमास्यां विशेषतः ॥
युगायुतसहस्रन्तु शिवलोके महीयते ॥८५२॥

अद्य पौर्णमास्यां युगायुतसहस्रावाच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एषसागुरु-तिलप्रस्थः सोमदैवतः शिवमभ्यर्च्य भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे पिष्टकमयशिवलिंग-दानक फल—

जे व्यक्ति सर्वगन्धसँ युक्त, सुगन्धित अनेक फूल आ फलसँ समन्वित, सभ प्रकारक भोज्य पदार्थसँ युक्त, घीमय दीप सभक संग पिष्टमय शिवलिंग जकर दक्षिण भागमे अगुरुक, पश्चिम भागमे नीक मैनशिलक, उत्तरमे चाननक आ पूबमे हरितालक विन्यास कयल गेल अछि और जकर विधानमे सम्पत्तिक अनुसार विकास कयल गेल अछि—कृष्णपक्षक चतुर्दशीमे शिवकें निवेदित करैत अछि—ओ सभ पापसँ मुक्त, सभ उपद्रवसँ मुक्त एवं निर्दोष भय सभठाम संचरणशील भय निर्विकार शिवमे लीन भय जाइत अछि ॥८४७-८५१॥

आइ कृष्ण चतुर्दशीमे सभ पापसँ मुक्ति, सभ प्रकारक उपद्रवक शान्ति एवं निर्दोष भय सर्वगामितापूर्वक अक्षय शिवमे प्रवेशक कामनासँ ई सभ गन्धसँ युक्त, अनेक पुष्प तथा अनेक फलसँ समन्वित अपन विभवक अनुसार समर्पित भक्ष्य-भोज्य पदार्थं सभसँ युक्त, अनेक घृतमय दीप सभक संग पिष्टकमय शिवलिंग जकर दक्षिण भागमे कृष्णागुरु, पश्चिम में बढ़ियाँ मैनशिल, उत्तरमे चानन तथा पूबमे हरितालक विन्यास कयल गेल अछि। प्रजापति जकर देवता छथि—हम भगवान शिवकें देलियनि।

कुंकुम, कर्पूर, कस्तूरी, जातीफल, अगुरु आ श्रीखण्डके सर्वगन्ध कहल गेल अछि।

लवण आदि छ गोट रस होइत अछि।

पूर्णिमामे शिवक पूजा कयलाक बाद सेर परिमित अगुरु सहित कारी तिल-दानक फल—

जे पूर्णिमामे शिवक पूजा कय अगुरु सहित एक सेर कारी तिल दैत अछि ओ दस हजार युग धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥८५२॥

आइ हम पूर्णिमामे दस हजार युग धरि शिवलोकमे महितत्वक कामनासँ सोमदेवतासँ अधिष्ठित एक सेर परिमित कारी तिल शिवक पूजा कय भगवान शिवकें देलियनि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुवर्णतिलप्रस्थदाने—

सुवर्णन्तु यो दद्यात् प्रस्थमेकं तिलस्य च ।
युगायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८५३॥

अद्य युगायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एष सुवर्णतिलप्रस्थः सोमदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

प्रमाणस्थपुरुषस्य प्रमाणकरेण द्वादशप्रसृतिभिः कुडवश्चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः तदिदमुक्तम्—

तिलप्रस्थस्तु विज्ञेयश्चत्वारिंशद्भिरष्टभिः ।
करप्रसृतिभिर्लोकैः एषमानविनिर्णयः ॥८५४॥

पौर्णमास्यां विधिवत्पूजोत्तरघृतपूर्णपात्रादिबलिदाने—

भोजनं घृतसम्पूर्णं मधुनोपरिशोभितम् ।
दद्यात् कृष्णतिलानाञ्च प्रस्थमेकञ्च मागधम् ॥८५५॥
द्विगुणं तण्डुलानाञ्च पृथक्प्रस्थं प्रकल्पयेत् ।
लिङ्गं संवेष्ट्य वस्त्राभ्यां बलिमेनं निवेदयेत् ॥८५६॥
अर्च्चयित्वा विधानेन पौर्णमास्यां विशेषतः ।
युगायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८५७॥
पुण्यक्षयादिहागत्य समृद्धे जायते कुले ।
मेधावी सुभगः श्रीमान् वेदवेदाङ्गपारगः ॥८५८॥

मागधः प्रस्थः मगधदेशभवो द्वात्रिंशत्पलिकः।[1]

तथा च गोपथब्राह्मणे—

पञ्चकृष्णलको माषस्तैश्चतुःषष्टिभिः पलम् ।
द्वात्रिंशता पलैः प्रस्थो मगधेषु प्रकीर्त्तितः ॥८५९॥

द्विगुणं तिलप्रस्थापेक्षया।

अद्य पौर्णमास्यां युगायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वतदुत्तरसमृद्धकुलजन्ममेधावित्ववेदवेदाङ्गपारगत्वकामनया इदं घृतपूर्णमधूपरिशोभितभाजनमागधकृष्णतिलप्रस्थपृथक्परिकल्पितद्विगुणतण्डुलप्रस्थात्मकबलिं विधिवदर्च्चयित्वा वस्त्राभ्यां शिवलिङ्गं संवेष्ट्य भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये।

---

१ ने० पा०, पलकः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुवर्णक संग प्रस्थपरिमित तिल-दानक फल—

जे सुवर्ण सहित एक सेर तिल शिवके देत अछि, ओ दस हजार युग धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥८५३॥

आइ हम दस हजार युग धरि शिवलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनाक हेतु ई सुवर्ण सहित सोमदेवताक एक सेर तिल भगवान शिवके देल।

प्रमाणभूत पुरुषक मुट्ठीसँ १२ मुट्ठी परिमित अन्नक तौलके कुडव कहल जाइत अछि। चारि कुड़वक एक प्रस्थ होइत अछि।
जेना कि कहल गेल अछि—

अड़तालिस मुट्ठीक बरोबरि तिल एक प्रस्थ होइत अछि। इएह प्रस्थक परिमाणक विषयमे निर्णित मत अछि ॥८५४॥

पूर्णिमामे विधिपूर्वक पूजा कय घृतपूर्ण पात्र आदिक बलि देवाक फल—

जे घृतसँ पूर्ण आ' मधुसँ आप्लावित पात्रक संग एक मागध प्रस्थ परिमित चाउर शिवलिंगके वस्त्रसँ परिवेष्टित कय पौर्णमासीमे विशेष कय शिवक सविधि पूजा कय हुनका निवेदित करैत अछि, ओ दस हजार युग धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि। (एतबय नहि) पुण्यक्षय भेलो उत्तर एहि लोकमे समृद्ध वंशमे जन्म लय मेधावी, सुन्दर, ऐश्वर्यशाली तथा वेदवेदांग दक्ष होइत अछि ॥८५५॥-॥८५५॥

मागध प्रस्थ—मगध देशक ई परिमाण विशेष अछि जे वत्तीस पलक बरोबरि होइत अछि।

जेना कि गोपथब्राह्मणम् कहल गेल अछि—

पाँच कृष्णलक एक माशा, चौंसठि माशाक एक पल आ' ३२ पलकसँ मगध देशमे एक प्रस्थ होइत अछि ॥८५९॥

'द्विगुणम्'क अर्थ अछि तिल-प्रस्थक अपेक्षा दू गुणा।

आइ हम दस हजार युग धरि शिवलोकमे पूजित होयवाक उपरान्त समृद्ध वंशमे जन्म लय बुद्धिमान सुन्दर, ऐश्वर्यशायी, वेद-वेदांगमे पारंगत होयवाक कामनासँ ई घृतसँ पूर्ण आ मधुसँ परिप्लावित पात्रक संग एक मागध प्रस्थ परिमित कारी तिल एवं दू प्रस्थ परिमित चाउरक नैवेद्य विधिपूर्वक शिवक पूजा कय वस्त्रसँ शिवलिंगक परिवेष्टन कय भगवान शिवके निवदन कयल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्कन्दपुराणे तिलगौरसर्षपदानस्य—

दद्यात् कृष्णतिलांश्चैव तथा सिद्धार्थकांश्च ह ।
यो मे देवि सदा भक्त्या सोपि नन्दिसमो भवेत् ॥८६०॥

अत्र चकारद्वयाद्दाने समुच्चयः

अद्य नन्दिसमत्वभवनकामनया एते कृष्णतिलाः सोमदैवताः एते गौरसर्षपाश्च प्रजापतिदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

शिवधर्म्मे सर्वसस्योत्पत्तिक्षयजलोपेतमहिदानस्य—

यः शिवाय जलोपेतं सर्वसस्यप्ररोहिणीम् ।
महीं महपतिर्दद्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८६१॥

यावद्दण्डा भवेद्भूमिर्मीयमाना समन्ततः ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥८६२॥

एवं सर्वत्र विज्ञेयं फलं दण्डप्रमाणतः ।
ग्रामखेटपुरक्षेत्रविषयादिनिवेदने ॥८६३॥

अद्य दातव्यभूमियावद्दण्डमानसमसंख्यबहुयुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकाम इमां जलोपेतां सर्वसस्यप्ररोहिणीं भूमिं प्रियदत्तां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

ग्रामदानेप्येतदेव फलम् ।

भूमिदानस्य—

रत्नान्नपानगोऽश्वाद्यं सर्वं भूमौ प्रजायते ।
तस्माद्भूमिप्रदानेन नरो भविति सर्वदः ॥८६४॥

अद्य रत्नान्नपानगोऽश्वादिसकलदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं भूमिः विष्णुदैवता प्रियदत्ता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्कन्दपुराणमे तिल तथा उजरा सरिसो देवाक फल—

जे कारी तिल तथा उजरा सरिसो सर्वदा भक्तिपूर्वक शिवकें दैत अछि, ओ नन्दीक सदृश भय जाइत अछि ।।८६०।।

एतय दू चकारक पाठ भेलासँ दुनूक संग विधान होइत अछि।

आइ हम नन्दीक समान होयबाक कामनासँ सोमदेवताक ई कारी तिल तथा प्रजापति देवताक उजरा सरिसो भगवान शिवकें देलियनि।

शिवधर्ममे सभ प्रकारक फसलकें उत्पन्न करबाक योग्य तथा पानिसँ युक्त पृथ्वी दानक फल—

जे महीपति सभ फसलकें उगयवा योग्य तथा जलसँ युक्त पृथ्वी शिवक निमित्त दान देथि ओकर फल सुनू—ओ ओहि देल पृथ्वीमे जतेक दण्ड-परिमाण होइत अछि, ओतेक सहस्र युग धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ।।८६१-८६२।।

एहि प्रकारसँ गाँव, खेट (गृहस्थक गाँव) नगर, खेत एवं विषय (देश; राज्य; शासन-व्यवस्थायुक्त बृहत्क्षेत्र अथवा ग्राम-समूह) आदिक दानमे दण्ड प्रमाणेसँ फल बुझबाक चाही ।।८६३।।

आइ हम दातव्य जमीनक दण्डक संख्याक बरोबरि हजार युगधरि रुद्रलोकमे महितत्व प्राप्तिक कामनासँ जलयुक्त सभ प्रकारक सदस्य उत्पन्न करबाक क्षमता सम्पन्न विष्णु देवताक ई भूमि भगवान शिवक निमित देलहुँ।

ग्रामोदानमे इएह फल होइत अछि।

भूमिदानक विषयमे—

रत्न, अन्न, पान, गाय एवं घोड़ा आदि समस्त (वस्तु) पृथ्वी पर उत्पन्न होइत अछि। तँ हेतु भूमिदान कयलासँ मानव सर्वदानी होइत अछि।।८६४।।

आइ हम रत्न, अन्न, पान, गाय एवं घोड़ा आदि समस्त दानसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामना हेतुसँ विष्णु अधिष्ठित ई भूमि प्रेमपूर्वक भगवान शिवकें देलियन्हि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नोपरचितसिंहासनदाने—

अद्य त्रिशत्कुलयुतान्तःपुरपरिच्छदान्वितसमस्तभृत्ययुतात्मीयशिवलोकावाप्तितत्रत्यप्रलयबाधशिवतुल्यपराक्रमत्वमहाभोगभुक्त्युत्तरमुक्तिप्राप्तिकामनया इदं सिंहासनं रचितबहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अथवा

अद्य त्रिशत्कुलयुतान्तःपुरपरिच्छदान्वितसमस्तभृत्ययुतात्मीयशिवलोकप्राप्तिपूर्वकसमन्वितात्मीयसप्तद्वीपसमुद्रावच्छिन्नपृथिव्यधिकरणकजन्मकोटिसहस्रजन्मकोटिशतावच्छिन्नराज्यकरणोत्तरशिवपुरगमनकामनया इदं सिंहासनरचितबहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

उत्खचितरत्नासनोत्खचितरत्नपादुकाद्वयोत्खचितरत्नमुकुटाभरणादीनामन्यतमदानेऽप्येतदेव फलम् ।

अथ नीराजनस्य

शिवधर्म्मे—

त्रिशूलशङ्खचक्राब्जश्रीवत्सस्वस्तिकादिभिः ।
हेमरूप्यादिपात्रेषु कल्पितैर्गोमयादिभिः ॥८६५॥
नानावर्णकसंयुक्तै रक्षतैस्तिलतण्डुलैः ।
भक्तैश्च दधिसंमिश्रैर्यथाशोभं प्रपूरितैः ॥८६६॥
उच्चैः पिष्टप्रदीपाद्यैश्च चूताश्वत्थादिपल्लवैः ।
ओषधीभिश्च मेध्याभिःसर्वबीजैर्यवाङ्कुरैः ॥८६७॥
अष्टम्यादिषु सर्वेषु दिवसेषूत्सवेषु च ।
पर्वकालेषु पुण्येषु चतुर्द्दश्यां विशेषतः ॥८६८॥
शङ्खभेर्य्यादिनिर्घोषैर्महागेयपदान्वितैः ।
कुर्य्यान्नीराजनं लिङ्गे शिवमुद्दिश्य मङ्गलैः ॥८६९॥
यावत्पूर्वाणि विधिना कुर्य्यान्नीराजनं शिवे ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८७०

अद्यास्मिन् पर्वकाले बहुयुगसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहित्वकामो गोमयोपकल्पितत्रिशूलशङ्खचक्राब्जश्रीवत्सस्वस्तिकादिना नानावर्णिकसंयुक्ताक्षततिलतण्डुलदधिसंयुक्तभक्तयथाशोभिप्रपूरितसुवर्णरजतबहुपात्रै रुच्चैः पिष्टप्रदीपाद्यै श्चूताश्वत्थादिबहुपल्लवमेध्यबहवोषधियवादिसर्वबीजमहागेयपदान्वितशङ्खभेर्य्यादिनिस्वनैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गे नीराजनमहं करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनेक महारत्न तथा अनेक छोट रत्नसँ निर्मित सिंहासन दानक फल—

आइ हम तीस कुलक समन्वित समस्त अन्तःपुरक संग समस्त परिजन एवं नौकर सहित शिवलोक-प्राप्ति, ओतयसँ शिवक सदृश पराक्रमी होयबाक तथा महाभोगक उपयोग कय तथा मुक्ति प्राप्तिक कामनासँ अनेक महारत्न तथा छोट रत्नसँ निर्मित ई विष्णुदेवताक सिंहासन भगवान शिवकें देलहुँ।

अथवा—आइ हम तीस कुलक संग अन्तःपुरक परिवारसँ युक्त समस्त अनुचरादिसँ समन्वित शिवलोक प्राप्तिपूर्वक अपन समस्त परिजनक संग आसमुद्र सप्तद्वीप पृथ्वी पर सहस्र कोटि अथवा सैंकड़ो करोड़ जन्म धरि राज्य भोग कयलाक बाद शिवपुर-गमन काममासँ अनेक महारत्न तथा छोट रत्नसँ रचित विष्णु देवताक ई सिंहासन भगवान शिवक निमित्त देलहुँ।

आसन – जाहिमे अनेक रत्न खचित अछि, पादुका –(खराम) जाहिमे अनेक रत्न खचित अछि आ' मुकुट आदि गहना—जाहिमे अनेक रत्न उत्खचित अछि, एहिमेसँ कोनो एकके दानमे इएह फल होइत अछि।

आब आरतीक फल

शिवधर्ममे—

गोबरसँ नीपल पवित्र भूमि पर राखल सोना, चानी आदिक पात्रमे त्रिशूल शङ्ख, चक्र, कमल, श्रीवत्स एवं स्वस्तिक आदिक विभिन्न वर्णमे नीक चित्र बनाय कय—ओकर समीप अक्षत, तिल, तण्डुल दही मिलल चाउर आदि राखि कय, आम पीपर आदिक पल्लवसँ सुशोभित कय विविध प्रकारक मेध्य औषधि सभसँ युक्त कय, सभ प्रकारक बीया तथा जौ केर अंकुर सभसँ सजाय कय पिष्टकसँ बनल पैध प्रदीप सभसँ—अष्टमी आदि सभ उत्सवक दिनमे पुण्यपर्व काल सभमे विशेषतः चतुर्दशीमे शंख, भेरी आदि बाजा बजाय कय अनेक प्रकारक स्तुति आ मंगल पाठकरैत लिंगमे भगवान शिवक आरती करबाक चाही। हे शिवे, (पूर्वोक्त विधिसँ जे) जतेक पर्वमे विधिपूर्वक शिवक आरती करैत अछि ओ' ओतेक सहस्र युग धरि शिवलोकमे पूजित होइत अछि ॥८६५-८७०॥

आइ हम एहि पर्वकालमे अनेक सहस्रयुग धरि शिवलोकमे पूजित होयबाक हेतु गोबरसँ नीपल पवित्र स्थान पर सोना चानी आदिक पात्रमे त्रिशूल, शंख, स्वस्तिक आदिक अनेक रंगमे चित्र लिखि कय—अक्षत, तिल, तण्डुल तथा दही मिलल चाउरसँ एकरा परिपूर्ण कय आम, पीपर आदिक अनेक पल्लवसँ सुशोभित कय, अनेक औषधि तथा जौ आदिक सभ बीजांकुरसँ सजिकय—शंख, भेरी आदि बाजा बजाय कय स्तुति-मंगल पाठ करैत भगवान शिवक लिंगमे नीराजन करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथारात्रिकायाः—

करोत्यारात्रिकां यस्तु ᵀबहुभावपुरःसरः ।
प्राप्य ज्ञानं प्रयाणान्ते गमिष्यत्यक्षयं पदम् ॥८७१॥

आरात्रिका आरतिरिति प्रसिद्धा ।

अद्य प्रयाणकालोत्तरतत्त्वज्ञानप्राप्तिपूर्वकाक्षयपदगमनकामनया भगवतः शिवस्यारात्रिकामहं करिष्ये ।

अथ जपफलम्

शिवरहस्ये—

ओं नमः शिवायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ।
सर्वमन्त्राधिकश्चायमोङ्काराद्यः षडक्षरः ॥८७२॥

तन्मन्त्रजापी तत्कर्म्मरतस्तद्गतमानसः ।
निष्कामः पुरुषो राजन् स रुद्रपदमश्नुते ॥८७३॥

अद्य रुद्रपदप्राप्तिकामनया शैवषडक्षरमन्त्रजपमहंकरिष्ये ।

मन्त्रस्वरूपन्तु—ॐ नमः शिवाय ।

शिवधर्म्मे सन्ध्यायां षडक्षरजपस्य—

तस्मादनेन मन्त्रेण प्रकुर्वीत शिवार्च्चनम् ।
सन्ध्यायां तु जपेदेनं सर्वपापविशुद्धये ॥८७४॥

अद्यास्यां सन्ध्यायां सर्वपापक्षयकामः शैवषडक्षरमन्त्रजपमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये—समुद्रादितीराधिकरणकजपस्य—

समुद्रतीरे देवह्रदे गिरौ देवालयेषु च ।
पुण्याश्रमेषु देशेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥८७५॥

अद्य कोटिगुणजपजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया समुद्रतीरे भगवतः शिवस्य पञ्चाक्षरजपमहङ्करिष्ये ।

देवह्रदादावप्येवम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब आरतीक फल—

जे व्यक्ति बहुत भक्तिपूर्वक भगवान शिवक आरती करैत अछि ओ ज्ञान प्राप्ति कय मृत्यूपरान्त अक्षय पद प्राप्त करैत अछि ॥८७१॥

आरातिका आरती नामसँ प्रसिद्ध अछि।

आइ हम मृत्यूपरान्त तत्वज्ञान प्राप्तिपूर्वक अक्षयपद प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक आरती करब।

आब शिवरहस्यमे जपक फल—

नमः शिवाय—ई मंत्र सम मनोरथकेँ सिद्ध करयवला थिक (एकर पूर्व) ओंकार ई षडक्षर मंत्र सभ मंत्रसँ बढ़िकेँ अछि ॥८७२॥

हे राजन ओहि मंत्रक जप, शिवक पूजादि कर्म तथा शिवक व्रत करयवाला एवं शिवमे सतत चित्त लगाबयवला निष्काम पुरुष रुद्र पदकेँ प्राप्त करैत अछि ॥८७३॥

आइ हम रुद्र-पद प्राप्तिक हेतु शिवक षडक्षर मन्त्रक जप करब।

मन्त्रक स्वरूप अछि "ओंनमःशिवाय"।

शिवधर्ममेसन्ध्याकालमे षडक्षर मन्त्र जपबाक फल—

एहि षडक्षर मन्त्रसँ शिवक पूजा करय आ सभ पापसँ मुक्तिक हेतु साँझमे एहि मन्त्रक जप करय ॥८७४॥

आइ हम एहि साँझमे सभ पापक नाशक हेतु शैव षडक्षर मन्त्रक जप करब।

शिवरहस्यमे समुद्र आदिक किनार पर बैसि कय जप करबाक फल—

समुद्रक तट, देवह्लद, पहाड़, देवमन्दिर एवं पुण्याश्रम आदि सभ स्थानमे कयल गेल जप कोटि गुणा फल देमयवला होइत अछि ॥८७५॥

आइ हम करोड़ गुणा जपसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ समुद्रक तट पर भगवान शिवक पंचाक्षर मंत्रक जप करब।

देवालयक सरोबर आदि पर जप कयलासँ एहिना फल होइत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ प्रदक्षिणफलम्

भविष्यपुराणे—

कृत्वा प्रदक्षिणं भक्त्या शिवास्यायतने नरः ।
अश्वमेधसहस्रस्य स्वयज्ञस्य फलं लभेत् ॥८७६॥

अद्य स्विष्टाश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामः शिवस्यायतने भक्त्या प्रदक्षिण-महंकरिष्ये ।

लिङ्गपुराणे प्रदक्षिणत्रयस्य—

प्रदक्षिणत्रयं कुर्याद्यः प्रासादे समन्ततः ।
सव्यापसव्यन्यासेन मृदुगत्या शुचिर्नरः ॥
पदे पदेऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलमश्नुते ॥८७७॥

अद्य प्रदक्षिणपदसमसंख्याश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया सव्याऽ-पसव्यमृदुगत्या भगवतः शिवस्य प्रासादे समन्ततः प्रदक्षिणमहंकरिष्ये ।

देवीपुराणे प्रदक्षिणत्रयस्य—

सव्यं व्रजेत्ततोऽसव्यं प्रणालं नैव लङ्घयेत् ।
एकीभूतमना रुद्रे यः कुर्यात् त्रिःप्रदक्षिणम् ॥
छिन्नस्तेन भवग्रन्थिर्न तस्य पुनरुद्भवः ॥८७८॥

अद्य भवग्रन्थिच्छेदपुनरुद्भवविरहकामः सव्याऽसव्यगत्या भगवतः शिवस्य प्रदक्षिणत्रयमहङ्करिष्ये ।

तात्कालिकशिवैकाग्रमानसत्वमत्राङ्गम् ।

अथ प्रणामफलम्

शिवरहस्ये—

प्रमादेनापि यैः क्वापि प्रणामः शूलिनः कृतः ।
कल्पान्ते च भवग्रन्थिर्न तेषां जायते पुनः ॥८७९॥

अद्य पुनरुद्भवविरहकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

तत्रैव सकृत्प्रणामस्य—

आचारहीनोऽपि निराकृतोऽपि प्रहीणसत्वो व्यसनान्वितोऽपि ।
सकृन्महादेवकृतप्रणामो विध्वस्तदोषोऽमरतामुपैति ॥८८०॥

अद्य विध्वस्तदोषत्वामरत्वप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रदक्षिणाक फल

भविष्यपुराणमे—

भक्तिपूर्वक शिवमन्दिरमे प्रदक्षिणा कय मानव अपनासँ कयल गेल सहस्र अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्ति करैत अछि ।।८७६।।

आइ हम विधिपूर्वक अपन कयल गेल सहस्र अश्वमेध यज्ञक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवालयमे भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा करव ।

लिंगपुराणमे तीन वेर प्रदक्षिणाक फल—

जे व्यक्ति पवित्र भय शिवालयक चारू दिश वामसँ दक्षिण भाग होइत शनैः शनैः प्रदक्षिणा करैत अछि, ओ डेग-डेग पर अश्वमेध यज्ञक फल पबैत अछि ।।८७७।।

आइ हम प्रदक्षिणामे उठाओल गेल डेगक संख्याक समान संख्याक अश्वमेध यज्ञसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ वाम भागसँ दक्षिण भाग होइत मृदु गतिएँ भगवान शिवक मन्दिरक बढ़ियाँ जकाँ प्रदक्षिाणा करव ।

देवीपुराणमे तीन बेर कयल गेल प्रदक्षिणाक फल—

जे व्यक्ति रुद्रमे एकाग्रचित भय पहिने वामदिश जा कय तखन दहिन दिस मन्दिरक प्रणालीक लंघन नहि करैत तीन वेर प्रदक्षिणा करय ओ संसारक बंधनसँ मुक्त भय जाइत अछि तथा ओकर फेर जन्म नहि होइत छैक ।।८७८।।

आइ हम संसार-वंधनसँ मुक्ति तथा पुनर्जन्मक अभावक कामनासँ वाम भाग जायकेँ दक्षिण भाग होइत भगवान शिवक तीन वेर प्रदक्षिणा करव ।

प्रदक्षिण करबाक कालमे शिवमे एकाग्रचित्त होयबाक चाही ।

प्रणामक फल

शिवरहस्यमे--

जे व्यक्ति अनवधानताहुसँ कतहु शिवकेँ प्रणाम कयलनि हुनका युगक अन्तहुमे संसारक बंधन नहि होइत छनि ।।८७९।।

आइ हम पुनर्जन्म-विरहक कामनासँ भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छियनि ।

ओतहि एक बेर प्रणामक फल—

आचारसँ रहित, समाज बहिष्कृत, निर्बल तथा दुर्व्यसनी व्यक्ति एकहु बेर महादेवकेँ प्रणाम करैत अछि, ओ सभ दोषकेँ समाप्त कय अमरत्व प्राप्त करैत अछि ।।८८०।।

आइ हम सभ दोषक विनाश तथा अमरत्व-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छियनि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्रैवाष्टाङ्गप्रणामस्य—

अष्टाङ्गसम्पृष्टधरातलश्च प्रदक्षिणीकृत्य यदाह ईश्वरम् ।
नमस्करोमीति स चक्रवर्त्तितां प्राप्नोत्यत्रश्यं हि पृथुः पुरा यथा ॥८८१॥

अद्य चक्रवर्त्तित्वप्राप्तिकामनया प्रदक्षिणीकृत्य धरासंस्पृष्टाङ्गो भगवन्तमीश्वरमहं प्रणमामि ।

भविष्यपुराणे दण्डवत्प्रणामस्य—

प्रणम्य दण्डवद्भूमौ नमस्कारेण योऽर्च्चयेत् ।
स यां गतिमावाप्नोति न तां क्रतुशतैरपि ॥८८२॥

अद्य क्रतुशतजन्यगत्यधिकगतिप्राप्तिकामनया भगवन्तं शिवं दण्डवद्भूमौ प्रणम्य नमस्कुर्वीय ।

भविष्ये जानुपाणिशिरःकरणकप्रणामस्य—

जानुभ्याञ्चैव पाणिभ्यां शिरसा च विचक्षणः ।
कृत्वा प्रणामं देवेशे सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥८८३॥

अद्य सर्वकामावाप्तिकामो जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

स्मृतौ प्रणाममात्रस्य—

तीर्थकोटिसहस्राणि तीर्थकोटिशतानि च ।
महादेवप्रणामस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥८८४॥

अद्य तीर्थकोटिसहस्रतीर्थकोटिशतसेवनजन्यपुण्यषोडशगुणाधिकपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

भविष्ये नमस्कारस्य—

मदा[1]शीर्मन्नमस्कारो मामेव प्रतिपद्यते ॥८८५॥

अद्य शिवप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं नमस्कुर्वीय ।

---

१ मूले मदासि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओतहि अष्टांग प्रणामक फल—

जे व्यक्ति आठहु अंगसँ पृथ्वी पर खसि ईश्वरक प्रदक्षिणा कय ईश्वरकेँ प्रणाम करैत अछि ओ निश्चय प्राचीन कालक पृथु जकाँ चक्रवर्तित्व प्राप्त करैत अछि ॥८८१।

आइ हम चक्रवर्त्तित्व प्राप्तिक कामनासँ प्रदक्षिण कय शिवकेँ पृथ्वी पर आठो अंगक स्पर्शपूर्वक साष्टांग प्रणाम करब ।

भविष्यपुराणमे दंडवत् प्रणामक फल—

जे व्यक्ति दंडसदृश भूमि पर खसि प्रणाम कय शिवक पूजा करैत अछि, ओ व्यक्ति जाहि गतिकेँ प्राप्त करैत अछि, ओहि गतिकेँ सइयो यज्ञसँ नहि प्राप्त कयल जा सकैत अछि ॥८८२॥

आइ हम सय यज्ञसँ अधिक पुण्य प्राप्तिक कामनासँ भूमि पर दंड जकाँ खसि कय भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छियनि ।

भविष्यपुराणमे ठेहुनक भरेँ हाथ आ माथ टेकि कय प्रणामक फल—

जे बुद्धिमान व्यक्ति दुनू ठेहुन, हाथ तथा मस्तककेँ टेकि कय शिवकेँ प्रणाम करैत अछि ओ सभ कामनाकेँ प्राप्त करैत अछि ॥८८३॥

आइ हम सभ कामनाक प्राप्तिक कामनासँ दुनू ठेहुन, दुनू हाथ तथा मस्तककेँ पृथ्वी पर राखि कय भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छियनि ।

स्मृतिमे केवल प्रणामक फल—

हजार करोड़ तीर्थ अथवा सय करोड़ तीर्थमे यात्रा करबाक फल महादेवकेँ केवल प्रणाम करबाक पुण्यक सोलहमो अंशकेँ नहि प्राप्त कय सकैत अछि ॥८८४॥

आइ हम हजार करोड़ तीर्थ अथवा सय करोड़ तीर्थक सेवनसँ उत्पन्न पुण्यक १६ गुणा अधिक पुण्य प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छी ।

भविष्यपुराणमे नमस्कारक फल—

हमरा पर आशा रखनिहार आ' हमरा नमस्कार कयनिहार व्यक्ति हमरे प्राप्त करैत अछि ॥८८५॥

आइ हम शिवत्व प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवकेँ प्रणाम करैत छी ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवरहस्ये नमस्कारस्य—

नमस्कारः कृतो ज्ञेयः सर्वयज्ञोत्तमोत्तमः ।
नमस्कृत्य पुनः शम्भुमश्वमेधफलं लभेत् ॥८८६॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवन्तं शिवमहं नमस्कुर्वीय ।

ब्रह्मवैवर्ते नमस्कारस्य—

यथा वृक्षात् फलं पक्वं पवनेन समीरितम् ।
नमस्कारेण रुद्रस्य तथा पापं प्रणश्यति ॥८८७॥

अद्य पापक्षयकामनया भगवन्तं रुद्रमहं नमस्कुर्वीय ।

भविष्यपुराणे स्तुतिफलम्—

सर्वदानोपवासेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
स्तुतिजप्योपहारेण शिवे तत्फलमाप्नुयात् ॥८८८॥

अद्य सर्वदानसर्वोपवाससर्वयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य स्तोत्रपाठमहङ्करिष्ये ।

अथ ध्यानफलम्

महाभारते—

सर्वलक्षणहीनोऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ।
सर्वन्तरति तत्पापं भावयन् शिवमात्मना ॥८८९॥

भावयन् ध्यायन् ।

अद्य सर्वपापतरणकामो भगवतः शिवस्य ध्यानमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे[1] सदाध्यानस्य—

न शक्योऽस्मि तपोयुक्तैर्द्रष्टुं मुनिगणैरपि ।
ध्यानिनो नित्ययुक्ताश्च देवि पश्यन्ति मां बुधाः ॥८९०॥

अद्यादि शिवसाक्षात्कारकामो नित्यं शिवध्यानमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, स्कन्दपुराणे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवरहस्यमे नमस्कारक फल—

शिवकें कयल नमस्कार सभ यज्ञसँ उत्तम बुझबा योग्य थिक। शंकरकें नमस्कार कय अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥८८६॥

आइ हम अश्वमेध यज्ञक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवकें प्रणाम करैत छी।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमे नमस्कारक फल—

जेना पाकल फल हवाकें लगलासँ वृक्षसँ खसि पड़ैत अछि, तहिना रुद्रकें नमस्कार कयलासँ पाप घटि जाइत अछि ॥८८७॥

आइ हम पापक क्षयक कामनासँ भगवान रुद्रकें प्रणाम करैत छी।

भविष्यपुराणमे स्तुतिक फल—

सभ प्रकारक दान, उपवास तथा विविध यज्ञमे जे फल प्राप्त होइत छैक सैह फल शिवक स्तुति, जप तथा नैवेद्यसँ मानव प्राप्त करैत अछि ॥८८८॥

आइ हम सभ प्रकारक दान, उपवास तथा विविध यज्ञक अनुष्ठानसँ प्राप्त फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक स्तोत्र पाठ करब।

ध्यानक फल

महाभारतमे—

सभ प्रकारक (प्रशस्त) लक्षणसँ हीनो अथवा सभ प्रकारक पापसँ युक्तो व्यक्ति मनसँ शिवक ध्यान कय सभ पापसँ मुक्त भय जाइत अछि ॥८८९॥

'भावयन्'क अर्थ "ध्यान करैत" होइत अछि।

आइ हम सभ प्रकारक पापसँ उद्धारक कामनासँ भगवान शिवक ध्यान करब।

भविष्यपुराणमे सतत ध्यानक फल—

'हे देवि। हमरा तपस्यामे रत ऋषिगणो नहि देखि सकैत छथि किन्तु नित्य योगमे निरत तथा ध्यानपरायण विद्वान हमर साक्षात्कार करैत अछि ॥८९०॥

आइ हम शिवक साक्षात्कारक कामनासँ शिवक ध्यान करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ रुद्राक्षधारणम्

स्कन्दपुराणे षण्मुखं प्रति रुद्रवाक्यम्—

हस्ते बाहौ तथा कण्ठे मूर्ध्नि रुद्राक्षधारणात् ।
अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवद्विचरेद्भुवि ॥८९१॥

सुरासुराणां सर्वेषां वन्दनीयो यथा शिवः ।
ध्यानधारणहीनोपि रुद्राक्षं धारयेत्तु यः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सः याति परमां गतिम् ॥८९२॥

अद्यादि सर्वभूतावध्यत्वभूतलाधिकरणकरुद्रगतितुल्यगतिमत्वसुरासुरकर्तृक शिवतुल्यवन्द्यत्वसर्वपापविनिर्मुक्तत्वपरमगतिप्राप्तिकामो रुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षधारणस्य—

लक्षन्तु जपतः पुण्यं कोटिर्भवति संख्यया ।
दशकोटिसमं पुण्यं धारणाल्लभते नरः ॥८९३॥
यावदेतच्छरीरस्थं तावन्मृत्युर्न वाधते ॥८९४॥

अद्यादि शिवमन्त्रदशकोटिजपजन्यपुण्यसमपुण्याकालिकमृत्युवाधाशून्यत्वकामनया रुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षं धारयतो लक्षजपे कोटिजपजन्यफलसमफलत्वम् ।

एकवक्त्रधारणस्य—

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥८९५॥

अद्यादि ब्रह्महत्याजन्यपापक्षयकामनया एकवक्त्रशिवनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

द्विवक्त्रधारणस्य—

द्विवक्त्रो देवदेवो हि गोवधं नाशयेद्ध्रुवम्[1] ॥८९६॥

अद्यादि गोवधजन्यपापक्षयकामनया द्विवक्त्रदेवदेवनामकरुद्राक्षरधारणमहङ्करिष्ये ।

---

१ शिवमहापुराण, विदेश्वरसंहिता, प्रथम खंड, अध्याय २५, द्विवक्त्रो देवदेवेशं सर्वकामफलप्रद । विशेपतः स रुद्राक्षो गोवधं नाशयेद्द्रुतम्

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रुद्राक्षधारणक फल

स्कन्दपुराणमे कार्तिकेयक प्रति शंकरक कथन—

हाथमे, भुजा पर, कंठमे तथा मस्तक पर रुद्राक्ष धारणसँ मनुष्य सभ प्राणीक अवध्य भय कय रुद्र जकाँ पृथ्वी पर विचरण करैत अछि ॥८९१॥

जेना शिव समस्त देव आ दानवक वन्दनीय छथि, तहिना ध्यान आ धारणासँ हीनो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करय त्रला सभ पापसँ मुक्त भय उत्कृष्ट गति प्राप्त करैत अछि ॥८९२॥

आइ हम सभ प्राणीसँ अवध्यता, पृथ्वी पर रुद्रक समान गतिशीलताक समान गति, देवता तथा असुरसँ शिवहिजकाँ वन्दनीय होयब, सभ पापसँ विमुक्ति पायब तथा परम पद प्राप्तिक कामनासँ रूद्राक्ष धारण करब ।

रुद्राक्षधारणक फल -

जे व्यक्ति रुद्राक्ष धारण कय संख्याक अनुसार एक लाख जप करैत अछि, ओकरा करोड़ जप करबाक पुण्य होइत अछि आ सर्वदा रुद्राक्ष धारणसँ मनुष्य दस करोड़ जपक फलक तुल्य पुण्य प्राप्त करैत अछि तथा जाधरि एहि शरीरमे रुद्राक्ष रहैत अछि ताधरि ओकरा मृत्युक बाधा नहि होइत अछि ॥८८९३।८९४॥

आइ हम शिव मंत्रक दस करोड़ जपसँ उत्पन्न पुण्यक समान पुण्य प्राप्ति तथा मृत्युक बाधा नहि होयबाक कामनासँ रुद्राक्ष धारण करब ।

रुद्राक्ष धारण कयनिहार व्यक्तिकेँ एक लाख जप कयला पर करोड़ जप कयलाक फल प्राप्त होइत अछि ।

एकमुख रुद्राक्ष धारणक फल—

एक मुँहवला रुद्राक्ष साक्षात् शिव अछि, जे ब्रह्महत्याक निवारण करैत अछि ॥८९५॥

आइ हम ब्रह्महत्या जन्य पापक क्षयक कामनासँ एकमुख शिव नामक रुद्राक्ष धारण करब ।

द्विमुख रुद्राक्षधारणक फल—

द्विवक्त्र रुद्रक्ष साक्षात् देवदेव थिक जे निश्चय गोवध (जन्य पापकेँ) नष्ट करैत अछि ॥८९६॥

आइसँ हम गोवध जन्य पापक निवारणक कामनासँ देवदेव नामक द्विवक्त्र रुद्राक्ष धारण करब ।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिवक्त्रधारणस्य—

त्रिवक्त्रो धनदः साक्षाद्धस्तिहत्यां व्यपोहति[1] ॥८९७॥

अद्यादि हस्तिहत्याजन्यपापक्षयकामनया त्रिवक्त्रधनदनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

चतुर्वक्त्रधारणस्य—

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति[2] ॥८९८॥

अद्यादि नर-हनन-जन्यपापक्षयकामनया चतुर्वक्त्रब्रह्मानामकरुद्राक्षधारणमहंकरिष्ये।

पञ्चवक्त्रधारणस्य—

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्न्नाम नामतः।
अगम्यागमनाच्चैव अभक्ष्यस्य च भक्षणात् ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यः पञ्चवक्त्रस्य धारणात्[3] ॥८९९॥

अद्यागम्यागमनाभक्ष्यभक्षणादिजन्यसर्वपापविमुक्तिकामनया कालाग्निरुद्रनामकपञ्चवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

षड्वक्त्रधाणस्य—

षडवक्त्रः कर्त्तिकेयस्तु धारणाद्दक्षिणे भुजे ।
ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः[4] ॥९००॥

अद्यादि ब्रह्मवधादिजन्यबहुपापविमुक्तिकामनया दक्षिणे भुजे कार्त्तिकेयनामक षड्वक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्य।

सप्तवक्त्रधारणस्य—

सप्तवक्त्रो महासेन[5] अनन्तो नाम नागराट्।
सुवर्णः सुभगश्चैव[6] दरिद्रोपीश्वरो भवेत्[7] ॥९०१॥

अद्यादि सुवर्णत्वसुभगत्वेश्वरत्वप्राप्तिकामनयाऽनन्तनामसप्तवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

---

१ स्कन्दपुराण; विदेश्वर संहिता, प्रथम खंड, २५, ६७।
२ तत्रैव २५,६८।
३ तत्रैव २५, ६९।
४ तत्रैव २५, ७०।
५ ने० पा० कापी सं० २. पृ० २१, शिवमहापुराण प्रथम खंड विदेश्वर-संहिता, २५, ७२, महेशानि।
६ तत्रैव, सुवर्णित्व।
७ स्कन्दमहापुराण, विदेश्वर संहिता, प्रथमखंड, २५, ७१।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिमुख रुद्राक्ष धारणक फल—

तीनमुखी रुद्राक्ष साक्षात् कुवेर थिक, जे हाथीक हत्या जन्य पापक निवारण करैत अछि ।।८९७।।

आइ हम हाथीक वध जन्य पापक निवारणक कामनासँ धनद नामक तीन-मुखी रुद्राक्षकेँ धारण करव ।

चारिमुखी रुद्राक्ष धारणक फल—

चारिमुखी रुद्राक्ष स्वयं ब्रह्मा थिक जे नरहत्याक पापक निवारण करैत अछि ।।८९८।।

आइ हम नरहनन जन्य पापक्षयक कामनासँ चारिमुखक ब्रह्मा नामक रुद्राक्ष धारण करव ।

पाँचमुखवला रुद्राक्ष धारणक फल—

पंचवक्त्र रुद्राक्ष साक्षात् थिक जे नामसँ कालाग्नि कहवैत अछि । पंचवक्त्रक धारणसँ (मानव) अगम्यागमन तथा अभक्ष्यभक्षणसँ उत्पन्न विविध पापसँ मुक्त भय जाइत अछि ।।८९९।।

आइ हम अगम्यागमन तथा अभक्ष्य-भक्षण आदिसँ उत्पन्न सभ पापक निवारणक कामनासँ कालाग्नि रुद्रनामक पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करव ।।९००।।

छमुखी रुद्राक्ष धारणक फल—

छ मुखी रुद्राक्ष साक्षात् कार्त्तिकेय थिक, जकरा दहिना बाँहिमे धारण कयलासँ मानव ब्रह्महत्या आदि पापसँ मुक्त भय जाइत अछि। एहिमे सन्देह नहि ।।९०१।।

आइसँ हम ब्रह्महत्यादिसँ उत्पन्न अनेक पापसँ मुक्तिक कामनासँ दहिना बाँहिमे कार्तिकेय नामक रुद्राक्ष धारण करव ।

सप्तमुख रुद्राक्ष धारणक फल :—

सप्तमुख रुद्राक्ष महासेन, अनन्त नामक सर्पराज थिक जकर धारणसँ व्यक्ति सुन्दर सौभाग्यशाली तथा ऐश्वर्यवान् होइत अछि ।।९०३।।

आइसँ हम सुन्दर वर्ण, सुन्दरता तथा ऐश्वर्य-प्राप्तिक कामनासँ अनन्त नामक सप्तमुख रुद्राक्ष धारण करव ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टवक्त्रधारणस्य—।

रुद्राक्षस्याष्टवक्त्रस्य कार्त्तिकेय विधारणात् A।
जीवेद्वर्षशतं साग्रं मृतो भवति शूलभृत्[1] ॥९०२॥

अद्यादि साग्रशतवर्षजीवित्वतनुत्यागान्तरकालिकशूलभृतत्वभवनकामनयाऽष्टवक्त्रहरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

नववक्त्रधारणस्य—

भैरवं नवमं वक्त्रं कपिलं मुक्तिदं स्मृतम् ।
धारयेद्वामहस्तेन मम तुल्यबलो भवेत् ॥९०३॥

लक्षकोटिसहस्राणि ब्रह्महत्याः करोति यः ।
तत्सर्वं दहते शीघ्रं नववक्त्रस्य धारणात् ॥९०४॥

अद्यादि लक्षकोटिसहस्रब्रह्महत्याजन्यतात्कालिकपापक्षयशिवतुल्यबलत्वप्राप्तिकामनया भैरवं नववक्त्रंरुद्राक्षं वामबाहावहं धारयिष्ये।

कपिलनववक्त्रधारणस्य—

अद्यादि मुक्तिप्राप्तिकामनया कपिलनववक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

दशवक्त्रं रुद्राक्षधारणस्य—

दशवक्त्रो महासेनः स्वयं देवो जनार्दनः ।
ग्रहाश्चैव[3] पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः ॥
पन्नगाश्च विनश्यन्ति दशवक्त्रस्य धारणात् ॥९०५॥

अद्यादि बहुग्रहपिशाचवेतालब्रह्मराक्षसपन्नगकर्तृकात्मीयभयाभावकामनया दशवक्त्रजनार्दननामरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये।

---

१ स्कन्दमहापुराण, विदेश्वरसंहिता, प्रथम खंड २५, ७२।
२ ने० पा०, काशी सं०, २, पृ० २१, शिवमहापुराण, प्रथम खंड, विदेश्वर
३ संहिता, २५, ७२, महेशानि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टमुख रुद्राक्ष धारणक फल :—

अष्टमुख रूद्राक्ष कार्त्तिकेयकें धारण करबाक कारणें, तकरा धारण केनिहार व्यक्ति सए वर्षसँ अधिक जीवि मृत्युक उपरान्त शंकर भय जाइत अछि ॥९०२॥

आइसँ हम सए वर्षसँ अधिक जीलाक बाद देहत्यागक उपरान्त शंकरत्व प्राप्तिक कामनासँ अष्टमुखी रूद्राक्ष धारण करब।

नवमुख रुद्राक्ष धारणक फल :—

शिव कहैत छथि जे कपिल आ' भैरव नामक नववक्त्र रूद्राक्ष भक्तिप्रद बूझल जाइत अछि। वामा हाथमे एकरा धारण करक चाही, (एहिसँ) ओ व्यक्ति हमर सदृश बलवान होएय। जे व्यक्ति हजार, लाख, करोड़ ब्रह्महत्या करैत अछि ओहो नवमुख (रूद्राक्ष)क धारण केने शीघ्र ओहि सभ (ब्रह्महत्या)कें दग्ध कय दैत अछि ॥९०३ ९०४॥

आइसँ हम हजार, लाख, करोड़ ब्रह्महत्या जन्य तात्कालिक पाप-निवारण पूर्वक शिवतुल्य बल प्राप्तिक कामनासँ नवमुख भैरव नामक रूद्राक्ष अपन वाम भुजामे धारण करब।

कपिल (नामक) नवमुख रुद्राक्ष धारणक फल —

आइसँ हम हम मुक्ति प्राप्तिक कामनासँ कपिल नामक नवमुख रूद्राक्ष धारण करब।

दशमुख रुद्राक्ष धारणक फल :—

महासेन नामक दशमुख (रूद्राक्ष) साक्षात् भगवान जनार्दन होइछ। दशमुख रूद्राक्ष धारण केने विभिन्न ग्रह, पिशाच, वेताल, ब्रह्म, राक्षस तथा सर्पादि नष्ट भय जाइत अछि ॥९०५॥

आइ हम अनेक ग्रह, पिशाच, वेताल, ब्रह्म-राक्षस एवं सर्पादिसँ होबयबला अपन भयक निवारणक कामनासँ जनार्दन (भगवान) नामक दशमुख रूद्राक्ष धारण करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एकादशवक्त्रधारणस्य—

एकादशमुखो वत्स रुद्राश्चैकादश स्मृताः ।
शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥९०६॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
स तत्फलमवाप्नोति रुद्राक्षस्य च धारणात् ॥९०७॥

अद्याश्वमेधसहस्रवाजपेयशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया शिखायां रुद्रनामकैकादशवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

द्वादशवक्त्रधारणस्य—

द्वादशास्यं तु रुद्राक्षं धारयेत् केशदेशतः ।
आदित्याश्चैव ते सर्वे द्वादशैव व्यवस्थिताः ॥९०८॥

गोमेधस्य तु यज्ञस्य धारणाल्लभते फलम् ।
दुर्भगः सुभगश्चैव रोगी रोगाद्विमुच्यते ॥९०९॥

अद्यादि गोमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिसुभगत्वभवनकामनया केशदेशे द्वादशवक्त्रादित्यनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

सति रोगे रोगविमुक्तिश्चफलम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एकादश मुखरुद्राक्ष धारणक फल :—

हे वत्स। एकादश-मुख (रूद्राक्ष) एकादश-रूद्र रूप बूझल जाइत अछि। एकरा नित्य शिखामे धारण करवाक चाही। एकर पुण्य फल सुनू :—

एहि रूद्राक्षक धारणसँ ओ व्यक्ति हजार अश्वमेध यज्ञ तथा सए वाजपेय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥१०६॥

आइ हम हजार अश्वमेध यज्ञ तथा सए वाजपेय यज्ञक फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिखामे (एकादश) रूद्र नामक एकादशमुखी रूद्राक्ष धारण करब।

द्वादश (बारह) मुखी रुद्राक्ष धारणक फल :—

द्वादशमुख रूद्राक्ष केशदेशमे धारण करबाक चाही। एहि प्रकारक रूद्राक्ष बारहो आदित्य बूझल जाइत अछि। एकर धारणसँ (मानव) गोमेध यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि। कुरूप सुरूप भ' जाइत अछि तथा रोगी रोगमुक्त भ' जाइत अछि ॥१०७ १०८।

आइसँ हम गोमेध यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्ति तथा सुन्दरता प्राप्तिक कामनासँ केश-प्रदेशमे आदित्य नामक द्वादशमुख रूद्राक्ष धारण करब ॥१०९॥

रोग रहला पर रोग-मुक्तियो फल छैक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रयोदशवक्त्रधारणस्य—

त्रयोदशमुखञ्चैव रुद्राक्षं प्राप्यते यदि ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सौभाग्यं परमं लभेत् ॥९१०॥
कामदेवं हि रुद्राक्षं सदा कण्ठेन[1] धारयेत् ।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्य्याणि भाग्यहीनस्य षण्मुख ॥९११॥

अद्यादि सर्वकामावाप्तिपरमसुभगत्वसर्वकार्य्यसिद्धिप्राप्तिकामनया कण्ठे त्रयोदशवक्त्रकामदेवनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

चतुर्द्दशवक्त्रधारणस्य—

चतुर्द्दशमुखं यत्तु पुण्येन प्राप्यते यदि ।
धारयेत् सततं मूर्ध्नि सर्वपापप्रणाशनम् ॥९१२॥
पूज्यते सततं देवैः प्राप्यते पुण्यगोचरैः ॥९१३॥

अद्यादि सर्वपापक्षयबहुदेवकर्तृकपूजाकर्म्मत्वप्राप्तिकामनया मूर्द्धनि चतुर्द्दशवक्त्ररुद्राक्षधारण महङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षमालाधारणस्य—

रुद्राक्षमालां यो धत्ते भक्त्या चैव सदा करे ।
शतार्द्धार्द्धप्रमाणेन स रुद्रो नात्र संशयः ॥९१४॥

अद्यादि रुद्रत्वभवनकामनया करे रुद्राक्षमालामहं धारयिष्ये ।

रुद्राक्षधारणमन्त्राः

तत्रैकवक्त्रे—ओँ भृशं नमः[3] । द्विवक्त्रे—ओँ ओँनमः । त्रिवक्त्रे—ओँ हूँनमः[4] । चतुर्वक्त्रे—ओँ ट्रींनमः । पंचवक्त्रे—ओँ हूँनमः । षड्वक्त्रे - ओँ ह्रूँ ह्रूँ नमः[5] । सप्तवक्त्रे - ओँ ह्रँ नमः[6] । अष्टवक्त्रे—ओँ ह्रँ नमः[7] । नववक्त्रे—ओँ यूँ नमः[8] । दशैकादशवक्त्रयोः—ओँ श्रीनमः । द्वादशवक्त्रे-ओँ ह्राँह्राँनमः[9] । त्रयोदशवक्त्रे—ओँ क्षौँ क्षौँनमः । चतुर्द्दशवक्त्रे—ओँनमोनमः ।

---

१ ने० पा० कण्ठेव धारयेत् ।
२ शिवमहापुराण, प्रथम खंड, विदेश्वरसंहिता मे रुद्राक्षक मंत्र मे अन्तर अछि ।
३ ने० पा० ओँ भृशे नमः ।
४ ने० पा०, ओँ वूँ नमः ।
५ वएह, ओँ हूँ हूँ नमः ।
६ वएह, ओँ हुँ ननः ।
७ वएह, ओँ ह्रीँ नमः ।
८ वएह, ओँ ···· नमः ।
९ वएह, ओँ हुँ हुँ नमः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रयोदश (तेरह) मुखी रुद्राक्ष धारणक फल :—

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष प्राप्त भेला पर मानवक सभ कामना पूर्ण भ' जाइत छैक तथा परमभाग्य प्राप्त करैत अछि। (एहि) कामदेव नामक रुद्राक्ष कें सतत कण्ठमे धारण करबाक चाही। हे कार्त्तिकेय। (एहिसँ) भाग्यहीनो व्यक्तिक सभ काज सिद्ध भ' जाइत छैक ॥९१० ९११॥

आइसँ हम सभ मनोरथ पूर्त्ति, परम सौन्दर्य प्राप्ति तथा सभ कार्यक सिद्धिक कामनासँ कण्ठमे कामदेव नामक त्रयोदशमुखी रूद्राक्ष धारण करब।

चतुर्दश (चौदह) मुखी रुद्राक्ष धारणक फल :—

जँ पुण्यसँ चतुर्दशमुखी (रूद्राक्ष) पाओल जाय तँ ओकरा सतत मस्तक पर धारण करबाक चाही। (ई) सभ पाप कें नष्ट करैत अछि, सए देवतासँ पूजल जाइत अछि तथा पुण्यवान व्यक्तिये कें प्राप्त होइत छनि ॥९१२-९१३॥

आइ हम सब पापक निवारण तथा अनेक देवतासँ पूजित फल प्राप्तिक कामनासँ मस्तक पर चतुर्दशमुख रूद्राक्ष धारण करब।

रुद्राक्षक माला धारणक फल :—

जे व्यक्ति सतत हाथमे भक्तिपूर्वक रूद्राक्षक माला धारण करैत अछि, ओ पचीसो प्रमाणसँ रूद्र भ' जाइत अछि। एहिमे कोनो संदेह नहि ॥९१४॥

आइ हम रूद्रत्व-प्राप्तिक कामनासँ हाथमे रूद्राक्षक माला धारण करब।

रुद्राक्ष धारणक मंत्र—

एकमुख (रूद्राक्ष धारण)मे मंत्र—ॐ भृशं नमः
दू मुँहवला (रूद्राक्ष) मे :—ॐ ॐ नमः।
तीन मुँह वला (रूद्राक्ष)मे :— ॐ हूं नमः।
चारि मुँह वला (रुद्राक्ष)मे :—ॐ ह्रीं नमः।
पाँच मुँह वला (रूद्राक्ष)मे :—ॐ हुं नमः।
छ मुँह वला (रूद्राक्ष) मे :—ॐ ह्लं ह्लं नमः।
सात मुँह वला (रूद्राक्ष) मे :—ॐ ह्लं नमः।
आठ मुँह वला (रूद्राक्ष) मं :—ॐ ह्लं नमः।
नव मुँह वला (रूद्राक्ष) मे :—ॐ यूं नमः।
दस मुँह वला (रूद्राक्ष) मे :—ॐ श्रीं नमः।
एगारह मुँह वला (रूद्राक्ष) मे :—ओँ श्रीं नमः।
बारह मुँह वला (रूद्राक्ष) मे—ॐ ह्लां ह्लां नमः।
तेरह मुँहवला (रुद्राक्ष)मे—ॐ क्षौं क्षौं नमः।
चौदह मुँहवला (रुद्राक्ष)मे—ॐ नमो नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रत्येकमष्टोत्तरशतं जपित्वा शिवाम्भसा प्रक्षाल्य धारणीयम् ।

विना मन्त्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥९१५॥

अथ शिवायतनकरणफलम्

भविष्ये—

मृदारम्भेष्टकाशैले यः कुर्यात्तु शिवालयम् ।
द्विः सप्तकुलसंयुक्तः शिवलोके महीयते ॥९१६॥

अद्य चतुर्दशकुलयुतात्मीयशिवलोकमहितत्वकामो मृदा भगवतः शिवस्यायतन-महङ्करिष्ये ।

दारुमयायतनकरणस्य—

मृन्मयात् कोटिगुणितं फलं स्याद्दारुभिः कृते ॥९१७॥

अद्य मृण्मयायतनकरणजन्यफलकोटिगुणफलप्राप्तिकामो दारुभिर्भगवतः शिवस्यायतनमहङ्करिष्ये ।

इष्टकायतनकरणे—

कोटिगुणं पुण्यं दारवादिष्टकामये ॥९१८॥

अद्य दारुमयायतनकरणजन्यपुण्यकोटिगुणपुण्यप्राप्तिकामनया इष्टकाभि-र्भगवतः शिवस्यायतनमहङ्करिष्ये ।

प्रस्तरमयायतनस्य—

ऐष्टिकाद्द्विगुणं पुण्यं शैलेये स्याच्छिवालये ॥९१९॥

अद्य इष्टकाकरणकायतनजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया शिलाभिर्भगवतः शिवस्यायतनमहं करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रत्येक (कें) १०८ (वेर) जपि कय शिव पर चढ़ाओल जलसँ प्रक्षालित कय धारण करबाक चाही।

जे मानव एहि संसारमे बिना मंत्रें रुद्राक्ष धारण करैत अछि ओ चौदह इन्द्रकाल पर्यन्त घोरनरकगामी होइत अछि ॥९१५॥

आब भविष्य पुराणमे शिवालय-निर्माणक फल

जे व्यक्ति (माटिक) ईंटासँ पाटल उच्च भूमि पर शिवालय निर्माण करैत अछि ओ चौदह कुल सहित शिवलोकमे वास करैत अछि ॥९१६॥

आइ हम चौदह कुल सहित शिवलोकमे निवासक कामनासँ माटिसँ भगवान शिवक मन्दिरक निर्माण करब।

काठक मन्दिर-निर्माणक फल—

काठक मन्दिर बनौने माटिक मन्दिरसँ करोड़ गुणा फल भेटैत छैक ॥९१७॥

आइ हम माटिक (शिव) मन्दिर निर्माण जन्य फलसँ करोड़ गुणाफल प्राप्ति कामनासँ भगवान शिवक भवन बनबायब।

ईंटाक मन्दिर बनबेबाक फल

काठक मन्दिरक अपेक्षा ईंटाक मन्दिरमे करोड़ गुणा पुण्यप्राप्त होइत छैक ॥९१८॥

आइ हम काठक मन्दिर निर्माणसँ उत्पन्न पुण्यक अपेक्षा करोड़ गुणा पुण्य प्राप्तिक कामनासँ ईंटासँ भगवान शिवक मन्दिर बनबायब।

प्रस्तर-निर्मित शिवभवनक निर्माणक फल—

ईंटाक बनाओल मन्दिरक अपेक्षा प्रस्तर-निर्मित शिवालयक निर्माणमे द्विगुण पुण्य होइत छैक ॥९१९॥

आइ हम ईंटासँ निर्मित शिवालयसँ उत्पन्न फलक द्विगुण फल प्राप्तिक कामनासँ प्रस्तरसँ भगवान शिवक गृहक निर्माण करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथाशक्तीष्टकामयकरणे—

इष्टेष्टकासमायुक्तं योपि कुर्य्याच्छिवालयम् ।
विधूय पापसंघातं स गच्छेच्छङ्करालयम् ॥९२०॥

अद्य पापसंघातविमुक्तिपूर्वकशिवालयगमनकामनया इष्टकामयं शिवालयमहं करिष्ये ।

लिङ्गपुराणे यथाशक्तिमन्दिरकरणस्य—

मन्दिरं वापि कुर्वीत शिवाय विधिपूर्वकम् ।
भक्त्या वित्तानुसारेण उत्तमाधममध्यमम् ।
यः करोति महादेवि सोऽनन्तफलमश्नुते ॥९२१॥

अद्यानन्तफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य यथाविधि मन्दिरमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे मन्दिरकरणस्य—

शङ्ककर्णो यथा चायं यथा कालोऽयमन्तिके ।
यथा नन्दीश्वरोऽयं मे तथा सोऽपि भविष्यति ॥९२२॥

अद्य शङ्कुकर्णमहाकालनन्दीश्वरगणतुल्यशिवान्तिकस्थितिकामनया शिवालयमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे शिवायतनसन्निधौ कृत्रिम[1]भूमिकरणस्य—

यः कुर्य्यात् कुट्टिमां भूमिं दर्पणोदरसन्निभाम् ।
नानावर्णविचित्राञ्च विचित्रकुसुमोज्ज्वलाम् ॥९२३॥
क्वचिद्विन्यस्तकलसां पङ्क[2]जाद्युपशोभिताम् ।
मनोभिरामां सुख[3]मां शिवायतनसंसदि ॥९२४॥
यावद्दण्डो भवेद्भूमिः समन्तादुपशोभिता ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९२५॥

अद्य समन्ततो विरचनैतद्भूमिदण्डसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया शिवायतनसन्निधाविमां भूमिकुट्टिमां दर्पणोदरसन्निभां नानावर्णविचित्रां विचित्रकुसुमोज्ज्वलां विन्यस्तकलसां पङ्कजा[4]द्युपशोभितामहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, पृ० २३, कुट्टिम ।
२. वैह, पक्वजाम्बूपशोभिताम् ।
३. वैह, सुसमां । सुषमां शुद्ध पाठ ।
४. वैह, पक्वजाम्बूप शोभिताम्

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथाशक्ति ईंटक (शिवक) मन्दिर बनयबाक फल –

जे केओ यथाशक्ति ईंटासँ युक्त शिवालयक निर्माण करैत अछि, ओ पाप-समूहकेँ नष्ट कय शिवलोक जाइत अछि ॥९२०॥

आइ हम समस्त पापक निवारणपूर्वक शिवलोक गमनक कामनासँ ईंटासँ शिवालय बनायब ।

लिंगपुराणमे यथाशक्ति मन्दिर-निर्माणक फल –

हे महादेवि। भक्तिपूर्वक तथा वित्तक अनुसार उत्तम, मध्यम वा अधम कोनो प्रकारक शिवमन्दिर जे व्यक्ति बनबैत अछि, ओ व्यक्ति असंख्य फल प्राप्त करैत अछि ॥९२१॥

आइ हम असंख्य फल प्राप्तिक कामनासँ विधिपूर्वक भगवान शिवक मन्दिर बनबायब ।

शिवपुराणमे मन्दिर निर्माणक फल:–

जेना ई शंकुकर्ण, ई महाकाल तथा ई नन्दीश्वर हमरा निकट में रहैत छथि तहिना ओहो (मन्दिर-निर्माणकर्त्ता) हमर निकटवर्ती रहत ॥९२२॥

आइ हम शंकुकर्ण, महाकाल तथा नन्दीश्वर नामक गण जकाँ शिवक निकटवर्त्ती होयबाक कामनासँ शिवालय बनायब।

भविष्यपुराणमे शिवमन्दिरक निकट पक्का फर्श (चबूतरा) बनेबाक फल–

जे व्यक्ति-शिव मन्दिरक आङनमे दर्पणक उदर जकाँ (स्वच्छ) विभिन्न वर्णसँ चित्रित; विभिन्न फूलसँ समलंकृत, कतहु-कतहु कलश-युक्त तथा कमलसँ सुशोभित, मनोरम तथा शोभायुक्त चबूतराक निर्माण करैत अछि, ओ व्यक्ति जतेक लग्गी भूमि पर चबूतरा बनाओत ततेक हजार युग रुद्रलोकमे वास करत ।।९२३-९२५।।

आइ हम सब तरहेँ निर्मित एहि भूमिक परिमापक दण्डक समान संख्यक हजार युग धरि रुद्रलोकमे वास करबाक कामनासँ शिवालयक निकट दर्पणक पेट जकाँ (स्वच्छ) विभिन्नवर्ण-युक्त, चित्र-विचित्र फूलसँ उद्भासित कलश-युक्त तथा कमल आदिसँ सुशोभित चबुतराक रचना करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुधाप्रलेपनस्य—

सुधाप्रलिप्तं यः कुर्य्यात् सर्वयत्नैः शिवालयम् ।
तावत्पुण्यं लभेत्सोपि यावदायतने कृते ॥९२६॥

अद्य सुधाप्रलेपनयैतच्छिवालयकरणजन्यसमपुण्यप्राप्तिकामोभगवतः शिवस्यैतदायतनं सुधाप्रलिप्तमहं करिष्ये ।

प्रत्यब्दं सुधाभिर्धवलीकरणस्य—

प्रत्यब्दं यत्र कुर्वीति शम्भोरायतनं नरः[1] ।
धवलं क्षीरसुधया यथाशोभञ्च वर्णकैः ॥९२७॥

यावन्त्यब्दानि कुरुते धवलं तच्छिवालयम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९२८॥

अद्यादिसुधाप्रलेपनाधिकरणाब्दसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामः प्रत्यब्दं भगवतः शिवस्यायतनं सुधाभिर्धवलमहं करिष्ये ।

शिवालये रुद्रादिचित्रलेखनस्य—

कारयेच्चित्रशास्त्रज्ञैर्यत्नाच्चित्रं शिवालये ।
रुद्रावतारक्रीडाद्यैः प्रयोगैरागमोदितैः ॥९२९॥

यावन्ति रुद्ररूपाणि लेखयेत शिवालये ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९३०॥

अद्यादिलेखनीयैतावद्रुद्रमूर्त्तिसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामोऽस्मिन् शिवालये आगमादिरुद्रावतारक्रीड़ादियुक्तरुद्रकृतीरहं लेख[2]यिष्ये ।

---

१ ने० पा०, बुधः

२ वंह, पृ० २३, करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(शिवालयकें) चुनेटबाक फल—

जे शिवालयकें सावधान भय चुनेटैत अछि, ओ शिवालय-निर्माण कयला पर प्राप्त होयबयबला पुण्यकें प्राप्त करैत अछि ॥९२६॥

आइ हम एहि शिवालयकें चुनेटबासँ शिवालय-निर्माण जन्य पुण्यक समान पुण्य पयबाक कामनासँ भगवान शिवक एहि मन्दिरकें चुनेटब ।

प्रतिवर्ष चूनसँ धवलित करबाक फल—

प्रत्येक वर्ष जे व्यक्ति शिवक मन्दिरकें चूनसँ तथा भिन्न-भिन्न प्रकारक सुन्दर रंगसँ धवलित करैत अछि, ओ व्यक्ति जतेक वर्ष धरि ओहि शिवालयकें चूनेटैत अछि, ततेक हजार युग रुद्रलोकमे वास करैत अछि ॥९२७-९२८॥

आइ हम चूनसँ शिवमन्दिरकें चुनेटबाक वर्षक संख्याक समान हजार युग धरि रुद्रलोकमे वास करबाक कामनासँ प्रतिवर्ष भगवान शिवक मन्दिरकें चूनसँ धवलित करब ।

शिवालयमे रुद्र आदि (देवता)क चित्र बनेबाक फल--

शिवक मन्दिरमे यत्नपूर्वक चित्रशास्त्रकें जननिहार व्यक्ति द्वारा शास्त्रानुमोदित रीतिये रुद्रक अवतार एवं लीला आदिक चित्र बनेबाक चाही । शिवालयमे रुद्रक जतेक रूपकें चित्रित कयल जाइत अछि (चित्रित करौनिहार) ओतेक हजार युग रुद्रलोकमे वास करैत अछि ॥९२९-९३०॥

आइ हम चित्रित कयल जाइत रुद्रमूर्त्तिक समान-संख्यक हजार युग पर्यन्त रुद्रलोकमे वास करबाक कामनासँ एहि शिवालयमे शास्त्र-वर्णित रुद्रक अवतार तथा लीला आदिसँ युक्त रुद्रक मूर्ति चित्रित करायब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खंडस्फुटितरुद्रालयादिसंस्कारे—

खण्डस्फुटितसंस्कारं यः करोति शिवालये ।
आरामावसथाद्येषु लभते मौलिकं फलम् ।।९३१।।

अद्य रुद्रालयकरणजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः खंडस्फुटितरुद्रालयसज्जीकरण-महङ्करिष्ये ।

खंडस्फुटितारामावसथादिसज्जीकरणेप्येतदेव फलम् ।

अथ लिंगस्थापनाफलम्

लिंगपुराणे—

ब्रह्मादिस्थावरान्तञ्च सर्वं लिङ्गे प्रतिष्ठितम् ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य स्थापयेल्लिङ्गमव्ययम् ।।९३२।।
लिङ्गे वेदी उमादेवी लिङ्गे साक्षान्महेश्वरः ।
प्रतिष्ठायान्तु देवेशो देव्या सार्द्धं प्रतिष्ठितः ।।
य एवं स्थापयेल्लिङ्गं स एव परमेश्वरः ।।९३३।।

अद्य परमेश्वरत्वभवनकामनया सवेदिकं सप्रतिष्ठं शिवलिङ्गमहं स्थापयिष्ये ।

भविष्ये लिङ्गस्थापनस्य—

यो लिङ्गं स्थापयेदेकं विधिपूर्वं सदक्षिणम् ।
सर्वांगमोदितं पुण्यं कोटिकोटिगुणं भवेत् ।।९३६।।
मातृजां पितृजांश्चैव यतश्चोद्धरते स्त्रि[1]यम् ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ।।९३७।।
भुक्त्वाथ विपुलान् भोगान् प्रलये समुपस्थिते ।
ज्ञानयोगं समासाद्य तत्रैव स विमुच्यते ।।९३८।।

अद्य सर्वाङ्गमोदितकोटिकोटिगुणफलप्राप्तिमातृकपैतृकश्वशुरैकविंशतिकुल-नरकोत्तारणपूर्वकशिवलोकमहितत्वविपुलभोगभुक्तिपूर्वकप्रलयकालिकज्ञानहेतुकविमुक्ति-प्राप्तिकामोभवगतः शिवस्य लिङ्गमहं स्थापयिष्ये ।

विधिर्म्मत्स्यपुराणोक्तः ।

---

१ त्रयम् शुद्ध पा० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एक अंश टूटल शिवालय आदिक संस्कारमे फल—

शिवमन्दिर आदिक कोनो टूटल अंशक जे जीर्णोद्धार करैत अछि, अथवा वाटिका एवं निवासस्थलमे संस्कार करैत अछि, ओ मूल निर्माणक फल प्राप्त करैत अछि ॥९३१॥

आइ हम शिव-मन्दिरक निर्माणसँ प्राप्त होबयवला फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवालयक टूटल अंशकेँ मरम्मति करब अथवा उद्धार करब।

टूटल फूटल विश्रामगृह एवं भवन (धर्मशाला) आदिक टूटल अंशहुक उद्धारसँ पूर्वोक्ते फल प्राप्त (होइछ)।

आब लिंगस्थापनाक फल

लिंगपुराणमे—

ब्रह्मासँ लय कय स्थावर पर्यन्त सभ (तत्त्व) लिंगमे स्थित अछि। तेँ हेतु सभकेँ छोड़ि अक्षय लिंगक स्थापना करबाक चाही। लिंगक वेदी पार्वती (थिकीह), लिंगमे साक्षात् महेश्वर (छथि)। एकर प्रतिष्ठामे साक्षात् शंकर पार्वतीक संग प्रतिष्ठित होइत छथि। अतः जे व्यक्ति एहि तरहें लिंगक स्थापना करैत अछि, वएह परमेश्वर होइत अछि ॥९३२-९३४॥

आइ हम परमेश्वरत्व प्राप्तिक कामनासँ वेदिका सहित तथा प्रतिष्ठापूर्वक शिवलिंगक स्थापना करब।

भविष्यपुराणमे लिंगस्थापनाक फल :—

जे व्यक्ति विधिपूर्वक तथा दक्षिणापुरस्सर एक लिंगक स्थापना करैत अछि, ओ सभ शास्त्र-समर्थित करोड़ो-करोड़ गुणा पुण्य प्राप्त करैत अछि। जाहिसँ ओ मातृकुल, पितृकुल तथा श्वसुरकुलक एक्कैस (२१) पीढ़ीकेँ उद्धार कय शिवलोकमे वास करैत अछि तथा प्रचुर भोग भोगि मृत्युक उपरान्त ज्ञान-योगक माध्यममे ओहिमे युक्त भय जाइत अछि ॥९३४-९३६॥

आइ हम सभ शास्त्र द्वारा कथित करोड़ो-करोड़ गुणा फलक प्राप्ति तथा मातृक, पैतृक, श्वसुर कुलक एक्कैस (२१) पीढ़ीकेँ नरकसँ उद्धार कऽ शिवलोकमे निवास प्राप्त तथा पर्याप्त भोग भोगि कऽ प्रलय काल एलापर योग द्वारा ओहिमे मुक्त हेबाक कामनासँ भगवान शिवक लिंगक स्थापना करब।

विधि मत्स्य पुराणमे कहल गेल अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हयशीर्षपञ्चरात्रे अथ जीर्णायतनस्थापनफलं—

वापीकूपतडागानां सुरधाम्नां तथानघे ।
प्रतिमानां समानाञ्च समुद्धर्त्ता नरो भुवि ॥
पुण्यं शतगुणं तस्य भवेन्मूलान्न संशयः ॥९३७॥

अद्य शिवपुरकरणजन्यफलशतगुणफलप्राप्तिकामनया जीर्णशिवगृहोद्धार-महङ्करिष्ये ।

एवं जीर्णवाप्यादौ ।

भविष्ये[1] अथ शिवक्षेत्रे वाप्यादिकरणस्य—

यः कुर्य्याद्दीर्घिकां वापीं कूपं वापि शिवालये ।
त्रिसप्तकुलसंयुक्तः शिवलोके महीयते ॥९३८॥

अद्यैकविंशतिकुलयुतात्मीयशिवलोकमहितत्वकामः शिवालयसमीपे वापीवास्तु-कर्म्माहङ्करिष्ये ।

एवं कूपादौ ।

अथ शिवलिंगसमीपस्थनद्यादौ स्नानफलम्

लिंगपुराणे—

शिवलिङ्गसमीपस्था नद्यः सर्वा द्विजोत्तमाः ।
वापीकूपतडागाश्च शिवतीर्थमिति स्मृताः ॥
गंगास्नानसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥९३९॥

अद्य गंगास्नानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामः शिवलिङ्गसमीपस्थनद्यां स्नान-महङ्करिष्ये ।

शिवलिङ्गसमीपस्थवापीकूपतडागस्नानेप्येतदेवफलम् ।

---

१ ने० पा०, पृ० २४, नहि अस्ति ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हयशीर्ष पंचरात्रमे कहल गेल जीर्ण (शिव) भवनक उद्धारक फलः—

हे पवित्र चरित्रवाली ! छोट जलाशय, इनार, सरोवर, देवालय, देवक प्रतिमा तथा सभास्थल समुद्धार कयनिहार मनुष्य एहि संसारमे ओहि-ओहि वस्तुक मूल निर्माणक अपेक्षा निस्सन्देह सए गुणा अधिक फल प्राप्त करैत अछि ॥९३७॥

आइ हम शिवक नगर निर्माण जन्य फलक अपेक्षा सए गुणा फल प्राप्तिक कामनासँ जीर्ण शिवक घरकेँ उद्धार करब।

एहि तरहेँ जीर्ण वापी आदिमे (फलादि होइत अछि)।

एकर पश्चात् भविष्य पुराणमे शिवक्षेत्रमे वापी आदि खुनेबाक फल :—

जे व्यक्ति शिवालयमे पोखरि, छोट सरोवर अथवा कूप खुनबैत अछि, ओ (अपन) एक्कैस (२१) कुलक संग शिवलोकमे वास करैत अछि ॥९३८॥

आइ हम अपन एक्कैस कुल सहित शिवलोकमे वास करबाक कामनासँ शिवालयक निकट वापी आदि वास्तु कर्म करब।

एहिना कूपादिक विषयमे फल होइत अछि।

शिवलिंगक समीपस्थ नदी आदिमे स्नानक फल

लिंगपुराणमे—

हे श्रेष्ठ ब्राह्मण लोकनि ! शिवलिंगक समीपवर्त्ती सभ नदी, वापी, कूप तथा पोखरि शिवतीर्थ बूझल जाइत अछि। एहि सभमे स्नान कयने मनुष्य निसन्देह गंगा-स्नान सदृश पुण्य प्राप्त करैत अछि ॥९३९॥

आइ हम गंगास्नान कयलासँ प्राप्त पुण्यक समान पुण्य लाभक कामनासँ शिवलिंगक निकटवर्ती नदीमे स्नान करब।

शिवलिंग समपस्थ वापी, कूप, तडागमे स्नान कयनहुँ इएह फल भेटैत अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवसमीपस्थप्रस्रवणस्नानस्य—

त्रिश्च प्रस्रवणे स्दात्वा शिवतीर्थे ःसकृन्नरः ।
शिवसायुज्यमाप्नोति नात्रकार्य्या विचारणा ॥९४०॥

अद्य शिवसायुज्यप्राप्तिकामनया शिवलिङ्गसमीपस्थप्रस्रवणे त्रिःस्नानमहङ्करिष्ये।

शिवधर्म्मे शिवपुरोवर्त्तिक्षेत्रस्थजलस्नाने—

शिवक्षेत्रसमीपस्थं यत्तोयं पुरतः थितम् ।
शिवगङ्गेति विज्ञेयं तत्र स्नात्वा दिवंव्रजेत् ॥९४१॥

अद्य स्वर्गप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य पुरःस्थिताम्भःशिवगङ्गायां स्नानमहङ्करिष्ये ।

अथ भूतिस्नानम्

शिवधर्म्मे—

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
तत्पुण्यं लभते सर्वं भस्मस्नानान्न संशयः ॥९४२॥

अद्य सर्वतीर्थसेवनजन्यपुण्यं सर्वयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भस्मस्नानमहङ्करिष्ये ।

अथवा

भस्मस्नानं निषेवेत मुच्यते सर्वपातकै ।

अद्य सर्वपातकविमुक्तिकामो भस्मस्नानमहङ्करिष्ये ।

नित्यं भूतिस्नानस्य—

यः स्नानमाचरेन्नित्यमाग्नेयं विजितेन्द्रियः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य स गच्छेत् परमां गतिम् ॥९४३॥

आग्नेयं भस्मस्नानम् ।

अद्य प्रत्यहमेकविंशतिकुलनरकोत्तारणपूर्वकपरमगतिप्राप्तिकामनया भस्मस्नानमहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवनिकटस्थ झरनामे स्नानक फल :—

जे केओ मानव एको खेप शिवतीर्थक समीपस्थ झरनामे तीन बेर स्नात कए लैत अछि, ओ शिव-सायुज्यकें प्राप्त करैत अछि, एहिमे कोनो सन्देह नहि ॥९४०॥

आइ हम शिव-सामुज्य प्राप्तिक कामनासँ शिवलिंग समीपवर्त्ती झरनामे तीन बेर स्नान करब ।

शिवधर्ममे शिवक आगांमे स्थित क्षेत्रमे विद्यमान जलस्नानमे फल :—

शिवक्षेत्रक निकटस्थ आगांमे विद्यमान जलकें शिवगंगाक जल बूझक चाही । ओहिमे स्नान कय लोक स्वर्ग जाइत अछि ॥९४१॥

आइ हम स्वर्ग-प्राप्तिक कामनासँ भगवान शिवक समीपवर्त्ती शिवगंगाक जलमे स्नान करब ।

भस्मस्नानक फल

शिवधर्ममे—

सभ तीर्थमे जे पुण्य तथा सभ यज्ञमे जे फल होइत छैक ओ सभ पुण्य (मानव) भस्मस्नानसँ प्राप्त करैत अछि । एहिमे सन्देह नहि ॥९४२॥

आइ हम सभ तीर्थ-सेवनसँ उत्पन्न पुण्य तथा सभ यज्ञक अनुष्ठानसँ प्राप्त फलक समान फल प्रात्तिक कामनासँ भस्म स्नान करब ।

अथवा

भस्मस्नान कयलासँ सभ प्रकारक पापसँ मुक्त भय जाइत अछि ।

प्रतिदिन भस्मस्नानक फल :—

प्रतिदिन आग्नेय (भस्म) स्नान कयनिहार जितेन्द्रिय व्यक्ति एक्कैस (२१) कुलक उद्धार कय परम गति प्राप्त करैत अछि ॥९४३॥

आग्नेय = भस्म स्नान ।

आइ हम एक्कैस कुल कें नरकसँ उद्धारपूर्वक परम गति प्राप्तिक कामनासँ प्रत्यह भस्मस्नान करब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूतित्रिपुण्ड्रस्य—

सितेन भस्मना कुर्य्याल्ललाटे यस्त्रिपुण्ड्रकम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवेन सह मोदते ॥९४४॥

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तत्वशिवेन सह हर्षकामनया ललाटे भस्मना त्रिपुण्ड्रकमहङ्करिष्ये ।

लिङ्गपुराणे—

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया ।
पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः ॥
तस्मान्मृदापि कर्त्तव्यं ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम् ॥९४५॥

अथ तपस्विपूजाफलम्

नन्दिकेश्वरे—

व्रतोपवासदानानि तपस्तीर्थफलानि च ।
सम्पूर्णानि लभेद्भक्त्या सम्पूज्य शिवयोगिनम् ॥९४६॥

शिवधर्म्मोत्तरे—

द्विजानां वेदविदुषां कोटिं सम्भोज्य यत्फलम् ।
तत्फलं कोटिगुणितं सम्भोज्य शिवयोगिनम् ॥९४७॥

अद्य कोटिगुणवेदविद्ब्राह्मणकोटिभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवयोगिनमहम्भोजयिष्यामि ।

श्राद्धादिषु शिवयोगिभोजने—

शिवभक्तं नरं भक्त्या यः श्राद्धादिषु भोजयेत् ।
सकलं कुलमुद्धृत्य शिवलोकं स गच्छति ॥९४८॥

अद्य सकलकुलोद्धारणपूर्वकशिवलोकगमनकामः श्राद्धे व्रते वा शिवयोगिमहं भोजयिष्यामि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भस्मसँ त्रिपुण्ड्र करबाक फल :—

जे व्यक्ति उज्जर भस्मसँ कपाड़मे त्रिपुण्ड्र करैत अछि, से सब पापसँ विमुक्त भए शिवक संग आनन्द लाभ करैत अछि ॥९४४॥

आइ हम सभ पापसँ निवृत्ति तथा शिवक संग आनन्द लाभक कामनासँ ललाटमे भस्मसँ त्रिपुण्ड करब ।

लिंगपुराणमे :—

भस्मक त्रिपुण्ड कयने बिना तथा रुद्राक्षक माला धारण कयने बिना जे व्यक्ति शिवक पूजा करैत अछि, ओकरा पूजित महादेव फलप्रद नहि होइत छथिन । तेँ हेतु कम-सँ-कम माटियोसँ कपाड़मे त्रिपुण्ड करबाक चाही ॥९४५॥

आब तपस्वीक पूजाक फल

नन्दिकेश्वरमे—

मनुष्य (भक्तिपूर्वक) शैव योगीक पूजा कय व्रत, उपवास, दान, तपस्या तथा तीर्थक समस्त फल प्राप्त करैत अछि ।९४८।

शिवधर्मोत्तर मे —

वेदविद् करोड़ ब्राह्मणकेँ भोजन करौलासँ जतेक फल होइत छैक ओकर करोड़ गुणा अधिक फल शैव योगीकेँ भोजन करौलासँ होइत छैक ॥९४७॥

आइ हम वेद जननिहार करोड़ ब्राह्मण-भोजनसँ प्राप्त फलक अपेक्षा करोड़ गुणा अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ शैव तपस्वीकेँ भोजन करायब ।

श्राद्ध आदिमे शैव योगीकेँ भोजन करौने फल—

जे व्यक्ति श्राद्ध आदिमे भक्तिपूर्वक शिवभक्त लोककेँ भोजन करबैत अछि, ओ समस्त कुलकेँ उद्धार कय शिवलोक जाइत अछि ॥९४८॥

आइ हम समस्त कुलक उद्धार-पूर्वक शिवलोक-प्राप्तिक कामनासँ श्राद्ध-व्रत मे शैव योगीकेँ भोजन करायब ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बृहन्नन्दिकेश्वरे शिवयोगिने दानस्य—

विप्रे दशगुणं दानं श्रोत्रिये शतधा भवेत् ।
सहस्रगुणमाचार्य्ये अनन्तं शिवयोगिने ।९४९॥

अद्यैतद्द्रव्यदानजन्यानन्तफलप्राप्तिकामनया इदममुकं विष्णुदैवतं शिवयोगिने तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

अमावास्याकालीनतपस्विब्राह्मणसंप्रदानकदाने—

अमावास्यामनुप्राप्य ब्राह्मणाय तपस्विने ।
यत्किञ्चिद्देवदेवेशं दद्यादुद्दिश्य शङ्करम् ॥९५०॥

प्रीयतामीश्वरः सोमो महादेवः सनातनः ।
सप्तजन्मकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥९५१॥

अद्यामावास्यायां सप्तजन्मकृतपापतात्कालिकपापक्षयकामनया इदं वस्तु यथा दैवतं भगवन्तं शङ्करमुद्दिश्य तपस्विने ब्राह्मणायामुकशर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ओं स्वस्तीति प्रत्युक्ते—प्रीयतामीश्वरः सोमोमहादेवः सनातनइति पठेत् ।

शैवे कृष्णाष्टम्यां दानस्य—

कृष्णाष्टम्यां विशेषेण धार्मिकाय द्विजातये ।
स्नात्वाभ्यर्च्य यथान्यायं पादप्रक्षालनादिभिः ॥९५२॥

प्रीयतां मे महादेवो दद्याद्द्रव्यं स्वकीयकम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ॥९५३॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां सर्वपापविनिर्मुक्तिपरमपदप्राप्तिकाम इदं द्रव्यममुकदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रीयतां मे महादेव इति पठित्वा दद्यात् ।

स्वस्तीत्युक्ते दक्षिणा च देया ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बृहन्नन्दिकेश्वरमे शिवयोगीकें दानक फल—

ब्राह्मणकें दान देने दस गुणा तथा श्रोत्रिय (वेदविद्) कें दान देने सए गुणा, आचार्यकें दान देने एक हजार गुणा तथा शैव योगीकें दान देने अनन्त फल प्राप्त होइत अछि। ९४९-९५०॥

आइ हम एहि द्रव्यक दानसँ प्राप्त भेनिहार अनन्त फलक प्राप्तिक-कानमासँ विष्णु अधिष्ठित ई द्रव्य अहाँ शिव योगीकें दान दैत छी।

अमावस्यामे तपस्वी ब्राह्मणकें देल गेल दानक फल—

अमावस्या तिथिमे महादेव शंकरक निमित्ते तपस्वी ब्राह्मणकें "प्रीयतामीश्वरः सोमो महादेवः सनातनः" अर्थात् साक्षात् सोम महादेव प्रसन्न होथु—एकर पाठ पूर्वक दान देल जाय तँ ओही क्षण सात जन्ममे कयल गेल पाप नष्ट भय जाइत छैक ॥९५१-९५३॥

आइ हम अमावस्यामे सात जन्ममे कयल गेल पापक तत्क्षण निवारणक कामनासँ सम्बद्ध देवतासँ अधिष्ठित ई वस्तु भगवान शंकरक निमित्ते अमुकशर्मा तपस्वी ब्राह्मणकें दैत छी। "ॐ स्वति" ई कहला पर 'प्रीयतामीश्वरः सोमो महादेवः सनातनः' एकर पाठ करी।

शैवमे कृष्णपक्षक अष्टमीमे दानक फल—

खास कऽ कऽ कृष्णपक्षक अष्टमी मे स्नान पूजा कय धार्मिक ब्राह्मणक चरण-प्रक्षालन आदिसँ यथाविधि पूजा कय अपन वस्तु "प्रीयतां मे महादेवः" ई पढ़ि अपन वस्तु दान स्वरूप दियैक। (एहिसँ) दानी व्यक्ति सभ पापसँ मुक्त भय परम पद प्राप्त करैत अछि ॥९५३॥

आइ हम कृष्णाष्टमी मे सभ पापक निवारण तथा परम पद प्राप्तिक कामनासँ अमुक देवतासँ अधिष्ठित ई वस्तु अमुक गोत्रक ब्राह्मण अहाँकें दान दैत छी।

"प्रीयतां मे महादेवः" ई पढ़ि दान दियैक। "स्वस्ति" कहला पर दक्षिणो देबाक चाही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवयोगी शिवज्ञानी शिवधर्म्मरतश्च यः ।
इत्येतत्त्रिविधं ज्ञेयं शिवपात्रस्य लक्षणम् ॥९५४-९५५॥

अथ वर्ज्जनीयानि—

हिंसा परकलत्रञ्च निष्ठुरामनृतां गिरम् ।
स्तेयं केशवनिन्दाञ्च शिवभक्तो विवर्ज्जयेत् ॥९५६॥

लैङ्गे—

परात्परतरं यान्ति नारायणपरायणाः ।
न ते तत्र गमिष्यन्ति ये दुषन्ति महेश्वरम्[1] ॥९५७॥

यश्चाभ्यसूयते देवं कारणात्मानमीश्वरम् ।
स कृत्स्नं नरकं याति सहपूर्वैस्सहानुजैः ॥९५८॥

यो लिंगं द्वेष्टि सम्मोहात् सर्वदेवनमस्कृतम् ।
नरो नरकगामी स्यात्तस्य सम्भाषणादपि ॥९५९॥

शिवधर्म्मे—

न शिवं शिवशास्त्रञ्च शिवाग्नि साधकं गुरुम् ।
निन्दितुलंङ्घयेच्चापिच्छायामपि कदाचन ॥९६०॥

मूर्त्तयो याः शिवस्याष्टौ तासु निन्दां विवर्ज्जयेत् ।
गुरौ च शिवभक्तेषु नृपसाधुतपस्विषु ॥९६१॥

---

१ ने० पा०, पृ० २५, महेश्वरे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवयोगी, शिवक विषयमे विशेष ज्ञान रखनिहार तथा शैव धर्ममे रत शिवपालक ई तीन प्रकारक लक्षण बुझबाक थिक ॥९५४-९५५॥

एकर बाद त्याज्य विषय

शिव-भक्तकेँ हिंसा, परस्त्री, कठोर तथा असत्यवाणी, चोरी एवं विष्णुक निन्दा छोड़ि देबाक चाही ॥९५६॥

लिंगपुराणमे—

नारायणक भक्त लोकनि परमोत्कृष्ट पदकेँ प्राप्त करैत छथि, किन्तु जे महेश्वरसँ द्वेष करैत छथि ओ ओहि पदकेँ नहि प्राप्त करैत छथि ॥९५७॥

जे व्यक्ति कारणस्वरूप (विश्वक) कारणभूत देवदेव महादेवक निन्दा करैत अछि, ओ अपन पूर्वज तथा भावी पीढीक संग घोर नरकमे जाइत अछि ॥९५८॥

जे मानव मोहमे पड़ि सब देवताक नमस्य लिंगकेँ द्वेष करैत अछि, ओहि व्यक्तिसँ सम्भाषणो कयने मनुष्य नरकगामी होइत अछि ॥९५९॥

शिवधर्ममे—

जे व्यक्ति भगवान शिव, शिवशास्त्र, शिवाग्नि तथा शिवक उपासक गुरुक निन्दा करैत अछि, ओकर छायोक लंघन कथमपि नहि करी ॥९६०॥

शिवक आठहु मूर्तियोक निन्दा नहि करबाक चाही तथा गुरु, शिवभक्त, राजा; साधु एवं तपस्वियोक निन्दा वर्ज्य थीक ॥९६१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालोत्तरे—

देवद्रव्यं गुरुद्रव्यं नचात्मनि नियोजयेत् ।
उपेक्षा चाथवा दानं रक्षितव्यं प्रयत्नतः ॥९६२॥

श्रीरामायणे—

ब्राह्मणद्रव्यमादत्ते देवानाञ्चापि राघव ।
सद्यः पतति घोरेऽस्मिन्नरकेऽवीचिसंप्लवे ॥९६३॥

स्वयं देवस्य हरणं काष्ठपात्रेण पूजनम् ।
स्थापनं वेत्रपात्रेषु त्रयं दारिद्र्यकारणम् ॥९६४॥

शिवपुराणे—

यस्तु शङ्करनिर्म्माल्यं पादेनाक्रमते नरः ।
षष्टिवर्षसाहस्राणि तिर्य्यग्योनिषु जायते ॥९६५॥

स्कन्दपुराणे—

निर्म्माल्यं नतु यो भक्त्या[1] शिरसा धारयिष्यते ।
अशुचिर्भिन्नमर्य्यादो नरः पापसमन्वितः ॥९६६॥

नरके पच्यते घोरे तिर्य्यग्योनौ च सम्भवेत् ।
ब्रह्महापि शुचिर्भूत्वा निर्म्माल्यं यस्तु धारयेत् ॥
तस्य पापं महच्छीघ्रं नाशयिष्ये महाव्रते ॥९६७॥

---

१ ने० पा०, पृ० २५, निर्म्माल्यं हि तु यो भक्त्या ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालोत्तरमे—

देव-द्रव्य तथा गुरु द्रव्यक उपयोग स्वयं नहि करी। ने एकर उपेक्षा करी अथवा ने दानमे दी प्रत्युत प्रयत्नपूर्वक रक्षा करबाक चाही ॥९६२॥

श्रीरामायणमे—

हे राघव ! जे व्यक्ति ब्राह्मण तथा देवताक धन लैत अछि ओ भयंकर तरंगसँ तरंगित घोर नरकमे खसैत अछि ॥९६३॥

स्वयं देवता (देव-प्रतिमा)क अपहरण, काठक पाठसँ पूजन तथा बेंतक पात्र मे राखब—ई तीनू दरिद्रताक लक्षण थिक ॥९६४॥

शिवपुराणमे—

जे व्यक्ति शंकरक निर्माल्यकेँ पैरसँ नँघैं अछि, ओ व्यक्ति ६० हजार वर्ष धरि पशु-पक्षीक योनिमे उत्पन्न होइत अछि ॥९६५॥

स्कन्दपुराणमे—

जे शिवक निर्माल्यकेँ भक्तिपूर्वक माथ पर धारण नहि करैत अछि, ओ अपवित्र, मर्यादाहीन, पापयुक्त भय नरकमे कष्ट कटैत अछि आ तिर्यक् योनि अर्थात् पशु-पक्षीक योनिमे जन्म लैत अछि ॥९६६॥

जे शिवक निर्माल्यकेँ धारण करैत अछि, ओ ब्रह्महत्या कयनिहारो पवित्र भय जाइत अछि। ओकर सभ पापकेँ शिव शीघ्र नष्ट कय दैत छथि ॥९६७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्ये—

केतकीचातिमु[1]क्तश्च कुन्दोयूथी मदन्तिका ।
शिरीषसर्जबन्धूककुसुमानि विवर्ज्जयेत् ॥९६८॥

अङ्कोटपत्रकुसुमं करजेन्द्रतनूद्भवम् ।
वैभीतकानि पत्राणि कुसुमानि विवर्जयेत् ॥९६९॥

निर्गन्धीन्युग्रगन्धीनि कुसुमानि विवर्जयेत् ।
गन्धवन्त्यपवित्राणि यानि तान्यपि वर्जयेत् ॥९७०॥

गन्धहीनमपिग्राह्यं पवित्रं यत् कुशादिकम् ।
केशकीटापविद्धानि जीर्णपर्युषितानि च ॥९७१॥

स्वयंपतितपुष्पाणि त्यजेदुपहतानि च ।
मुकुलैर्नार्चयेद्देवपक्वं न निवेदयेत् ॥
फलं क्वथितबिल्वं च यत्नात् पक्वमपि त्यजेत् ॥९७२॥

अतिमुक्तो माधवीमदन्तिका यूथ्यनुकारिणी गौड़े प्रसिद्धा । इन्द्रतरुः सिन्धुवारः । अपवित्राणि नीलीकपित्थादिकुसुमानि । क्वथितं स्विन्नं-विद्धं कीटकेन । यत्नात् पक्वम् अनलादियोगेन पक्वम् ।

क्वथितं कीटविद्धं पक्वमपिफलं यत्नात्त्यजेदिति केनचित् ।

लिङ्गपुराणे—

सर्जबन्धूकपुष्पाणि कुन्दोयूथीमदन्तिका ।
केतकीचातिमुक्तञ्च श्वेता चैवापराजिता ॥
घोषिका श्वेतरक्ताच तथा भण्टिकपुष्पकम् ॥९७३॥

पूजयित्वा तथापुष्पैरेभिश्चैव नरः सदा ॥
अवीचिनरके पापः पतेदेव न संशयः ॥९७४॥

---

१ ने० पा०, पृष्ट २५, अतिमुक्ताश्च ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भविष्यपुराणमे—

केतकी, अतिमुक्तक (माधवी) कुन्द, जूही, मदन्तिका, शिरीष, सर्ज, बन्धूक शिवक पूजामे त्याज्य थिक ॥९६८॥

अंकोटक पत्र तथा पुष्प करज तथा इन्द्रतरुसँ उत्पन्न बिभितक (बहेड़)क पात तथा फूल विवर्जित अछि ॥९६९॥

गन्ध-रहित तथा उत्कट गंधवला फूल त्याज्य थिक। सुगन्धितो फूल जँ अपवित्र रहय तँ ओहो त्याज्य थिक ॥९७०॥

पवित्र कुश आदि गन्धहीन रहलहुँ पर ग्राह्य थिक। केश तथा कीड़ा-मकोड़ासँ पर्युषित, सुखायल, वाइस, स्वयं खसल तथा मौलायल फूल कें पूजामे छोड़ि देबाक चाही। कलीसँ शिवक पूजा नहि करी आ ने कांच फल आदि हुनका चढ़ावी। कीड़ासँ विद्ध तथा यत्नपुरस्सर पाकाओल बिल्व अथवा अन्य फल शिवकें नहि चढ़ावी ॥९७१-९७२॥

अतिमुक्तोमाधवी। मदन्तिकाजूही सनक गौड़मे प्रसिद्ध फूल। इन्द्रतरुसिघुवार अर्थात् (सिनुआइर)। नीली तथा कपित्थ (कऽथकफूल) अपवित्र अछि। क्वथितं स्विन्नं धूकलगलल, विद्धं कीटसँ विद्ध कयल यत्नात् पक्वम्-आगि आदिक योग आदि यत्नसँ पकाओल एवं कीड़ाक मारल पकलो फल त्यात्य थिक ई केओ कहलनि अछि।

लिंगपुराणमे—

सर्ज (विजयसार), बन्धूक, कुन्द, जूही मदन्तिका, केतिकी; अतिमुक्तक, श्वेत अपराजिता, श्वेत आ रक्त घोषिका, आ भण्टिकक फूल—एहि फूल सभसँ पूजा कयनिहार व्यक्ति सतत अवीचि नरकमे खसैत अछि। एहिमे कोनो सन्देह नहि ॥९७३-९७४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उमासंवादे—

कपित्थं केतकीपुष्पं नाकुली काष्ठपाटला ।
निम्बपुष्पं करञ्जञ्च धातकीपुष्पमेव च ॥९७५॥

शिरीषं कृष्णलापुष्पमतिमुक्तञ्च वर्ज्जयेत् ।
यानि कण्टककीर्णानि यानि चोपहतानि च ॥९७६॥

शीर्णानि फललग्नानि कलिकापतितानि च ॥९७७॥

नाकुली रास्ना कृष्णला = गुंजा ।

पुष्पाध्याये—

निर्गन्धीन्युग्रगन्धीनि यत्ती[1]र्थानि वं तथा ।
वारितत्रोटितान्येव वर्ज्जयेदमरार्च्चने ॥९७८॥

बलाद्दत्तानि पुष्पाणि याचितानि वनानि च ।
अशुच्यत्पादितान्येव वर्जयेदमरार्च्चने ॥९७९॥

वामहस्ते धृतं पुष्पमधोवस्त्रधृतं तथा ।
पुष्पहस्तनमस्कारे[2] पुष्पाणि परिवर्ज्जयेत् ॥९८०॥

लैङ्गे—

शयनोत्तरमारभ्य फाल्गुनान्तं न कारयेत् ।
यस्तु कुर्य्याद्विमाहेन पूजां दमनकेन च ॥
अविच्यां रौरवे वासो भवेत्तस्य न संशयः ॥९८१॥

पुष्पनिषेधस्तु फलविशेषाद्विहित[3]कर्त्तव्यपूजातिरिक्तपूजायां बोद्धव्यः ।

---

१ ने० पा०, पृ० २६, क्रयक्रीतानि, यानि तीर्थानि शुद्ध पाठ ।

२ वैह, पुष्पहस्तेनमस्कार ।

३ वैह, अशुद्धपाठ अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उमासंवादमे—

कपित्थ (कथ), केतिकी पुष्प, नाकुली, काष्ठपाटल, निम्बपुष्प, करञ्ज (कर्जनी), धातकी फूल, शिरीष, कृष्णपला पुष्प तथा अतिमुक्त शिव-पूजामे वर्जनीय थीक एवं कंटकमय, नोचल, खसल, फलमे लागल तथा कोंढ़िये में खसल (फूल) शिवक पूजामे त्यात्य थिक ।।१७५-१७७।।

नकुलीरास्वा। कृष्णला गुंजा।

पुष्पाध्यायमे—

देवपूजामे गन्धरहित, अत्यधिक गन्धवला, तीर्थप्रदत्त तथा मना केलापर ताड़ल फूल देवोक पूजनमे ताज्य थिक ।।१७८।।

बलपूर्वक देल गेल, माँगल, वनसँ लायल गेल; अपवित्र स्थान पर खसल, वाम हाथमे राखल अथवा अधोवस्त्रमे धयल गेल तथा फूलक हाथे ककरहु नमस्कार केलापर ओ फूल वर्जनीय थिक ।।१७९-१८०।।

लिङ्गपुराणमे—

शयनोत्तर (हरिशयनी आषाढ़ शुक्ल एकादशी)सँ लऽ कऽ फाल्गुन पर्यन्त दमनक फूलसँ शिवक पूजा नहि करक चाही । जे व्यक्ति अज्ञानवश उक्त अवधिमे दमनक फूलसँ शिवक पूजा करैत अछि ओ जवीचि रौरव नरकमे वास करैत अछि। एहिमे सन्देह नहि ।।१८१।।

फल-विशेष प्राप्त करबाक हेतु जे पूजा विहित अछि, ओहिसँ अतिरिक्त पूजामे ई उपर्युक्त पुष्प-निषेध होइत अछि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालोत्तरे—

नमेरुपत्रैश्च फलैस्तथा कुङ्कुमकेसरैः ।
सुगन्धिपुष्पैर्यत्नेन स्थलपद्मैर्विशेषतः ॥१८२॥

नैषां पर्य्युषितत्वं हि स्थितौ संवत्सरावधि ।
पद्मानि सितरक्तानि कुसुमान्युत्पलानि च ॥१८३॥

अपर्य्युषितान्येतानि पुन्नागं बिल्वपत्रिका ।
एषां पर्य्युषिताशङ्का कार्य्या पञ्चदिनोर्द्ध्वतः ॥१८४॥

शैवे—

दिने दिने तु दातव्व शोधयित्वा वकं पुनः ।
सप्तरात्रमतिक्रम्य निर्म्मालत्वं प्रपद्यते ॥१८५॥

स्कान्दे—

वकपुष्पञ्च षण्मासान्निर्म्माल्यत्वं न गच्छति ।

तथा—

पद्मानि मृदुगन्धीनि सदाभीष्टानि शूलिनः ॥
शुष्काण्यपि च पत्राणि श्रीवृक्षस्य सदैव हि ॥१८६॥

---

१ ने० पा०, पृ० २६कुमुदानि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालोत्तरमे—

नमेरुक पात तथा फल, कुङ्कुम तथा केशर, सुगन्धित फूल आ खास कय स्थल कमलसँ (पूजा करबाक चाही) ।।९८२।।

ई फूल सभ एको वर्ष धरि रहने वासि नहि होइत अछि ।

श्वेत एवं रक्त कमल, नील कमल पुन्नाग तथा वेलपात ई सभ बाइस नहि होइत अछि। एहि सभमे पाँच दिनक बाद वाइस होयबाक शंका करक चाही ।।९८३-९८४।।

शिवपुराणमे—

प्रतिदिन शुद्ध कय वक (अगस्त्य)क पुष्प चढ़ेबाक चाही। (ई फूल) सात रातिक उरपान्त निर्माल्य भय जाइत अछि ।।९८५।।

स्कन्दपुराणमे--

वक, (अगस्त्य)क पुष्प छ मास धरि निर्माल्य नहि होइत अछि ।

तथा

मधुरगन्ध युक्त कमलक फूल भगवान शंकरकेँ सदा प्रिय छन्हि, तहिना श्रीवृक्ष (वेल)क सुखायलो पात सतत (शंकरकेँ प्रिय होइत छनि ।।९८६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ शिवे विहितपुष्पाणि

भविष्यपुराणे

करवीरो वकश्चैव अर्कं उन्मत्तकस्तथा ।
पाटला बृहतीचैव तथैव गिरिकर्णिका ॥९८७॥

तथा कामस्य[1] पुष्पाणि मन्दारश्चापराजिता ।
शमीपुष्पाणि चान्यानि कुब्जकं शिखीनी[2] तथा ॥९८८॥

अपामार्गस्तथा पद्मं जातीपुष्पं सवोकनम्[3] ।
चम्पकोशीरतगरं तथा वै नागकेसरम् ॥९८९॥

पुन्नागं किङ्किरातश्च द्रोणपुष्पं तथा शुभम् ।
शिंशपोदुम्बरश्चैव जया मल्ली तथैव च ॥९९०॥

पुष्पाणि यज्ञवृक्षस्य तथा विल्वः प्रियः शुभे ।
कुसुम्भस्य च पुष्पाणि तथा वै कुंकुमस्य च ॥९९१॥

नीलञ्च कुमुदश्चैव तथा रक्तोत्पलानि च ।
अम्लानञ्च लवङ्गञ्च करुणं वकुलं तथा ॥९९२॥

सुरभीणि च सर्वाणि स्थलजान्यम्बुजानि च ।
गृह्णामि शिरसा देवि योमे भक्त्या निवेदयेत् ॥९९३॥

"उन्मत्तको धुस्तूरकः । गिरिकर्णिका कुब्जम् । शिखिनी चुलिया । वोकनं मोकनम् । उशीरं वीरणपुष्पम् । पुन्नागं पुनाल इतिप्रसिद्धम् । किङ्किरातः कुरुण्टकपुष्पम् । जया जयन्ती । यज्ञवृक्षः किंशुकः । नीलं नीलोत्पलम् ।

---

१ ने० पा० पृ० २६, काशस्य ।

२ वैह, शिथिली ।

३ वैह, समोकनम् ।

४ शिथिली ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब भविष्यपुराणमे शिवपूजामे विहित पुष्पक विषयमे

हे शिवे ! करवीर, वक, अर्क (अ'क) उन्मत्तक (धथूर), पाटला, बृहती, गिरिकर्णिका, कामपुष्प (अरविन्द, अशोक, आम्र), मन्दार, अपराजिता, शमी पुष्प, कुब्जक, शिखिनी, अपामार्ग (चिरचिरी), पद्म, जाती पुष्प, वोकन, चम्पक; वीरणपुष्प, तगर, नागकेशर, पुन्नाग, किङ्किरात, द्रोण पुष्प, शिंशपा, उदुम्बर, जया, मल्लिका, किंशुक पुष्प, वेलपत्र, कसुमफूल कुंकुमक पुष्प, नीलोत्पल, कुमुद, रक्तकमल, अम्लान करूण, वकुल, सभ प्रकारक सुरभित स्थल एवं जलक कमल भक्तिपूर्वक जे हमरा अर्पित करैत अछि, ओकरा हम मस्तकसँ स्वीकार करैत छियैक ।।९८७-९९३।।

उन्मत्त = धथूर । गिरिकर्णिका = कुटज । शिखिनी = चुलिया । वोकानम = वोकन । उशीर = वीरणफूल । पुन्नाग = पुनाल नामे प्रसिद्ध अछि । किङ्किरात = कुरूण्टक पुष्प । जया = जयन्ती । यज्ञवृक्ष = किंशुक । नीलम् = नीलोत्पल अर्थात् नीलकमल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवरहस्ये—]

अजङ्गलरुहैः पुष्पैः शण[1]पुष्पैस्तथैव च ।
जयादाड़िमचित्रैश्च नागकेशरचम्पकैः ॥९९४॥
चूतपुष्पैश्च रक्तैश्च तथा रक्तोत्पलैरपि ।
रक्तपुष्पैः[2] कुसुमैश्च कक्कोलैः कोकिलाक्षकैः ॥९९५॥
किङ्किरातस्य पुष्पेण तथा कुष्माण्ड[3]सम्भवैः ।
कुब्जकस्य च पुष्पेण शङ्खपुष्पकपुष्पकैः ॥९९६॥
भूमिचम्पकपुष्पेण पुष्पेण कुटजैस्तथा ।
पद्मेन्दीवरकुमुदैस्तथा सौगन्धिकेन च ॥९९७॥
घण्टारवस्य पुष्पेण गन्धवत्तगरेण च ।
कृष्णापराजितापुष्पै राजपट्टिकपुष्पकैः ॥९९८॥
सर्वदा च प्रवालेन तथा नीलकुरुण्टकैः ।
पीतिकाकरवीरैश्च नेपालीपाटलेन च ॥९९९॥
केसरैर्वञ्जुलेनाथ तिलकेन तथैव च ।
मल्लिकाभिश्च सर्वाभिः शतपत्रिकयापि च ॥१०००॥
मालतीकुसुमेनाथ लवङ्गेनाथ सर्वदा ।
दूर्वा[4]रुकुसुमैश्चाश्चापि जयन्तीकुसुमेन च ॥१००१॥
कदम्बनीलपुन्नागतिलपुष्पैश्च सर्वदा ।
पूजयेत् सर्वदा देवं शङ्करं परमेश्वरम् ॥१००२॥

स्मृतिः—

कुसुमैः करवीराद्यैस्तमालतुलसीदलैः ।
रसालकिंशुकाशोकैर्दूर्वा[5]याञ्च प्रवालकैः ॥
शाद्वलैश्च सदा पूजा स्वभावेन सदाशिवे ॥१००३॥

---

१ ने० पा०, पृ० २७ शलपुष्पैः ।
२ रक्तद्यं ।
३ कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य ।
४ खारीक फूल ने० पा० अशुद्धपाठ । खीरा इति भाषायाम् ।
५ ने० पा०, पृ० २७, दुर्वायाश्च ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिवरहस्यमे—

वन्य प्रदेशमे नहि जनमल फूल, सनक फूल, जया, दाड़िम, चित्रक, नागकेशर, चम्पक, आमक मज्जर, लाल फूल, रक्त कमल, कुसुमक फूल, कक्कोल, कोकिलाक्ष, कुरूण्टक, कुम्हरक फूल, कुब्जकक फूल, शंख पुष्प, स्थल-चम्पक, कुटज, कमल, इन्दीवर, कुमुद, सौगन्धिक[1] घण्टारव सुगन्धित तग्गर, कारी अपराजिता, राजपट्टिक फूल, प्रवाल, नील कुरूण्टक, पीतिका, करवीर, नेपाली पाटल, केसर, वञ्जुल, तिलक, सभ प्रकारक मल्लिका, शतपत्रिक (शतदल कमल), मालती फूल, लवंग, दुर्वांल्क फूल, जयन्तीक फूल, कदम्ब, नीलोत्पल, पुन्नाग तिलक फूल—एहि सभ फूलसँ सतत परमेश्वर शंकरक पूजा करक चाही ॥९९४-१००२॥

स्मृतिमे—

करवीर आदि फूलसँ तमाल, तुलसी पात, आम, किंशुक, अशोक, प्रवाल, दूभि तथा शाद्वल (हरियरीसँ युक्त) वस्तु सभसँ शिवक सतत पूजा कएल जाइत अछि ॥१००४॥

१ साफ कुमुद; नील कमल।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरे—

सौगन्धिकं तथागस्तिसिद्ध[१]शेफालिकाज्र्जुनाः ।
तुलसीतुवरकक्कोलनागवञ्जुलसौरभाः ॥
नन्द्यावर्त्तकसम्पाकतिलकं नवमल्लिका ॥१००४॥

अथ पत्राणि

बिल्वपत्रं शमीपत्रं भृङ्गराजदलं तथा ।
अटरुषस्य पत्रञ्च पत्रं रुद्रजटस्य च ॥१००५॥
दमनस्य च पत्रञ्च पत्रं मरुवकस्य च ।
कर्प्पूरपत्रिकापत्रं पत्रं वर्वरमल्लिकम् ॥१००६॥
नागदमनपत्रं च पत्रं शिशुकचूलिकम् ।
तमालपत्रकुसुमैरुदुम्बरदलैस्तथा ॥१००७॥
गङ्गापत्रकपत्रञ्च पत्रं कह्लारकस्य च ।
जलकह्लारिकापत्रं पत्रं क्षेत्रमरुवकम् ॥१००८॥
कुशपत्रं सदा प्रोक्तं ग्रन्थिलं वकपत्रकम् ।
द्रोणापामार्गपत्रश्च पत्रं खदिरकस्य च ॥१००९॥
येषां पत्रैः सदा पूज्यस्तेषां पुष्पैश्च सर्वदा[२] ॥१०१०॥

इह विहितमात्रालाभे विहितनिषिद्धमुपादेयंनिषिद्धं सर्वथानुपादेयमेवेति ।
इति शैवसर्वस्वपूजाकोषः ।

अथ शिवव्रतफलम्

भविष्यपुराणे महाव्रतस्य—

चतुर्द्दश्यां तथाष्टम्यां पक्षयोः शुक्लकृष्णयोः ।
योऽब्दमेकं न भुञ्जीत शिवार्चनपरः शुचिः ॥१०११॥
यत्पुण्यमक्षयं प्रोक्तं सततं सत्रयाजिनाम् ।
तत्पुण्यं सकलं तस्य शिवलोकञ्च गच्छति ॥१०२१॥

---

१ ने० पा०, पृ० २७, विल्व
२ पुष्पचिन्तामणि, शिवे विहितपत्राणि लिङ्गपुराण पृ०, ९-१० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरमे—

सौगन्धिक, अगस्ति, सिद्धि, शेफालिका, अर्जुन, तुलसी, तुवरक, कक्कोल, नागवञ्जुल, सौरभ, नन्द्यावर्त्तक सम्पाक निसक एवं नवलिया पूजामे प्रशस्त थिक ॥१०४-१०५॥

आब पातक सम्बन्धमे कहल गेल अछि

बेलपात, शमीक पात, भृंगराजक पात, अटरूषक पात, रुद्रजटक पात, दमनक पात, मरुवक पात, कर्पूरपत्रिकाक पात, बर्बर मल्लिकाक पात, नागदमनक पात, शिशुक चूलिकाक पात, तमालक पात, उदुम्बरक पात, गंगापत्रक, जल स्थल कह्लारक पात. अरुवकक पात, कुशक पात, ग्रन्थिल (गेठदारु)क पात, द्रोणक पात, अपामार्गक पात, खैरक पात एवं जाहि वृक्षाक फूलसँ शिवक पूजा कयल जायत ओहि वृक्षाक पातोसँ सतत पूजा करवाक चाही १००६-१०१०

जाहि फूल आ' पात सभसँ पूजा विहित अछि ओ नहि भेटला उत्तर एहनो फूल आदिसँ सेहो पूजा करवाक चाही जे कतहु निषिद्ध भेला पर सेहो विहित अछि, मुदा जे सर्वथा निषिद्ध अछि, ओकरा पूजाक हेतु ग्रहण नहि करवाक चाही।

शैवसर्वस्व-पूजा कोष समाप्त (भेल)।

आब शिवक व्रतक फल कहल गेल अछि

भविष्यपुराणमे महाव्रतक (फल कहल गेल अछि)—

शुक्ल तथा कृष्णपक्षक अष्टमी आ' चतुर्दशीमे जे एक वर्ष लगातार उपवास कय पवित्र भय शिवक पूजा करैत अछि, ओ सत्रयाजी सभक सब अक्षय पुण्यकें प्राप्त कय शिवलोक जाइत अछि ॥१०११-१०१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरे—

सौगन्धिकं तथागस्तिसिद्ध[1]शेफालिकार्ज्जुनाः ।
तुलसीतुवरकक्कोलनागवञ्जुलसौरभाः ॥
नन्द्यावर्त्तकसम्पाकतिलकं नवमल्लिका ॥१००४॥

अथ पत्राणि

बिल्वपत्रं शमीपत्रं भृङ्गराजदलं तथा ।
अटरुषस्य पत्रञ्च पत्रं रुद्रजटस्य च ॥१००५॥
दमनस्य च पत्रञ्च पत्रं मरुवकस्य च ।
कर्प्पूरपत्रिकापत्रं पत्रं वर्वरमल्लिकम् ॥१००६॥
नागदमनपत्रं च पत्रं शिंशुकचूलिकम् ।
तमालपत्रकुसुमैरुदुम्बरदलैस्तथा ॥१००७॥
गङ्गापत्रकपत्रञ्च पत्रं कह्लारकस्य च ।
जलकह्लारिकापत्रं पत्रं क्षेत्रमरुवकम् ॥१००८॥
कुशपत्रं सदा प्रोक्तं ग्रन्थिलं वकपत्रकम् ।
द्रोणापामार्गपत्रञ्च पत्रं खदिरकस्य च ॥१००९॥
येषां पत्रैः सदा पूज्यस्तेषां पुष्पैश्च सर्वदा[2] ॥१०१०॥

इह विहितमात्रालाभे विहितनिषिद्धमुपादेयंनिषिद्धं सर्वथानुपादेयमेवेति ।
इति शैवसर्वस्वपूजाकोषः ।

अथ शिवव्रतफलम्

भविष्यपुराणे महाव्रतस्य—

चतुर्द्दश्यां तथाष्टम्यां पक्षयोः शुक्लकृष्णयोः ।
योऽब्दमेकं न भुञ्जीत शिवार्चनपरः शुचिः ॥१०११॥
यत्पुण्यमक्षयं प्रोक्तं सततं सत्रयाजिनाम् ।
तत्पुण्यं सकलं तस्य शिवलोकञ्च गच्छति ॥१०१२॥

---

१ ने० पा०, पृ० २७, बिल्व

२ पुष्पचिन्तामणि, शिवे विहितपत्राणि लिङ्गपुराण पृ०, ९-१० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दिकेश्वरमे--

सौगन्धिक, अगस्ति, सिद्धि, शेफालिका, अर्जुन, तुलसी, तुवरक; कक्कोल, नागवञ्जुल, सौरभ, नन्द्यावर्त्तक सम्पाक निसक एवं नवलिया पूजामे प्रशस्त थिक ॥१०४-१०५॥

आब पातक सम्बन्धमे कहल गेल अछि

बेलपात, शमीक पात, भृंगराजक पात, अटरूषक पात, रुद्रजटक पात, दमनक पात, मरुवक पात, कर्पूरपत्रिकाक पात, बर्बर मल्लिकाक पात, नागदमनक पात, शिशुक चूलिकाक पात, तमालक पात, उदुम्बरक पात, गंगापत्तक, जल स्थल कह्लारक पात. अरुबकक पात, कुशक पात, ग्रन्थिल (गेठदारु)क पात, द्रोणक पात, अपामार्गक पात, खैरक पात एवं जाहि वृक्षाक फूलसँ शिवक पूजा कयल जायत ओहि वृक्षक पातोसँ सतत पूजा करबाक चाही १००६-१०१०

जाहि फूल आ' पात सभसँ पूजा विहित अछि ओ नहि भेटला उत्तर एहनो फूल आदिसँ सेहो पूजा करबाक चाही जे कतहु निषिद्ध भेला पर सेहो विहित अछि, मुदा जे सर्वथा निषिद्ध अछि, ओकरा पूजाक हेतु ग्रहण नहि करबाक चाही।

शैवसर्वस्व-पूजा कोष समाप्त (भेल)।

आब शिवक व्रतक फल कहल गेल अछि

भविष्यपुराणमे महाव्रतक (फल कहल गेल अछि)—

शुक्ल तथा कृष्णपक्षक अष्टमी आ' चतुर्दशीमे जे एक वर्ष लगातार उपवास कय पवित्र भय शिवक पूजा करैत अछि, ओ सत्रयाजी सभक सब अक्षय पुण्यकें प्राप्त कय शिवलोक जाइत अछि ।।१०११-१०१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्रतपूर्वदिने स्नानादिना शरीरशुद्धिं विधाय निरामिषमेकवारं भुक्त्वा दन्तान् संशोध्य व्रतदिने प्रातः स्नात्वा सूर्य्योदये सुचिराचान्तो दर्भपाणिरुदङ्मुखो जानुभ्यामवनीं गत्वा वारिपूर्णं ताम्रपात्रमादाय भगवन् सूर्य्य भगवत्यो देवता अद्यादि वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशिप्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहमाचरिष्यामीति निवेद्य कुशतिल-जलपुष्पाण्यादाय अद्यादि सततबहुसत्रयाजित्वाक्षतपुण्यसमपुण्यप्राप्तिशिवलोकगमन-कामनया वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशिप्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

फाल्गुनशुक्लचतुर्द्दश्यामस्यारम्भः शिवार्च्चनमन्त्राङ्गम् ।

स्कन्दपुराणे महाव्रतस्य—

चतुर्द्दशीमष्टमीञ्च पक्षयोरुभयोरपि ।
अहोरात्रं क्षपेद्यस्तु संवत्सरमशेषतः ॥१०१३॥

स तेन कर्म्मणा युक्तः सर्वपापविवर्ज्जितः ।
न याति नरकं देवि यमञ्च स न पश्यति ॥१०१४॥

फाल्गुनकृष्ण[1]चतुर्द्दश्यां प्रातः स्नानादि विधाय पूर्ववन्निवेद्य अद्यादिसर्व-पापविवर्ज्जितत्वनरकगमनरहितत्वयमादर्शनकामनया वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशि-प्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

महाभारते महाव्रतस्य—

अष्टमीमथ कौन्तेय शुक्लपक्षे चतुर्द्दशीम् ।
उपोष्य व्याधिरहितो रूपवानभिजायते ॥१०१५॥

फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां प्रातःस्नानादि विधाय भगवन् सूर्य्य भगवत्योदेवता अद्यादिवर्षमेकं यावत्प्रतिशुक्लाष्टमिप्रतिचतुर्द्दशिव्रतमहमाचरिष्यामीति निवेद्य अद्यादि व्याधिराहित्यरूपवत्वप्राप्तिकामनया वर्षमेकंयावत्प्रतिशुक्लाष्टमिप्रति-चतुर्द्दश्युपवासमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, पृ० २८, शुक्ल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्रतक पूर्व दिनमे स्नान आदिसँ शरीरकेँ शुद्ध कय निराभिष बेर भोजन करथि। व्रतक दिनमे दाँतकेँ शुद्ध कय, प्रातः काल प्रातःस्नान कय सूर्योदयक समयमे पवित्र भय आचमन कय हाथमे कुश लय उत्तर मुँह भय पृथ्वी पर ठेहुन राखि जलसँ भरल ताम्रपात्र लयक 'भगवान सूर्य भगवत्योदेवता' आदि उच्चारण करैत "आइसँ लयक एक वर्ष धरि हम प्रत्येक चतुर्दशी आ' अष्टमीमे उपवास व्रत करब, ई निवेदन कुश, तिल, जल तथा फूल लय आईसँ हम सतत अनेक यज्ञ कयनिहार द्वारा प्राप्य अक्षय पुण्यक समान पुण्य प्राप्ति तथा शिवलोक प्राप्ति करबाक कामनासँ एक वर्ष धरि प्रत्येक चतुर्दशी तथा प्रत्येक अष्टमीमे उपवासव्रत करब।

एकर प्रारम्भ फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशीमे होइत अछि। शिवक पूजा एकर अंगथिक।

स्कन्दपुराणमे महाव्रतक फल—

हे देवि ! (मासक) दुनू पक्षक चतुर्दशी तथा अष्टमीमे वर्ष भरि जे दिन-राति व्रत करैत अछि ओ ओहि कर्मसँ सभ पापसँ मुक्त भय जाइत अछि आ' ओ ने नरक जाइत अछि आ' यमक दर्शनो ओकरा नहि होइत छैक ॥१०१३-१०१४॥

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशीमे प्रातःकाल स्नान आदि कय पहिनहि जकाँ निवेदन कय आइ हम सभ पापसँ निर्मुक्त, नरक-गमनक सम्भावना-विच्छेद तथा यमक अदर्शन कामनासँ एक वर्ष धरि प्रत्येक चतुर्दशी तथा अष्टमीकेँ उपवास व्रत करब।

महाभारतमे महाव्रतक फल—

हे कुन्तीपुत्र ! शुक्ल पक्षक अष्टमी तथा चतुर्दशीमे जे उपवास करैत अछि, ओ व्याधि-रहित भय रूपवान भय जाइत अछि ॥१०१५॥

फाल्गुन शुक्ल पक्षक अष्टमी प्रातःकाल स्नान आदि कय' भगवान सूर्य भगवत्यो देवतो आदि उच्चारण कए आइसँ लय एक वर्ष धरि प्रत्येक शुक्ल पक्षक अष्टमी तथा प्रत्येक शुक्ल चतुर्दशीमे शिवव्रत हम करब। पूर्ववत् एहन निवेदन कय आइसँ व्याधि-रहित तथा सुरूपताक प्राप्तिक कामनासँ एक वर्ष धरि शुक्ल पक्षक अष्टमी तथा चतुर्दशीकेँ उपवास करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिङ्गपुराणे केवलचतुर्द्दश्युपवासस्य—

उपवासश्चतुर्द्दश्यां महापातकनाशन: ॥१०१६॥

प्रातः स्नानादि विधाय सूर्य्यादिदेवताभ्यो निवेद्य अद्य चतुर्द्दश्यां महापातक-नाशकामनया उपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

वराहपुराणे कृष्णचतुर्द्दश्यां नक्तव्रतस्य—

रौद्रं व्रतं चतुर्द्दश्यां कृष्णपक्षे विशेषत: ।
तन्माघमासादारभ्य पूर्णं संवत्सरं नृप ॥१०१७॥

व्रतमिदं नक्तरूपं पापक्षयफलञ्चेति वराहपुराण एव व्यक्तं व्रते शुक्लादिमास-व्यवस्था । फाल्गुनकृष्णचतुर्द्दश्यामस्यारम्भः ।

भगवन् सूर्य्य भगवत्योदेवता अद्यादिवर्षमेकं यावत्प्रतिकृष्णचतुर्द्दशिनक्तभोज-नेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहमाचारिष्यामीति निवेद्य अद्यादि पापक्षयकामनया वर्णमेकं यावत्प्रतिकृष्णचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे नक्तव्रतस्य—

कृष्णाष्टमीन्तु नक्तेन तथा कृष्णचतुर्द्दशीम् ।
इह भोगानवाप्नोति परत्र शिवमृच्छति ॥१०१८॥

फाल्गुनकृष्णाष्टम्यां प्रातर्निवेदनं कृत्वा अद्यादि ऐहिकबहुभोगावाप्तिपार-लौकिकशिवप्राप्तिकामनया वर्षमेकं यावत्प्रतिकृष्णाष्टमिप्रतिकृष्टचतुर्द्दशिनक्त-भोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिङ्गपुराणमे केवल चतुर्दशी उपवासक फल—

चतुर्दशीमे उपवाससँ महापातकक नाश होइत अछि ॥१०१६॥

प्रातः काल स्नानादि कय सूर्य आदि देवताकें निवेदन कय आइ हम चतुर्दशीमे महापातकक नाशक कामनासँ उपवास व्रत करब।

वराहपुराणमे कृष्ण चतुर्दशीमे नक्तव्रतक फल—

हे राजन् ! चतुर्दशीमे खास कय कृष्ण पक्षमे रुद्रक व्रत होइत अछि। ई व्रत माघ माससँ प्रारम्भ कय एक वर्ष पर्यन्त (करबाक चाही) ॥१०१७॥

ई नक्तव्रत जकर फल पापक क्षय छैक वराहपुराणे टामे कहल गेल अछि (सामान्यतः) व्रतक विषयमे शुक्लादि मासक व्यवस्था अछि जे फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशीसे प्रारम्भ होइत अछि।

भगवान सूर्य एवं देवी लोकनि आइसँ हम एक वर्ष धरि प्रत्येक कृष्ण चतुर्दशीमे नक्त भोजनसँ भिन्न भोजनक निवृत्तिक व्रत करब। एहि तरहें निवेदन कय आइसँ हम पापक क्षयक कामनासँ एक वर्ष धरि प्रत्येक कृष्ण चतुर्दशीमे नक्त भोजनसँ भिन्न भोजनसँ निवृत्तिक व्रत करब।

भविष्यपुराणमे नक्त व्रतक फल—

कृष्णा अष्टमी तथा कृष्णा चतुर्दशीक नवव्रतसँ मानव एहि लोकमे विभिन्न भोगकें प्राप्त करैत अछि तथा मृत्युक उपरान्त शिवक शरणमे जाइत अछि ॥१०१८

फाल्गुन कृष्ण अष्टमीमे प्रातःकाल निवेदन कय आइसँ हम ऐहिक अनेक भोगक प्राप्ति तथा परलोकमे शिवक प्राप्तिक कामनासँ एक वर्ष धरि प्रत्येक कृष्णाष्टमी तथा प्रत्येक कृष्ण चतुर्दशीमे नक्त भोजनसँ भिन्न भोजन नहि करबाक व्रत लेब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मत्स्यपुराणे चतुर्द्दश्यां नक्तव्रतस्य—

चतुर्द्दश्यान्तु नक्ताशी समाप्ते गोयुगप्रदः ।
शैवं पदमवाप्नोति त्रैयम्बकमिदं स्मृतम् ॥१०१९॥

फाल्गुनकृष्णचतुर्द्दश्यां प्रातःस्नानादिनिवेदनं विधाय अद्यादिशैवपदप्राप्तिकामनया वर्षमेकं यावत्प्रतिचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

व्रतसमाप्तौ वर्षान्तरे ब्राह्मणाय गोयुगदानम् ।

अद्यकृतैतद्वर्षावच्छिन्नचतुर्द्दशीयनक्तव्रतप्रतिष्ठार्थमिदं गोयुगं रुद्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

स्कान्दे शिवरात्रिचतुर्द्दशीव्रतस्य—

भूतेश्वरादिह परोऽस्ति न पूजनीयो
नैवाश्व[1]मेधसदृशः क्रतुरस्ति लोके ।
गंगासमं त्रिभुवने नच तीर्थमस्ति
नान्यद्व्रतञ्च शिवरात्रिसमं तथास्ति ॥१०२०॥

एकाहमेवशिवरात्रिचतुर्द्दशीं यो
भक्त्या करोति निशि जागरणाभिरामाम् ।
देवेन्द्रमन्त्रिचतुराननषण्मुखाद्याः
पुण्यञ्च तस्य सकलं नहिवक्तुमीशाः ॥१०२१॥

गंगा गया कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च ।
अमीषां फलमाप्नोति शिवरात्रिषु जागरैः ॥१०२२॥

प्रातःस्नानादिसूर्य्यादिदेवताभ्यो विवेदनं विधाय अद्य फाल्गुनकृष्णशिवरात्रिचतुर्द्दश्यां ब्रह्मादिदेवापरिसंख्येयपुण्यप्राप्तिकामनया उपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा० अशुद्ध पाठ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मत्स्यपुराणमे चतुर्दशी नक्तव्रतक फल—

जे व्यक्ति चतुर्दशीमे (केवल) रातिकें भोजन करैत अछि तथा व्रत समाप्त भेने दू टा गायदान करैत अछि, ओ शैव पदकें प्राप्त करैत अछि। ई शंकरक मत छन्हि ॥१०१९॥

फागुन कृष्ण चतुर्दशीमे प्रातः स्नान आदि कय निवेदन कय आइ हम शैव पद प्राप्तिक कामनासँ एक वर्ष धरि प्रत्येक चतुर्दशी रात्रिकें भोजनसँ भिन्न भोजन निवृत्तिक व्रत करब।

व्रतक समाप्ति भेला पर दोसर वर्षमे ब्राह्मणकें दूटा गाय दान दी।

आइ हम एहि वर्ष भरि कयल गेल चतुर्दशीमे नक्त व्रतक प्रतिष्ठाक हेतु रुद्र-अधिष्ठित ई गोद्वय अमुक गोत्रक अमुक शर्मा नामक ब्राह्मण अहाँकें दैत छी।

स्कन्दपुराणमे शिवरात्रि चतुर्दशी व्रतक फल—

शंकरसँ बढ़ि कय (एहि संसारसे) केओ पूज्य नहि छथि तथा अश्वमेध तुल्य कोनो यज्ञ एहिलोकमे नहि अछि। तीनू लोकमे गंगा सदृश तीर्थ नहि अछि तथा शिवरात्रिक सदृश कोनो आन व्रत नहि अछि ॥१०२०॥

जे व्यक्ति एको खेप भक्तिपूर्वक रात्रि-जागरणसँ सुशोभित शिवरात्रि चतुर्दशीक व्रत करैत अछि, ओकर पुण्यकें समस्त रूपसँ बृहस्पति तथा कार्तिकेय आदि सेहो वर्णन करबामे समर्थ नहि होइत छथि ॥१०२१॥

शिवरात्रिमे जागरण केलासँ (मानव) गंगा, गया, कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य[1] तथा पुष्कर तीर्थ-जनित फलक भागी बनैत अछि ॥१०२२॥

प्रातःकाल स्नान तथा सूर्यादि देवताकें निवेदन कय आइ हम फागुन कृष्ण शिवरात्रि चतुर्दशीमे ब्रह्मादि देवता द्वारा नहि गणना करबा योग्य पुण्य प्राप्तिक कामनासँ उपवास व्रत करब।

---

१ विद्यापतिकृत भूपरिक्रमण, सम्पादक, डा० मुनीश्वर झा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, भूमिका, पृ० ४,५।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अत्र जागरस्य—

अद्यगङ्गागयाकुरुक्षेत्रनैमिषपुष्करसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवरात्रिजागरमहङ्करिष्ये ।

भविष्ये नृत्यगीताद्यैर्जागरस्य—

जागरं नृत्यगीताद्यैः सकृत्कृत्वा तु शङ्करे[1] ।
मन्वन्तरशतं साग्रं शिवलोके वसेत् सुखी ॥१०२३॥

अद्य साग्रमन्वन्तरशतावच्छिन्नसुखित्वशिवलोकवासकामः शिवरात्रौ नृत्यगीताद्यैर्जागरमहङ्करिष्ये ।

अथगामकल्पेन शिवरात्रिविधिः

फाल्गुनकृष्णत्रयोदश्यामेकवारं भुक्त्वा चतुर्दश्यां प्रातः स्नात्वा शिवालये प्राङ्गणे वा शुचिराचम्य वारिपूर्णताम्रपात्रं हस्ते कृत्वा जानुभ्यामवनीं गत्वा भगवन् सूर्य भगवत्यो देवता इत्यभिधाय अद्यादि आजन्मसमुपार्जितपापक्षयेन्द्रादिलोकगमनपूर्वकानेकभोगमुक्तिभूतलराज्यप्राप्तितदुत्तरपूजितपरमस्थानगमनशिवसायुज्यकामनया चतुर्दशवर्षाणियावत् प्रतिफाल्गुनकृष्णचतुर्दशिशिवरात्रिव्रतमहङ्करिष्ये ।

इति सङ्कल्पं विधाय रात्रौ प्रथमप्रहरे भगवन्तं शिवं पंचगव्येन पञ्चामृतेन वा स्नपयित्वा यवगोधूमयोरन्यतरचूर्णेन रुक्षं विधाय सर्वौषधिवारिणा स्नपयित्वा उत्तरवक्त्रे भगवन् महादेव इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा नमस्ते कामदेवाय शर्वाय शशिशेखर ।

नमस्ते वामदेवाय शर्वाय शशिशेखर ।
पापशुद्धयर्थमर्घोऽयं गिरीश प्रतिगृह्यताम् ॥१०२४॥

इत्यर्घदानम् । ॐ ह्रीं[2] वामदेवाय नमः इतिचन्दनकुंकुमागुरुकर्पूराद्यनुलेपनं विधाय बिल्वपत्रनानापुष्पैरभ्यर्च्य। धूपदीपनानानैवेद्यानि स्वाहान्तमन्त्रेण दद्यात् ।

---

१ ने० पा० पृ० २९, शिवेपुरः । तु नहि अस्ति ।
२ वही, पृ० २९ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एहिठाम जागरणक फल—

आइ हम गंगा, गया, कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य तथा पुष्करक सेवनसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवरात्रिमे जागरण करब।

भविष्यपुराणमे नृत्यगीतपूर्वक जागरणक फल—

मानव एकहु बेर शंकरक निकटमे नृत्य एवं गीतपुरस्सर जागरण कय सए मन्वन्तरसँ अधिक (समय) धरि शिवलोकमे सुखपूर्वक रहैत अछि ॥१०२३॥

आइ हम सए मन्वन्तरसँ अधिक काल धरि सुखपूर्वक शिवलोक-वासक कामनासँ शिवरात्रिमे नृत्य एवं गीतपूर्वक जागरण करब।

आब आगमकल्पक अनुसार शिवरात्रि-विधि

फागुन कृष्ण त्रयोदशीमे एकभुक्त कय चतुर्दशीमे प्रात:स्नान कय शिवालयमे अथवा ओकर आङनमे पवित्र भय आचमन कय जल भरल ताँबाक पात्र हाथमे लय पृथ्वी पर ठेहुन टेकिक बैसि, 'भगवन् सूर्य भगवत्यो देवता' ई कहि हम आइसँ आजन्म अर्जल पापक क्षय, इन्द्रादिलोकगमनपूर्वक अनेक उपभोगक भोग तथा पृथ्वीक राज्यक प्राप्ति तदनन्तर पूजित परम स्थानक तथा शिवक सायुज्यक कामनासँ चौदह वर्ष धरि प्रत्येक फागुन कृष्ण चतुदशीकेँ शिव-रात्रिक व्रत करब।

एहि तरहेँ संकल्प कय रातिक पहिल पहरमे पंचगव्य अथवा पंचामृतसँ भगवान शिवकेँ स्नान कराय जौ अथवा गहूमक चूर्ण मलिक प्रतिमा के .रुख विभिन्न औषधि-मिश्रित जलसं पुनः स्नान करा उत्तरवला मुँहमे, 'भगवन् महादेव इहागच्छ इह तिष्ठ'—ई पढ़ि आवाहन कय स्थापित करी।

वामदेव शर्व अहाँकेँ प्रणाम। हे गिरीश, पापक शुद्धिक लेल अहाँ हमर ई अर्घ्य ग्रहण करी ।।१०२४।।

ई पढ़ि अर्घ्य दी। 'ॐ ह्रीं वामदेवाय नमः' एहिसँ चन्दन, कुंकुम, अगुर तथा कपूर आदिसँ अनुलिप्त कय बेलपात तथा विभिन्न प्रकारक फूलसँ पजा कय 'स्वाहान्त' मन्त्रसँ धूप, दीप तथा विभिन्न प्रकारक नैवेद्य दी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूर्ववक्त्रे ओं भगवन् तत्पुरुष इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्ते दितिजान्तक ।
तत्पुरुष नमस्तेऽस्तु अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२५॥

इत्यर्घं दत्वा ओं हौं[1] तत्पुरुषाय नम,इत्यनुलेपनं दत्वा समभ्यर्च्य स्वाहान्तमन्त्रेण धूपदीपनैवेद्यानि दद्यात् ।

दक्षिणवक्त्रे—भगवन् अघोर इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते शूलहस्ताय नमस्ते दितिजान्तक ।
अघोराय नमस्तुभ्यमघर्योऽम् प्रतिगृह्यताम् ॥१०२६॥

इत्यर्घं दत्वा ओं हुं अघोराय नमः इत्यनुलेपनं दत्वा समभ्यर्च्य स्वाहान्त-मन्त्रेण धूपदीपनैवेद्यानि दद्यात् ।

पश्चिमवक्त्रे—भगवन् सद्योजात इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते सद्योजाताय नमः कैलानवासिने ।
नमस्ते देवदेवेश अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२७॥

इत्यर्घं दत्वा ओं हां[2] सद्योजाताय नमः इत्यनुलेपनं दत्वा पुष्पैरभ्यर्च्य स्वाहान्त मन्त्रेण धूपादिकं दद्यात् ।

ईशानवक्त्रे—भगवन् ईशान इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते मोक्षदायिने ।
ईशानाय नमस्तुभ्यमर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२८॥

इत्यर्घं दत्वा ॐ हौं ईशानायनमः इतिचन्दनानुलेपनं दत्वा स्वाहान्तमन्त्रेण धूपदीपनैवेद्यानि दद्यात् ।

पुनरपि—ओं हौं नमः शिवायेति सम्पूज्यानेनैव वस्त्राणि हिरण्यञ्च दत्वा स्तुत्वा प्रणमेत् ।

एवं प्रहरे प्रहरे पूजा स्नानञ्च विशेषतः। नृत्यगीतजागरणंकुर्यात् ।

शिवधर्माश्च श्रोतव्याः व्रतान्ते विप्राय दक्षिणां गां हिरण्यं वस्त्रं च दद्यात् यतींश्च शैवान् भोजयेत् ।

---

१ ने० पा०, ह्रौं ।
२ वएह, हां ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूर्वक मुँहमे—'ॐ भगवन् तत्पुरुष इहागच्छ इहतिष्ठ अर्थात्' भगवान तत्पुरुष एतय आउ आ एतय बैसू ई पढ़ि आवाहन तथा स्थापन कय

हे विरुपाक्ष ! अहाकेँ नमस्कार। हे दैत्य नाशक अहाँकेँ नमस्कार ! हे तत्पुरुष ! अहाँकेँ नमस्कार। ई अर्घ्य अहाँ ग्रयण करी; ॥१०२५॥

अर्घ्य दी, तदुत्तर 'ॐ हुँ अघोराय नमः' एहि मंत्रेँ नमः। तुभ्यं आदि पढ़ि अर्घ्य दय 'ॐ ह्रीं तत्पुरुषाय नमः' अर्थात् तत्पुरुषकेँ नमस्कार एहिसँ चानन लगा पूजा कय स्वाहान्त मन्त्रसँ धूप, दीप नैवेद्य दी।

दक्षिण दिशक मुँहमे—"भगवन अघोर इहानच्छ इह तिष्ठ" ई पढ़ि आवाहन तथा स्थापना कय।

शूलहस्ताय नमस्ते ! अदितिजनतक नमस्ते ! अघोरकेँ नमस्कार ई अर्घ्यग्रहण करू ॥१०२६॥

एहिसँ अर्घ्य दय 'ॐ ह्रूँ अघोराय नमः' एहिमन्त्रसँ अनुलेपन लगाय कय पुष्पादिसँ पूजा कय 'स्वाहान्त' मन्त्रसँ धूप, दीप, नैवेद्य आदि दी।

पश्चिम दिशक मुँहमे—"भगवन् सद्योजात इहागच्छ इह तिष्ठ" अर्थात् भगवान सद्योजात एतय आउ ओ एतय बैसू—ई पढ़ि आवाहन तथा स्थापना कय

सद्योजातकेँ नमस्कार ! कैलासवासीकेँ नमस्कार ! देवदेवेश आहाँकेँ नमस्कार—ई अर्घ्य स्वीकार करी ॥१०२७॥

एहिसँ अर्घ्य दय 'ॐ ह्रूँ सद्योजाताय नमः' एहिसँ चानन दय तथा फूलसँ पूजा कय 'स्वाहान्त' मन्त्रसँ धूप आदि दी।

ईशान कोणक मुँहमे—"भगवन् ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ" ई कहि आवाहन तथा स्थापना कय।

हे देवदेवेश ! अहाँकेँ नमस्कार, मोक्ष देनिहारकेँ नमस्कार। हे ईशान ! अहाँकेँ नमस्कार।
अहाँ एहि अर्घ्यकेँ स्वीकार करी। ॥१०२८॥

एहि मंत्रसँ अर्घ्य दय "ॐ ह्रीँ ईशानाय नमः" एहि मन्त्रसँ चाननादि लगा कय स्वाहान्त मन्त्रसँ धूप, दीप आ नैवेद्य दी। पुनः "ॐ ह्रीँ नमः शिवाय" एहिसँ पूजा कय ओही मंत्रे वस्त्र तथा सोना दय कय प्रणाम करी।

एहि तरहेँ प्रत्येक पहरमे पूजा तथा स्नान एवं विशेष रूपेँ नृत्य, गीत आ' जागरण करी। शिवक धर्मक विषयमे सुनी तथा व्रतक अन्तमे ब्राह्मणकेँ दक्षिणा रूपमे गाय, सोना तथा वस्त्र दी आ संन्यासी एवं शैव साधु लोकनिकेँ भोजन करावी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ सोमव्रतम् ।

भविष्ये सुमन्तुवाच ।

सोमव्रतं तथा चान्यं शङ्करप्रीतये श्रृणु ।
ताम्रपात्रं पयःपूर्णं, कृत्वा तत्स्थञ्च शङ्करम् ॥१०२९॥

प्रच्छाद्योपरिवस्त्रेण गन्धपुष्पार्च्चितं महत् ।
शिवभक्ते द्विजे दद्याद्भोजयित्वा विधानतः ॥१०३०॥

प्राच्यां समुद्गते सोमे प्रतीच्याञ्च रवौ गते ।
पौर्णमास्यां च वैशाख्यां गृह्यपात्रं शिवाग्रतः ॥१०३१॥

प्रीयतां मे महादेवः सोममूर्त्तिर्जगत्पतिः ।
तस्मै विप्राय तत्पात्रमर्पयेद्भक्तितः शनैः ॥१०३२॥

एतत्सोमव्रतं नाम कृत्वा रुद्रान्तिकं व्रजेत् ।
रुद्रलोकात्परिभ्रष्टो भवेज्जातिस्मरो नरः ॥१०३३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव पुनः शिवपुरं व्रजेत् ॥१०३४॥

महत्ताम्रपात्रमित्यर्थः ।

वैशाख्यां प्रातः स्नानादिकृत्वा सूर्य्यादिदेवताभ्यो निवेद्य अद्य वैशाख्यां रुद्रान्तिकगमनरुद्रलोकप्रच्यवानन्तरजातिस्मरत्वपूर्वतदभ्यासजनितपुनःशिवपुरगमनकामः सोमव्रतमहङ्करिष्ये ।

अथ नामकृष्णाष्टमीव्रतं ।

भविष्यपुराणे विष्णुरुवाच ।

कृष्णाष्टम्यां प्रयत्नेन कृत्वा नक्तं विधानतः ।
मार्गशीर्षे शुभे मासे शङ्करं देवमर्चयेत् ॥१०३५॥

पीत्वा शक्त्याच गोमूत्रमनाहारो निशि स्वपेत् ।
अतिरात्रस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं भवेत् ॥१०३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आब सोमव्रतक सम्बन्धमे

भविष्य पुराणमे–

सुमन्त कहैत छथि—

शंकरक प्रीत्यर्थं सोमव्रतक एवं आनो व्रत सुनू। तामाक पात्रकेँ जलसँ भरि ओहिमे शंकरकेँ राखि सुगन्धित द्रव्य तथा फूल आदिसँ पूजा कय ओकरा वस्त्रसँ झाँपि विधिपूर्वक शिवभक्त ब्राह्मणकेँ भोजन करा अर्पित कय दी ॥१०२९॥

पूब दिशामे चन्द्रमाकेँ चलि गेला पर तथा सूर्यकेँ पश्चिम दिशामे चलि गेला पर वैशाखी पूर्णिमामे शिवक आगाँसँ पात्रकेँ ल' क' 'सोममूर्त्ति जगत्पति महादेव हमरा पर प्रसन्न होथु'—ई कहि ओहि ब्राह्मणकेँ भक्तिपूर्वक ओ पात्र अर्पित कय दी ॥१०३०-१०३१॥

एहि सोम व्रतक अनुष्ठान कय' मानव रुद्रक निकट पहुँच जाइत अथि तथा रुद्रलोकसँ च्युत भेला पर ओ व्यक्ति पूर्व जन्मक स्मरण केनिहार भ' क' मनुष्यक रूपमे जन्म लैत अछि ॥१०३२-१०३३॥

पूर्वक अभ्यस्त ओही संस्कारसँ पुनः ओ शिवलोक जाइत अछि ॥१०३४॥

ताम्रपात्रक अर्थ थिक ताँबाक पैघ पात्र।

वैशाखी पूर्णिमामे प्रातःकाल स्नान आदि कय सूर्य आदि देवताकेँ निवेदन क' आइ वैशाखीमे रुद्रक निकट। जयबाक तथा रुद्रलोकसँ च्युत भेला पर पूर्व जन्मस्मरण पूर्वजन्मक अभ्याससँ उत्पन्न संस्कार बलेँ फेर शिवलोक गमनक कामनासँ हम सोमव्रत करब।

आब कृष्णाष्टमी व्रत

भविष्य पुराणमे विष्णु बजलाह —

शुभ मास अगहनमे कृष्णा अष्टमीकेँ विधिपूर्वक नक्त व्रत कय रातिमे शंकरक पूजा करी तथा यथाशक्ति गोमूत्र पीबि अनाहार रहि रातिमे शयन करी। (एना कयने) अतिरात्र यज्ञक आठ गुणा फल प्राप्त होइत अछि॥१०३५-१०३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं पौषेऽपि सम्पूज्य शम्भुनामानमीश्वरम् ।
कृष्णाष्टम्यां घृतं प्राश्य वाजपेयफलं लभेत् ॥१०३७॥

माघे महेश्वरं विप्र कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
निशि पीत्वा च गोक्षीरं गोमेधफलमाप्नुयात् ॥१०३८॥

फाल्गुने च महादेवं सम्पूज्य प्राशयेत्तिलान् ।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं भवेत् ॥१०३९॥

चैत्रं तु स्थाणुनामानं कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
यवाँश्च भर्जितान् प्राश्य सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥१०४०॥

वैशाखे शिवनामानं पूजयित्वा प्रयत्नतः ।
रात्रौ कुशोदकं पीत्वा सर्वमेव फलं लभेत् ॥१०४१॥

ज्येष्ठे पशुपतिं पूज्य गवां शृङ्गोदकं पिबेत् ।
गवां कोटिप्रदानस्य यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥१०४२॥

आषाढ़े चोग्रनामानमिष्ट्वा प्राश्य च गोमयम् ।
वर्षाणाञ्च शतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥१०४३॥

शर्वं तु श्रावणे मासि पूज्यार्कं प्राशयेन्निशि ।
गोप[1]रस्य तु यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥१०४४॥

त्र्यम्बकं भाद्रपदे कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
सम्प्राश्य बिल्वपत्रन्तु वाजपेयफलं लभेत् ॥१०४५॥

मासे चाश्वयुजे प्रोक्तं प्राशनं तण्डुलोदकम् ।
नाम्ना ईशं यजेद्देवं पुण्डरीकफलं लभेत् ॥१०४६॥

---

१ ने० प०, गोरस्य ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एही तरहेँ पूस मासक कृष्णा अष्टमीमे शंभु नामक शङ्करक पूजा क' घी चाटी तँ बाजपेय यज्ञक फल पाबी ॥१०३७॥

माघ मासक कृष्णा अष्टमीमे महेश्वरक पूजा कय तथा रातिमे गायक दूध पीबी तँ गोमेध यज्ञक फल प्राप्त करी ॥१०३८॥

फागुन मासक कृष्णा अष्टमीके महादेवक पूजा कय तिल भोजन कयने राजसूय यज्ञसँ आठ गुणा अधिक फल प्राप्त होइत अछि ॥१०३९॥

चैतक कृष्णा अष्टमीमे स्थाणु नामक शिवक पूजा करी तथा भूजल जौ भोजन करी। एहिसँ अश्वमेध यज्ञक फल प्राप्त होइत अछि ॥१०४०॥

वैशाख मासमेँ शिव नामक शंकरक सविधि पूजा कय तथा रातिमे कुशोदक पान कयलासँ सर्वमेध (यज्ञ)क फल पबैत अछि ॥१०४१॥

जेठ मासमे पशुपतिक पूजा क' गायक सिहमे समाहित जलक पान कयने मानव करोड़ गायक दानक फल पबैत अछि ॥१०४२॥

आषाढ़ मासक कृष्णा अष्मीमे उग्र नामक शंकरकेँ पूजि तथा गोबर-भक्षण कय मानव सए वर्षसँ अधिक शिवलोकमे वास करैत अछि ॥१०४३॥

साओन मासमे शर्व नामक शंकरक पूजा क' रातिमे अर्क खा मनुष्य गोमेध यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥१०४४॥

भादव कृष्णा अष्टमीमे त्र्यम्बक नामक शिवक पूजा क' तथा बेलपात खा वाजपेय यज्ञक फल प्राप्त करैत अछि ॥१०४५॥

आसिन मासमे चाउरक धोआउन भोजन कहल गेल अछि। एहिमे ईश नामक शंकरक पूजा करी तथा पुण्डरीक यज्ञक फल पाबी ॥१०४६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मासे तु कार्तिकेऽष्टम्यामीशानाख्यं प्रपूजयेत् ।
पञ्चगव्यं सकृत्पीत्वा पञ्चयज्ञफलं लभेत् ॥१०४७॥

वर्षान्ते भोजयेद्विप्रान् शिवभक्तिपरायणान् ।
पायसं मधुसंयुक्तं घृतेन सुपरिप्लुतम् ॥१०४८॥

निवेदयेन्तु रुद्राय गाञ्च कृष्णां पयस्विनीम् ।
वर्षमेकं तथा कुर्य्यान्नैरन्तर्य्येण योनरः ॥
कृष्णाष्टमीव्रतं भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥१०४९॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वैश्वर्य्यसमन्वितः ।
वसेच्छिवपुरे नित्यं नचेहायाति नाकभाक् ॥१०५०॥

कृत्वा नक्तमिति नक्तव्रतं सङ्कल्प्येत्यर्थः ।

नतु नक्तभोजनान्तरं रात्रावेव पूजेति बोद्धव्यम् ।

एवं पौषेपीति नक्तप्राशनं तदनन्तरमनाहारत्वञ्चातिदश्यते ।

एवं मासान्तरेष्वपि ।

विहितद्रव्यविशेषं निशि प्राश्यानाहारः स्वपेत् ।

यत्रापि कृष्णाष्टमी न श्रुता निशाकालश्च न श्रुतस्तत्रापि मासे तद्बोध्यं पूर्वापरपरामर्शात् ।

प्रतिमासे श्रुतप्राशनफलञ्चात्र गुणफलरीत्या संवत्सरव्रतञ्चाधिकारिविशेषण-मिति सर्वं समञ्जसम् ।

तत्र मार्गकृष्णाष्टम्यां प्रातः प्रधानसङ्कल्पं कुर्य्यात् ।

भगवन् सूर्य्य भगवत्यो देवता इति निवेद्य—अद्यादिसर्वपापविनिर्मुक्तत्व-सर्वैश्वर्य्यसमन्विततत्वशिवपुराधिकरणकसार्वकालिकवासस्वर्गलोकाप्रच्यवकामनया वर्ष-मेकं यावत् प्रतिकृष्णाष्टमिनक्तव्रतमहङ्करिष्ये ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कार्तिक मासक कृष्णा अष्टमीमे ईशान नामक शंकरक पूजा कय' एक बेर पंचगव्य पीबि मनुष्य पंचयज्ञक फल पबैत अछि ।।१०४७।।

वर्ष बीतला पर शिवभक्तिमे लीन ब्राह्मणकेँ मधुमिश्रित एवं घृतसँ परिपूर्ण पायस भोजन कराबी तथा दुधगँर कारी गाय भगवान रुद्रकेँ निवेदित करी। एहि तरहेँ जे मानव निरन्तर एक वर्ष धरि कृष्णा अष्टमीक व्रत भक्तिपूर्वक करैत अछि, तकर फल सुनू :—

(एहन व्यक्ति) सभ पापसँ मुक्त भय, सभ प्रकारक ऐश्वर्यसँ समन्वित भय शिवपुरमे नित्य निवास करैत अछि आ ओ स्वर्गभोगी एतय नहि अबैत अछि ।।१०४८-१०५०।।

नक्तव्रत क' क' एकर अर्थ थिक नक्तव्रतक संकल्प ल' क' रात्रिभोजनक बाद रातियेमे पूजा करी—ई नहि बुझबाक थिक। एहिना पूसो मासमे रातिमे भोजन क' ओकर बाद आहार निषेध देखल जाइत अछि। एहिना दोसरो मास सभमे विहित विस्तु विशेष रातिमे खाय कय अनाहारे सूती। जतय कृष्णा अष्टमी नहि उल्लिखित अछि, रात्रिकाल सेहो नहि कहल गेल अछि, ओहू मासमे ई दुनू बुझक चाही। प्रत्येक मासमे विहित भोजनक फलो एहि ठाम गुणक फलकरीतियेँ वर्ष भरि कयल गेल व्रत विषयक अछि। एहि तरहेँ सभ उपयुक्त अछि। ओहिमे अगहन कृष्णा अष्टमीमे प्रातःकाल मुख्य संकल्प करी। "भगवन् सूर्य भगवत्यो देवता" ई कहि निवेदन क' आइसँ हम सभ प्रकारक पापक निराकरण, सभ प्रकारक ऐश्वर्यक प्राप्ति, शिवलोकमे शाश्वत वास तथा स्वर्गलोकसँ च्युत नहि होयबाक कामनासँ हम एक वर्ष धरि प्रत्येक कृष्णा अष्टमीमे नक्तव्रत करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ प्रतिमासं(प्रत्येक[1])सङ्कल्पः ।

तत्र मार्गे मासे अद्य मार्गकृष्णाष्टम्यामष्टगुणातिरात्रयज्ञजन्यफलसमफल-प्राप्तिकामनया शङ्करं देवमर्चयित्वा नक्तकालिकगोमूत्राहारेतराहारनिवृत्तिमहङ्क-रिष्ये ।

पौषे—अद्यपौषकृष्णाष्टम्यां वाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईश्वर-पूजापूर्वकनक्तकालीनघृतप्राशनेतरहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

माघे—अद्यमाघकृष्णाष्टम्यां गोमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया महेश्वरं सम्पूज्य नक्तकालिकगोक्षीराहारेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

फाल्गुने—अद्यफाल्गुनकृष्णाष्टम्यामष्टगुणराजसूययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया महादेवं सम्पूज्य नक्तकालिकतिलप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

चैत्रे—अद्य चैत्रकृष्णाष्टम्यामश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया स्थाणुं-सम्पूज्य नक्तकालिकभृष्टयवप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

वैशाखे—अद्य वैशाखकृष्णाष्टम्यां सर्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया शिवं सम्पूज्य नक्तकालिककुशोदकपानेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

ज्येष्ठे—अद्य ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गोकोटिप्रदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया पशुपतिं सम्पूज्य नक्तकालिकगोशृङ्गोदकपानेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

आषाढे—अद्याषाढकृष्णाष्टम्यां साग्रवर्षशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम-नया उग्रं सम्पूज्य नक्तकालिकगोमयप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

---

१ ने० पा० सें प्राप्त ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओकर उपरान्त प्रत्येक मासक संकल्प वाक्य :—

ओतय अगहन मासमे --आइ हम अगहन मासक कृष्णा अष्टमीमे अतिरात्र यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शंकर नामक देवता केँ पूजा क' रात्रिकालीन गोमूत्र आहारसँ भिन्न आहार त्याग करब।

पूस मासमे —आइ हम पूस मासक कृष्णा अष्टमीमे वाजपेय यज्ञसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ईश्वरक पूजापूर्वक नक्तकालीन घृतपानसँ भिन्न भोजनक परित्याग करब।

माघ मासमे —आइ हम माघ मासक कृष्णा अष्टमीमे गोमेध यज्ञ जन्य फल प्राप्तिक कामनासँ महेश्वरक पूजा क' नक्तकालिक गायक दूधसँ भिन्न आहारक परित्याग करब।

फागुन मास मे—आइ हम फागुन मासक कृष्णा अष्टमीमे राजसूय यज्ञक फलसँ आठ गुणा अधिक फल प्राप्तिक कामनासँ फाल्गुन कृष्णा अष्टमीमे महादेवक पूजा क' नक्तकालिक तिल भोजनसँ अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

चैत मासमे—आइ हम चैत मासक कृष्णा अष्टमीमे अश्वमेध यज्ञ यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ चैतक कृष्णा अष्टमीमे स्थाणुक पूजा कय नक्त-कालिक भूजल जौ भोजनसँ अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

वैशाख मासमे – आइ हम वैशाख मासक कृष्णा अष्टमीमे सर्वमेध यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शिवक पूजा क' नक्तकालिक कुशोदक पानक अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

जेठ मासमे—आइ हम ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमीमे कोटि गाय प्रदान जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ पशुपतिक पूजा कय नक्तकालिक गोश्रृङ्गोदक (गायक सिंहमे जतेक पानि समाहित होयत ओतेक परिमाणक जल) क अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

आषाढ़ मासमे—आइ हम आषाढ़मासक कृष्णा अष्टमीमे सए वर्षसँ अधिक शिवलोकमे निवास प्राप्तिक कामनासँ उग्र नामक शिवक पूजाक नक्तकालिक गोमय भोजनसँ भिन्न भोजनक परित्याग करब।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रावणे—अद्य श्रावणकृष्णाष्टम्यां गोषव(रस[1]) यज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया त्र्यम्बकं(शर्वं) सम्पूज्य नक्तकालिकार्कप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

भाद्रे—अद्य भाद्रकृष्णाष्टम्यां वाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकायनया त्र्यम्बकं सम्पूज्य नक्तकालिकबिल्वपत्रप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

आश्विने—अद्याश्विनकृष्णाष्टम्यां पुण्डरीकयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईश्वरं सम्पूज्य नक्तकालिकतण्डुलोदकप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

कार्त्तिके—अद्य कार्त्तिककृष्णाष्टम्यां पञ्चयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईशानं सम्पूज्य नक्तकालिकपञ्चगव्यभोजनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

व्रतसमाप्तौ वर्षान्ते शिवभक्तब्राह्मणान् मधुसंयुक्तं घृतपरिप्लुतं पायसं भोजयेत् ।

रुद्राय पयस्विनीं कृष्णां गां निवेदयेदिति नामकृष्णाष्टमीव्रतम् ।

भविष्यपुराणे—

पूर्वाह्णे भुञ्जते देवा मध्याह्ने मानुषादयः ।
अपराह्णे तु पितरः सायाह्ने गुह्यकादयः ॥१०५१॥
सर्ववेलामतिक्रम्य नक्तभोजनमुत्तमम् ॥१०५२॥
हविष्यभोजनं स्नानं सत्यमाहारलाघवम् ॥
अग्निकार्यमधःशय्यां नक्तभोजी षडाचरेत् ॥१०५३॥

हविष्यं यवास्तदलाभे माषकोद्रवचणकगौरसर्षपमसुरचीनकुलत्थवर्जमन्यदप्यन्नम् ।

लवणे सैन्धवसामुद्रे । सामुद्रं साम्भरीति प्रसिद्धम् ।

गव्यं दधि पयो घृतञ्च । अग्निकार्यं व्याहृतिहोमः ।

न व्याहृतिभ्यः परं होम इति शंखेन सामान्यतोऽभिधानात् न च व्याहृतिहोमाङ्गत्वे तदुपसंहारापत्तेः ।

---

[1] ने० पा० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

साओन मासमे—आइ हम साओन मासक कृष्णा अष्टमीमे गोषव यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ शर्व नामक शिवक पूजा क' नक्तकालिक अर्क-भोजनक अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

भादव मासमे–आइ हम भादवमासक कृष्णाअष्टमी में वाजपेय यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ त्र्यम्बकक पूजा क' रात्रिकालिक बेलपात भोजनक अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

आश्विन मासमे–आइ हम आश्विनमासक कृष्णा अष्टमीमे पुण्डरीक यज्ञ जन्य फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ईश्वरक पूजा कय नक्तकालिक तण्डुलोबक अर्थात् चाउरक धोआउन जलपानक अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

कातिक मासमे—आइ हम कात्तिकमासक कृष्णा अष्टमीमे पंचयज्ञसँ उत्पन्न फलक समान फल प्राप्तिक कामनासँ ईशानक पूजा क' नक्तकालिक पंचगव्य भोजनसँ अतिरिक्त आहारक परित्याग करब।

व्रत-समाप्ति पर वर्षक अन्तमे शिवक भक्त ब्राह्मण लोकनिकें मधुसँ मिश्रित घीसँ परिपूरित पायस भोजन करावी। रुद्र महादेवकें दुधगँर कारी काय निवेदित करी। एहि तरहें ई कृष्णाष्टमी व्रत समाप्त करी।

भविष्यपुराणमे—

पूर्वाह्णमे देवता, मध्याह्णमें मनुष्य आदि, अपराह्णमे पितर लोकनि तथा सायंकाल ग्रह्य (निम्नकोटिक देवगण) भोजन करैत छथि। एहि सभ समयकें छोड़ि (बिता कय) रात्रिभोजन (नक्तभोजन) श्रेष्ठ उत्तम थिक ॥१०५१-१०५२॥

नक्त भोजन कयनिहार इ विष्य भोजन, स्नान, सत्यक सम्भाषण, लघुपाकी भोजन, अग्निहोत्र तथा भूमिशयन ई ६ प्रकारक आचरण करय ॥१०५३॥

जौ हविष्य मानल गेल अछि। ओकर अभावमे उरीद, कोदो, बूट (बदाम), उज्जर सरिसो, मसुरी, चीन, एवं कुर्थी छोड़ि शेष सभ अन्न (हविष्य थिक)। नोनमे सैंधव तथा साम्भर नून हाविण्य थिक।

गव्यसँ—दही, दूध, तथा घी। अग्निकार्यसँ व्याहृति (भूः, भुवः, स्वः आदि सप्तव्याहृति थिक) होम बूझक चाही। व्याहृति होमसँ बढ़िक दोसर होम नहि अछि। ई सामान्य रूपें शंख कहने छथि। व्याहृति होमक अंग रूपसँ नक्त व्रतक विधान नहि अछि किएक त नक्तव्रतकें प्रधान मानि कय तदनुसार उपसंहार कयल गेल अछि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्त्रीशूद्रयोरनधिकार:—

नरो वा यदि वा नारीत्यादिश्रवणात् व्रतोपवासनियमैः शरीरपरिशोधनमिति-सामान्यधर्मेष्वभिधानाद्वैश्यशूद्रयोस्त्रिरात्रपंचरात्रोपवासनिषेधात् स्त्रीशूद्रयोर्व्रताधिकारो गतो प्रतिष्ठादाविव होतृद्वारा होमसम्भवात् स्त्रीणां होमो न कर्तव्य इत्याचारानुगृहीत-सामान्यनिषेध वशात् स्त्रीणां होमाभाव एव बोद्धव्यः ।

अधःशय्यामिति खट्वादिव्यावृत्त्यर्थं नतु केवलभूमिशयनार्थमेवानौचित्या-दिति ।

अथ शिवे जयास[1]नमन्त्राः

भारवीये :—

जयेश्वर महादेव जय भूतपते हर ।
जयाशेषमहाबाहो मोचय त्रिपुरान्तक ॥२०५४॥

जयमुच्चार्य्य यो नाम स्मरेद्देवस्य शूलिनः ।
विसृज्य दुरितं[2] सर्वं स याति परमां गतिम् ॥१०५५॥

जयभवशिवशर्वत्र्यक्षदक्षार्च्चितांघ्रे ।
स्मरहरवृष[3]केतो धूर्ज्जटे व्योमकेश ।
वरद कुरु कृपां मे मोहविध्वस्तबुद्धे- ।
र्विहितविविधमूर्त्ते भूय एवोन्नमस्ते[4] ॥१०५६॥

स्वस्त्यस्तु वस्तुहिनरश्मिभृतः प्रसादा—
दंकं वपुः श्रितवतो हरिणा समेत्य ।
तन्नाभिपङ्कजसहोत्थमृणाललील—
माविष्करोति हृदि यस्य भुजङ्गराजः ॥१०५७॥

---

१ ने० पा०, पृ० ३२, अथ शिवे जयाशनसनम् मन्त्राः ।

२ ओएह, वृजिनम् ।

३ ओएह, मृड (महादेव)

४ ओएह, पृ० ३२, एवन्नमस्ते ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एहि व्रतमे स्त्री आ शूद्रकें अधिकार नहि—

स्त्री अथवा पुरुष एहि वाक्यसँ व्रत एवं उपवासक नियम आदिसँ शरीरक शुद्धि होइत छैक, एहि सामान्य धर्मांक विषयमे एहि उक्तिक कारणे वैश्य एवं शूद्रकें तीन राति तथा पाँच रातिक उपवासक अधिकार नहि रहबाक कारणें स्त्री तथा शूद्रकें व्रतक अधिकार समाप्त छैक। अतः देवप्रतिष्ठा कार्य जकाँ होता लोकनिसँ होम करायव सम्भव रहने स्त्रीकें होम नहि करबाक चाही। ई आचारक अनुसार सामान्य निषेध थिक। अतः एहिसँ स्त्री आ शूद्र हेतु होमक अभावे बुझक चाही। अधःशय्या शब्दक प्रयोग खाट आदिक निराकरणक हेतु कयल गेल अछि। एकर केवल भूमि-शय्या अर्थ नहि अछि। कारण, से अनुचित थिक।

आब शिवपुराणमे जयासन-मंत्र

नारदक कहल अछि—

हे ईश्वर! महादेव अहाँक जय हो, हे भूतपते हर अहाँक जय हो। अशेष महाबाहुक जय हो, हे त्रिपुरान्तक (हमरा) मुक्त करू ॥१०५४॥

जय उच्चारण करैत जे व्यक्ति भगवान शंकरक नाम स्मरण करैत छथि, से सभ पापसँ निवृत्त भय परम गतिकें प्राप्त करैत छथि ॥१०५५॥

हे भव, शिव, शर्व, त्र्यक्ष, दक्ष-पूजित चरणवला, स्मर, हर, वृषकेतु, शम्भु, धूर्ज्जटे, व्योमकेश! हे वरदायी, हमर बुद्धि अज्ञानसँ नष्ट अछि, एहि हेतु हमरा पर कृपा करू। अहाँ अनेक रूप धारण कयनिहार छी। अहाँकें पुनः-पुनः नमस्कार ॥१०५६॥

(ओहि) चन्द्रधारी भगवान शंकरक कृपासँ अहाँ सभक कल्याण होअ, जे हरिक संग मिलिकय अपन एक रूप धारण कय लेलनि अछि आ जनिक हृदय पर विराजमान नागराज विष्णुक नाभि-कमलसँ निकलल मृणालक सौन्दर्यकें प्रकट करैत छनि ॥१०५७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यादद्गङ्गाविभूतित्रिपुरहरजटामण्डलं मण्डयन्ती ।
यावन्मालासुमेरोः[1] शिरसि सितसहावैजन्त जयन्ती ।
यावत् पतालमूलं स्फूरदमलरुचिः[2] शेषनिर्मोकवल्ली ।
तावद्विश्वासदेव्या जगति विजयतां शैवसर्वस्व कीर्त्तिः ॥१०५७॥

समस्तप्रक्रियाविराजमान महादेवी श्रीमद् ।
बिश्वासदेवी विरचितं शैवसर्वस्वं सम्पूर्णम् ।

---

१ विद्यापति वाङ्मय, पृ० १३८, मल्ली मोला विद्यापति-विमर्श, पृ० ६०, मल्ली मोला; गंगावाक्यावली, अन्तिम अंश, पृ० ।

२ विद्यापति वाङ्मय, पृ० १३८, स्फुरदमररुचिः, विद्यापति-विमर्श, स्फुरदमररुचिः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिपुरहर भगवान शंकरक जटाकेँ सुशोभित कयनिहारि गंगा जा धरि प्रवहमान छथि, जा धरि सुमेरूक शृंग पर उज्ज्वल विजयशील महापताका सुशोभित भय रहल अछि तथा जावत् धरि शेषनागक निर्मल तथा उज्ज्वल केचुआक वल्ली पातालक मूल धरि विद्यमान अछि, ताधरि एहिलोकमे शैवसर्वस्वसारसँ उत्पन्न बिश्वासदेवीक कीर्त्ति विजयशील रहओ ॥१०५८॥

समस्त प्रक्रिया युक्त महादेवी श्रीमती विश्वास देवी
द्वारा रचाओल गेल शैवसर्वस्वासार सम्पूर्ण भेल ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना—८००००१

१९७९-८०क प्रकाशन

		मूल्य साधारण	सजिल्द
आधुनिक मैथिली कविता (आलोचना) प्रो० हरिमोहन मिश्र	....	१०.००	१२.५०
स्मृति-सन्ध्या (संस्मरण-संग्रह) श्री मोहन भारद्वाज (सम्पा.)	....	७.५०	९.५०
उमापति (जीवनी) डॉ० रामदेव झा	....	५.००	६.५०
म० म० मुरलीधर झा (जीवनी) श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	....	६.००	८.००
जीवन झा-रचनावली (नाटक) श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (सम्पा.)	....	८.००	१०.००
आत्मकथा (जीवनी) म०म० डॉ० गंगानाथ झा अनुवाद । श्री सुशील झा	....	७.००	९.००
जानकी-रामायण (आख्यानकाव्य) महाकवि लालदास	....	७.००	९.५०
रुक्मिणी-परिणय (महाकाव्य) श्री बबुआजी झा 'अज्ञात'	...	६.५०	८.५०
मिथिलाक इतिहास डॉ० उपेन्द्र ठाकुर	....	१४.००	१७.००
कृति राजकमलक (कथा + उपन्यास) प्रो० आनन्द मिश्र (सम्पा.) श्री मोहन भारद्वाज "	....	९.००	११.५०
वर्णरत्नाकर (ज्योतिरीश्वर कृत) प्रो० आनन्द मिश्र (सम्पादक) श्री गोविन्द झा "	....	१२.००	१५.००
अगस्त्यायनी (महाकाव्य) श्री मार्कण्डेय प्रवासी	....	८.००	१०.५०